



शिव शब्द सागर

[प्रथम भाग]

महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज

फकीर लाइब्रेरी चैरिटेबिल ट्रस्ट
मानवता मन्दिर, होशियारपुर (पंजाब)



शिव शब्द सागर [प्रथम भाग]

(महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज कृत
हिन्दी शब्दों का संग्रह)

संग्रहकर्ता
ठा० पदमसिंह गहरवार
हुजूरबाद (आ०प्र०)

सम्पादक
देवीचरन मीतल
लेखराज नगर, अलीगढ़

प्रकाशक
फकीर लाइब्रेरी चैरिटेबिल ट्रस्ट
मानवता मन्दिर
मुतेहरी रोड, होशियारपुर (पंजाब)

द्वितीय बार
फरवरी-१९८२

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य ३०/-

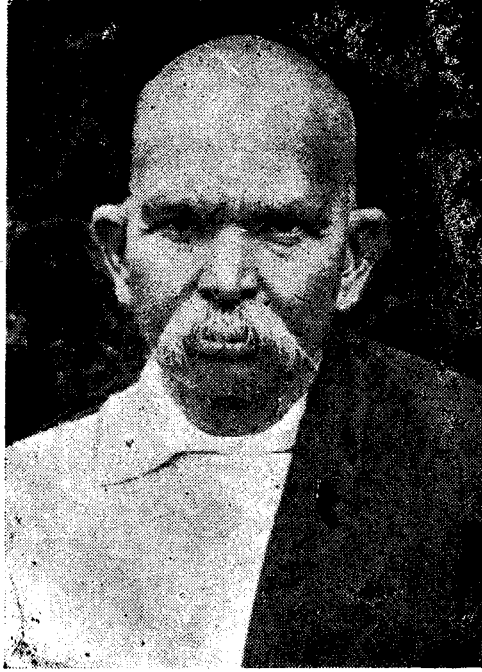
दूसरे संस्करण का प्राक्कथन



हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज द्वारा लिखे गये शब्दों का संग्रह ठाकुर पदमसिंह जी ने किया था। यह उनका निष्काम कर्म व जनता पर उपकार था। पहला संस्करण बिना मूल्य सतसंगियों को दिया, वह समाप्त हो गया। यह शब्द इतने सर्वप्रिय हुये कि लोगों की माँग क्रमशः आ रही है। अतः फकीर लायब्रेरी चैरिटेबिल ट्रस्ट यह दूसरा संस्करण छपवा रहा है ताकि परमार्थ का अमूल्य धन अधिकारियों को प्राप्त हो सके।

एम० आर० भगत
मानवता मंदिर होशियारपुर (पंजाब)

अपने चरणों में लगाकर, कर दिया सबको निहाल ।
है यह विनती कर दया, दृष्टि मेरे दाता दयाल ॥



परम पुरुष पूरन धनी दाता दयाल महर्षि शिवव्रतलाल एम० ए०

काशिके राजे हकीकत, मजहरे जाते कमाल ।
आफताचे इल्म बहदत, महर्षि शिवव्रतलाल ॥



भूमिका

समस्त रचना शब्द से प्रगट हुई है और शब्द ही का विकास है। शब्द ही सृष्टि और रचना की जान है। रचना की कोई गति शब्द तथा ध्वनि से रिक्त नहीं है। यही कारण है कि राग रागनी और गाने से प्रत्येक प्राणी को प्राकृतिक प्रेम और लगाव है। मनुष्य ही पर क्या निर्भर है पशु पक्षी कीड़े मकोड़े तथा अन्य जीवधारियों पर भी गाना अपना प्रभाव डालता है। इस देश के ऋषि तो गाने पर सुग्ध ही थे। वेदों से लेकर पुराणों तक का साहित्य पद्य ही में वर्णन किया गया है। सन्त और फकीरों ने गानविद्या को आध्यात्मिक आहार का नाम दिया है। प्रेम और उत्साह की भावनाओं को उत्तेजित करने का निश्चित साधन माना है। गाने से मन आकर्षित होता है। सुरत का खिचाव होकर केन्द्र पर बैठ जाने से दुर्चिताई दूर होकर एक प्रकार की शान्ति स्वयं उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार शान्ति और संलग्न होकर सम अवस्था को प्राप्त होने का नाम ही समाधि है। इसी कारण सन्तों और फकीरों ने अपने सत्संग और सभा में विशेष प्रकार के शब्दों और गानों की आज्ञा दी है। सन्तों ने बाह्य राग के प्रचार से तुम्हारा ध्यान आन्तरिक जगत के रागों की ओर आकृष्ट होने का विचार रखा है। इस प्रकार का एक शब्द गद्य के अनेक व्याख्यानों से अधिक प्रभावशाली और लाभदायक है।

नन्दू भाई
निजामाबाद

दस्तगीरे बेकसारा, अजमते बहरे कमाल ।
भरमे भूले को राह बतला, कर दिया उसको निहाल ॥



दयालवरूप श्री नन्दूभाई जी महाराज (निजामाबाद)

तू दया का रूप है, और तू दया भंडार है ।
याग्य में आया तेरी जो, उसका बेड़ा पार है ॥



ठा० पदमसिंह गहरवार जी का परिचय

[ताल्लुका हुजुराबाद, करीमनगर, आ० प्र०]

सन् १९१८ ई० में जब दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज प्रथम बार हनमकुण्डा (आ० प्र०) पधारे उस समय ठा० पदमसिंह जी हनमकुण्डा में निजी मकान में रहते थे और ताल्लुकादारी वारंगल में नौकर थे। जिस मकान में महर्षि जी महाराज ठहराये गये थे, वह एक विधवा का था जो उसे बेचना चाहती थी। महर्षि जी की आज्ञा से सत्संग के लिये मोल ले लिया गया जो उनके मकान से मिला हुआ था।

आपने महर्षि जी महाराज से नाम दीक्षा ली थी और उनके बड़े भक्त थे। दातादयाल ने आपको राधास्वामी सत्संग हनमकुण्डा का सैक्रेटरी नियत किया था। वहाँ नित्य शाम को सत्संग हुआ करता था। बाद को अपना मकान भी राधास्वामी सत्संग हनमकुण्डा को दान कर दिया था। आपके कोई लड़का नहीं था। केवल एक लड़की है जो अपने पति के साथ रहती है। ठा० पदमसिंह जी का तबादला हुजुराबाद ताल्लुका पर हुआ था। आपने अपना मकान वहीं पर बना लिया था और कुछ जमीन भी लेली जिससे उनकी जीविका चलती रही। वे दीक्षा भी देते थे और नित्य सत्संग कराते थे।

सेवा निवृत्त होने पर मैं (नन्दू भाई) ने उनसे दातादयाल के शब्दों को जो भिन्न-भिन्न पुस्तकों में छपे हैं, एक जगह तरतीब देने के लिये कहा ताकि सत्संगियों को एक उच्चकोटि की पुस्तक मिल जाय। उन्होंने बड़ी लगन से इसे पूर्ण किया। गत वर्ष ठा० पदमसिंह जी कुछ दिन बीमार रहकर चोला छोड़ गये। उस समय हनमकुण्डा मन्मंग में परमदयाल जी महाराज और मैं मौजूद थे। उसी समय परमदयाल जी ने मुझे आज्ञा दी कि इन शब्दों को प्रकाशित करने के लिये देवीचरन के पास अलीगढ़ भेज दिया जाय।

नन्दू भाई

वक्तव्य



परमपुरुष पूरनधनी हुजूर दातादयाल महर्षि जी महाराज ने सहस्रों शब्द, भजन, छंद, लावनी, सोहर, कुरडलिया, दोहे, चौपाई आदि सहजावस्था में सतसंगियों के पत्रोत्तरों के सम्बन्ध में सुरत शब्द योग के आशय को लिये हुये धारावाहिक लिखे हैं। प्रेम प्रतीति, भक्ति विश्वास के उत्तेजित करने में शब्द, भजन और कीर्तन की विशेष महिमा है। इससे चित्त एकाग्र होता है। यह जीवन को उच्च स्तर पर पहुँचा देने वाले निर्मल शब्दों का अभूतपूर्व संकलन है। दातादयाल के ये शब्द अनुपम, अद्वितीय, अलौकिक और मलिन हृदय रस प्लावित बन आनन्दातिरेक से उन्मत्त होकर मयूरवत् नृत्य करने लगता है। शब्दार्थ पर विचार करते हुये क्रियात्मक और साधन सम्पन्न जीवन व्यतीत करने से दुर्गुण और दुराचार रूप मल दोष का नाश होकर अन्तःकरण की शुद्धि होने से अपने आप ही परमतत्व का ज्ञान होकर उस परमपद की प्राप्ति हो जाती है। हुजूर ने उस परमतत्व परमानन्द सुमधुर प्रेम का प्रत्यक्ष अनुभव करके अपनी पवित्र बाणी के द्वारा संसार के संतप्त जीवों को सुशीतल शांतिरस देने का प्रयास किया है। दयालस्वरूप श्री नन्दू भाई जी महाराज के आदेशानुसार हमने अनेक ग्रन्थों से शब्दों को एकत्रित करके प्रत्येक धुन के अनुसार संग्रह किया है। हमारा विश्वास है कि यह “शिव शब्द सागर” प्रेमी सज्जनों और सत्संगी भाई बहनों के लिये अत्यन्त लाभदायक प्रमाणित होगा।

संग्रहणीता :

ठाकुर पदमसिंह गहरवार

हुजूरवादा (आ० प्र०)



शब्द सूची

शब्द की टेक

पृष्ठ संख्या

अ

आशा इस भव के कारागार में, सचमुच यम की फाँसी है ।	६
अद्वैत द्वैत के फेर पड़ा, अभिमानी एक का दो का है ।	७
आये थे बहरे जहाँ में, हम नहाने के लिये ।	३८
आके सतसंगत में ले, अपने जनम को तू बना ।	४१
आलसी हों प्रेम मारग में, नहीं होना कभी ।	४४
आपके अर्पण हैं यह, मेरा नहीं तन आपका ।	४७
आस कर गुरु की दया की हो निरास न तू कभी ।	५४
आये थे रोते, चले हँसते हुये संसार से ।	५५
आस अब किसकी करूँ, जब दास तेरा होगया ।	७६
आगये जब पन्थ में गुरु के, तो पग हटता नहीं ।	८७
आई शरनागत तुम्हारे, आके कैसी खोगई ।	८८
आके चरनों में पड़ा हूँ, तेरे सबको त्याग कर ।	१०३
आत्मा मेरा सुखी है, देह सुख का ठाम है ।	१०५
अब कुछ गुरुवानी समझ पड़ी ।	११८
आई शाम भज गुरु का नाम ।	१२६
अब सत धाम की बासी बनी ।	१३१
अखियाँ बिन दरशन तरस रहीं ।	१३६
आजा शरन बचालूँ गा ।	१३८
अमृत नित बरसे सतसंग में ।	१४६
अपने गुरु की मैं दासी बनूँगी ।	१५१
अब अपना आँपा जान गया ।	१५५
आम आम जीव बँधे, आस यम की फाँसी ।	१६८



आई वर्षा की ऋतु सजनी, करले मचल मचल अस्नान ।	१७६
आया सावन का महीना, भूलें सखियाँ मिलजुल आय ।	१८०
आया देखन जग का मेला, धर गुरु चरनन में परतीत ।	१८३
आया तन की अयोध्या नगरी, करले तू अब अपना काज ।	१८३
अपनी दो पहिचान तुम मेरे सतगुरु दाता ।	१९०
अमृत धार बहाइये, सतगुरु जग तारन ।	१९१
आया गुरु दरबार मैं, मेरे सतगुरु साई ।	१९२
अपना दो निज ज्ञान, तुम गुरु अन्तरयामी ।	१९३
अपनी ओर निहाररी, अलबेली सुरतिया ।	२००
अपना रूप सँभार री, तू रंगीली बहुरिया ।	२०१
आये गुरु महाराजरी, अपने दासी घर ।	२०४
आई राधास्वामी धामरी, तज जग की आसा ।	२०५
अनहद बाजे बाजरी, सुन सुरत के काना ।	३०७
आये पड़े भव के दुख सागर, डूब रही मँझधार में रे ।	२२६
आदि अनादि अनन्त अमाया, निहकाया महिमा भारी ।	२२६
अज्ञान का फन्द कटा देना ।	२३५
अब दरस की चाह उठी भारी ।	२५४
अपनी शरन में लेलो, मेरे कृपाल दाता ।	२५६
आया तेरी शरन में, कर मेरी लाज प्यारे ।	२६२
आँखों का तारा सब का सहारा, हित चित से तू प्यारा है ।	३०६
आपही माली बाग लगावे, सींचे आप फुलवारी ।	३२२
अनहद बानी मंगल खानी, सत्तधाम सहदानी हो ।	३२६
अलख को लखले अगम की गम ले, परख गुरु की बानी ।	३३२
आसा एक गुरु की चित में, औरन मन अभिलासा ।	३४८
आय तरें औरों को तारें, यह साधु की महिमा ।	३५२
आज का काम आज दिन करना, कल की आस न करना ।	३८१



आओ सतसंग में, नर जन्म बनाने आओ ।	३६७
आतम धिक्ती सहज की, सहज भाव चित दे ।	३६६
आसा एक गुरु की चित में, औरन मन अभिलासा ।	३४८
अज्ञान बस नहीं तुमहि जाना, कैसे कोई जाने तुम्हें ।	४१०
अमर फल बिरला गुरु मुख खाये ।	४३१
अन्तर सतगुरु की प्रीत बसी ।	४३५
अन्त समय क्यों रोया है ।	४३६
आके बँधादे धीर प्यारे ।	४५२

इ

इस मन अन्दर बाग बगीचा, इसमें है फुलवारी ।	३२०
इस संसार का रूप क्या, पूछे दास फकीर ।	३६०

उ

उठ जाग सवेरा होगया ।	१२७
उत्तम पुरुष वही है जग में, चले जो प्रेम प्रीत की राह ।	१८४
उसकी हो जुस्तजू क्या, जो अपने रूबरू है ।	२६४
उप है निकट देश अस्थाना, यह उपदेश का सारा ।	३३१
उप है निकट तो आसन बैठक, सच्ची बात परखले ।	३३२
उमर बिताई समय गँवाया, मिला न ठौर ठिकाना ।	३५१
उठो जागो तुम सोये कैसे, यह जग माया की कल्पना है ।	३७३

ए

एक चिंता नाम की कर, जग की चिंता मेट कर ।	७८
ऐ शीलबन्त स्वामी, कर दो मुझे सुशीला ।	२६३
एक पक्ष में दो है पत्नी, एक छोटा एक भारी ।	३१४
एक रूप के सकल रूप हैं, सकल रूप एक रूपा ।	३६३
एक आम विश्वास गुरु का, मन में प्रेम प्रतीत ।	३७८



क.

किस मुख से तेरी महिमा गाऊँ, तू सत्त पुरुष अविनासी है ।	८
किस भर्म में भूला है भाई, जग चिड़िया रैन बसेरा है ।	९
क्यों भर्म में भूला है प्यारे, इस जगत में सुख विश्राम कहाँ ।	११
किस मुँह से तेरी अस्तुतिगाऊँ, तू आदि अन्त अविनासी है ।	२६
किस भर्म में भूला है भाई, अनजान है या तू सियाना है ।	३१
क्यों रोता रहता है हरदम, क्या लुत्फ है आँसु बहाने में ।	३२
कोई कैसे जाने हकीकत को, हक से नहीं है जब काम उसे ।	३२
करता धरता और है, तुम ध्यान में उसके लगो ।	३५
क्या है ईश्वर किसमें ईश्वर, है कहाँ रहता है वह ।	३८
क्या है तू और कौन है तू, किसको आई यह समझ ।	४५
कौन तेरा है यहाँ, कोई नहीं तेरा यहाँ ।	६६
काम जो करना हो, चित्त दे उसे करते रहो ।	६८
काम करता हूँ तेरा, स्वामी सदा निष्काम बन ।	७७
कोई सुख दुख का नहीं दाता, तेरी है भूल सब ।	७९
कौन कहता है तुम्हें, भाई कि संसारी बनो ।	८०
क्या कहें सुमिरन नियम, संयम है सुमिरन योग है ।	८२
कुछ नहीं दुर्गम सुगम, सब कुछ जो गुरु के दास हो ।	८३
कहता हूँ सच घट में तेरे, राधास्वामी धाम है ।	८५
किस की हम चिंता करें, चिंता है कब किस काम की ।	८९
कहते हैं सब सन्त मत का, है सहज साधन सही ।	१०३
कोई जतन करो सुरत गगन चढ़े ।	१११
कर घट में प्रीतम का दर्शन ।	११६
क्यों भूला प्यारे तू रंग में, भ्रमा क्यों डाकू और ठग में ।	१६२
करूना निधान कृपाल सतगुरु, प्रणतपाल महेश्वरम् ।	१६७
कांटा लगा धिरह का हिय में, मेरा सिसक सिसक दम जाय ।	१८१



कर । त से सतसंग, अब मेरी सुरत सुभागी ।	१६४
कहना मेरा मानरी, मेरी चतुर अचेती ।	१६६
करले अपना काम अब, मेरी चतुर सुरतिया ।	१६६
करदो भव सागर पार, तुम मेरे सतगुरु दाता ।	२०१
कैसे अपना भाग सराहूँ ।	२१०
कैसे गुरु के मैं गुन गाऊँ ।	२११
कृपासिंधु पूरनधनी, तुम सबके हितकारी ।	२२३
क्या करना था क्या मैंने किया ।	२३१
कहीं है यहाँ सत की बजरिया जी ।	२४८
करले निज उपकार, मानुष तन पाया ।	२७१
कर आपन घट उंजियार रे, आपन घट ।	२७१
कोई माने न गुरु की बात, धोके धार बहा ।	२८०
कर सतसंग अस्नान, तीरथ राज यही ।	२८७
कौन गिने तिथिवार, प्रेम जब मन में रमा ।	२९०
कर प्रेमीजन का संग, तेरा नर जनम बने ।	२९३
क्या है पद निरवान, नहीं कुछ समझ में आवे ।	२९५
क्यों तू ढूँढ़े देश विदेस, तेरा प्रीतम तेरे घट में ।	२९८
किसी पुरुष ने बन्दर पाला, अपना भीत बनाया ।	३११
कहना सुनना सब है निष्फल, बात मान एक मेरी ।	३३३
कालचक्र का सहज हिंडोला, भूला अचरज न्यारा ।	३३५
क्यों फिरत भुलाना जगत में, कुछ सोच फकीरा ।	३८३
क्यों फिरत भुलाना भ्रम में, निस दिन नादाना ।	३८३
क्या देखा क्या सुना है घट में, मुझे सुना अपनी बानी ।	३८८
काम फरो चित से करो, दुचिताई से हान ।	३९८
काल अस्तुति बन्दना करूँ, सीस चरन भुकाय ।	४१२
कालो गुरु का ध्यान साधु, करलो गुरु का ध्यान ।	४२२



क्यों भरमा फकीर क्यों भरमा फकीर, काहे दिवाना हो गया ।	४२३
काहे करे उत्पात मनुआ काहे करे उत्पात ।	४२१
कहाँ तुझे पाऊँ रे मन मोहना, मैं कहाँ तुझे पाऊँ ।	४२२
कहत न आवे बैन ।	४२८
काहे बौराना हाय फकीरवा ।	४४१
करो चित देकर शब्द अभ्यास ।	४४६
कोई अवघट घाट भरे गगरी ।	४५३

ग

गुरुनाम में हिया जिया उमगाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ।	२
गुरु नाम मिला मुझको प्यारा, राधास्वामी राधास्वामी ।	३
गुरुदाता दया की दृष्टि करो, जगमें न कोई हमारा है ।	१०
गुरु भक्ति ने पन्थ में दया से मुझको, लगा दिया सतगुरु प्यारे ने ।	१६
गुणातीत गुण सगुन स्वरूपम, अविनासी राधास्वामी ।	२४
गुरु के दर्शन के बिना अब, नींद तक आती नहीं ।	३७
गुरु की महिमा कौन गाये, उसका गाना है कठिन ।	४०
गुरु हैं मेरे मैं गुरु की, गुरु से मेरा काम है ।	४८
गुरु के मत में आके, गुरु गम पन्थ को पहचान ले ।	६२
गुरु हुये संसार में, परगट गुरु से ज्ञान लो ।	६६
गुरु के चरनों में पड़ा जब, बन गया मेरा जनम ।	८४
गुरु की संगत से हटेंगे, कर्म माया काल सब ।	९३
गुरु का सुभिरन ध्यान करके, गुरु की मैं दासी बनी ।	१०४
गुरुदाता के चरन में आन पड़ी ।	१०६
गुरु चरन कमल की दासी बनी ।	१०७
गुरुदाता की शरण मैं आन गही ।	१०८
गुरु दया हुई गुरु प्यारी बनी ।	१०८
गुरुदाता दया की नजर रहे ।	११०
गुरु दाता लगादेंगे पार मुझे ।	११५



गुरु दाता के चरन चित जोड़ रहूँ ।	११५
गुरु चरन कमल में विनय करूँ ।	११६
गुरु गम की महिमा जान गई ।	१२६
गुरु पद सरोज में नमस्कार ।	१२८
गुरु नाम का ले आधार सखी ।	१३०
गुरुदाता के नाम से लव लागी ।	१३१
गुरुदाता की दया पर बलिहारी ।	१३५
गुरु सुखता सब का सार है ।	१४६
गुरु चरन कमल की दासी बनूँ ।	१५१
गुरु स्वामी करो तुम मेरी सहाय ।	१५५
गुरु ने अमृत नाम पिलाया ।	१५७
गगन मंडल धूम मची, देखो सुरत मेला ।	१७१
गुरु मध्य आदि अनन्त अद्भुत, अमल अगम अगोचरम् ।	१७७
गुरु धुरधाम को भागरी, मेरी प्यारी सुरतिया ।	१८७
गुरु चरन चितधार री, मेरी प्यारी सुरतिया ।	१८८
गुरु पद का कर ध्यान री, मेरी सुरत सहेली ।	१८८
गुरु संग नेह लगाओ री, मेरी सुरत सयानी ।	२००
गुरु मूरति हिये में धारो री, गुरु मूरति ।	२०२
गुरु ने सहज योग आकर सिखाया ।	२२१
गुरु चरणों में ठौर ठिकाना मिले ।	२३४
गुरु गह कर हाथ सँभालो मुझे ।	२३४
गुरु करता धरता किसे मानूँ ।	२३८
गुरु का नहीं सीखा रंग ढंग ।	२५१
गुरु के चरन सरोज में, कोट कोट दंडोत ।	२५८
गुरु दाता चरन की धूल मिले ।	२६६
गुरु दाता करो मेरी आप सँभार ।	२६६



गुरु प्यारे दरस दो मोहि अपना ।	२६६
गुरु दाता मौज करो आज नई ।	२६७
गुरु स्वामी दया की दृष्टि करो ।	२६७
गुरु दाता की छवि पर बलिहारी ।	२६७
गुरु प्यारे दया करो दृष्टि संभार ।	२६८
गुरु प्यारे से प्रेम लगा मेरा ।	२६८
गुरु दाता सहज में तारेंगे, गुरु दाता ।	२७०
गुरु चरन कमल की छाँह ले, तब काज बने ।	२७६
गुरु महिमा अगम अपार, गुरु गति कौन कहे ।	२८५
गुरु कीजे आप सहाय, चरन में आन पड़ा ।	२८६
गुरु कीजे मेरी सहाय, शब्द में चित मेरा लागे ।	२८६
गुरुमुख बिन जाने नहि कोई, गुरु का भेद अपारा ।	२८९
गुरु चले झुलावनहार, हिंडोला गगन पड़ा ।	२८९
गुरु कीजे मेरी सहाय, धिपत से तड़प रही ।	२८३
गुरु रूप न समझे कोय, भ्रम में पड़े अज्ञानी ।	२८६
गुरु दरस दिखादो जल्दी, विकल मन सोच रहा ।	२८८
गुरु ने अस कृपा करी, दिया ठौर ठिकाना ।	३०१
गुरु गुन गाना गुरु छवि ध्याना, गुरु मत ज्ञाना काम तेरा ।	३०८
गुरु चरन कमल में सीस झुका, दिन रात करूँ सेवा पूजा ।	३१०
गुरु की आस भरोस है मन में, आठ पहर गुरु सेव करूँ ।	३११
गुरु का भाव हिये में आया, सतसंगी का नियम हुआ ।	३२१
गंगा तट कोई साधू आया, बिच्छू पानी मँझारा ।	३३६
गुरु के नाते सबका नाता, नाता और न मानूँ ।	३५२
गुरु ने हाथ सीस पर फेरा, और मुझको अपनाया ।	३५३
गुरु गति अगम अलौकिक अद्भुत, शोभा कही न जाय ।	३६८
गुरु की दया भेद सब जाना, घट में भान प्रकासा ।	३७१



गूंगा बोले मधुरी बानी शब्द अशब्द विस्तार ।	३८४
गुरु कीजे दया अपार, आस धर सन्मुख आया ।	३८६
गिरि कैलास में शिव बसें, पारवती के संग ।	३८३
गुरु बिन गति नहीं गुरु बिन मति नहीं, समझ के करो धिवेका ।	४०२
गुरु की भक्ति सदा सुखदाई, गुरु की भक्ति नित करना ।	४०५
गुरु परम दीन दयाल प्रगटे, जीव तारनहार ।	४०८
गुरु के मत में आयकर, गुरुमत ले पहचान ।	४१२
गुरु प्यारे ने दिया मोहे भक्ति दान ।	४१८
गुरु की दया से बंध छुट जावे ।	४१८
गुरु की महिमा अगम अपार, नित सतसंगत जाना हो ।	४१८
गुरु पद सीस झुकाइ साधू, गुरु पद सीस झुकाइ ।	४१६
गुरु शरणागत आओ साधू, गुरु शरणागत आओ ।	४१६
गुरु गुन पल पल गाओ फकीरा, गुरु गुन पल पल गाओ ।	४२२
गुरु के रंग मदमाती रे गुजरिया ।	४२६
गुरु समरथ दाता तारेंगे, गुरु समरथ ।	४२८
गुरु दाता ने सार समझा दिया ।	४३२
गुरु तेरी शरण में आगया ।	४३५
गुरु की अभिपानी होगई ।	४३७
गुरु दाता लगादो पार मुझे ।	४४६
गुरु प्रेमी आनन्द पाते हैं ।	४४७
गुरु चरन कमल की दासी बनी ।	४५१
गुरु प्यारे के चरणों की दासी बनी ।	४५२
गुरु चरण में मेरी लव लगी रहे ।	४५३
गुरु बिन पन्थ में पग नहीं धरना भारग कटिन सहाना हो ।	४५५
गुरु दयालु ब्रह्मा अति निर्मल गुरुमुख आन नहाना हो ।	४५५
गुरु दयालु की महिमा भारी कर अस्तान तर जाना हो ।	४५५



गुरु एक अनादि अनन्त महा, पद कमल में आन के शरन गहा । ४५६

घ

घट में कर दर्शन गुरु का, घट की महिमा जान ले ।	५१
घट का घर सूना पड़ा है, उसमें आप आजाइये ।	५२
घट में गुरु के रूप का, परकाश तारा होगया ।	५४
घट में दर्शन पाओगे, सन्देह कुछ इसमें नहीं ।	८३
घट में है घट का है वासी, घट में रहता है सदा ।	६४
घट तारा मेरे हुआ जगमग ।	११३
घट आनन्द अघट घटा छाई ।	११७
घट भीतर अजब तमाशा है ।	११८
घट में जब अन्हद धुन प्रगटी ।	११६
घट नाचे सुरतिया उमंग भरी ।	१३६
घट में परगट अनहद धुन की, अब तो नई निराली तान ।	१७६
घट में दीवा बालरी आज आई दिवाली ।	१६६
घट का पट खोल दिखाओ पिया ।	२३६
घट में खुली प्रेम की क्यारी जी ।	२५२
घट अघट प्रेम की घटा छाई ।	२५७
घट में चली सुरत मतवारी, छोड़ जगत की माया हाँ ।	३०५
घर चलने का बेला साधु, घर चलने का बेला ।	४२०
घट प्रगट शब्द की धुन कानों क्यों न सुने ।	४२६
घट अद्भुत बाजे बाज रहे ।	४३५
घट में भानु खिला ।	४३६

च

चमका घट भक्ति का तारा, धन धन धन धन राधास्वामी ।	३
चेला नहीं मिला कोई, जो भिला गुरु ज्ञानी भिला ।	१५
चाँद सूर तारागन अग्नी, में तेरा चमकारा है ।	२५



चित की बिरती हो न चंचल, करले उसकी रोक थाम ।	७४
चुन लिया है ज्ञान के, मोती को भव सागर में आ ।	६७
चित का आनन्द का, और रूप सत का होगया ।	१०५
चल तू सुरत गगन ओर, त्याग जग की आसा ।	१७२
चेत चेत चेत अभी, चेत मेरे भाई ।	१७३
चेतो मेरे बन्धु मीत, अक्सर शुभ पायो ।	१७६
चिंता चित से तज दे सारी, सतगुरु करेंगे तेरी सहाय ।	१८६
चरन शरन की बन्दना नित कोई और न काम ।	१८८
चरन ओट सहवास हो, सतगुरु करतारा ।	१८२
चल गुरु के सत संगरी, मेरी सखी सहेली ।	१८६
चल सतगुरु के देस, तू मेरी सुरत सहेली ।	२०५
चल राधास्वामी धाम री, तज काया कासी ।	२०७
चलत हैं हम का सिंगारें अभागें ।	२७२
चल घट की ओर सुरत प्यारी, जहाँ नित अमृत का जल बरसे ।	२७५
चरन शरन गुरु दीजिये, शरनागत आया ।	२८४
चेत चेत चल सत की डगर में, चेतले अभी सवेरा है ।	३२५
चुर रहने का फल है मीठा, बोले वाद त्रिवादा ।	३४३
चरन कमल में सीस झुकाऊँ, नित सतगुरु गुन गाऊँ ।	३४८
चरन कमल चित जोड़कर, स्वामी सन्मुख आया ।	३७०
चिन्ता राधास्वामी नाम की, राधास्वामी आस ।	३७५
चरन गुरु चित धार, जगत तज भागिये ।	३८२
चलो गुरु दरबार, आज दर्शन के कारन ।	३८७
चित चरनों में जोड़िये, साक्षी भाव समान ।	४०१
चरन कमल की धूर बरुशो, चरन कमल की धूर ।	४१५
चार दिना का मेला साधू, चार दिना का मेला ।	४२०
चेत रे मन चेत बीरे, चेत रे मन चेत ।	४२१



चल कीजे गुरु संगत, जहाँ प्रेम अभी जल बरसे । ४२७

छ

छोड़ खट पट मन की अपने, मनमें अपना रूप देख । ८५

छोड़ दो दुविधा को दुविधा, दुख का कारन मूल है । ६५

छवि अबुत दिखला दे छबीले । २१२

छाई अधियारी भारी हो कुछ नजर न आवे । ४२६

ज

जब गुरु की दया की आस नहीं, तुझ में भक्ति विश्वास नहीं । ४

जो आते हैं वह जाते हैं, जो गये लौट नहीं आते हैं । ५

जीतेजी मुक्ति की पदवी को, दिलवा दिया राधास्वामी ने । ६

जब गुरु ने प्रेम दिया तुमको, सुन पल पल उसका ध्यान रहे । २१

जब मानुष देह मिली तुमको, इस देह से औरों को कुछ दो । २१

जब अन्तर शब्द की धुन प्रगटी, बाहर का गाना भूल गया । २२

जब घट विवेक सागर न्हाया, तन मन शुद्ध हुए सारे । २३

जब नाम का होरा हाथ लगा, मद मोह के धन को त्याग दिया । २८

जब घट में अनहद तान सुनी, मुख से फिर नाम लिया न लिया । २६

जग की चिंता छोड़कर, चिंता करो सत नाम की । ४२

जिसके साधन से मिले, सतनाम धन वह जोग है । ५२

जिसने बन्धन में फँसाया, है छुड़ायेगा वही । ५७

जब गुरु रक्षक हुआ मेरा, तो भय किस बात का । ५८

जनम नर का पाके, सत जीवन का भागी बन के रह । ६०

जाके गुरु के पास बैठो, और बचन उनके सुनो । ६६

जिसकी तुझको खोज है, परगट वह तेरे मन में है । ८२

जब तुम्हें चिंता सतावे, गुरु का तुमको ध्यान हो । ८३

जब दया गुरु की हुई, चरनों की भक्ति मिल गई । ८६

जिसमें है भक्ति की शक्ति, वह नहीं बदला कभी । ६१



जो रमा रहता है सब में, सबका रमता राम है ।	६२
जो हुये बाहर मुखी, क्या जाने अन्तर में है क्या ।	६३
जब गुरु की शरन आई, आस पूरी हो गई ।	६६
जब सुशीला होगई, आनन्द मन को मिल गया ।	१००
जी में आता है सहज में, भव का सागर मैं तरूँ ।	१०१
जग चिड़िया रैन बसेरा है ।	१२३
जग लीला परख चित चेत गया ।	१३०
जिन नाम लिया तिन काम किया ।	१३२
जगत में कैसी लूट पड़ी ।	१४१
जग भानु उजाला हो गया ।	१४५
जगत की झूठी परतीती ।	१५३
जब आँख खुले तब नजर पड़े ।	१५६
जिसे काल करम भरमाता है, उसे माया जाल फँसाता है ।	१५६
जिसके मन नहीं चिंता व्यापे, जग में वही है दास फकीर ।	१८२
जब तू हुआ गुरु का सेवक, गुरु को हरदम तेरा ध्यान ।	१८७
जागे पूरन भागरी, नर जनम बनाया ।	२०६
जहाँ आँख खोली वहीं तुझको पाया ।	२१५
जब चढ़े सुरत नभ के मंडल ।	२३७
जब ओढ़ी सत की कामरिया ।	२४२
जग बहती है भक्ति की देखो गंग ।	२५३
जब गुरु की बंधी मन में आसा ।	२५५
जब लागी सहज समाध, फिर क्या करम बने ।	२७२
जग जाल फँसा मेरा मन पापी ।	२७३
जग में आये बहुत दुख पाया, प्रेम का नगर दिखा दीजे ।	३०३
अग का स्वामी जग का दाता, जग का पालनहारा ।	३०६
ओ मेरे प्रीतम का प्यारा, मेरा भी वह प्यारा ।	३३३



जिसने अपना जगत रचाया, वह चतुर सियाना ।	३५३
जिनको चाह राम की साधु, राम उन्हें मिल जाते हैं ।	३५५
जो मेरा मैं भी हूँ उसका, मानूँ प्रेम का नाता ।	३५८
जात न जानूँ पाँत न जानूँ, मानूँ भेद न कोई ।	३५८
जिनको मेरा सहारा साधु, मैं उनका रखवारा ।	३६२
जात पाँत और कुल व्यौहारा, भक्ति संग नहीं तुलते ।	३६४
जो कोई हित से मुझे बुलावे, मैं ढिंङ उसके आऊँ ।	३७८
जग का खेल है मनकी लीला, मनकी समझन आई ।	३८०
जो अद्वैत प्रकाश विभू, सगुन अगुन आधार ।	३८५
जनम जुआ मत हार भाई, जनम जुआ मत हार ।	४३०
जगत में दो दिन का रहना ।	४४७

भ

भूला भूलूँ गगन में चढ़कर, आई बरखा की बहार ।	१८६
भूला भूले सुहागिन नार, पिया का घर हृदय में ध्यान ।	३००

ठ

ठुमक चली गगन मंङल, सुरत भीनी भीनी ।	१७४

ड

डंके की चोट सुनी घट में, मेरी सुरत सखी मतवारी बनी ।	२०

ढ

ढूँढ़ मुझको अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूँ ।	४१
ढूँढ़ता फिरता है किसको, ढूँढ़ वह तू आप है ।	८७

त

तेरी स्तुति हित चित से गाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ।	२
तू घटका मेरे बासी बने, तेरा ही मन में ध्यान रहे ।	१२



तू सत है सत की दे सत्ता, सत की सत्ता से काम बने ।	१३
तुम व्यापक चर और अचर में हो, किस जगह ढूँढ़ने जाऊँ मैं ।	१६
तू जान अजान से न्यारा है, तू जान नहीं अनजान नहीं ।	१७
तीन त्रिलोकी में फँसकर, चौथे को जाना नहीं ।	४५
तारने वाले ने तारा, तर गये सब तर गये ।	७३
त्यागदे आशा जगत की, आशा दुख का मूल है ।	७६
तेरी लीला कौन समझे, तू तो अपरम्पार है ।	७८
तेरे घट में राधास्वामी, राधास्वामी नाम है ।	८१
तू दया का रूप प्यारे, तू दया भंडार है ।	८४
तू निज स्वरूप क्यों भूल गया ।	११०
तू सोया सो सो खोगया ।	१४०
तू एड़ी चोटी तक व्यापा ।	१५४
तेरी काया नगरी कासी है ।	१५६
तेरी गति मति कौन लखे ।	१५८
तू भूली भरमानी माई ।	१६४
तेरा आसरा है तेरा है सहारा ।	२१५
त्याग भरोस जगत की प्यारी, धार गुरु की आस तू ।	२२५
तेरी दया का दृढ़ विश्वास हुआ ।	२२६
तुझे किसने कहा कि वह पास नहीं ।	२३०
तुम्हें चिंता नहीं है क्या मेरी ।	२४१
तुमने सतसंग से क्या पाया ।	२४१
तुम भूले भूले भूल गये ।	२४५
तुम बिन नहीं है कोई, मेरे दयाल दाता ।	२६०
तुम कौन और क्या हो अपना पता बतादो ।	२६१
मेरी दया हो मुझ पर मेरे कृपाल दाता ।	२६२
मेरा रूप अनूप अपार दूजा क्या देखे ।	२६६



तेरी काया में सत करतार, भटका क्यों खावे ।	२७१
तेरे घट में बिमल बहार, तू बाहर ना जा रे ।	२७५
तुम आये इस जगत में, दीन जीव के काज ।	२७६
तेरा जनम अकारथ जाय, मन कुछ चिंता कर ।	२७७
तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना ।	२७८
तू भ्रम रहा संसार, तेरी बुद्धि गई ।	२८२
तूने सतगुरु किया न संग, काल से कौन बचावेगा ।	२८४
तेरा भेद न जाने हाय, जगत धोखे में रहा ।	२८४
तेरे मन में भाड़ भँकार, तू बन में ना जा रे ।	२८६
तू दयाल है दया की मूरत, तेरी दया का दान मिले ।	३०२
तीन ताप से जगत दुखारी, सुख आनन्द नहीं पावे ।	३१६
तू फकीर है कैसा भाई, भूल भ्रम चित लाया क्यों ।	३२४
तू सच्चा है मुझे सचाई, बख्श बख्श सतगुरु प्यारे ।	३२४
तू फकीर है मेरे प्यारे, सुन फकीर की बानी ।	३३८
तीजी कथा सुनाऊँ तुझको, सुन सुन कर चित लाना ।	३४१
तू अविनासी अजर अमर है, तू सबका आधार है ।	३४५
तू जगदीश जगत का करता, तेरा मन में ध्यान रहे ।	३४७
तन मन प्रान स्वामी के अरपन, स्वामी रंग रंगराता ।	३५०
तुम सेवक कैसे हो भाई, सेवा चित नहीं लाते ।	३५५
तन मन धन कुल सम्पति त्यागूँ, गुरु के पद नहीं छोड़ूँ ।	३६०
तू तो होगई बाबली, समझ न आवे बैन ।	३८०
तुम आस करो विश्वास करो, गुरु बेड़ा पार करेंगे जी ।	३८८
तू क्यों सोवे मोह नींद में, जाग जाग खरत प्यारी ।	४१३
तुम मेरे प्रान अधारे दाता, तुम मेरे प्राण अधारे ।	४१५
तुम ही प्रान अधारे सतगुरु, तुम ही प्रान अधारे ।	४१७
तारे रंग राती रे मोहना, मैं तो तेरे रंग राती ।	४१६



तुझे कभी न बिसारूँ रे गुरु दाता ।	४२५
तेरे रूप लुभानी रे मन मोहना ।	४२५
तेरी गुदड़ी में लाल टका, क्यों नहीं नजर करे ।	४३३
तुझ बिन कोई नहीं अपना ।	४३४
तड़प रहा जिया मोर ।	४४२
तिरछी नजरिया माया ने मारा ।	४४३
तेरे घट में बोले कौन ।	४४४

थ

था असत में सत सत जब प्रगटा, सत्ता से तब सत नाम बना । २६	
थिक थिक मेरी सुरत नाचे, नाच है रंगीला ।	१७४
थिर नहीं यह संसार री सुन सखी सहेली ।	२००

द

दुखियों दीनों पर दया हुई, भवपार किया गुरु प्यारे ने ।	१०
दुखदाई जगत में आन फँसा, भवसागर नाव न बेरा है ।	१२
देख दल दल से निकल कर, सीधे तू मारग में चल ।	४६
दमहरा दस को हरा जब, फिर दिवाली आगई ।	४६
दुविधा ने गले फाँसी डारी ।	१०६
दुविधा दुचितार्ई भाग गई ।	१३२
दुख मुझे छोड़ अब भाग गया ।	१४३
दुविधा दुर्मति की है खानी ।	१५२
दया शक्ति कीजे मुझे तार लीजे ।	२०६
दया शक्ति से खोल दे आँख मेरी ।	२०६
दया शक्ति हो नित दया हो ।	२१६
दुलम अधिकारी को क्या है जी ।	२३२
दा । १११ का मेला टेला है ।	२३६



दीन हित करुना निधान, कृपाल सुख सागर महा ।	२५६
देखा है रूप बाहर, अन्तर में अब दिखा दो ।	२६०
दीन बन्धु कृपाल स्वामी, जगत के आधार ।	२६६
दो दिन का भोग विलासा है, दो दिन का ।	२७०
दुख सहा जगत में आय, न सत पद जान के भूलूँगी ।	२६३
दाता ज्ञाता पितु और माता, छिन छिन तेरा ध्यान रहे ।	३०२
दूजी कथा सुनाऊँ फकीरा, कान इधर ला भाई ।	३४०
दाता दानी देवता, दिव्य दृष्टि के रूप ।	३६६
दाता दानी देवता, नहीं गुरु सम कोय ।	३७७
दया भई जो गुरु मिले, पकड़ी अपनी बाँह ।	३८०
दीन दयाल दीन हितकारी, दीनबन्धु सुख दाता ।	३८६
दीन हीन शरन में आया, कीजे आप सहाय ।	४१३
दर्शन की मैं प्यासी गुरु मेरे, दर्शन की मैं प्यासी ।	४१४
दिल की सब दुर्मति दूर भई ।	४३६

ध

ध्यान तक करता नहीं है, कोई मेरी बात का ।	६७
ध्यान में गुरु मूरती को, ध्यान देकर ध्यान दो ।	६६
ध्यान में चित को लगा, बातें बनाना छोड़ दे ।	७६
धोबिया प्रगटा जग में सजनी, लीजो चूनर धुलाय ,	१७८
धन धन सुख दाता जग पितु माता, आदि अनन्त अमाना ।	२६५
धन रूप भूप अनूप निर्गुन, सगुन गुनकारी प्रभु ।	३०१
धन धन भव भंजन जन मन रंजन, काम निकंदन गुरुराई ।	३०३
धन धन धन दाता सुर सुनिवाता, व्यापक परमानन्दा ।	३०३
धन्य धन्य गुरु परम सनेही, धन्य दीन हितकारी ।	३४६
धन्य सतगुरु रूप है, और धन्य उसका ज्ञान है ।	३६७
धारो टेक गुरु की मन में, और टेक सब छोड़ो ।	३६०



धन दौलत की भेंट न चाहूँ, मन की भेंट चढ़ाओ ।	३६४
धन धन गुरुदेवजी जिन भेद बताया ।	३७६
धन धन गुरुदेव ज्ञान सच्चा दिया ।	४०७
धन दुख हरन धन सुख करन, मंगल भवन पूरन धनी ।	४१०
धन भक्त बत्सल नाथ करुना, पुंज धन धरनी धरम् ।	४१०
धन्य सतगुरु दीन बन्धु, धन्य जगहित सतगुरुम् ।	४१४
न	
नहीं आपसे आये हम प्यारे, और आपसे हम जाते भी नहीं ।	५
नाम के लेते ही नामी, की शरन में आगया ।	५०
नाम पाया गुरु से तूने, नाम से नामी हुआ ।	५७
नेति नेति एति एति, में पड़े अनजान सब ।	६५
नाम की औषधि मिली, संसार का क्यों रोग हो ।	७८
ना यहाँ हूँ न वहाँ हूँ, न वहाँ हूँ न यहाँ ।	८०
नाम जब गुरु का लिया, होजाओ गुरु का ध्यान कर ।	८८
नहीं सार तत्व समझाय सकी ।	११४
नाम सनेही नयनों में आजा ।	१२३
नाम सुमिर मन चतुर सुजान ।	१२६
नाम सुमिर भव तरना है, हाँ ।	१३४
नित जाग जाग कर सोगया ।	१३८
नाम अमोल रत्न है जग में ।	१४५
निज मन को सम कर लेना है ।	१४७
नहीं कोई बचा अवगुनी गुनी, ठगनी ने ठग लिये ऋषि मुनि ।	१६२
नाम सुमिर प्यारे भाई, नाम में भलाई ।	१७३
नाम सुमिर नाम सुमिर, गुरु पर बलिजाना ।	१७५
नाम सुमिर नाम सुमिर, नाम सुमिर भाई ।	१७६
नाम दान प्रदान कीजे, गुरु दीन दयाल ।	१७८



नमो सद्गुरुम सच्चिदानन्द रूपम् ।	१६०
नहीं तेरा है देश यह, मेरी प्यारी सजनी ।	१६७
नित प्रति गुरु की अस्तुति गाना ।	२१०
न मन में हो भव भय न आशा किसी की ।	२१३
न कासी न कावा न कैलास में है ।	२१७
नहीं सिर्फ शहरों में तू कूबकू है ।	२२०
निहाँ में अयाँ है, अयाँ में निहाँ है ।	२२०
नहीं कर्मी हुई नहीं ज्ञानी हुई ।	२४७
निज दरस दिखादो अपना पिया ।	२४८
नर भूला भूला क्यों भटके, ले चेत सवेरा है भाई ।	२७२
नर जनम गया बरबाद, मूरख ना चेते ।	२७३
नहीं कोई तेरा यगाना है, नहीं कोई ।	२८३
नाम दान दे अपना कीजे, गुरु निज सेवक जानी ।	२८४
नहीं मन में सोच विचार, भटके संसारी मग में ।	२९६
नर शरीर सुर को भी दुर्लभ, क्या नहीं वेद ने तुझे कहा ।	३२८
नाम रतन धन मन में रखना, मुख से कडू न कहना ।	३६२
निद्रा घोर सकल जग व्यापे, जागे कोई गुरु का प्यारा ।	३७२
नाम भजन कर नाम भजन कर, नाम भजन कुछ पावेगा ।	३७५
नहीं मैं जानता था, कौन हूँ और क्यों यहाँ आया ।	३८६
नररूपी सुगुना, सतनाम तैं बोल ।	४२३
नाम सुमिर तरजाना भव निधि, नाम सुमिर तरजाना ।	४२६
निस दिन सतनाम धुन माते ।	४३३
निष्फल सब धन्दा भजन बिना ।	४४४

प

पृथ्वी मंडल को छोड़ दिया, भक्ति बल ले आकास चढ़ा ।	६
पीलिया प्याला भक्ति का, मतवाली हुई मस्तानी बनी ।	१६



पी नाम सुधारस प्यास बुझे, आशा की अग्नी मंद पड़े ।	२८
पद कमल में सिर झुके नित, दोनों कर को जोड़कर ।	३६
पाके सुमती दुर्मती में भूल में क्यों आगया ।	४४
प्रेम में चिंता हो कैसी, प्रेम दुचिताई नहीं ।	४६
प्रेम औषधि ईर्ष्या, और द्वेष मन के रोग हैं ।	५६
प्यार कर सबसे भरम की, द्वेष दृष्टि त्यागकर ।	५६
प्रेम छाया से किया, छाया का गुन जाना नहीं ।	५६
प्राण की है मुख्यता, और प्राण सबका सार है ।	६२
पाके नर जीवन न समझा, तत्व को और सार को ।	६४
प्रेमी और प्रीतम नहीं दो, एक हैं वह एक हैं ।	६५
प्रेम का सौदा करो तुम, प्रेम के व्यवहार में ।	६७
प्रेम जिसके मन में आया, प्रेम से प्रेमी बना ।	७२
पुत्र पति सम्बन्धियों से, प्रेम का व्यवहार कर ।	७१
प्रेम दुख संकट नहीं है, प्रेम के मारग में आ ।	७२
पदम कहते हैं कमल को, कमल मन का रूप है ।	८२
प्रेम जिसके मन में है वह जगत का प्यारा बना ।	१०१
पी प्रेम पियाला मस्त भई ।	११७
प्यारी प्रेम प्यार ले सीख ।	१६४
पत्नी पतिव्रत धरम निवाह ।	१६५
पत्नी पति की ओर निहार ।	१६५
प्रेम भाव उर धार री, मेरी प्यारी सुरतिया ।	१६७
प्रेम का कर सत्कार री, मेरी सुरत सुशीला ।	१६८
प्रगटी अनहद धुन घट अन्तर ।	२१०
प्रेम नगर के डगर में सजनी, सिर के बल तू आव री ।	२२४
पृथ्वी मंडल छोड़ के सजनी, उलट के चल असमान री ।	२२४
पह्लादो प्रेम नगरिया जी ।	२४६



पनिहारी पानी भरन निकरी, पनिहारी ।	२७५
पी पी रे अभागे आय, गगन से बूँदा भरे ।	२८२
पी पीले सुधारस नाम, तेरा नर जनम बने ।	२८३
प्रेम की महिमा कहे कौन, यह है अकथ कहानी ।	२८६
प्रगटा प्रेम प्रभाव, लगन प्रीतम संग लागी ।	२९०
पी पीले अमीरस धार, गगन से भरी लगी ।	२९६
प्राणों का है प्राणपिता तू जीवन का है आधार ।	३०४
पढ़ा लिखा सोचा और समझा, कुछ भी हाथ न आया ।	३०६
प्यारी तू है प्रेम की मूरति, जग दुख से धरानी क्यों ।	३२४
प्रेम की लीला अद्भुत न्यारी, प्रेम की अकथ कहानी ।	३५७
प्रेम के नाते सबको मानूँ, प्रेम का नाता सच्चा ।	३६४
प्यारी प्यारी तू है प्यारी, प्यारी क्यों दुख पावे ।	३७६
पड़ा चरन में आय, शरण में अपने लीजे ।	३८८
प्रेम की डगर बतादो साईं, तुमसे लगी मेरी नेह हो ।	४१६
प्रेम अधिक सुखदाई साधू, प्रेम अधिक सुखदाई ।	४१६
पारख शब्द विचारे साधू, पारख शब्द विचारे ।	४२२
पीले तू प्याला मेरे प्यारे, पीले तू प्याला ।	४५४
ब	
बेकार न समय व्यतीत करो, नहीं समय मिला है गँवाने को ।	४
बन्दनम् सत ज्ञान दाता, बन्दनम् सत ज्ञान मय ।	३४
बैठकर दिन रात घट में, गुरु का सुमिरन ध्यान कर ।	४०
वन के वनवासी बने, वन वन के फल खाने लगे ।	४२
बुद्धि निश्चय आत्मिक, तुझमें अभी आई नहीं ।	४६
ब्रह्म में माया है यह, उससे अलग होती नहीं ।	६०
बुद्धि जब तुमको मिली, मिलजुल के रहना सीखलो ।	६४
बाबली चिंता है कैसी, गुरु तो तेरे पास हैं ।	१०२



बन्दनम् अद्वैत द्वैत, अभाव भाव प्रकाशनम् ।	१०५
बचन सतसंग के नाहीं सुने ।	१४६
बाबा अपनी ओर निहार ।	१५७
बंसी धुन सुन राधाप्यारी, चल चल राधास्वामी स्थान ।	१८५
बरूशो प्रेम का दाज प्रभु तुम प्राण अधारे ।	१८३
बंसी की धुन सुन कान, सुरत मेरी गगन चढ़ी ।	२०१
बरसे गगन बदरिया रसीले ।	२११
बिरह की आग कलेजे भड़की, निसदिन सोच रहे मन में री ।	२२५
बदला मन का रंग, प्रेम जब चित में बसा ।	२८६
बाहर की जब आँखें खोली, दृष्टि सृष्टि पसारा ।	३४४
बिन गुरु ज्ञान न उपजे साधु, लो गुरु की शरनाई ।	३५६
ब्रह्मरेन्द्र के पार जो पहुँचे, सो सुमेरु गिर जावे ।	३६१
बादर की छाँई यह जग है, मिथ्या भोग बिलासा ।	३६३
बीत गई मेरी उमर, मिला नहीं ठौर ठिकाना ।	३८५
बाना पहन फकीर का, तजदे वाद विवाद ।	४०३
बाँह गहे की लाज सतगुरु, बाँह गहे की लाज ।	४१५
बनत बनत बन जाई साधु, बनत बनत बन जाई ।	४१६
बरूशा गुरु ने प्रेम पियाला ।	४३६
बाँसुरी बाजी मधुवन में ।	४४२
बिन नाम कुशल नहीं जग में ।	४४६
बतादो साँई परमार्थ की बात ।	४४८
बरसे गगन रस बूँद, चुनरिया भीज रही ।	४५२
बिरह का लगा कलेजे तीर, कसक की साले उर में पीर ।	४५४
भ	
भव सागर अगम अथाह से पार, करा दिया सतगुरु दाता ने ।	८
भक्ति का तारा घट चमका, घट मेरा शोभा धाम बना ।	१८



[XXIV]

भक्ति शोभा है जीवन की, भक्ति पाकर मैं सँवर गई ।	१८
भक्ति का प्याला मुँह से लगा, सुधि तन मन धन की भूल गई ।	१६
भक्ति की शक्ति मिली, और शक्ति वाली होगई ।	४३
भाग सोया जाग उठा है, गुरु की किरपा होगई ।	५७
भाई समझ बूझ व्यवहार करो ।	१११
भव पार गई सोई पारवती ।	११६
भज भजले राधास्वामी नाम सदा ।	१२८
भाई शब्द योग तुम चित लाना ।	१४१
भाई जोति में जोति मिलाना है ।	१४२
भक्तन के लाज काज, सतगुरु जग आये ।	१७२
भक्ति साज दल साज री, मेरी सुरत पियारी ।	१६४
भूल भरम सब त्याग री, मेरी प्यारी सहेली ।	१६७
भोग वासना भूल री, अलबेली सहेली ।	१६८
भरोसा तेरा है तेरी आस मन में ।	२१४
भव जनम का हेरा फेरा है ।	२३३
भरम में कैसी फँसी महाराजा ।	२७२
भक्ति बिन यमपुर जावेगा ।	२७३
भक्ति के मारग जो आवे, भक्ति के ।	२८०
भक्ति का संदेश सुनाने साधु जग में आया है ।	३२०
भेद का ग्राहक मिले तो उसको, तत्व का भेद बताऊँ ।	३४६
भाग जगा गुरु पूरा पाया, बना आप बड़भागी ।	३७१
भक्ति दाता भक्ति दीजे, भक्त पालन द्वार ।	४०६
भजले सतगुरु नाम सदा ही, भजले सतगुरु नाम ।	४२३
भजले गुरु अविनासी प्यारे, भजले गुरु अविनासी ।	४३०
भजन बिन अवसर बीतो जात ।	४४४
भजन बिन जीवन है निष्फल ।	४५०



म

मंगलम् गुरु देव मूरति, मंगलम् पद पंकजम् ।	१
मैं किस पर गर्व गुमान करूँ, जग के सब झूठे नाते हैं ।	११
मन में जब रम गई छवि सतगुरु की, योग युक्ति से ध्यान बना ।	१५
मन में नहीं चिंता कोई रही, जब चित्त से राधास्वामी नाम लिया ।	२२
मन तजा तो अमन बना आयही, बानी तजकर निर्बानी हुआ ।	२६
सौजूद बजूद की है सूरत, मौजूद ही आप बजूद हुआ ।	३३
मंगलम् गुरु शब्द रूप, अनाम नाम प्रकाशनम् ।	३५
मैं हूँ उसका वह है मेरा, बस यही एक आस है ।	३८
मौज परखो मौज के, अनुसार सारा काम हो ।	४१
मौज से जो होने वाला है, वह होगा आप से ।	४३
मौज के आधीन जब, मन कर्म और बानी हुई ।	४४
मन में आसा गुरु की रख कर, काम में लग जाओ तुम ।	४८
मैं सुखी हूँ दुख नहीं, आता मेरे मन में कभी ।	५२
मेरे बाबा इस जनम का, काम पूरा हो गया ।	५३
मैं तो जंगल में पड़ा हूँ, और तुम बस्ती में हो ।	५३
मैं भली हूँ या बुरी हूँ, तुम से परयोजन है क्या ।	५५
मीत जब वह होगया, सबसे भिताई हो गई ।	५५
मन मगन मेरा है सुख का, चैन का भागी हुआ ।	५८
मौज के आधार रहना, मौज का लो आसरा ।	७४
मौज की आई परख अब, चित्त में दुचिताई कहाँ ।	८१
मन मगन जब होगया फिर, और उसे क्या चाहिये ।	८८
मन के मन में आने मन को, जब लगाओगे कभी ।	९६
मंगलम् गुरुदेव मूरति, मंगलम् पद पंकजम् ।	१०६
माँ माँच समझ व्याहार करो ।	११४
मैं माँगी गुप्त से नहीं बोलूँ ।	११५



मेग चंचल मनुआ काल से डर ।	१२०
मैं आप आप में खोगया ।	१३७
मेरी सुरत सियानी चेत अब ।	१५०
मेला मेल मिले का मेला ।	१५२
मैं अपने मन से हार गई ।	१५३
मुझे नाम मिला है धरनी धर ।	१५८
मुझे नाम का हीरा प्राप्त हुआ ।	१५६
मन मगन भया बकवास गया ।	१६०
मेरे प्यारे भाई ले गुरु की शरनाई ।	१६१
माई तज दे जग की आसा ।	१६१
माई सुख से जनम धिताओ ।	१६२
मन मगन भया तब क्या चाहिये ।	१६७
मंगलम् अशब्द अरूप, शब्द रूप स्वामी ।	१६८
मन के नाच सारे नाचें, ऋषि मुनि नर देवा ।	१६६
मनुआँ मतवाला बना, रह रह कर नाचे ।	१६६
मनुआँ कुछ सोच समझ, दो दिन जग जीना ।	१६६
मनुआँ तू कहा मान, चेत चेत बौरे ।	१७०
मनुआँ चित हिये धार, सतगुरु की बानी ।	१७१
मन में गुरु रूप बसा, और सब भुलाया ।	१७१
मेरा मनुआ भया रंगीला, गुरु का रंग हिये में धार ।	१७६
मैं हूँ गुरु का भोला बालक, निस दिन खेलूँ प्रेम का खेल ।	१८१
मैं तो चला गुरु के पन्थ, प्रेम परतीत से धरकर पाँव ।	१८१
मैं हूँ भोलाभाला बालक, गुरु की गोद रहूँ दिन रात ।	१८२
मनसा होगी तेरी पूरी, मन से करले गुरु का ध्यान ।	१८४
मन मतंग बलवान है तेरा, युक्ति यतन से उसको जीत ।	१८६
मारग चलो मुसाफिर सोच समझ कर, बैठे होय अकाज ।	१८८



मानुष जनम सुधार तू , मेरी सुरत सुहागिन ।	१६४
मन मत चित नहीं ठानरी, गुरु मत अनुरागी ।	१६५
मन की दुर्मति टाररी, मेरी सुरत अचेती ।	१६५
मेरी सुरत सहेली आओरी, सतगुरु के चरना ।	२०८
मैं तो होगया नाम दिवाना ।	२१०
मुझे रूप का अपने निज ज्ञान दीजे ।	२१८
मेरे अवगुणों की करो तुम न गिनती ।	२१६
मंगल मय गुरु चरन, ताप त्रय हर लेने वाले ।	२२७
मेरी रक्षा करो गुरुदेव आज ।	२३७
मुझे दीनदयाल शरन दीजे ।	२४३
मेरे घट में गुरु अविनासी बसे ।	२४४
मैं आई सतगुरु की शरनी ।	२४५
मेरे घट की क्यारी हरी रहे ।	२५३
मुझे तार दो मेरी है बारी ।	२५५
मैं तेरी न मानूँगी बात बेदरदी जा जा जा रे ।	२७४
मैं होगई गुरु सतसंगी, मैं होगई ।	२७४
मन भजले गुरु करतार को नित, मन भजले ।	२७७
मेरा तेरा कहाँ हो मेल तू भवधार बहा ।	२८१
मैंने सौदा किया न कोय, पूँजी छीन गई ।	२८५
मन में बसे गुरु रूप, दर्शन क्यों न बने ।	२८८
॥१॥ गुध पृथ करना आप, विकल मन तड़प रहा ।	२६२
॥२॥ मोहन चितचोर छबीला, अलबेला प्यारा है तू ।	३०५
॥३॥ भक्त गुरु की महिमा, गुरु का ध्यान लगाओ ।	३१०
॥४॥ पदरंगी माई, घट घट करे निवासा ।	३१६
॥५॥ क्या कहें ग्याल कर तुमसे, तुम सबके आधार ।	३२३
॥६॥ मेरा दीनो मिथ्या, तू मैं भरम विकारा ।	३२३



मैं आया हूँ ज्ञान बताने, ज्ञान महा है सुखदाई ।	३२६
मैं हूँ भूली भरमी भटकी, आय पड़ी हूँ संसारा ।	३२६
मैं कैसे करूँ भूली हूँ डगर, बहु दूर पड़ी अपने घर से ।	३३०
मैं उपदेश बताऊँ आ तू, मेरे पास फकीरा ।	३३१
मन को सोच बुद्धि को दृढ़ कर, चित से ध्यान लगाओ ।	३५२
मेरा साई है बहुरंगी, अद्भुत नाच नचावे ।	३५४
मैं सेवक का सेवक मेरा, भेद भाव नहीं कोई ।	३५४
माया ब्रह्म का भेद है न्यारा, भेदवाद है भरम कथा ।	३५५
महिमा अगम अपार अलौकिक, जो गावे सो जाने ।	३६०
मन मन्दिर में ढूँढ़िये, मूरत अगम अपार ।	३७२
मन मन्दिर में बैठकर, जब लागे गुरु का ध्यान ।	३८५
मैं पतित ठहरा तभी तूभी, पतित पावन बना ।	४०६
मेरा पल्ला न पकड़ो जी, गुरु का दास बना ।	४१७
मन क्यों सोच करे तेरे, राधास्वामी हैं रखवारे ।	४२१
मंगल गुरु के चरन कमल में, मंगल साज सजाओ ।	४२७
मेरी सुन्दर नार सुहेली, पिया को रिझाले तू ।	४२८
मिला ओम् अस्थान साधु, मिला ओम् अस्थान ।	४३०
मेरे मनमें आजा सँवलिया, मेरे मन में आजा ।	४३३
मुझे अद्भुत रूप दिखादो जी ।	४३४
मैं तो प्रेम दिवानी होगई ।	४३५
मेरे उर सतगुरु रूप बसा ।	४३७
माया से न्यारी होगई ।	४३७
मन लागत लागत लागा ।	४३८
मौज से होगा सारा काम ।	४३९
मन तू काहे दीवाना हुआ ।	४४०
मेरी भीती उमरिया भजन बिना ।	४४४



माई गुरु भक्ति चित लाना ।	४४५
मौज की रचना न्यारी है ।	४४६
माई चिन्ता चित न धार ।	४४७
मनुआ तू है बड़ा कठोर ।	४४८
मनुआ काहे मचावे रार ।	४५०
मनुआ तुझे मैं गया पहिचान ।	४५०
मनुआ तू समझ समझ पग धार ।	४५०
मनुआ तू चंचल चित दे त्याग ।	४५१
मनुआ सोच समझले नाम ।	४५३
मन का झगड़ा मेटो साधू, मन का झगड़ा मेटो ।	४५३

य

योग युक्ति भक्ति मुक्ति, सिद्धि शक्ति ज्ञान है ।	८०
यह समझ लो करनी है करनी ।	२३८
यह दुनिया गोरख धन्धा है, यह दुनिया ।	२७०
योग युक्ति से क्या फल पाया, अपना चरित सुना जोगी ।	३२८
योगी जी अब सँभलो समझो, कुछ तो साधो योग जतन ।	३६५
यह मन समझन जोग साधू, यह मन समझन जोग ।	४२१

र

राधास्वामी मत वह क्या समझे, जो निगुरा और अज्ञानी है ।	१४
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी ।	२४
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी पलछिन गाना ।	२७
राधास्वामी के चरन कमल में, बार बार परनाम करूँ ।	२७
राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी ।	३१
राधास्वामी का तार जब, जाहिर हुआ तारा बना ।	३६
राधास्वामी आये जग में, सन्त का अवतार धार ।	६१
राधास्वामी का गुनो, अन्तर में अपने आनकर ।	६१



राधास्वामी मेरी बिनती, प्रेम से सुन लीजिये ।	७६
राधास्वामी माँ हैं मेरे, राधास्वामी बाप हैं ।	८८
राधास्वामी की शरण ले, जनम को अपने बना ।	९३
राधास्वामी दया का बार न पार ।	१२२
राधास्वामी चरन पर बलिहारी ।	१२४
राधास्वामी सतगुरु हितकारी ।	१२४
राधास्वामी दया ले जा भव पार ।	१४६
रंग पाय सुरंगी हो गई ।	१५४
रह धरनी सुभिरो धरनीधर ।	१६०
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाइये ।	१७५
राजों के महाराज तुम मेरे सतगुरु स्वामी ।	१६१
राधास्वामी नाम प्रभाव री सुख जीवन मिलना ।	२०३
राधास्वामी धुन नित गाज री, अपने अन्तर घट ।	२०६
राधास्वामी धाम सिधार री, सखी सुरत सियानी ।	२०८
राधास्वामी सत चित आनन्द मूरत ।	२११
रंगदे मन की साड़ी रंगीले ।	२१२
रंगदे चूनर मोरी रंगरेजवा ।	२१२
राधास्वामी नाम की बलिहारी ।	२२७
राधास्वामी नाम की बलिहारी ।	२२८
रूप अरूप स्वरूप अनूप, कथे कोई महिमा क्या तेरी ।	३१८
रमता जोगी रम रम मन में, मेरे मेरा काम बने ।	३२५
राधास्वामी चरन कमल हर, बार बार बलि जाऊँ ।	३४६
राधास्वामी गुरु दयाल, बलि बलि जाऊँ चरन पर ।	३६८
राम ने तज्जी अयोध्या नगरी, लंक किया प्रवेशा ।	३७४
राधास्वामी नाम हित चित, प्रेम भाव से गाइये ।	३६७
राधास्वामी धनी जग में आये, धर सतगुरु अवतार ।	४०८



रटन लगी गुरु नाम की, छिन पल पल में ।	४१७
राधास्वामी मत ने दिया संदेसा, जगत द्वन्द से भागो भागो ।	४२०
राधास्वामी हैं रखवारे तेरे, राधास्वामी हैं रखवारे ।	४२६
रटन लगी मेरे हिया जिया से, पार लगादो साँवरिया ।	४३०
रमैया तेरे रूप लुभानी रे ।	४३४
रसना प्रेम स्वाद अति मीठा ।	४३४
रे मन आज सुभिर गुरु नाम ।	४४१

ल

लीला बरनत बरन न जाय ।	१३३
लेता हूँ नाम तेरा, दाता दयाल है तू ।	२६२
लिखूँ कमल से तेरी लीला, जिभ्या नाम तेरा गाऊँ ।	३६१

व

वह बच गया इस भव सागर से, सतगुरु ने जिसको तार दिया ।	१६
वह सुखी है जिसमें दुविधा, और दुश्चिन्ताई नहीं ।	३६
वह द्वैत भी है अद्वैत भी है, द्वैत अद्वैत के पार गुरु ।	३०७
वह फकीर है साँचा ।	४४१

श

श्रुति स्मृति सङ्ग्रन्थ का भेद, बता दिया सतगुरु स्वामी ने ।	२०
शान्ती सच्ची सदा, गुरु नाम के सुभिरन में है ।	३७
शील की चनर पहनली, और सुशीला होगई ।	६६
शब्द है आधार सबका, शब्द का तू ध्यान कर ।	८६
शब्द गुरु का नाम है, और शब्द गुरु का रूप है ।	१०२
शाम दम माधन करले प्यारी, अवसर अच्छा पाया आज ।	१८३
शब्द कमाई कमावे, सोई मेरा साथी ।	२८१
शब्द मा। गह शब्द सार गह, शब्द सार गह लीजे ।	३३२



शब्द राता मन भया, शब्द ही जाय समाना । ३७
शरनागत की लाज स्वामी, शरनागत की लाज । ४१५

स

सतगुरु के चरन में आन पड़ी, पद कमल की सच्ची दासी ।	१८
संसार असार में भूला है, संसार असार मैं सार नहीं ।	३०
सबमें है और सबसे न्यारा, क्या कहे कोई उसे ।	३६
सिंधु मेरी देह मन है, सीप मोती नाम है ।	४७
सहज में तुम सहज ही, रीती से गुरु का नाम लो ।	५६
सब रहो मिलजुल के, मिलजुल कर करो सब काम को ।	६२
सब जगह रहता हूँ, और सब में मेरा अस्थान है ।	६३
सबके घट घट का है बासी, घट ही उसका धाम है ।	६३
सच्ची बनकर रात दिन, तुम सतगुरु का नाम लो ।	६८
सहज में सब काम करना, सहज बिरती धार कर ।	७१
सहज बेड़ा पार है अब, नाव थी मँझधार में ।	७५
साधले तन मन को अने, मन से करले यह जतन ।	७५
सहज में भव पार करदो, नाव है मँझधार में ।	८८
सत हो सत का रूप, सतनामी हो राधास्वामी तुम ।	९१
सच्चिदानन्दनम् अखंडम्, केवलम् शुद्धम् सदा ।	९४
सतसंग की महिमा जान गया ।	११२
सजन तू क्यों नहीं सतसंग जाय ।	११२
सजन तू कर सतसंग लव लाय ।	११३
साधू कौन आया और कौन गया ।	१२१
सजन तू कल्पित फाँस फसा ।	१२१
सजन कोई साँच न बात कहे ।	१२२
मुरत घट में गगन की ओर चली ।	१२५
तुनो मेरी बिनती गुरु दाता ।	१२५
अन्त मत मारग भीना है, हाँ ।	१३४



सहज योग विधि उलटी है, हाँ ।	१३५
माधू जग है पद अद्वैत ।	१३७
सुख पाय सहज सुखरासी बनी ।	१४३
सत भाव हिये में लाना है ।	१४८
सुख को किसमें कहाँ ढूँढ़ूँ ।	१५०
सजनी प्रेम तराजू तुलजा ।	१५२
सुरत प्यारी चित में धर अनुराग ।	१६१
सजनी प्रेम के सिंधु नहीं ।	१६६
सखी लख मानुष जनम का सार ।	१६६
संगत कर गुरु की सखी घट विवेक आवे ।	१७२
सजनी चलो बाग में पी के, आई सावन की बहार ।	१८०
सब आये आपही आप, हाथ में पकड़ लिया जब मूल ।	१८५
सब हैं जाने वाले जग में, रहने वाला कोई नहीं ।	१८७
सतसंग बचन सुनाइये मेरे सतगुरु प्यारे ।	१९१
साध जनम का काज तू, प्यारी सुरत सहेली ।	१९३
सब विधि हैं अनजान, हम प्रभु सतगुरु स्वामी ।	१९४
सहज वृत्ति चित धार री, कुछ सोच सुरतिया ।	१९५
गुरत अचेती चेत री, मेरी सुरत अचेती ।	१९६
गुरत अचेती जाग री, मेरी सुरत अचेती ।	१९६
मोक्ष विवेक विचार, जो तू सच्चा ज्ञानी ।	२०१
सतगुरु परम दयाल री, कोई कदर न जाने ।	२०२
गुरत चढ़ी आकास री, अपने अन्तर घट ।	२०३
भाज के सन्त समाज री, सतगुरु हुये परगट ।	२०४
भाज मंगल साज आये, जगत गुरु दातार ।	२१३
गदा नाम से लौ लगाया करो तुम ।	२१७
गुनी मंत्र भाई कथा यह पुरानी ।	२१८
गुनी विनती नाथ मेरी, जीव सहत कलेश ।	२२३



संसार महा दुखदाई है ।	२३१
सीखो नित प्रेम का रंग ढंग ।	२४०
सतगुरु की दया करे रखवारी ।	२४३
सुरत चढ़ गई आज अटरिया जी ।	२५६
सतगुरु फकत जगत में, दुख से छुड़ाने वाले ।	२६३
सर्व समर्थ साँझ्याँ, भव द्वन्द मेटनहार ।	२६५
सिरजनहारा पालनहारा, करतारा जगदाधारा ।	२६८
सतसंगत में अमृत बरसे, सतसंगत ।	२६९
सतगुरु दीन अजब उपदेसबा ।	२७३
सत सोत से अमृत धार बहे ।	२७४
सपने की बात निराली है, सपने की ।	२७५
सहज में भव पार करदो, नाव है मँझधार में ।	२७६
सन्तों का मारग भीना है, सन्तों का ।	२८१
सब भोगें बारम्बार, अवश फल कर्म किये का ।	२८७
सबका आदि अन्त तू दाता, धन्य धन्य तेरी माया ।	३०५
सिरजनहारा पालनहारा, राखनहारा श्रुति सारा ।	३०७
संसार असार में सार नहीं, कर सार शब्द का निरवारा ।	३०८
सहज कमल में डेरा डालो, ज्योति में ज्योति मिलाओ ।	३१६
सात समुन्दर गोता मारा, सात लोक चढ़ आया ।	३१८
सुन बानी उपजे मन हानी, हानी गिलानि महानी ।	३४३
सतगुरु का सच्चा जो सेवक ज्ञानी चतुर सियाना ।	३५०
सेवक मेरा मैं सेवक का, आदि अन्त तिहुँ काला ।	३५१
साधू मुझको सबसे प्यारे, साधू मेरे सनेही ।	३५३
सेवक के सेवा बस होकर, स्वामी सेवक आप हुआ ।	३५६
साधु की संगत गुरु की सेवा, राधास्वामी दीजे ।	३५६
साध मेरे हैं रूप अनूपम, अद्भुत अधिक सुहाने ।	३५७
साध हमारी आत्मा, साध को कोई न सतावे ।	३५८



सुना पढ़ा समझा समझाया, ज्ञान हाथ नहीं आया ।	३५६
सत्यनाम का दान दिया है, गुरु को क्या मैं भेंट धरूँ ।	३६१
सत में सत्ता चित में चेतन, आनन्द है सुख धामा ।	३६२
स्वामी प्रीतम दाता दानी, गुरु तुम भूष हो मेरे ।	३६६
सिंघ रूप से बूँद जो निकला, रूप देख डरपाना ।	३८४
सखियो गाओ मंगल राम, भाग से गुरु दर्शन पाया ।	३८८
सुमिरन करो तो जीभ बन्द हो, शब्द सुनो तब कान ।	४०१
सिंघ उसका रूप है, लहर है सुर नर ऋषि मुनि ।	४०२
सोच समझ कुछ मन में प्राणी, भूला है गुरुनाम बिना रे ।	४२१
सैय्याँ बेदरदीरे मेरी सुध लेत नहीं ।	४२४
सुमिर मधुर गुरुनाम साधु, सुमिर मधुर गुरु नाम ।	४२४
सुरत प्यारी अधर धुर धाम चली ।	४२५
साधु साधन सहज करीजे ।	४२७
साधु सहज साधन कीजे ।	४२८
सुरत मेरी जागरी तज नींद विकार ।	४२६
सोच करे क्यों मन में ।	४३८
सजनी चल सतगुरु के देस ।	४३६
सतगुरु राजों के महाराजा ।	४३६
सुरत प्यारी दुख से क्यों घबराय ।	४४०
साधु मन की गति अति न्यारी ।	४४०
सुरत प्यारी चल सतगुरु के देस ।	४४१
सैय्याँ बेदरदी दरस दिखा ।	४४२
साधु गुरु का रूप लखाऊ ।	४४३
गण माया का खेल ।	४४३
गुरु प्यारी अपना आपा जान ।	४४५
गुरु प्यारी सुन सतगुरु का ज्ञान ।	४४५
गणी खट पट में उमर गई ।	४४५
गणी मजन से नाता जोड़ ।	४४६



सुरत प्यारी कर सतगुरु का ध्यान ।	४४८
सुरति प्यारी सुन अनहद धुन तान ।	४४८
सुरत प्यारी अधर की ओर चली ।	४५४

ह

हम दीन अधीन दुखी जीवों को, चिता दिया सतगुरु स्वामी ने ।	१३
है भक्ति सकाम मेरी स्वामी, यह भक्ति मेरी निष्काम बने ।	२३
हमें भी दे तार लाखों तारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ।	२६
होके गुरुमत में गुरु के, ज्ञान से ज्ञानी बना ।	५०
हम न आये आपसे, और आपसे जाते नहीं ।	५६
है यही शिचा गुरु की, गुरु का गुन गाओ सदा ।	८७
है सुफल नर जनम उसका, जो लगा है काम में ।	६७
हंस हो और हंसों के, राजा हो ऐसा जान लो ।	६६
हम आये आये आये हैं ।	१४४
हम तो साँस पवन के ठैरे, शब्द गम्भीर सुनाते हैं ।	३७३
हम बासी उस देस के, जहाँ न बुद्धि विचार ।	४००
हाथ जोड़ नवाय मस्तक, चरन कमल की बन्दना ।	४११
हम तो निस दिन गुरु रंग राते ।	४१६
हम जैसा बन आया साधु, हम जैसा बन आया ।	४२४
हमारे मन सतगुरु प्रीत बसी ।	४३६

ज्ञ

ज्ञान है गुरु ज्ञान गुरु के, नाम ही में ज्ञान है ।	७०
ज्ञान की करनी करो और, तज दो वाचक ज्ञान को ।	७०
ज्ञान दीजे ज्ञान दाता, ज्ञान के भंडार से ।	८६
ज्ञान गुरु का रूप है, इस ज्ञान का कुछ ज्ञान है ।	६५
ज्ञान का जब धन मिला है, ज्ञान के भंडार से ।	६८
ज्ञान जब पाया तो, फिर अज्ञान की क्यों चाह हो ।	१००
ज्ञान का ले आसरा, और ज्ञान का आधार हो ।	१००

~ ❧ ~

राधास्वामी दयाल की दया



शिव शब्द सागर

[प्रथम भाग]



राधास्वामी सदा सहाय



शिव शब्द सागर

मंगलम्

मंगलम् गुरुदेव मूरति, मंगलम् पद पंकजम् ।
 मंगलम् अव्यक्त अनुपम, मंगलम् भव गंजनम् ॥
 मंगलम् धुर्यद निवासी, मंगलम् सत् आसनम् ।
 मंगलम् निर्वाण सद्गति, मंगलम् जन रन्जनम् ॥
 मंगलम् ज्ञान स्वरूपम्, मंगलम् आनन्द रूप ।
 मंगलम् चैतन्य सदनम्, मंगलम् सत् सत्य भूप ॥
 मंगलम् योगीन्द्र माया, तीत मंगल दायकम् ।
 मंगलम् संसार सारम्, अद्भुतम् मुनि नायकम् ॥
 मंगलम् त्रय गुण रहित, अपरोक्ष परोक्ष निवासनम् ।
 मंगलम् त्रय काल ज्ञाता, मंगलम् भव नाशनम् ॥
 आदि कारण मूल कारण, मध्य आदि अनन्त जो ।
 मंगलम् करुणा सदन, शुभ तत्त्व परम जगत प्रभो ॥
 आप प्रगटे इस जगत में, जीव काज सुधारने ।
 शब्द नाव बनाये सुन्दर, जीव दुखिन उबारने ॥
 प्राण तन मन कर्म बानी, सबही अर्पण लीजिये ।
 मैं हूँ शरणगत तुम्हारा, दास अपना कीजिये ॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी जप सदा ।
 त्याग जग के मोह धन्धे, पाऊँ भक्ति सम्पदा ॥



राधास्वामी दयाल की दया

पहली धुन

[२]

तेरी स्तुति हित चित से गाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ।
 तेरे ध्यान में हिय जिय उमगाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥१॥
 गुरु रूप में प्रगट हुआ जग में, जीवों को चिताके किया मग में ।
 है विनय तेरा दर्शन पाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥२॥
 मंगल मय मंगल की खानी, मंगल स्वरूप मंगल दानी ।
 क्षण प्रतिक्षण मैं तुझको ध्याऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥३॥
 तू सब में है सब से न्यारा, तेरा रूप लगे अति ही प्यारा ।
 तेरा चरण छोड़ नहीं कहीं जाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥४॥
 तू निस दिन मेरे मन में बसे, अब मन नहीं माया मोह फँसे ।
 राधास्वामी नाम जप हरषाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥५॥

[३]

गुरु नाम में हिया जिया उमगाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ।
 गुरु दरस पाय मन मगनाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥१॥
 गुरु रूप में दरस दियो जग में, अपना के कियो मुझको मग में ।
 तेरा चरण छोड़ नहीं कहीं जाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥२॥
 तेरा सुभिरन ध्यान भजन नित हो, तेरा श्रवण मनन निध्यासन हो ।
 धारूँ मन में तेरा रूप सदा, धन धन धन धन राधास्वामी ॥३॥
 तू दाता दीन दयाला है, भक्तों का तू प्रतिशला है ।
 तेरे चरण में तन मन बिसराऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥४॥
 राधास्वामी ने की है दया भारी, गुरु चरण कमल पर बलिहारी
 गुरु वचन सुनू और नित गाऊँ, धन धन धन धन राधास्वामी ॥५॥



[४]

चमका घट भक्ति का तारा, धन धन धन धन राधास्वामी ।
 जीते जी हुआ भव जल पारा, धन धन धन धन राधास्वामी ॥१॥
 नहीं काम क्रोध के भय मन में, नहीं रोग सोग व्यापा तन में ।
 हुआ करम भरम से मैं न्यारा, धन धन धन धन राधास्वामी ॥२॥
 दुविधा न रही चिन्ता न रही, माया न रही ममता न रही ।
 सतगुरु मेरा हो गया रखवारा, धन धन धन धन राधास्वामी ॥३॥
 जब आँख खुली तब पहिचाना, गुरु गम गति लख मन ने माना ।
 भरमूँ नहिं सुख घर परिवारा, धन धन धन धन राधास्वामी ॥४॥
 सुरत सखी नभ चढ़ आई, गुरु मूरति ने छवि दरसाई ।
 धुरपद का खुला घट में द्वारा, धन धन धन धन राधास्वामी ॥५॥

[५]

गुरु नाम भिला मुझको प्यारा, राधास्वामी, राधास्वामी ।
 सब नामों से है यह न्यारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥१॥
 दल सहस कमल सुभिरन साधा, त्रिकुटी चढ़ ध्यान को आराधा ।
 मृन्म महासुन्न दुचिता जारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥२॥
 मुरत शब्द जोग मत अति है सुगम, कोई अधिकारी पाता है गम ।
 गुरु ने मुझे दिया मरम सारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥३॥
 जगमग जगमग ज्योती दमकी, ज्योती विचित्र घट में चमकी ।
 दूआ मगन जो देखा चमकारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥४॥
 दल सहस कमल घंटा बाजा, और शून्य में रारंग धुन गाजा ।
 त्रिकुटी में गरजा ऊँकारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥५॥
 भगवत् की थी यह त्रिलोकी, यह त्रिलोकी मैंने छोड़ी ।
 नीध पद खरत को गारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥६॥
 नीध पद नाम की धुन पाई, प्यारी धुन यह मुझको भाई ।
 नीध पद भँवर पद से पारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥७॥



सतलोक में बीन की गति प्रगटी, निरखी वहां सतगुरु की भृकुटी ।
 सतगुरु मेरे हो गये रखवारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥८॥
 लख अलख की शोभा बंधु न्यारी, गम अगम की महिमा थी प्यारी ।
 ऊँचे चढ़ हो गया भव पारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥९॥
 गुरु नाम की धुन पहचान लिया, प्रकाश में रूप को जान लिया ।
 मिल गया काल से छुटकारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥१०॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी मैं गाता हूँ ।
 मैं तरा साथ सब को तारा, राधास्वामी, राधास्वामी ॥११॥

[६]

बेकार न समय व्यतीत करो, नहीं समय मिला है गँवाने को ।
 तुम जग में आये औरों का, और अपना काम बनाने को ॥१॥
 कथनी बदनी से लाभ नहीं, करनी से चित को लगा रखना ।
 करनी में सुख आनन्द रहते, कथनी है मन बहलाने को ॥२॥
 कथनी के सूरे बहुत मिले, करनी से उनको काम नहीं ।
 उनका जीवन है बातों का, यह जन्मे बात बनाने को ॥३॥
 पुस्तक पोथी के ज्ञानी हैं, और भूटे ज्ञान के मानी हैं ।
 अनुभव नहीं नहीं रहनी बदली, भरमे आये भरमाने को ॥४॥
 जग को यह मिथ्या कहते हैं, जग की आशा में रहते हैं ।
 बातों से रूप को सिद्ध किया, पहुँचे नहीं ठौर ठिकाने को ॥५॥
 कथनी तज करनी करो भाई, करनी से बना रहनी अपनी ।
 करनी से रहनी पाओगे, करनी है रहनी पाने को ॥६॥
 राधास्वामी यूँ कहते हैं, करनी से मिलती है रहनी ।
 अभ्यास शब्द का नित करना, चित वृत्ति के ठहराने को ॥७॥

[७]

जब गुरु की दया की आस नहीं, तुझ में भक्ति विश्वास नहीं ।
 जिसने परचे पाया गुरु का, वह आस से कभी निरास नहीं ॥१॥



गुरु तेरे पितु और माता हैं, गुरु करता धरता धिधाता हैं ।
 गुरु सम्बन्धी और भ्राता हैं, क्या पल छिन तेरे पास नहीं ॥२॥
 घट तेरे गुरु का धाम बना, घट सुभिरन आठों जाम बना ।
 गुरु नाम से निज विसराम बना, गुरु काशी नहीं कैलाश नहीं ॥३॥
 भज नाम गुरु का नित प्रतिछन, कर गुरु का सुभिरन रात और दिन ।
 ले जग जस कीरति को गिन गिन, गुरु तुझमें भूमि आकाश नहीं ॥४॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी ।
 राधास्वामी राधास्वामी, जो नहीं भजता है दास नहीं ॥५॥

[८]

नहीं आपसे आये हम प्यारे, और आपसे हम जाते भी नहीं ।
 है सत चित आनन्द रूप हमारा, धोके में आते भी नहीं ॥१॥
 गुन कर्म स्वभाव ज्ञान सारे, रहते हैं अपने सहारे सब ।
 हम यह नहीं यह हमसे हैं अलग, यह हमें छोड़ जाते भी नहीं ॥२॥
 यह कर्म ज्ञान आनन्द हमारे, भोग हैं भोग से क्यों डर हो ।
 जब रूप को अपने जान लिया, धोका भव का खाते भी नहीं ॥३॥
 की साध की संगत हित चित से, तब रूप की अपने समझ आई ।
 इस रूप में स्थिरताई है, चिन्ता चित में लाते भी नहीं ॥४॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी ।
 इस राग को छोड़ राग दूसरा, भूल के हम गाते भी नहीं ॥५॥

[९]

जो आते हैं वह जाते हैं, जो गये लौट नहीं आते हैं ।
 मैं किससे पूछूँ पथिक राह में, कैसे सुख दुख पाते हैं ॥१॥
 प्रथम आये हाथ न था कुछ भी, जब गये तो हाथ नहीं कुछ था ।
 क्यों जाते समय है दुख इनको, कारन नहीं कोई बताते हैं ॥२॥
 मग मान लोभ में भूल गये, और भ्रम हिडोले भूल गये ।
 पण अहंकार से फूल गये, और अन्त काल पछताते हैं ॥३॥



जो आये हैं वह जायेंगे, जो मिले बिछुड़ना है उनको ।
 जो समझ गये वह भूल के भी, चिन्ता नहीं मन में लाते हैं ॥४॥
 संसार नहीं स्थिर भाई, है इसमें नहीं स्थिरताई ।
 ज्ञानी इस दशा को समझ गये, इसमें नहीं चित को लगाते हैं ॥५॥
 जो करना धरना है तुम को, वह करो और अपनी राह लगी ।
 डरते हो काल से माया से, यह जीव को फाँस फँसाते हैं ॥६॥
 यह जान लो कोई नहीं अपना, संसार रैन का सपना है ।
 सोचो विवेक से निज मन में, भूटे सब रिस्ते नाते हैं ॥७॥
 दिन ढला रात की वारी है, कर सोने की अब तय्यारी ।
 आयु गई नाम जो लेते हैं, भव सागर से तर जाते हैं ॥८॥
 सत संगत में सतगुरु के जा, कुछ दिनों शब्द का साधन कर ।
 राधास्वामी की कृपा से, सेवक नहीं धोखा खाते हैं ॥९॥

[१०]

पृथ्वी मंडल को छोड़ दिया, भक्ति बल ले आकास चढ़ा ।
 जब ब्रह्मरेन्द्र पर चढ़ आया, फिर सिखर मेरु कैलास चढ़ा ॥१॥
 माया ममता घट से भागी, सोई हुई सुरत जागी ।
 भिट गया अंधेरा अविद्या का, फिर विद्या के प्रकाश चढ़ा ॥२॥
 चढ़ने चलने की तय्यारी की, सतगुरु ने मेरी रखवारी की ।
 दृढ़ता से उदान का आसरा ले, घट गगन में साँसों साँस चढ़ा ॥३॥
 सुन्न महासुन्न के पार गया, फिर भँवर की खिड़की जाके घुसा ।
 सतपद में सतगुरु का दर्शन, ले मन में सच्ची आस चढ़ा ॥४॥
 लख अलख अगम की गम पाई, ली राधास्वामी की शरनाई ।
 यूँ ऊँचा शब्द का डोर पकड़, राधास्वामी का दास चढ़ा ॥५॥

[११]

आसा इस भव के कारागार में, सचमुच जम की फाँसी है ।
 आसा का बन्धन काटे वह, गुरुमुख है गुरु विश्वासी है ॥१॥



आसा वाले को चैन कहाँ, आसा के साथ है त्रास धनी ।
 मंगल आनन्द का भागी वह, संसार से जिसको उदासी है ॥२॥
 जैसी आसा वैसी बासा, जब लग आसा तब लग बासा ।
 जो आसा का बन्धन काटे, सत मत का वह अभ्यासी है ॥३॥
 आसा है जन्म मरन प्यारे, आसा तज दे फिर मुक्ति है ।
 आसा को सोच विचार ले तू, जड़ चेतन ग्रन्थि की गांसी है ॥४॥
 आसा में दुविधा दुचिताई, आसा में भय लज्जा रहते ।
 यह तीनों पाप अवस्था हैं, तज इनको फिर सुखरासी है ॥५॥
 आसा त्रिगुण की खानी है, यह सत रज तम की है रस्सी ।
 रज ब्रह्मा सत है विष्णु बली, तम शिव शम्भू कैलाशी है ॥६॥
 आशा है काम क्रोध लालच, आसा मद मोह द्वेष की जड़ ।
 क्यों आस में पड़ के निराश हुआ, तेरा रूप अजर अधिनाशी है ॥७॥
 सतसंगत में सतगुरु के जा, सुन हित चित से गुरु की बानी ।
 बानी सुन सुन निर्बानी हो, गुरु बानी सर्व प्रकाशी है ॥८॥
 राधास्वामी ने समझाया, घट ही में है तेरे सब कुछ ।
 घट में धँस आपा अपना परख, जल में क्यों मीन पियासी है ॥९॥

[१२]

अद्वैत द्वैत के फेर पड़ा, अभिमानी एक का दो का है ।
 मैं सच सच तुझसे कहता हूँ, यह भूल भरम और धोका है ॥१॥
 नहीं एक न दो नहीं तीन चार, नहीं सौ पचास नहीं सहस्रार ।
 तू जैसा चाहे माना कर, इस मान से किसने रोका है ॥२॥
 जैसा है तैसा समझ उसे, नहीं वह ऐसा नहीं वह वैसा ।
 नहीं एति न नेति न सत न असत, न असोक सोक नहीं सोका है ॥३॥
 यातों के फेर पड़े ज्ञानी, अभिमानी मानी गुमानी बने ।
 वह ज्ञान नहीं अज्ञान नहीं, नहीं बन्द न खुला झरोका है ॥४॥
 ना कुछ दिन कर संगत गुरु की, तब सार तत्व को जानेगा ।



किसने उसे जाना बूझा है, और जान बूझकर ठोका है ॥५॥
 सब कुछ है और कुछ भी नहीं, लख अलख अगम गम है दोनों ।
 वह वार न पार न आदि अंत, नहीं सिरा है और न नूका है ॥६॥
 राधास्वामी की शरन में आ, तब अनुभव से कुछ जानेगा ।
 वह रुद्र वसु आदित्य नहीं, नहीं नीर पवन का झोंका है ॥७॥

[१३]

भवसागर अगम अथाह से पार, करा दिया सतगुरु दाता ने ।
 मुझ दीन अधीन को ठौर ठिकाने, लगा दिया सतगुरु दाता ने ॥१॥
 संसार महा दुखदाई था, नहीं अपना कोई सहाई था ।
 निज दया से मेरा धिगड़ा काम, बना दिया सतगुरु दाता ने ॥२॥
 मन चंचल था अज्ञानी था, अभिमानी मानी गुमानी था ।
 सुरत शब्द योग विधि से निश्चल, करवा दिया सतगुरु दाता ने ॥३॥
 घट अघट का भेद दिया मुझको, चरणों में अपने लिया मुझको ।
 सतसग के अमृत वचन सुना, के चिता दिया सतगुरु दाता ने ॥४॥
 मैं अब चरणों की बनी दासी, सुख पाकर हो गई सुखरासी ।
 राधास्वामी धाम का देके पता, पहुँचा दिया सतगुरु दाता ने ॥५॥

[१४]

किस मुख से तेरी महिमा गाऊँ, तू सत्त पुरुष अविनासी है ।
 चेतन घन अमल विमल निर्मल, सत सदन परम सुखरासी है ॥१॥
 कोई अगुन कहे कोई सगुन कहे, कोई निराकार साकार कहे ।
 तू सब कुछ है और कुछ भी नहीं, धुरपद धुरधाम निवासी है ॥२॥
 नहीं मन ने थाह कभी पाई, नहीं बुद्धि में आई चतुराई ।
 चित चितन कैसे करे तेरा, तू द्वैत अद्वैत प्रकाशी है ॥३॥
 मन बना बिहंगम मीन मकर, मरकट बनकर कूदा अन्दर ।
 चींटी की चाल चला घट में, कह उठा तू अगम उदासी है ॥४॥



राधास्वामी रूप में प्रकट हुआ, दर्शन देकर कृतार्थ किया ।
निज शब्द से अपना भेद दिया, घट अघट का सत्य निवासी है ॥५॥

[१५]

जीते जी मुक्ति की पदवी को, दिलवा दिया राधास्वामी ने ।
मद मोह मान का महा जाल, कटवा दिया राधास्वामी ने ॥१॥
बहकी भरमी भूली भटकी, भिभकी ठिठकी अटकी लटकी ।
इन संस्कारों की गुत्थी को, सुलझा दिया राधास्वामी ने ॥२॥
निज घट का मारग दिखलाया, सत सार शब्द मत दरसाया ।
बाहर मुखता के अवगुण को, छुड़वा दिया राधास्वामी ने ॥३॥
जब सहस्रकमल दल चढ़ आई, शिवनेत्र की ज्योती झलकाई ।
घंटा और शंख के काजों को, बजवा दिया राधास्वामी ने ॥४॥
त्रिकुटी में ऊँ राग गाया, मृदंग की धुन को लखवाया ।
ऋग्वेद की ऋचा की बाणी को, सुनवा दिया राधास्वामी ने ॥५॥
एक अक्षर मंत्र का जाप किया, तब शून्य में सहज समाध लिया ।
अद्भुत निर्मल शशि मस्तक पर, प्रकटा दिया राधास्वामी ने ॥६॥
सतगुरु ने मुझको तार दिया, सहजे भवसागर पार किया ।
पद कमल की शरण दया से दिया, अपना लिया राधास्वामी ने ॥७॥

[१६]

किस भर्म में भूला है भाई, जग चिड़िया रैन बसेरा है ।
यहां कोई किसी का कभी नहीं, भूठा सब मेरा तेरा है ॥१॥
तू भूल भर्म में भूला है, अज्ञान हिंडोले भूला है ।
क्यों मान गुमान में फूला है, ले चेत चेत का बेरा है ॥२॥
भूठा रिश्ता और नाता है, कोई किसी के काम न आता है ।
जो आता है वह जाता है, यह काल का हेरा फेरा है ॥३॥
भय दारुण अति दुखदाई है, जीवन में बड़ी कठिनाई है ।
जो है वह अंगमापाई है, तू संभल जा अभी सबेरा है ॥४॥



भव सागर से तारा गुरु ने, दे प्रेम किया प्यारा गुरु ने ।
राधास्वामी अमृत नाम पिया, माया ने उसे नहीं घेरा है ॥१॥

[१७]

दुखियों दीनों पर दया हुई, भव पार किया गुरु प्यारे ने ।
निर्धन को भक्ति योग युक्ति का, दान दिया गुरु प्यारे ने ॥१॥
मद मान ने अति भरमाया था, माया के फाँस फँसाया था ।
अब घट में जलाया अपनी मेहर से, ज्ञान दिया गुरु प्यारे ने ॥२॥
योनी के हिंडोले भूले थे, अपने आपे को भूले थे ।
चित देके चिताया चिताउनी दे, अपना कर लिया गुरु प्यारे ने ॥३॥
चौरासी का खटका भिटा सारा, गुरु दया हुई अपरमपारा ।
घट फटगया था दे भक्ति का टांका, अब तो सिया गुरु प्यारे ने ॥४॥
सुखमन में ज्योति जली जगमग, सुरत शब्द से प्रगट हुआ घट जग ।
राधास्वामी नाम दे अब तो किया, उत्साह दिया गुरु प्यारे ने ॥५॥

[१८]

गुरु दाता दया की दृष्टि करो, जग में नहीं कोई हमारा है ।
स्वारथ के सम्बन्धी सब हैं, अब आपका एक सहारा है ॥१॥
तन विकल तो मन अति चंचल है, नस नाड़ियों तक में हलचल है ।
शान्ति का कोसों पता नहीं, यूँ काल करम ने मारा है ॥२॥
नहीं योग युक्ति का कोई यतन, नहीं ज्ञान ध्यान का है साधन ।
दुविधा दुचिताई ने घेर लिया, इस घेर का वार न पारा है ॥३॥
आपत और विपत का सामना है, क्योंकर इस मन की थामना है ।
इस बात का पूरा निश्चय हुआ, दुखदाई महा संसारा है ॥४॥
क्या कहूँ कहाँ आऊँ जाऊँ, किस विधि शान्ति की दशा पाऊँ ।
मेरे गले पड़ी दुख की फांसी, यह काल बड़ा हत्यारा है ॥५॥
सत संगत के नहीं वचन सुने, सुनकर भी नहीं होता है मनन ।
निष्फल जाता है मेरा जनम, मन द्वारा द्वारा द्वारा है ॥६॥



अब आपके चरणों में आया, मुझको अपनी दो शरनाई ।
राधास्वामी नाम का दान मिले, यह नाम मुझे अति प्यारा है ॥७॥

[१६]

मैं किस पर गर्व गुमान करूँ, जग के सब झूठे नाते हैं ।
अपना नहीं कोई भी सम्बन्धी, झूठे सब भाव बताते हैं ॥१॥
सुन नर मुनि की यह रीती, स्वार्थ वश करते हैं प्रीति ।
जब स्वार्थ सिद्ध नहीं होता, तब कोई न आते जाते हैं ॥२॥
सब देख लिया सब जान लिया, नहीं संशय एक रहा मन में ।
अज्ञान भ्रम के फन्दे में, भ्रमे हुए आके फँसाते हैं ॥३॥
है भूल भुलैयां संसारा, भूला भूला भूला निसदिन ।
इस भूल में कौन सहाई हो, भूले हुए को और भुलाते हैं ॥४॥
कुमती ने मार दिया मन को, सुमती के पन्थ से दूर है वह ।
दुविधा दुचिता संशय तीनों, सौ सौ सौ नाच नचाते हैं ॥५॥
छाया के पीछे दौड़ चुका, माया के पीछे दौड़ चुका ।
दोनों में सार नहीं किंचित, कब किसके हाथ यह आते हैं ॥६॥
निज दया करो राधास्वामी, परपंच से मुझको मुक्ति मिले ।
मैं हारा हारा हूँ सब विधि, भव भय अब अधिक डराते हैं ॥७॥

[२०]

क्यों भ्रम में भूला है प्यारे, इस जगत में सुख विसराम कहां ।
जो आये हैं वह जायेंगे, रहने का नहीं हैं काम यहां ॥१॥
जो गये हैं उनका किसे पता, यह भेद मिला नहीं किसी को भी ।
तुम जानते हो तो बताओ जी, सीता है कहां और राम कहां ॥२॥
झूठे हैं नाम निशां झूठे, जग झूठा सब कुछ झूठे हैं ।
इस झूठ के गोरखधन्धे में, सत सार का सच्चा नाम कहां ॥३॥
झूठा सब सैर तमाशा है, झूठा आनन्द हुलासा है ।
जग जल के बीच बतासा है, गल गया तो धूम और धाम कहां ॥४॥



ले नाम गुरु का तू भाई, संसार है यह अगमापाई ।
राधास्वामी की ले शरनाई, क्यों भटका आठों याम यहाँ ॥५॥

[२१]

दुखदाई जगत में आन फँसा, भव सागर नाव न बेरा है ।
मंझधार में टूटी नाव पड़ी, सब दायें बायें अँधेरा है ॥१॥
साथी संगी सोने वाले, अति घोर नींद में मतवाले ।
है भँवर का खटका आठ पहर, दुख आपत विपत्ति ने घेरा है ॥२॥
चित्त चैन न मन को शान्ती है, व्यापी आलस और भ्रान्ती है ।
खेवट भी पास नहीं कोई, लहरों का हेरा फेरा है ॥३॥
नभ मंडल काली घटा छाई, बादल बरसे रिम भिम आई ।
क्या करूँ उपाय नहीं मुझे, मन में अब त्रास घनेरा है ॥४॥
राधास्वामी दया की दृष्टि करो, यह संकट आपत्ति विपत्ति हरो ।
अब आस तुम्हारी है केवल, हो मेहर मेहर का बेरा है ॥५॥

[२२]

तू घट का मेरे बासी बने, तेरा ही मन में ध्यान रहे ।
तेरा ही सुमिरन भजन हो नित, तेरा ही नित अनुमान रहे ॥१॥
तू कौन है क्या है क्योंकर है, इसकी नहीं मुझे समझ आई ।
आँखों को मिले दर्शन तेरा, बस यही बात परमान रहे ॥२॥
अव्यापक सर्वव्यापक है, गुन अगुन सगुन सब कुछ भी है ।
इन से नहीं काम मुझे किंचित, तेरा मन में अस्थान रहे ॥३॥
सामान्य की मुझको चाह नहीं, चेतन विशेष की महिमा है ।
चेतन विशेष की लगन लगे, और उसी का निस दिन ध्यान रहे ॥४॥
मैं रूप का तेरे दरस करूँ, पद कमल का कर से स्पर्श करूँ ।
सुख मंगल हर्ष हुलास लहूँ, तेरे शब्द की ओर में कान रहे ॥५॥
तू जैसा है मैं वैसा बनूँ, भृङ्गी और कीट की देख दशा ।
मेरा भाव अभाव स्वभाव सभी, तेरी निज लीला के समान रहे ॥६॥



रसना से कहूँ राधास्वामी, कानों से सुनूँ राधास्वामी ।
हृदय से भजूँ राधास्वामी, यह नाम जान और प्रान रहे ॥७॥

[२३]

हम दीन अधीन दुखी जीवों को, चिता दिया सतगुरु स्वामी ने ।
भव सिंध में डूबने वाले को, तैरा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥१॥
मद मोह माया के मारे थे, दुख आपत्ति से दुखियारे थे ।
कर दया दृष्टि छुटकारा इन से, दिला दिया सतगुरु स्वामी ने ॥२॥
अज्ञान ने भरमाया था हमें, और करम ने बहकाया था हमें ।
सत संगत के बचन से भरम, मिटा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥३॥
पहले नहीं गुरु गम को जाना, जब आँख खुली तब पहचाना ।
निज रूप का दर्शन अपने घट में, करा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥४॥
तज पिंड को पहुँचा ब्रह्मांडा, आगे बढ़ आया सच खंडा ।
सतधाम से सत का विमल स्वरूप, दिखा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥५॥
लख अलख अगम की गम पाई, ली राधास्वामी पद की शरनाई ।
धुर धाम संत विसराम लोक, पहुँचा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥६॥
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी ।
राधास्वामी के नाम का मरम, जता दिया सतगुरु स्वामी ने ॥७॥

[२४]

तू सत है सत की दे सत्ता, सत की सत्ता से काम बने ।
तू चित है चित का चिंतन दे, लय चिंतन से विश्राम बने ॥१॥
तू शान्ति है दे शांति को, हिया जिया में कुछ शान्ति मिले ।
दुख चिता से छुटकारा मिले, जीवन मेरा निष्काम बने ॥२॥
तू अर्थ है अर्थ मिले मुझको, तू धर्म है धर्म मिले मुझको ।
तू मुक्त है मुझको मुक्ति दे, सेवक का पूरन काम बने ॥३॥
दे नाम हुआ नामी जब तू, दे रूप रूप जब धारा है ।
जो नाम रूप नहीं कोई तेरा, तो यह भी अरूप अनाम बने ॥४॥



राधास्वामी तू कहलाया, राधास्वामी पद दरसाया ।
इस नाम का सुमिरन छिन पल हो, यह सुमिरन आठों याम बने ॥५॥

[२५]

राधास्वामी मत वह क्या समझे, जो निगुरा और अज्ञानी है ।
सत तत्व सार वह क्या जाने, गुरुमत नहीं नहीं गुरु ज्ञानी है ॥१॥
कोई लोक लाज में अटका है, कोई रीति रसम में लटका है ।
अज्ञान से उसने पकड़ी है, जो लोक में लीक पुरानी है ॥२॥
बे ठौर ठिकाने की भक्ति, क्या देनी उसे सिद्धि शक्ति ।
नहीं खभी योग यतन युक्ति, निष्फल सब मानी गुमानी है ॥३॥
नहीं नाम की महिमा को जाना, नहीं नामी पद को पहिचाना ।
तोते की रटन से अटकाना, सब भूल भ्रम भरमानी है ॥४॥
जप तप में आयु गई सारी, रहा संसारी का संसारी ।
अपना भी नहीं वह हितकारी, यह लाभ नहीं है हानी हैं ॥५॥
नीचे नहीं नाम कोई पावे, ऊँचे चढ़ चौथा पद पावे ।
तब नाम राग की धुन गावे, वह पृथ्वी नहीं असमानी हैं ॥६॥
नर देह की गति मति को जानो, जो कहता हूँ उसको पहचानो ।
निज अनुभव से अपने मानो, नहीं भर्म के फाँस फँसाना है ॥७॥
हैं कर्म इन्द्री नीचे भाई, ऊँचे ज्ञान इन्द्री जगा पाई ।
मन बुद्धि से जब ऊँचे जाई, इस विधि तुमको समझाना है ॥८॥
तीनों से ऊँचे सुरत रहे, ऊँचे चढ़ कर वह शब्द गहे ।
इस शब्द में नाम का रूप लहे, यह नाम महा सुखदानी हैं ॥९॥
नीचे कहाँ नाम का है बासा, चौथे पद बांध उसकी आशा ।
त्रिलोक में काल का हैं फाँसा, यह मर्म तुम्हे जतलानी हैं ॥१०॥
कर शब्द सुरत का तू साधन, तब हाथ आयेगा नाम रतन ।
राधास्वामी योग का सीख जतन, जो यह नहिं भर्म कहानी है ॥११॥





[२६]

मन में जब रम गई छवि सतगुरु की, योग युक्ति से ध्यान बना ।
 नर जनम सुफल भया सहज रीति से, चित आनन्द की खान बना ॥१॥
 घट प्रकट विवेक की गति उमगी, साधन सम्पन्न हुआ जीवन ।
 इस साधन के प्रताप महातम से, अनुभव और ज्ञान बना ॥२॥
 बन में जाकर क्या लेता था, क्या लाभ था धूल उड़ाने में ।
 मेरी दृष्टि में घर परबत और बन, सब ही एक समान बना ॥३॥
 रवि चन्द्र की कला प्रभा प्रकटी, जगमग जगमग हुई उजियारी ।
 उस ज्योति की ज्योति में रूपलखा, यूँ मेरा आत्मज्ञान बना ॥४॥
 नहीं काल कर्म व्यापे मुझको, नहीं चिन्ता दुविधा का भय है ।
 सुध बुध भूली है तन मन की, ममता तज गुरु अभिमान बना ॥५॥
 व्यौहार में परमार्थ आया, दोनों में भेद नहीं किंचित ।
 समदृष्टि समज्ञानी हो, समता से अब कल्याण बना ॥६॥
 राधास्वामी की है दया भारी, तारा तारा तारा मुझको ।
 भवसागर पार हुआ जीते जी, सत पद में अस्थान बना ॥७॥

[२७]

चेला नहीं एक मिला कोई, जो मिला वही गुरु ज्ञानी मिला ।
 जोगी न मिला जंगम न मिला, तपसी न मिला नहीं ध्यानी मिला ॥१॥
 गुरु कपटी चेला पाखंडी, कोई नियमी धर्मी त्रिदंडी ।
 विश्वास के रूप में बनखंडी, अभिमानी मानी गुमानी मिला ॥२॥
 सिख साखा बहु किया करता है, क्यों मोह माया में मरता है ।
 दुख भार सीस पर धरता है, अमृत तज तुझको पानी मिला ॥३॥
 ले चेत चेत चेत का बेरा है, तू चेत ले अभी सवेरा है ।
 आगे फिर घोर अंधेरा है, नहीं चेता तो लाज लजानी मिला ॥४॥
 सतगुरु ने तेरी भलाई की, पद कमल की शरण दया से दी ।
 गुन राधास्वामी के गाओ, तब कहूँगा ठौर ठिकाना मिला ॥५॥



[२८]

गुरुभक्ति के पंथ में दया से मुझको, लगा दिया सतगुरु प्यारे ने ।
मेरी पकड़ के बांह को प्रेमनगर, पहुँचा दिया सतगुरु प्यारे ने ॥१॥
तीरथ देखे मूरत देखे, इन से क्या सार हाथ आता ।
सतसंग में सारे तत्व का मरम, जता दिया सतगुरु प्यारे ने ॥२॥
बाहर मुखता के जाल फँसा, तरपा तरसा बेचैन हुआ ।
अन्तर साधन की विधि सिखलाके, चिता दिया सतगुरु प्यारे ने ॥३॥
मैं कौन हूँ क्या हूँ कैसा हूँ, यह बात न समझा था अब तक ।
घट की गुत्थी उलझी थी बहुत, सुलझा दिया सतगुरु प्यारे ने ॥४॥
शबरी को राम ने तारा था, मीरा को श्याम ने तारा था ।
मैं तो राधास्वामी के चरण पड़ा, तरवा दिया सतगुरु प्यारे ने ॥५॥

[२९]

वह बच गया इस भवसागर से, सतगुरु ने जिसको तार दिया ।
जिसे गुरु की संगत नहीं मिली, उसे काल करम ने मार दिया ॥१॥
हुआ भाग उदय मेरा सजनी, मैं आ गया सतगुरु की शरनी ।
संतसंग के वचन अमोल सुना कर, तत्व के सार का सार दिया ॥२॥
माया का जाल बहुत भारी, जो फँस गया हो रहा संसारी ।
शुभ अशुभ करम के बदले में, यमराज ने कारागार दिया ॥३॥
त्रयताप महा है दुखदाई, मुक्ति मिलनी है कठिनाई ।
जो भरमा भूला जग में उसके, सर पर दुख का भार दिया ॥४॥
राधास्वामी परम संत आये, निज दया से मुझको अपनाये ।
हिये में था दबी प्रेम अग्नि, कृपा से उसे उद्गार दिया ॥५॥

[३०]

तुम व्यापक चर और अचर में हो, किस जगह ढूँढ़ने जाऊँ मैं ।
सब नाम और रूप तुम्हारे हैं, किस नाम रूप को ध्याऊँ मैं ॥१॥
तुम शब्द स्पर्श रूप में हो, तुम रस में हो तुम गंध में हो ।



तुम देश में काल में वस्तु में हो, तुमको क्या कहकर गाऊँ मैं ॥२॥
 यह जीव जन्तु सत्ता हैं तुम्हारे, लोक परलोक सभी तुम हो ।
 फिर किसको मन से छोड़ूँ मैं, और किसको मन से पाऊँ मैं ॥३॥
 अज्ञान में हो तुम ज्ञान में हो, विद्या में अविद्या में भी हो ।
 किसको मैं मुँह से बुरा कहूँ, और अच्छा किसको बताऊँ मैं ॥४॥
 कहने वाले में रहते हो, सुनने वाले में बसते हो ।
 किससे मैं तुम्हारी दूँ उपमा, किस किस का भेद सुनाऊँ मैं ॥५॥
 आकाश पवन अग्नि जल पृथ्वी, रूप तुम्हारे हैं स्वामी ।
 स्वामी मैं सेवक में तुम हो, किस विधि से तुम्हें मनाऊँ मैं ॥६॥
 राधास्वामी का रूप लखा, चेतन विशेष का दरस मिला ।
 सामान्य को तज कर इस विशेष से, सच्चा नेह लगाऊँ मैं ॥७॥

[३१]

तू जान अजान से न्यारा है, तू जान नहीं अनजान नहीं ।
 किसने तुझे जाना पहचाना, तू ज्ञान नहीं अनुमान नहीं ॥१॥
 इस बानी ने नहीं गम पाई, नहीं बुद्धि में आई चतुराई ।
 मन अमन बना घबराया हुआ, तू मान नहीं अभिमान नहीं ॥२॥
 अनजान को क्या कोई जानेगा, अदृष्ट को क्या पहचानेगा ।
 जोगी ज्ञानी थक कर बैठे, उन्हें जान नहीं पहचान नहीं ॥३॥
 मग्न कहने को तो कहते हैं, कहकर संशय में रहते हैं ।
 इन कहने सुनने वालों में, अनुमान नहीं परमान नहीं ॥४॥
 फहाँ जाकर कोई तुझे पावे, कैसे तू किसी के हाथ आवे ।
 तेरा निश्चित कोई इस जग में है, ठिकान नहीं अस्थान नहीं ॥५॥
 नहीं स्वर्ग न नर्क का वासी तू, नहीं दुखरासी नहीं सुखरासी ।
 निगम अगम को मथकर देखा, तू गान नहीं स्वर तान नहीं ॥६॥
 गायाम्त्री सतगुरु आये, सुरत शब्द भेद कहकर गाये ।
 शिव हुआ गमाहित तब मेरा, इस समता का उत्थान नहीं ॥७॥



[३२]

भक्ति का तारा घट चमका, घट मेरा शोभा धाम बना ।
 मानुष जीवन का फल पाया, हिया जिया का सुख विश्राम बना ॥१॥
 सत संगत में गुरु के आया, गुरु नाम दान ले हरपाया ।
 गई काल करम की ठकुराई, बिगड़ा हुआ सारा काम बना ॥२॥
 क्रान्ती आई शान्ती आई, और चित में निर्भ्रान्ती आई ।
 गति नीर कमल की मुझे भाई, निर्बानी हुआ निष्काम बना ॥३॥
 गुरु नाम का तार बँधा घट में, नहीं पड़ता जग की खटपट में ।
 क्यों अटकूँ माया की अटसट में, जब सच्चा सहाई नाम बना ॥४॥
 राधास्वामी ने तारा है, राधास्वामी ने बिगड़ी संवारा है ।
 पछताता नहीं न लजाता हूँ, सुख जीवन आठों याम बना ॥५॥

[३३]

भक्ति शोभा है जीवन की, भक्ति पाकर मैं संवर गई ।
 बिगड़ी बहकी भरमी पहले, अब दया से गुरु के सुधर गई ॥१॥
 मद मोह लोभ और क्रोध गये, निर्मल मन सहज हुआ मेरा ।
 कोई कुटिल कुचाल कुरूप कहे, मैं तो अब सबधिधि निखर गई ॥२॥
 संसार में रहती हूँ सजनी, संसार हुआ अब सुखदाई ।
 माया और मोह का भेद मिटा, मैं इधर से लौट के उधर गई ॥३॥
 घट के अन्तर बैठक पाई, हुई सहज आप अब कठिनाई ।
 अन्तर मुख जीवन मुझे भिला, माया की रसरी बिखर गई ॥४॥
 राधास्वामी ने की है दया भारी, दुख संकट दूर हुये सारे ।
 दुविधा ने संग तजा मेरा, अब सत्त लोक के डगर गई ॥५॥

[३४]

सतगुरु के चरन में आन पड़ी, पद कमल की सच्ची दासी बनी ।
 दुख विपत कलेश कटे मन के, सुख सहज भिला सुखरासी बनी ॥१॥
 अज्ञान अविद्या दूर हुये, अभिमान मोह मद चूर हुये ।



माया ममता सब दूर हुये, सत चित आनन्द प्रकाशी बनी ॥२॥
 फँस भूल भुलैय्याँ भरमाई, और भरम में आकर घबराई ।
 गुरु की संगत हुई सुखदाई, मैं मीन प्रेम जल प्यासी बनी ॥३॥
 खटका मिटा मरने जीने का, भय नहीं सिर भार के धरने का ।
 अब ध्यान है तारने तरने का, यह समझ गई अधिनासी बनी ॥४॥
 तारा चमका घट भक्ति का, राधास्वामी योग की युक्ति का ।
 संशय नहीं जीवन मुक्ति का, धुरं पद सत धाम निवासी बनी ॥५॥

[३५]

पीलिया पियाला भक्ति का, मतवाली हुई मस्तानी बनी ।
 आनन्द मिला जब सूरत को, हरषानी हुई मगनानी बनी ॥१॥
 क्या प्रेम की महिमा कहे कोई, मन बानी शक्ति नहीं पाते ।
 बुद्धि निबुद्धि है बनी चर्कित, वह असुध तो यह निर्बानी बनी ॥२॥
 यह प्रेम कठिन है और सुगम, जो अरपे सीस सुगम उसको ।
 दुविधा दुचित्ताई की पहुँच नहीं, वह अबल तो यह अज्ञानी बनी ॥३॥
 घटता नहीं दिन दिन बढ़ता है, है प्रेम में ब्रह्म का रूप सदा ।
 सिद्धि न शक्ति से हाथ लगे, वह भूली तो यह भरमानी बनी ॥४॥
 राधास्वामी ने ज्ञान दिया, सतगुरु पद का अभिमान दिया ।
 माया ममता थककर भागी, वह ठिठकी तो यह घबरानी बनी ॥५॥

[३६]

भक्ति का प्याला मुँह से लगा, सुध तन मन धन की भूल गई ।
 आनन्द मिला मतवाली बनी, सुख पाकर हर्ष से फूल गई ॥१॥
 भाँषों की पुतली का पाट बना, पलकों की चिक को नीचे गिरा ।
 पिया प्यारे को प्यार से अंग लगा, अब प्रेम हिंडोले भूल गई ॥२॥
 यह प्रेम महा सुखदाई है, यह प्रेम ही सच्चा सहाई है ।
 भगवन् ली गुरु से लगाई है, उसकी बिपता और खल गई ॥३॥
 जी अपने पिया को मनाती है, वह प्रेम का गाना गाती है ।



हँसती है और मुसकाती है, माया बैरन निर्मूल गई ॥४॥
 राधास्वामी दया से दर्शन दो, मुझको भक्ति का अब धन दो ।
 तब कहेगी वह संसारी चाह, कारन और सूक्ष्म अस्थूल गई ॥५॥

[३७]

डंके की चोट सुनी घट में, मेरी सुरत सखी मतवारी बनी ।
 रन भूमी में काल कर्म के पग धर, लड़ने की अधिकारी बनी ॥१॥
 जो धनुष बान से लड़ते हैं, वह सच्चे वीर कहाँ सजनी ।
 इसलिये सुरत मेरी भक्ति पंथ, में आकर परउपकारी बनी ॥२॥
 मद मोह मान को विजय किया, माया ठगनी को मार दिया ।
 मन में नहीं किंचित डाह द्वेष, सतगुरु प्यारे की प्यारी बनी ॥३॥
 गढ़ अहंकार का तोड़ दिया, और कर्म का मटका फोड़ दिया ।
 सतगुरु से नाता जोड़ दिया, नहीं भूले भी संसारी बनी ॥४॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी नित गाती हूँ ।
 अब राधास्वामी नाम दान की, सच्ची आज भिकारी बनी ॥५॥

[३८]

श्रुति स्मृति सद्ग्रन्थ का भेद, बता दिया सतगुरु स्वामी ने ।
 सन्तों का रहस्य विचित्र रूप, दरसा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥१॥
 घट में सच्ची श्रुति मैंने सुनी, जिसे कभी सुनते थे ऋषि मुनि ।
 अद्भुत को त्याग के बनी गुनी, समझा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥२॥
 यह गति मति कोई नहीं जाने, बिन जाने हुए कैसे माने ।
 अमृत रस बूंद की वर्षा को, बरसा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥३॥
 लीला सब देखी नई नई, परगट हुए दृश्य भी कई कई ।
 उद्गीत राग की बानी को, सुनवा दिया सतगुरु स्वामी ने ॥४॥
 घट विजय की बीना बाज रही, धुन शब्द अनाहद गाज रही ।
 नभ मंडल में तारा चमका, चमका दिया सतगुरु स्वामी ने ॥५॥





[३६]

जब मानुष देह मिली तुमको, इस देह से औरों को कुछ दो ।
 जीतेजी इस संसार में कीरति, यश आदर सन्मान को लो ॥१॥
 धनवान हो तो तुम धन को दो, विद्या वाले हो तो विद्या दो ।
 जिस गुण का तुम को भाग मिला, दो दो कुछ कुछ उससे दो दो ॥२॥
 नद नाले मेह की गंगा की, सागर की देख दशा प्यारे ।
 औरों के लिये यह हैं सारे, आते हैं यह काम में औरों को ॥३॥
 सूरज की चन्द्र की तारों की, जोती को देख समझ मन में ।
 यह औरों के काम में आते हैं, चाहे घर में हो कोई बन में हो ॥४॥
 अपने लिये बन मधुवन उपवन, अपने लिये देख कहाँ तपवन ।
 यह औरों ही के लिये सब हैं, अपने मन तुम सोचो समझो ॥५॥
 जो देता है वह लेता है, जो लेता है वह देता है ।
 जो नहीं देते वह क्यों निष्फल, फिर नाम धनी का लेते हो ॥६॥
 दो दान दया का दानी हो, दो दान ज्ञान का ज्ञानी हो ।
 क्यों निष्फल जन्म गँवाते हो, अभिमानी मानी गुमानी हो ॥७॥
 लेना हो तो लो यश कुछ देकर, जगत की हाट में आये हो ।
 जो पहिले दिया था उसके बदले, आज यह सब कुछ पाते हो ॥८॥
 राधास्वामी जग में आये, भक्ति का दान दिया हम को ।
 दो प्रेम भक्ति तुम औरों को, बदले में पद निर्वाण को लो ॥९॥

[४०]

जब गुरु ने प्रेम दिया तुझको, सुन पल पल उसका ध्यान रहे ।
 कर भक्ति गुरु की तू निस दिन, और गुरु का छिन छिन ज्ञान रहे ॥१॥
 कोई साथी नहीं कोई संगी है, संसार महा क्षण भंगी है ।
 जो भूला दुखी हुआ मन में, और दुख में सब अनजान रहे ॥२॥
 माया का जगत में डेरा है, घर चिड़िया रैन बसेरा है ।
 तू सोच ले अभी सवेरा है, नहीं काम क्रोध मद मान रहे ॥३॥



२२]

॥ शिव शब्द सागर ॥

नहीं बाप न माँ नहीं भाई है, व्यवहार यह अगमापाई है ।
गुरु भक्ति में तेरी भलाई है, कर भला बुराई से हानि रहे ॥४॥
कोई किसी में मगन कोई किसी में मगन, तेरी लागे गुरु चरनन में लगन ।
राधास्वामी का है यह वचन, तुझे गुरु सुमिरन का ध्यान रहे ॥५॥

[४१]

जब अन्तर शब्द की धुन प्रगटी, बाहर का गाना भूल गया ।
घट में अपने बैठक पाई, मन द्वन्द मचाना भूल गया ॥१॥
दृष्टि सृष्टि गति समझ पड़ी, जैसी दृष्टि तैसी सृष्टि ।
काल कर्म माया और भय भय, आँख दिखाना भूल गया ॥२॥
तीन ताप की विपत्त गई, कलि के क्लेश दारुन मेटे ।
गुरु चरन कमल की छाँह मिली, उत्पात में आना भूल गया ॥३॥
शान्ती है निर्भ्रान्ती है, आनन्द है सुख का जीवन है ।
दुखदाई जग सुखदाई है, दुचिता दुख पाना भूल गया ॥४॥
राधास्वामी की ली शरनाई, निज रूप की मुझको समझ आई ।
समझा सब को अगनापाई, मन इससे लगाना भूल गया ॥५॥

[४२]

मन में नहीं चिन्ता कोई रही, जब चित से राधास्वामी नाम लिया ॥
गुरु की संगत पाई जब से, दुचिता दुर्मति सब भाग गई ।
आनन्द हर्ष चहुँ दिश छाया, सुख शान्ती आठों याम लिया ॥१॥
जब फन्द कटे निरद्वन्द बने, संतोष क्षमा का धन पाया ।
गुरु दया से अर्थ धर्म मुक्ति, और योग युक्ति से काम लिया ॥२॥
बल शक्ति मिली है गुरु की दया, उत्साह हीन अब हम न रहे ।
जब नाम की ढाल हाथ में ली, तब काल चक्रको थाम लिया ॥३॥
भय भय का भाव मिटा मन से, निर्भय निरद्वन्द अदस्था है ।
सुमिरन और ध्यान भजन क्रिया से, सोध के मन विश्राम लिया ॥४॥



राधास्वामी ने की दया अद्भुत, चरनों में लगा कर अपनाया ।
कुछ दिन जग जीवन के पीछे, फिर राधास्वामी धाम लिया ॥५॥

[४३]

जब घट विवेक सागर न्हाया, तन मन शुद्ध हुये सारे ।
कुछ तज निर्मल विमल बना, तरकर कुटुम्ब और कुल तारे ॥१॥
नभ मंडल सुरत चली पग दे, चढ़ त्रिकुटी के स्थल आई ।
प्रकाश चांद सूरज का है, जगमग जगमग लाखों तारे ॥२॥
वहाँ लाखों शिव ब्रह्मा विष्णु, देवी देवों की नहीं गिनती ।
यह किसी में सिद्धि शक्ति नहीं, जो गिने उन्हें न्यारे न्यारे ॥३॥
सत रज तम है यह ओ३म् रूप, और ओ३म् में हैं यह तीनों गुन ।
मृदंग की धुन जब पड़ी कान में, तन मन सब मेरा हुलसारे ॥४॥
राधास्वामी ने नाम दिया, बिगड़ा हुआ मेरा काम किया ।
भय चिंता किसकी करूँ भाई, जब सतगुरु हो गये रखवारे ॥५॥

[४४]

है भक्ति सकाम मेरी स्वामी, यह भक्ति मेरी निष्काम बने ।
मैं आरत बन कर आया हूँ, इस आरत का अब काम बने ॥१॥
अर्थ धर्म काम और मुक्ति, सब गुरु की संगत से मिलते ।
मेरा अर्थ बने मेरा धर्म बने, मेरी मुक्ति बने मेरा काम बने ॥२॥
मन चंचल है अज्ञानी है, मन मेरा मानी गुमानी है ।
इस मन से छुटकारा दीजे, मन निश्चल हो निष्काम बने ॥३॥
अध काम न मेरा बनाओगे, निष्काम नहीं मन होने का ।
पूरी हों कामना मन की सभी, तब इस मन का विश्राम बने ॥४॥
जानी नहीं हूँ नहीं जिज्ञासु, आरत नहीं मैं निज स्वार्थी हूँ ।
मे अर्थ की ओर दृष्टि मेरी, इस अर्थ में धन और धाम बने ॥५॥
पूरा मैं रहता हूँ विकल सदा, दुख आपत संकट से घिरा ।
मेरी पूरा संकट को मेरे, सुख आनन्द आठों याम बने ॥६॥



राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी नित गाता हूँ ।
हो ऐसी दया मेरा मस्तक अब, राधास्वामी धाम बने ॥७॥

[४५]

राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी ।
राधास्वामी सतगुरु परमसंत के, चरन कमल में परनामी ॥१॥
राधास्वामी दयाल जग में आये, सुरत शब्द योग मत दरसाये ।
दुखियों दीनों को अपनाये, दी पद सरोज में विश्रामी ॥२॥
राधास्वामी नाम की धुन गाई, धुन आत्मिक विधि से समझाई ।
चित्त चेत गया ली शरनाई, धुन पर उपकारी निहकामी ॥३॥
राधास्वामी ने घट का पता दिया, घट के रस्ते को बता दिया ।
घर चलने का उलटा है रस्ता, उलटावे नाम मिले नामी ॥४॥
राधास्वामी पद सबसे ऊँचा, कोई धिरला संत वहाँ पहुँचा ।
नीचे उसके हैं पद सारे, राधास्वामी भज आठों यामी ॥५॥

[४६]

गुनातीत गुन सगुन स्वरूपम्, अविनाशी राधास्वामी ।
निराकार साकार अनूपम, सुखरासी राधास्वामी ॥१॥
दीनानाथ कृपाल दयाला, प्रतिपाला जगदाधारी ।
सत्तलोक सतधाम निवासी, सतबासी राधास्वामी ॥२॥
विरज विभो मंगल दानी, चेतन धन विमल आनन्द महा ।
काम अकाम सकाम प्रकाशी, कैलाशी राधास्वामी ॥३॥
रूप रहित आकार रहित, मन अमन रहित अद्भुत धामी ।
नहीं नाम अनाम नहीं नामी, सर्वानामी राधास्वामी ॥४॥
गुरु रूप में तेरी महिमा है, इस रूप में प्रेम मिले मुक्तको ।
मन बचन कर्म से जपा करूँ, राधास्वामी राधास्वामी ॥५॥





[४७]

चांद सूर तारागन अग्नी, में तेरा चमकारा है ।
 चांद सूर तारागन अग्नी, की आँखों का तारा है ॥१॥
 नाम न रूप न रंग न रेखा, एक अनेक नहीं है तू ।
 कैसे तेरी अस्तुति गाऊँ, तू मन बानी के पारा है ॥२॥
 कहना सुनना मन की कल्पना, मन की पहुँच नहीं तुझमें ।
 मन नहीं अमन नहीं तू स्वामी, मन और अमन से न्यारा है ॥३॥
 नेति नेति कह वेद पुकारें, एति एति संसार कहे ।
 क्या है किसने जाना तुझको, सब में तेरा पसारा है ॥४॥
 हां और नहीं के बीच में रह कर, सत है और असत है तू ।
 हां और नहीं के मध्य का बासी, दोनों का विस्तार है ॥५॥
 यह है वह है यह नहीं वह नहीं, बुद्धि बनी अबुद्धि मेरी ।
 अगुन सगुन गुन कैसे कहे कोई, तू दोनों का सहारा है ॥६॥
 जो देश काल और वस्तु नहीं है, देश काल और वस्तु है तू ।
 तू व्यापक तू अव्यापक है, तू उनका भी आधार है ॥७॥
 मैं हूँ तेरा तू है मेरा, मैं तू तू मैं यह समझा ।
 तू तू मैं मैं में पड़ कर फिरता, जीव मारा मारा है ॥८॥
 क्या कहूँ ठिकाने बुद्धि नहीं, फिर भी यह कहता रहता हूँ ।
 तू भ्राता है पितु माता है, तू ही सम्बन्धी पियारा है ॥९॥
 तू दृष्टा मेरी दृष्टि का, तू सृष्टा मेरी सृष्टि का ।
 तू मुझ में हैं मैं तुझमें हूँ, तेरी ही दया ने तारा है ॥१०॥
 तू राधास्वामी बन आया, अपने आपे को दरसाया ।
 गुरु रूप की लीला दिखलाया, बंधन से मेरा छुटकारा है ॥११॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी ।
 ॥ परम मंत्र में सब कुछ है, यह सुरत शब्द भंडारा है ॥१२॥





[४८]

हमें भी दे तार लाखों तारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ।
 लगादे भव जल के अब किनारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ॥१॥
 न हो किसी से हमारा नाता, न हम किसी का सहारा दूँगे ।
 रहें सदा तेरे ही सहारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ॥२॥
 न मोह माया का मन में खटका, न काल और कर्म का हो भटका ।
 निवास कर मन में अब हमारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ॥३॥
 दे प्रेम भक्ति का दान हमको, न दे तू सन्मान मान हमको ।
 यही है बिनती हमारी निस दिन, दयाल दाता कृपाल स्वामी ॥४॥
 दे खोल दृष्टि तुझे पिछानें, दरस परस करके तुझको मानें ।
 उदय हों घट सूर चन्द्र तारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ॥५॥
 अलख अगम का दिखा तमाशा, दिलादे निज धाम में तू बासा ।
 चरन कमल के रहें सहारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ॥६॥
 जपूँ सदा मन से राधास्वामी, कहूँ सदा मुख से राधास्वामी ।
 दिला दिला नाम धन दुलारे, दयाल दाता कृपाल स्वामी ॥७॥

[४९]

था असत में सत सत जब प्रगटा, सत्ता से तब सत नाम बना ।
 सत में सोहं फुरना प्रकटी, सोहं सोहं का धाम बना ॥१॥
 सोहं से हिरण्यगर्भ प्रगटा, यह शून्य अवस्था है प्यारे ।
 इस सोहं शून्य से ओ३म् बना, और ओ३म् त्रिगुन का ठाम बना ॥२॥
 यह ओंकार है सूक्ष्म, सूक्ष्म में, जब स्थूल की गति आई ।
 स्थूल विराट हुआ भाई, इससे सृष्टि का काम बना ॥३॥
 पहिले नहीं एक न दो था कभी, सत भाव में एक का है बासा ।
 यह एक अनेक में आप फिरा, और उसी से रूप और नाम बना ॥४॥
 धारा फूटी जीव जन्तु बने, सुषुप्ति में प्राग्य दशा प्रगटी ।
 सुषुप्ति से स्वप्न की उत्पत्ति है, तेजोमय और सत काम बना ॥५॥



जाग्रत आई तब विश्व हुआ, इस विश्व को समझे संसारी ।
 धर्म अर्थ मुक्ति और काम आये, दुख और सुख आठों याम बना ॥६॥
 यह लोक परलोक के भगड़े हैं, और पाप पुण्य के रगड़े हैं ।
 इन से फिर भेद दंड प्रगटे, और दाम बना और साम बना ॥७॥
 जो इनमें फँसा वह मारा गया, वह बचा जो इनसे न्यारा है ।
 जिसको यह भेद दिया गुरु ने, सत भाव बना सत काम बना ॥८॥
 राधास्वामी ने समझाया, सुरत शब्द का मारग दरसाया ।
 इस पन्थ में भाग्य से जो आया, जीते ही जी विश्राम बना ॥९॥

[५०]

राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी पल छिन गाना ।
 राधास्वामी है मूल यतन, भक्ति और योग युक्ति ज्ञाना ॥१॥
 जब से गुरु चरणों में आया, फल नर जीवन का सहज पाया ।
 छुट गये मान ममता माया, जब निज स्वरूप को पहचाना ॥२॥
 नहीं कहीं आया नहीं कहीं गया, नहीं जपी तपी बनखंडी भया ।
 सतगुरु दाता की हुई दया, घट भेद मिला है मन माना ॥३॥
 मुखमन की सीधी राह चला, इस राह में आकर नहीं टला ।
 सतगुरु स्वामी की गोद पला, सतगुरु ने कर दिया मस्ताना ॥४॥
 गुरु जगत में सच्चे दाता हैं, पितु माता धरता बिधाता हैं ।
 गुरु सम्बन्धी हित आता है, गुरु राधास्वामी को जाना ॥५॥

[५१]

राधास्वामी के चरन कमल में, बार बार परनाम करूँ ।
 तन मन अपूँ सीस नवाऊँ, स्तुति आठों याम करूँ ॥१॥
 अपने आपे की सुध भूलूँ, गुरु आपा मेरे चित्त बसे ।
 यह दोनों मिलकर एक बने, मैं समझ बूझकर काम करूँ ॥२॥
 गुरु का रूप है रूप मेरा, और नाम गुरु का नाम मेरा ।
 उस रूपका चिंतन मनन करूँ, और नाम सुमिर विश्राम करूँ ॥३॥



नहीं काम से काम मुझे भाई, नहीं लोभ से लोभ की जड़ताई ।
 बेकार नहीं रहता हूँ कभी, मैं काम जो हो निष्काम करूँ ॥४॥
 गुरु द्वैत नहीं अद्वैत नहीं, गुरु मेरा वसिष्ठ अद्वैत नहीं ।
 गुरु द्वैताद्वैत नहीं प्यारे, गुरुपद को समझ गुरुनाम करूँ ॥५॥
 सतसंगत में जो बचन सुने, श्रवण और मनन की जान विधि ।
 निधिध्यासन करके चैन लहूँ, वृत्ति की रोक और थाम करूँ ॥६॥
 तन में मेरे सतगुरु व्यापा है, गुरु का आपा मेरा आपा है ।
 मस्तक में गुरु का बासा है, बासा राधास्वामी धाम करूँ ॥७॥

[५२]

पी नाम सुधारस प्यास बुझे, आशा की अग्नी मंद पड़े ॥
 जो आस की फंद पड़ा प्राणी, तू जान अनाड़ी अज्ञानी ।
 भव द्वन्द के कीचड़ में सानी, चौरासी की योनी में सड़े ॥पी नाम०
 बल बुद्धि धिवेक में जो पूरा, रनधीर वीर योद्धा सारा ।
 करे मान मोह मद का चूरा, माया की रन भूमी में लड़े ॥पी नाम०
 जो खाता पीता सोता है, आलस में जनम को खोता है ।
 वह अन्त काल में रोता है, नरकों की कुण्ड में आय गड़े ॥पी नाम०
 झूठा सब भोग धिलासा है, झूठा सब सैर तमाशा है ।
 नर पानी बीच बतासा है, क्यों भर्म भ्रान्ति गढ्ढे में अड़े ॥पी नाम०
 भज राधास्वामी नाम सदा, जल्दी सतगुरु की शरन में आ ।
 ले नर जीवन को अपने बना, नहीं काज तेरा सारा बिगड़े ॥पी नाम०

[५३]

जब नाम का हीरा हाथ लगा, मद मोह के धन को त्याग दिया ॥
 जिसने मेरे साथ द्वेष ठानी, की द्वेष ईष्या मन मानी ।
 मैंने उसे सोच समझ मन में, सद्प्रेम भाव का भाग दिया ॥१॥
 मन मन्दिर मेरा सुहाना बना, भक्ति की सजावट पाके सजा ।
 माया ममता भय अहं के घर को, तत्क्ष्ण आप ही त्याग दिया ॥२॥



पर निंदा निंदक करते हैं, और पापकी मौत से मरते हैं ।
 मुझे नाम का दान दिया गुरु ने, मैंने सबको अनुराग दिया ॥३॥
 सुखमान सरोवर में न्हाया, हंस संग मोती चुन लाया ।
 राधास्वामी संग चित से भाया, अधिकारी को भक्ति मांग दिया ॥४॥

[५४]

जब घर में अनहद तान सुनी, मुख से फिर नाम लिया न लिया ॥
 जिन या संसार की गति जानी, जिसके वश में कर्म और मन बानी ।
 जिन परहित निज स्वारथ मानी, उन धन का दान दिया न दिया ॥१॥
 जिन काम क्रोध मद तज डारे, जिन लोभ मोह से भये न्यारे ।
 गुरु प्रेम अमी रस मतवारे, उन गंगा नीर पिया न पिया ॥२॥
 जिन सार अर्थ सतसंग पाया, भ्रम फाँस कटी छूटी माया ।
 राधास्वामी नाम सुन हर्षाया, उन योग विराग किया न किया ॥३॥

[५५]

किस मुंह से तेरी स्तुति गाऊँ, तू आदि अन्त अधिनासी है ।
 नहीं काल करम का भय तुझको, तू आनन्द धन सुखरासी है ॥१॥
 सब में है सब से न्यारा है, कुल सृष्टि में तेरा पसारा है ।
 तू सबका सहज सहारा है, सत पद धुर धाम निवासी है ॥२॥
 हर वस्तु में आकर व्यापा है, तेरा ही सब में आपा है ।
 तेरा सब तोला नापा है, घट घट का निस दिन बासी है ॥३॥
 ज्योती की ज्योति है तू प्यारे, क्या चन्द्र सूर्य और क्या तारे ।
 तू ही हूँ सब आधारे, ज्योतिर्मय सर्व प्रकाशी है ॥४॥
 राधास्वामी राधास्वामी, तेरे चरन कमल में परनामी ।
 य नाम का तू नामी, तेरे बिन सब में उदासी है ॥५॥

[५६]

मान तज तो अमन बना आप ही, बानी तजकर निर्बानी हुआ ।
 नय नद गया में विदेह बना, अज्ञान को छोड़ा ज्ञानी हुआ ॥१॥



३०]

॥ शिव शब्द सागर ॥

जड़ता त्यागी चेतन हूँ अब, चेतन को त्याग बना हूँ सत ।
 नहीं सत का असत का संशय रहा, संशय को तज विज्ञानी हुआ ॥२॥
 सम्बन्ध किया जिससे मैंने, रूप उसका धार लिया मन में ।
 सम्बन्ध में मानी गुमानी बना, यह छूट गया तो अमानी हुआ ॥३॥
 भक्ति आई मैं भक्त बना, वैराग्य किया वैरागी बना ।
 जब ग्रहण त्याग दोनों छोड़े, केवल कैवल्य अभिमानी हुआ ॥४॥
 जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति छोड़ी, तुरिया पद में जाकर पहुँचा ।
 तुरिया गई तुरियातीत बना, निज रूप का फिर अस्थानी हुआ ॥५॥
 नामी बना नाम से लव लाया, तज नाम अनामी कहलाया ।
 तज नाम रूप दोनों भाई, पानी पानी मिल पानी हुआ ॥६॥
 राधास्वामी सतगुरु आये, इस तत्व रहस्य को समझाया ।
 जो बना वह बिगड़ेगा एक दिन, परखा जिसने गुरु ज्ञानी हुआ ॥७॥

[५७]

संसार असार में भूला है, संसार असार में सार नहीं ।
 सब भूल भुलैयाँ है भाई, इस भूल का वारा पार नहीं ॥१॥
 अनयास तप में तपता है, यह घर रैन का स्वपना है ।
 सपने की चिंता क्या करना, सपने ही का विस्तार है ॥२॥
 जब सोये स्वप्न का दृश्य लखा, जब जागे दृश्य तो लोप हुआ ।
 इस दशा को सोच समझ मन में, यह भरम का सकल पसारा है ॥३॥
 यहां नहीं कहीं है स्थिरताई, स्थिरता यहां कैसे आई ।
 है नाशवान हर वस्तु यहां, तूने नहीं कभी विचारा है ॥४॥
 अज्ञान अविद्या के बन्धन हैं, फँसे बुद्धि चित और मन हैं ।
 जिसे ज्ञान मिला गुरु की संगत, उसको केवल छुटकारा है ॥५॥
 जिसमें नहीं ज्ञान नहीं भक्ति, जिसमें विवेक की नहीं शक्ति ।
 यह सनभ ले उसको करम काल, ने और माया ने मारा है ॥६॥



भज भज ले नाम सदा गुरु का, भटका नहीं खा सतपंथ में आ ।
राधास्वामी ने समझाया, जो समझे गुरु का प्यारा है ॥७॥

[५८]

किस भर्म में भूला है भाई, अनजान है बा तू सियाना है ।
संसार है यह अगमापाई, नहीं मन को इससे लगाना है ॥१॥
इस द्वन्द अवस्था में पड़कर, बुद्धि नहीं तेरी ठिकाने रही ।
दुविधा दुचिताई के फंदे, इन फन्दों में तुझको फँसाना है ॥२॥
दिनरात है जनम है और मरन, सृष्टि प्रलय विष और अमृत ।
जहां लोक है वहां परलोक भी है, यह भेद तुझे समझाना है ॥३॥
यह तेरे सहारे रहते हैं, तू उनके सहारे नहीं रहता ।
इनको समझा सुख प्राप्त हुआ, नहीं समझा तो आंख बहाना है ॥४॥
तू आंख नहीं तू कान नहीं, दोनों से न्यारा रहता है ।
यह देह नहीं है रूप तेरा, इसे मिट्टी में मिल जाना है ॥५॥
तू अजर अमर है अधिनाशी, तू सत चित आनन्द का रासी ।
अपने सत में सत प्रकाशी, बस इतना ही जतलाना है ॥६॥
राधास्वामी सतगुरु आये, सत पद का मारग दरसाये ।
सुरत शब्द योग विधि सिखलाये, भक्ति के पंथ चलाना है ॥७॥

[५९]

गधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ॥
गधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ॥
गधास्वामी द्विसं राधास्वामी रैनं, राधास्वामी बैनं राधास्वामी सैनं ।
गधास्वामी भजो आठों यामी, राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ॥
गधास्वामी पितरं राधास्वामी माता, राधास्वामी करता धरता विधाता ।
गधास्वामी पद में विश्रामी, राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ॥
गधास्वामी विद्या राधास्वामी द्रव्यं, राधास्वामी मूलं राधास्वामी सर्व ।
गधास्वामी मेरे अन्तर्यामी, राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ॥



राधास्वामी सत्यं चितानन्दं, राधास्वामी गुप्तं राधास्वामी विदितं ।
 राधास्वामी सुभिरो निहकामी, राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी ॥
 राधास्वामी शुद्धं नित्य विमुक्तं, राधास्वामी ज्ञान भक्ति संयुक्तं ।
 राधास्वामी अनाम राधास्वामी नामी, राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी

[६०]

क्यों रोता रहता है हरदम, क्या लुप्त है आँसू बहाने में ।
 हँस खेल मिलेगी खुशी तुम्हे, हँसने में और हँसाने में ॥१॥
 इल्म में अक्ल में होश खिरद के, बनने में जो जौहर है निहां ।
 वह शक्ल बदल कर है जाहिर, नादान में और दिवाने में ॥२॥
 साये में नूर में फर्क कहां, जो असल में है वह नकल में है ।
 जो दिल में रूह में है मक्फी, वही जिस्म के है काशाने में ॥३॥
 सच झूठ की है बुनियाद एक, किसको कहूँ बद और किसको नेक ।
 है बात की बात में बात ओ खुद, शामिल है बात बनाने में ॥४॥
 आवाज में है और साज में है, वह राज में नाजो नियाज में है ।
 दमबाज में है दमसाज में है, बाजे में है बाजे बजाने में है ॥५॥
 वहदत में कसरत का है पता, कसरत में खिलवत की है जा ।
 है एक हजार लाख जब खुद, क्या धरा है गिनती गिनाने में ॥६॥
 वहदत का जाम पी ले जाबित, हरहाल में मस्ती खुशी मिले ।
 है राधास्वामी की यह सुनले सदा, और खुशी है दिल बहलाने में ॥७॥

[६१]

कोई कैसे जाने हकीकत को, हक से नहीं है जब काम उसे ।
 हक नाहक की कुछ समझ नहीं, नहीं हक का मिला पैगाम उसे ॥१॥
 है वहम में फँसकर हैरानी, और हैरानी से परेशानी ।
 दिल उसका हुआ बेचैन चैन से, समझलो तुम नाकाम उसे ॥२॥
 नहीं संगत सतगुरु की पाई, नहीं सच्ची समझ बूझ आई ।
 फिर जात की कैसे मिलती खबर, घरे हुये हैं औहाम उसे ॥३॥



दया कीजे मेहर कीजे, लीजे चरणों में लगा ।
आपका मैं हो रहूँ, भरमों का मटका फोड़कर ॥४॥
राधास्वामी दीन हित, भवनिध से बेड़ा पार कर ।
यह है मेरी बंदना, संसार से मुख मोड़ कर ॥५॥

[४-६८]

गुरु के दर्शन के बिना, अब नींद तक आती नहीं ।
जग की वस्तु कोई भी, मन को मेरे भाती नहीं ॥१॥
आवो प्यारे देवो दर्शन, हूँ विकल मैं रात दिन ।
ताकती हूँ राह तेरी, छबि ही नजर आती नहीं ॥२॥
मैं तो तेरे शरण आई, तुमको मेरी लाज है ।
छोड़ कर तेरे चरण मैं, अब कहीं जाती नहीं ॥३॥
तेरा ही विश्वास है, और तेरी मुझको आस है ।
तू है साथी एक मेरा, और कोई साथी नहीं ॥४॥
मेट कर त्रय ताप चित को, मेरे करदे आप शान्त ।
राधास्वामी भक्ति दीजे, शक्ति घबराती नहीं ॥५॥

[५-६६]

शान्ती सच्ची सदा, गुरु नाम के सुभिरन में है ।
आप जानोगे कि दुख सुख, खेल सारा मन में है ॥१॥
अपने आप में रहो, चित की रहे नित रोक थाम ।
शान्ती उसको कहाँ, दिन रात जो अनबन में है ॥२॥
वस्तु है घर में तुम्हारे, खोज घर ही में करो ।
शान्ती की वस्तु घट के, अपने ही बरतन में है ॥३॥
भूतियों को चित की, अंतर में करोगे जो निरोध ।
यह समझलोगे कि, सिद्धि शक्ति सब साधन में है ॥४॥
गङ्गास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी नाम लो ।
नाम का विश्राम प्यारे, शब्द के श्रवण में है ॥५॥



[६-७०]

मैं हूँ उसका वह है मेरा, बस यही एक आस है ।
 संसार मेरे नयनों की, परमात्मा की सांस है ॥१॥
 मन में वह आकार समावे, उसका मन हो मेरा मन ।
 एक दिन ऐसा ही होगा, होगा यह विश्वास है ॥२॥
 उसमें मैं रहता हूँ, सोता खाता पीता जागता ।
 जब सुषुप्ती आई वह, प्रीतिम निकट और पास है ॥३॥
 भर्म से अज्ञान है, उसकी समझ मुझको नहीं ।
 जब भ्रम जाता रहेगा, फिर वह सांस और भास है ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, उससे अब होगा मिलाप ।
 वह मिला पहिले से, केवल देह का अध्यास है ॥५॥

[७-७१]

क्या है ईश्वर किसमें ईश्वर, है कहां रहता है वह ।
 करता क्या धरता क्या है, और क्या कहता है वह ॥१॥
 कुछ दिनों सतसंग हो, ईश्वर की तब आवे समझ ।
 जो समझता ही नहीं, भव सिंध में बहता है वह ॥२॥
 तुमने कब समझा उसे, और कैसे आई यह समझ ।
 अन समझ दुख अग्नि में, संसार के दहता है वह ॥३॥
 जितनी जल्दी हो सके, संगत करो संगत करो ।
 जिसको सतसंगत नहीं, आपत्ति विपत्ति सहता है वह ॥४॥
 राधास्वामी ने दया की, दी कमल पद की शरण ।
 यह शरण हाथ आई जिसके, चैन सुख लहता है वह ॥५॥

[८-७२]

आये थे बहरे जहाँ में, हम नहाने के लिये ।
 यह न समझे आये थे हम, गोते खाने के लिये ॥१॥
 तुमको देखा तुम थे गोते, खाते रहम आया हमें ।



हाथ फैलाया उसी दम, फिर बचाने के लिये ॥२॥
 बच गया अच्छा हुआ, अच्छा हुआ तुम बच गये ।
 हम चले अब राह जब, आये थे जाने के लिये ॥३॥
 सैर दुनियां होगई, तैरे नहाये चल बसे ।
 बदनसीब आया यहां, आंसू बहाने के लिये ॥४॥
 मिल गया मुर्शद दिया, उसने मुझे हक़ का पयाम ।
 राधास्वामी आये वह, उक्ता सुनाने के लिये ॥५॥

[६-७३]

रोशनी का तार जब, जाहिर हुआ तारा बना ।
 आस्मां पर जाके चमका, सबका खुद प्यारा बना ॥१॥
 नूर की सबको तलब है, वह है मैराजे तलब ।
 तालिबे हक़ के लिये, वह हक़ का चमकारा बना ॥२॥
 इल्मे हस्ती औ खुशी, तीनों हैं जलवे नूर के ।
 नूर नूरानी हुआ, और नूर नज्मे आरा हुआ ॥३॥
 मादे में नूर है और, नूर ही है रूह में ।
 गौर करके देखा जब वह, सारे का सारा बना ॥४॥
 राधास्वामी की मेहर से, नूर का कर इक्तेसाब ।
 नूर इस आलिम में, सिकन्दर बना दारा बना ॥५॥

[१०-७४]

वह सुखी है जिसमें दुबिधा, और दुचिताई नहीं ।
 वह दुखी है जिसमें गुरु का, नाम सुखदाई नहीं ॥१॥
 गुरु की संगत की सहज में, पाया गुरु का संस्कार ।
 बुद्धि मेरी तब से चक्कर, में कभी आई नहीं ॥२॥
 शब्द का साधन सहज है, और सहज है नाम योग ।
 सहज में सुमिरन करो तुम, कोई कठिनाई नहीं ॥३॥
 जब समय हो तुम करो, अभ्यास नित चित को लगा ।



हो कहां उसका भला, जिसको यह गति भाई नहीं ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, तुमको शुभ अवसर मिला ।
 लो कमाई कुछ करो, यह जगत स्थाई नहीं ॥५॥

[११-७५]

बैठकर दिन रात घट में, गुरु का सुमिरन ध्यान कर ।
 गुरु से रक्षा होगी तेरी, सोच ले अनुमान कर ॥१॥
 जग है दुखदाई न इसके, फंद में आना कभी ।
 जो फँसा मारा गया, तू बचके चल भय मान कर ॥२॥
 नाम ले विश्राम ले, है नाम में सुख शान्ती ।
 नाम का ले आसरा, दिन रात उसका गान कर ॥३॥
 नाम ले ले तर गये, कामी क्रोधी लालची ।
 नाम को मत भूल, महिमा नाम की तू जानकर ॥४॥
 राधास्वामी ने बताया, नाम लेने की विधी ।
 शब्द का अभ्यास कर, अन्तर में अपने आनकर ॥५॥

[१२-७६]

गुरु की महिमा कौन गाये, उसका गाना है कठिन ।
 पहुँचने वाले कहां तुझ, तक हैं बानी और वचन ॥१॥
 बुद्धि निर्णय कर नहीं सकती, न चित चितन के योग ।
 सोचने और समझने की, शक्ति पाता है न मन ॥२॥
 ज्ञानी अपनी युक्ति भूले, ध्यानी भूले ध्यान कर ।
 योगी थककर हार बैठे, कर चुके जब सब जतन ॥३॥
 तू नहीं काशी न मथुरा, द्वारका में तू नहीं ।
 ढूँढने बन खंडी और, तपसी चले हैं सूना बन ॥४॥
 मेरे हृदय में बसा रहता है, निस्सन्देह तू ।
 राधास्वामी भेद बतलाया, लगी तुझसे लगन ॥५॥



दुनियाँ के दीन के भगड़े हैं, इन भगड़ों ने धर कर रगड़े हैं ।
 इन भगड़ों रगड़ों में जो फँसा, दिन रात कहां आराम उसे ॥४॥
 कह दो उनसे कुछ सोहवत कर, ले दिल में अपने गुरु का असर ।
 बेफिकरी से हो जिंदगी बसर, न फँसायेगा दुनियाँ का दाम उसे ॥५॥
 खिलवत कसरत की समझ आये, नहीं भरम करम नित भरमाये ।
 वहदत का रंग कुछ जम जाये, मिल जायेगा मस्ती का जाम उसे ॥६॥
 दुनियाँ और दीं का बन बंदा, बंदा बनके हुआ है गंदा ।
 यह गंदगी सब भिट जायेगी, नजर आये जो हक़ का नाम उसे ॥७॥
 न वह भूल के दुनियाँ घर छोड़े, नहीं जमीं न जन नहीं जर छोड़े ।
 सतगुरु से नाते को जोड़े, फिर सुख है सुबह व शाम उसे ॥८॥
 जब तक गुरु हाथ न आयेगा, कोई पता न हक़ का पायेगा ।
 नित भरमेगा भरमायेगा, छोड़ेंगे न दर्द आलाम उसे ॥९॥
 गर शौक हो तुमको बिसाले सनम, सुलतानुलजकार का शागिल बन ।
 फिर दिल से कलामे हक़ को सुन, है राधास्वामी का पैगाम उसे ॥१०॥

[६२]

मौजूद वजूद की है ख़रत, मौजूद ही आप वजूद हुआ ।
 हाजिर में हुज्जत है बेजा, गायब का दम बेख़ूद हुआ ॥१॥
 जो गायब में है वह गायब है, गायब के खयाल से बाज आओ ।
 हाजिर को बचश्म हाल देखो, हाजिर ही कमाल नमूद हुआ ॥२॥
 मौजूद वजूद समूद बऊद, हालात हाल के हैं जाहिर ।
 जो जाहिर है वही बातिन है, जाहिर बातिन का शहूद हुआ ॥३॥
 किस खुदा का सिज्दा करते हो, क्यों बंदा बनकर मरते हो ।
 क्या नहीं सुना है तुमने कभी, सबका आदम मस्जूद हुआ ॥४॥
 अशरफ़ अकमल अकबर अजमल, औसाफ़ हैं यह सब आदम के ।
 आदम अफजल है मोकद्दस है, आदम मंजिले मकसूद हुआ ॥५॥
 आदम में खुदा को तलाश करो, इस राज को कभी न फाश करो ।



आदम मजहर है हकीकत का, आदम ही कुल बहबूद हुआ ॥६॥
 जो हक है हक की हकीकत है, वह हक से जुदा नहीं हरगिज ।
 क्या यहाँ है हक के सिवा भाई, यह हक ही नुजूलो सऊद हुआ ॥७॥
 मैराजे तमन्ना है आदम, काभिल इन्साँ का कमाल सुनो ।
 मस्जूद मलिक और नूर फलक, वही ज़मी में खुद मसऊद हुआ ॥८॥
 लोलाक का कल्मा पढ़ो खादिर, मसजूद मलायक तुम खुद हो ।
 आदम को न सिजदा किया जिसने, मखहूर हुआ मरदूद हुआ ॥९॥
 जो अलरफनफसहू को जाना, उसने रब को भी पहचाना ।
 है राधास्वामी का फरमाना, यह खुद ही खुद माबूद हुआ ॥१०॥



॥ वन्दनम् ॥

वन्दनम् सत ज्ञान दाता, वन्दनम् सत ज्ञान मय ।
 वन्दनम् निर्वाण राता, वन्दनम् निर्वाण मय ॥१॥
 भक्ति मुक्ति योग युक्ति, आपके आधीन सब ।
 आप ही हैं सिंध सद्गति, जीव जन्तु मीन सब ॥२॥
 आप गुरु सतगुरु दया, और प्रेम के भंडार हैं ।
 आप करता धरता हैं, करतार जगदाधार हैं ॥३॥
 ऋद्धि सिद्धि शक्ति नवनिधि, हैं चरन में आपके ।
 बच गया भव दुख से, जो आया शरण में आपके ॥४॥
 भक्ति दीजे नाम की, सत नाम में विश्राम दे ।
 राधास्वामी अपना कीजे, राधास्वामी घाम दे ॥५॥





[६४]

मंगलम्

मंगलम् गुरु शब्द रूप, अनाम नाम प्रकाशनम् ।
 मंगलम् शब्दार्थ शब्दाधार, शब्द निवासनम् ॥१॥
 गुप्त अपने आप में, जब अलख अगम अनाम आप ।
 जब प्रगट आनन्द ज्ञानाकार, और सत धाम आप ॥२॥
 साज संत समाज मंगल, काज जीव उद्धार को ।
 आपने धारन किया है, परम सन्त अवतार को ॥३॥
 आप हैं आधार सब के, आपके आधार सब ।
 वार पार से रहित आप हैं, आप वारापार सब ॥४॥
 संग देकर सत का सतसंगत में, जीव अधीन को ।
 सिंध सद्गति से मिलाया, जीव रूपी मीन को ॥५॥
 सैन बैन का आसरा, सतसंग द्वारा दान दे ।
 शब्द योग सिखाया अनहद, धामपद निर्वाण दे ॥६॥
 धन्य सतगुरु राधास्वामी, पार भव से कीजिये ।
 भक्ति युक्ति योग जुगती, ज्ञान शक्ति दीजिये ॥७॥

पहली धुन

[१-६५]

करता धरता और है, तुम ध्यान में उसके लगो ।
 वह है क्या सतसंग कर, पहचान में उसके लगो ॥१॥
 नाम का सुमिरन करो, वृत्ती को चित के रोक कर ।
 महज साधन में रहो, और ज्ञान में उसके लगो ॥२॥
 कुछ नहीं दुर्गम, सुगम सब है, जो मन निर्भ्रान्त हो ।
 सच्चा स्वामी घट में है, अभिमान में उसके लगो ॥३॥



सोचो समझो परखो निरखो, जागे अनुभव काम हो ।
 है तुम्हारे तन में वह, अनुमान में उसके लगो ॥४॥
 राधास्वामी नाम लो, पढ़ राधास्वामी योग को ।
 अपने अन्तर आधो खोज, और जान में उसके लगो ॥५॥

[२-६६]

सब में है और सबसे न्यारा, क्या कहे कोई उसे ।
 सबके अन्दर है वह प्यारा, क्या कहे कोई उसे ॥१॥
 वह अचल निश्चल है, मन बानी नहीं पाते उसे ।
 सार का है सार सारा, क्या कहे कोई उसे ॥२॥
 दूर है और सन्निकट है, सन्निकट है दूर है ।
 दोनों ही काम है सहारा, क्या कहे कोई उसे ॥३॥
 बुद्धि निर्णय कर नहीं सकती, न मन की है पहुँच ।
 धिया ने दोनों को मारा, क्या कहे कोई उसे ॥४॥
 इन्द्रियों से हाथ आना उसका, कभी समझो नहीं ।
 किसने पाया बार पारा, क्या कहे कोई उसे ॥५॥
 मन चला बुद्धि चले, यह थक गया वह बढ़ गया ।
 वह न सुत धन और दारा, क्या कहे कोई उसे ॥६॥
 धन्य सतगुरु राधास्वामी, ज्ञान का परिचय दिया ।
 पहुँचे भवसागर के पारा, क्या कहे कोई उसे ॥७॥

[३-६७]

पद कमल में सिर झुके नित, दोनों कर को जोड़कर ।
 आपही का हो रहूँ, मन मोड़ तोड़ मरोड़ कर ॥१॥
 कठिन माया जाल है, और कठिन काल कराल है ।
 कठिन जग जंजाल है, दुख पाया नाता जोड़कर ॥२॥
 शान्ती जाती रही, और भ्रान्ती चित में बसी ।
 आप पर दृष्टि गई, आया शरण सब छोड़कर ॥३॥



[१३-७७]

ढूँढ़ मुझको अपने मन में, मैं तो तेरे पास हूँ ।
 मैं न कासी हूँ न मथुरा, मैं न गिर कैलास हूँ ॥१॥
 तू हुआ मेरा तो मैं भी, देख तेरा बन गया ।
 कर भरोसा तेरा मैं ही, तेरी सच्ची आस हूँ ॥२॥
 तेरे भीतर मेरी बैठक, आँख से ले देख अब ।
 मैं नहीं पृथ्वी की मूरत, मैं नहीं आकास हूँ ॥३॥
 किस भरम में है पड़ा, निर्भ्रान्त चित से शान्त हो ।
 आप मैं हूँ योग युक्ति, आप शब्द अभ्यास हूँ ॥४॥
 राधास्वामी नाम ले, और नाम में विश्राम ले ।
 सुख ले और आनन्द ले मुझसे, मैं ही सुख रास हूँ ॥५॥

[१४-७८]

आके सत संगत में ले, अपने जनम को तू बना ।
 त्याग दुर्मति दुर्गति, दुर्चिताई और दुविधापना ॥१॥
 खाना दिन को रात को, सो रहना तेरा काम है ।
 है पशु जोनी में पशु ज्यों, कर रहा है कल्पना ॥२॥
 देह नर की पाके क्या, करने लगा है भूलकर ।
 अन्त में सहना पड़ेगा, यम के हाथों ताड़ना ॥३॥
 जंमी आसा तैसी बासा, जैसी मति तैसी गति ।
 गृन् गुरु के बचन तज कर, भूँटे जग की बासना ॥४॥
 शब्द का अभ्यास कर, अनुभव का जीवन प्राप्त कर ।
 राधास्वामी की दया से, कुछ दिनों कर साधना ॥५॥

[१५-७९]

मौज परखो मौज के, अनुसार सारा काम हो ।
 मौज का लो आसरा, और मौज में विश्राम हो ॥१॥
 मौज से होता है सब कुछ, मौज में बरतो सदा ।



मौज में रह पाओ सुख, निर्वन्द और निष्काम हो ॥२॥
 मौज में रहते हैं सेवक, मौज की गति को परख ।
 भय नहीं चिंता नहीं, चित में न इनका नाम हो ॥३॥
 ध्यान और सुभिरन भजन, नित नियम लो अपना बना ।
 गुरु का चरचा रात दिन हो, और आठों याम हो ॥४॥
 पूरी होगी कामना, सन्देह कुछ इसमें नहीं ।
 हां तुम्हारा इष्ट मन में, राधास्वामी धाम हो ॥५॥

[१६-८०]

बन के बनवासी बने, बन बन के फल खाने लगे ।
 बन के बनकर बन के बाहर, बन से क्यों जाने लगे ॥१॥
 बन गये जब बनने वाले, किस से अब अब अनबन करें ।
 बन के जो बिगड़े नहीं, वह बन के कहलाने लगे ॥२॥
 बन गये बन बन गये, जब बन गये तब बन गये ।
 बनने वाले रूप बन का, बन के दिखलाने लगे ॥३॥
 कृष्ण वृन्दावन गये, और राम दंडक बन गये ।
 प्रेम के मधुवन में प्रेमी, भक्त बन आने लगे ॥४॥
 राधास्वामी ने बनाया, बन गये बन बन गये ।
 बन की बानी सुन के, बनवासी उसे गाने लगे ॥५॥

[१७-८१]

जग की चिंता छोड़ कर, चिंता करो सतनाम की ।
 भूठी और मिथ्या है चिंता, तन की धन की धाम की ॥२॥
 आये हैं जो जायेंगे, रहने नहीं आया कोई ।
 नाम लो और नाम लेकर, सोचो अब विश्राम की ॥२॥
 ब्रह्म के औतार तक, रहने नहीं पाये यहां ।
 सोच कर पढ़लो कहानी, अपने सीता राम की ॥३॥
 मोह माया में फँसे जो, उनको है कब शान्ती ।



हैं गले में फांसी उनके, लोभ मद और काम की ॥४॥
 राधास्वामी नाम लो, और नाम आठों याम लो ।
 नाम की चिंता हो घट में, राधास्वामी धाम की ॥५॥

[१८-८२]

मौज से जो होने वाला है, वह होगा आप से ।
 लाभ कुछ होता नहीं, चिंता के तोल और नाप से ॥१॥
 हम न आये इस जगत में, आप जाते भी नहीं ।
 मौज जब लाई वह ले जायगी, आकर आप से ॥२॥
 नाम जो जपते हैं उनका, काम होता है सदा ।
 किसको मिलता है यहाँ कुछ, माल धन के जाप से ॥३॥
 अपनी करनी आप भरनी, और का क्या आसरा ।
 काम कब किसका बना, भाई से और माँ बाप से ॥४॥
 राधास्वामी नाम का, सुभिरन हो उठते बैठते ।
 नाम छुटकारा दिलायेगा, भ्रम से पाप से ॥५॥

[१९-८३]

भक्ति की शक्ति भिली, और शक्ति वाली होगई ।
 शक्ति वाली सहज में, अब भक्ति वाली होगई ॥१॥
 किसकी मुक्ति किसका बन्धन, खेल दोनों मन में हैं ।
 जो नहीं इसको समझते, सगभ लो उलझन में हैं ॥२॥
 मौज में रहती है दासी, नाम जपती है सदा ।
 नाम में विश्राम सुख और, शान्ती है सर्वदा ॥३॥
 सोते बैठते जागते, होठों पे गुरु का नाम है ।
 चाहे जैसी हो अवस्था, नाम ही से काम है ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, घट में गुरु दर्शन मिला ।
 अब नहीं दासी को चिंता, नाम धन जब पा लिया ॥५॥





[२०-८४]

मौज के आधीन जब, मन कर्म और बानी हुई ।
 भव का दुख संकट भिटा, जीते जी निर्वानी हुई ॥१॥
 तिल को तिलपट में उलटकर गुरु का दर्शन कर लिया ।
 पाया गुरु का ज्ञान गुरुमत, पाके गुरु ज्ञानी हुई ॥२॥
 थिर नहीं संसार, थिरताई कहां माया में है ।
 सुरत को आई समझ, तब आप विज्ञानी हुई ॥३॥
 वह है राजा इस जगह, जिसको भिला है नाम धन ।
 भक्ति शक्ति योग युक्ति, पाई वह रानी हुई ॥४॥
 तन में रहकर राधास्वामी, नाम ले घट में सखी ।
 तब कहूँगा राधास्वामी, धाम स्थानी हुई ॥५॥

[२१-८५]

आलसी हूँ प्रेम मारग में, नहीं होना कभी ।
 भर्म की निद्रा बुरी, इस में न तुम सोना कभी ॥१॥
 रात दिन सुभिरन भजन हो, रात दिन हो गुरु का नाम ।
 खेत में हृदय के भक्ति, बीज को बोना कभी ॥२॥
 क्या समय अच्छा भिला है, जनम नर का पा गये ।
 इस समय को भर्म में, पड़ कर नहीं खोना कभी ॥३॥
 अपनी आंखों आप देखो, उन्नति के दृश्य को ।
 कोष में घट के भिलेगा, मुक्ति का सोना कभी ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, सुख लहो सुख धाम लो ।
 जो न संभलेंगे पड़ेगा, अन्त में रोना कभी ॥५॥

[२२-८६]

पाके सुमती दुर्मती में, भूल में क्यों आ गया ।
 छोड़कर आनन्द सुख, दुख सल में क्यों आ गया ॥१॥
 तू था नर के रूप, नारायण का सच्चा मित्र था ।



हाय माया और भ्रम के, भूल में क्यों आ गया ॥२॥
 जो चमकता रहता है, राजाओं के क्रीट और मुकट में ।
 अब वही अनमोल हीरा, धूल में क्यों आ गया ॥३॥
 गिर गया निज पद से, कारन का पता पाया नहीं ।
 सूक्ष्म होकर मुंह के बल, स्थूल में क्यों आ गया ॥४॥
 अब संभल जा यह संभलने, का है अवसर जान ले ।
 राधास्वामी को सुभिर, प्रतिकूल में क्यों आ गया ॥५॥

[२३-८७]

क्या है तू और कौन है तू, किसको आई यह समझ ।
 चुप हुआ चुप होके बैठा, मुझको भाई यह समझ ॥१॥
 कोई कहता है सगुन, निर्गुन बताता है कोई ।
 किसने तेरे समझने की, कब है पाई यह समझ ॥२॥
 तू नहीं है बंध मुक्ति, जोग जुक्ति तू नहीं ।
 भेद पाये कोई क्योंकर, मुंह की खाई यह समझ ॥३॥
 सब है और कुछ भी नहीं है, है नहीं के बीच में ।
 अन्त में यह बात सूझी, रंग लाई यह समझ ॥४॥
 राधास्वामी ने कहा, बन्द आँख कान और होंठ कर ।
 मैंने जब ऐसा किया, तब तेरी आई यह समझ ॥५॥

[२४-८८]

तीन त्रिलोकी में फँसकर, चौथे को जाना नहीं ।
 लाख समझाया समझकर, भी उसे माना नहीं ॥१॥
 जागते हैं सोते हैं, जाते हैं गहरी नींद में ।
 सूक्ष्म स्थूल और कारन, के परे माना नहीं ॥२॥
 तीनों चौथे पद के हैं, आधार ही पर सर्वदा ।
 कहते हैं हम बात सच्ची, हमको भ्रमाना नहीं ॥३॥
 ब्रह्मा सृष्टि करता, विष्णु पालते शिव मेटते ।



तीन गुन के राग तजकर, चौथे को गाना नहीं ॥४॥
 सृष्टि स्थिति और परलय, के परे क्या वस्तु है ।
 जान जाये फिर उसे, भव जाल में आना नहीं ॥५॥
 द्वैत और अद्वैत, द्वैताद्वैत की बांधी है टेक ।
 यह हैं गोरख धन्धे गुत्थी, इनसे सुलझाना नहीं ॥६॥
 तीन पद को त्यागकर, चौथे का फिर निश्चय दिया ।
 राधास्वामी ने उन्हें, माया में उलझाना नहीं ॥७॥

[२५-८६]

देख दलदल से निकल कर, सीधे तू मारग में चल ।
 दुख का रस्ता छोड़ दे, कहता हूँ अब कुछ जा संभल ॥१॥
 प्रेम और परतीत में, आनन्द है यह जान ले ।
 ईर्ष्या और द्वेष को तज, इनके फन्दों से निकल ॥२॥
 रोग से डर सोग से डर, भोग से डर चेत कर ।
 काल सिर पर आ रहा है, अब न ममता से मचल ॥३॥
 सोने वाले सोया है क्यों, आँख को अब अपनी खोल ।
 सामने तेरे है गड्ढा, देख मत जाना फिसल ॥४॥
 राधास्वामी नाम ले, और नाम में विश्राम ले ।
 शान्ती के पथ में चल, गुरु से लेकर गुरु का बल ॥५॥

[२६-६०]

बुद्धि निश्चय आत्मक, तुझमें अभी आई नहीं ।
 सोचने और समझने की, शक्ति तक पाई नहीं ॥१॥
 सत है क्या और क्या असत है, नित है क्या और क्या अनित ।
 क्योंकि सतसंगत की इच्छा, की रुचि भाई नहीं ॥२॥
 बारता गाना बजाना, यह कभी सतसंग नहीं ।
 सत की संगत ही है सतसंग, और मेरे भाई नहीं ॥३॥
 शब्द क्या है क्या है साखी, जानता है तो बता ।



शब्द साखी वास्तव में, दोहा चौपाई नहीं ॥४॥
 साक्षी का रूप बन जा, शब्द घट के सुन सदा ।
 तब तू जानेगा मरम यह, मरम दुखदाई नहीं ॥५॥
 लाभ क्या संवाद से, और काम क्या बकवास से ।
 है वही भेदी जिसे, माया ने भरमाई नहीं ॥६॥
 संत मत सिद्धान्त का, कैसे पता पायेगा तू ।
 जब कि घट में बैठकर, गुरु पद से लव लाई नहीं ॥७॥
 शब्द तू है शब्द घट की, धुन है गुरु है शब्द रूप ।
 सुरत साखी है समझ मन, में जो दुचिताई नहीं ॥८॥
 कुछ दिनों सतसंग कर, सतगुरु का कुछ दिन शब्द योग ।
 राधास्वामी धाम को जा, जग यह स्थाई नहीं ॥९॥

[२७-६१]

सिंधु मेरी देह मन है, सीप मोती नाम है ।
 नाम जब गुरु का मिला, तब शान्ती विश्राम है ॥१॥
 सीप स्वांती बूंद पाकर, बन्द जब मुख को किया ।
 बूंद जब मोती बना, मोती ही शोभा धाम है ॥२॥
 खारे जल से सिंध के, क्या सीप को सम्बन्ध है ।
 उसको स्वांती की है इच्छा, इच्छा आठों याम है ॥३॥
 स्वांती गुरु के नाम को, सामान्य धुन को जान लो ।
 कर लिया साधन बना मोती, इसी से काम है ॥४॥
 राधास्वामी नाम पाया, मन हुआ मेरा सुखी ।
 सुख से दुख से अब जगत के, चित्त को उपराम है ॥५॥

[२८-६२]

आपके अर्पन है यह, मेरा नहीं तन आप का ।
 ले लो चरणों में लगा लो, मेरा है मन आप का ॥१॥
 मेरा तो कुछ भी नहीं है, किस पै ममता मैं करूँ ।



आप ही का तन है मन है, और है धन आपका ॥२॥
 मन की चंचलता से क्यों हो, दुख जो यह मेरा नहीं ।
 योग युक्ति आप की है, और है साधन आप का ॥३॥
 भूल थी मैंने जो समझा, मेरे ही हैं देह मन ।
 अब तो यह सिर झुक रहा है, और चरन है आप का ॥४॥
 राधास्वामी मौज की, अब तक न आई थी समझ ।
 स्वामीपन है आपका, और दासपन है आपका ॥५॥

[२६-६३]

गुरु हैं मेरे मैं गुरु की, गुरु से मेरा काम है ।
 सिर में मन में तन में मेरे, व्यापा गुरु का नाम है ॥१॥
 भजती हूँ मैं गुरु को, उठते बैठते चलते हुये ।
 जागते सोते गुरु का, ध्यान आठों याम है ॥२॥
 क्यों मुझे चिंता सतावे, क्यों मेरे मन को हो दुख ।
 नाम गुरु का लेती हूँ, और नाम में विश्राम है ॥३॥
 चारों बाते मुझको मिल जावेंगी, गुरु की भक्ति से ।
 गुरु की भक्ति अर्थ धर्म और, मोक्ष है और काम है ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, घट में गुरु दर्शन मिला ।
 घट में राधास्वामी घट में, राधास्वामी धाम है ॥५॥

[३०-६४]

मन में आशा गुरु की रखकर, काम में लग जाओ तुम ।
 पूछना गछना है क्या, सत नाम में लग जाओ तुम ॥१॥
 यह समय अनमोल है, विरथा नहीं खोना कभी ।
 काम में लग जाओ तुम, और नाम में लग जाओ तुम ॥२॥
 साध कर चित को करो, व्यौहार परमार्थ के साथ ।
 मैं नहीं कहता कि धन और, दाम में लग जाओ तुम ॥३॥
 मौज पर निश्चल रहो, निश्चल रहो निष्काम बन ।



धर्म अर्थ और मोक्ष में, और काम में लग जाओ तुम ॥४॥
 घट में सब कुछ है तुम्हारे, घट अघट का रूप है ।
 अपने घट में राधास्वामी, धाम में लग जाओ तुम ॥५॥
 [३१-६५]

प्रेम में चिंता हो कैसी, प्रेम दुचिताई नहीं ।
 प्रेम का नाता अलग, इसमें बहन भाई नहीं ॥१॥
 प्रेम जल प्रीतम तो मछली, प्रेमी उनमें प्रेम है ।
 जल से यह मछली अलग, होती मेरे भाई नहीं ॥२॥
 प्रेम है प्रेमी में, प्रेमी और प्रीतम एक हैं ।
 देखो सूरज और किरन, क्या उनमें एकताई नहीं ॥३॥
 आना जाना प्रेम में कैसा, मुझे भी दो बता ।
 रूप में है रूपता, जानी नहीं आई नहीं ॥४॥
 जोत दीपक की हुई, परगट पतिंगा आगया ।
 पूछने की भावना, उसको कभी आई नहीं ॥५॥
 कीट भृंगी फूल भँवरे, नीर मछली शशी चंकोर ।
 प्रेमी और प्रीतम की छवि, क्या गुरु ने बतलाई नहीं ॥६॥
 राधास्वामी ने दया की, प्रेम की आई समझ ।
 यह समझ पहले भी थी, समझे को समझाई नहीं ॥७॥
 [३२-६६]

दसहरा दस को हरा जब, फिर दिवाली आ गई ।
 मिट गया घट का अँधेरा, और उजाली आगई ॥१॥
 दस हमारी इन्द्रियाँ हैं, पाई है उन पर विजय ।
 जीत कर अन्तर में सूरत, भोली भाली आगई ॥२॥
 तीसरे तिल के सहस्रदल, के कमल के बिगसते ।
 देख ले सुख की अवस्था, मन के माली आगई ॥३॥
 खिल गये अन्तर कमल, और फूट निकली उनकी वास ।



प्रेम के रस की तरावट, डाली डाली आगई ॥४॥
 लाल गुरु का रूप है, तिरकूट के अस्थान पर ।
 देखने लाली चला, आँखों में लाली आगई ॥५॥
 टूटा गढ़ लंका का, रज रावण का भय जाता रहा ।
 अब तो रमता राम के, चित में निहाली आगई ॥६॥
 जोत जगमग हो रही है, राज है परकाश का ।
 कौन कहता है अविद्या, काली काली आगई ॥७॥
 सन्त मत की इस दिवाली को, कोई जानेगा क्या ।
 घट में सूरज चाँद तारों की, उजाली आगई ॥८॥
 राधास्वामी ने दिया, हमको दिवाली का पता ।
 घट में भक्ति आप सुख की, देने वाली आगई ॥९॥

[३३-६७]

हो के गुरु मत में गुरु के, ज्ञान से ज्ञानी बना ।
 मूरती चित में बसी जब, सहज में ध्यानी बना ॥१॥
 द्वैत हूँ अद्वैत हूँ, दोनों से मैं न्यारा भी हूँ ।
 क्या कहे बानी चकित, उसको जो निर्बानी बना ॥२॥
 सिंध की रहती है शक्ति, सारी पीछे बूँद के ।
 जिसको आई यह समझ, वह सच्चा विज्ञानी बना ॥३॥
 किसने सूरज के कभी, फैलाव का पाया पता ।
 सर्व स्थानी है वह, जो एक स्थानी बना ॥४॥
 कट गया मेरेपने, तेरेपने का बंध आप ।
 मुक्त हूँ निरद्वन्द, राधास्वामी अभिमानी बना ॥५॥

[३४-६८]

नाम के लेते ही नामी, की शरन में आगया ।
 ध्यान के धरते ही मन, गुरु के चरन में आगया ॥१॥
 किसको देखूँ आँख से, कानों से क्या चरचा सुनूँ ।



वह तो मेरा होगया, अन्तःकरण में आगया ॥२॥
मैं हूँ उसका वह है मेरा, और से क्या काम है ।
वह हुआ मेरा जो मेरे, स्मरण में आगया ॥३॥
जीने की इच्छा नहीं, मरने का भय जाता रहा ।
इच्छा वाला ही यहाँ, जनम और मरन में आगया ॥४॥
राधास्वामी धुन सुनी, घट में लिया फिर मुख से नाम ।
पहले जो धुनात्मक था, अब बरन में आगया ॥५॥

[३५-६६]

घट में कर दर्शन गुरु का, घट की महिमा जान ले ।
पिंड में ब्रह्मांड है, सतसंग कर पहचान ले ॥१॥
साक्षी के रूप में सुन, शब्द की धुन को सदा ।
शब्द है गुरु रूप गुरु है, शब्द इसको मान ले ॥२॥
शब्द है आकाश का गुन, शब्द ही है तत्व सार ।
शब्द नामी है अनामी, शब्द मथ कर छान ले ॥३॥
शब्द है प्रकाश ज्योती, शब्द के हैं आसरे ।
रूप नाम हैं शब्द, शब्द की टेक मन में ठान ले ॥४॥
शब्द ब्रह्मा शब्द विष्णु, शब्द शिव है ब्रह्म शब्द ।
शब्द गुरु के साथ रहकर, शब्द ही का ज्ञान ले ॥५॥
शब्द के अभ्यास से जब, मन में आई शान्ती ।
लोक और परलोक में यश, कीरती सन्मान ले ॥६॥
शब्द सुन सुन्न दर में जा, सुन्न की समाधी साधकर ।
सहज जीवन मुक्ति का धन, तू मेरे धनवान ले ॥७॥
शब्द पारख शब्द है टकसार, शब्द अलख अगम ।
शब्द की डोरी पकड़ चढ़, शब्द का स्थान ले ॥८॥
शब्द साखी की समझ, अब तक तुझे आई नहीं ।
राधास्वामी शब्द सुन, धुर धाम पद निरवान ले ॥९॥



[३६-१००]

जिसके साधन से मिले, सत नाम धन वह जोग है ।
 नाम से समता न आवे, मन में तब वह रोग है ॥१॥
 नाम क्या है सुनलो तुम, है नाम गुरु के आसरे ।
 पोथियों का नाम दुख, चिंता बिपत का सोग है ॥२॥
 जब सतगुरु के हुआ, सतसंग से कुछ तुमको लाभ ।
 यह समझ लो भाग सोया, जागा सुख संजोग है ॥३॥
 नाम लो तब गुरु से, अन्तर में चढ़ो युक्ति से आप ।
 नाम सच्चा हर्ष और आनन्द, सुख का भोग है ॥४॥
 दुख छुटे भव भय मिटे, राधास्वामी के सतसंग से ।
 इसकी महिमा से यहां, अनजान सारा लोग है ॥५॥

[३७-१०१]

मैं सुखी हूँ दुख नहीं, आता मेरे मन में कभी ।
 चाहे मैं घर में रहूँ, चाहे बसूँ बन में कभी ॥१॥
 सत हूँ चित आनन्द हूँ, मैं मुक्त शुद्ध हूँ सर्वदा ।
 शान्त हूँ निर्भ्रान्त हूँ, आया न बन्धन में कभी ॥२॥
 कब मुझे माया, फँसा सकती है माया जाल में ।
 पुरुष की छाया को, किसने पकड़ा दरपन में कभी ॥३॥
 दोनों व्यौहार और परमार्थ को, समझो मेरा खेल ।
 हूँ कभी निरद्वन्द, और रहता हूँ साधन में कभी ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, मेरा तुम पाओगे भेद ।
 सोचो सतसंगत के वचन, आयें श्रवण में कभी ॥५॥

[३८-१०२]

घट का घर सूना पड़ा है, उसमें आप आ जाइये ।
 दास हूँ सेवक हूँ सच्चा, अब तो आप अपनाइये ॥१॥



काम का मद मोह का, माया का कूड़ा हट गया ।
 शुद्ध निर्मल और सुथरी, कोठरी में आइये ॥२॥
 घट का घर मेरा बने, मन्दिर सुहाना अद्भुती ।
 मूरती आकर विराजे, अपनी छवि दिखलाइये ॥३॥
 मैं तुम्हारा तुम हो मेरे, यह समझ में आगया ।
 भर्म और अज्ञान माया, मोह का मिटवाइये ॥४॥
 आरती साजूँ जलाऊँ, जोत भक्ति प्रेम की ।
 राधास्वामी नाद घंटा, शंख में सुनवाइये ॥५॥

[३६-१०३]

मेरे बाबा इस जनम का, काम पूरा होगया ।
 दुख का श्वेत करले निश्चय, चूरा चूरा होगया ॥१॥
 प्रेम में शक्ति है बल है, प्रेम में है बीरता ।
 इस बुढ़ापे में तू, रण का सच्चा सारा होगया ॥२॥
 नाम पाया नाम में, विश्राम पाया जीते जी ।
 शब्द की धुन घट में प्रगटी, तन तमूरा होगया ॥३॥
 फाँसने को तेरे, आडम्बर रचा था काल ने ।
 नाम की बिजली जो भड़की, जल के धूरा होगया ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, तूने पाई है विजय ।
 अब नहीं चिंता रही, अमृत धतूरा होगया ॥५॥

[४०-१०४]

मैं तो जंगल में पड़ा हूँ, और तुम बस्ती में हो ।
 ऊँचे चढ़ आया बहुत मैं, और तुम पस्ती में हो ॥१॥
 प्यार करना जिंदगी है, जिंदगी औरों को दो ।
 तब कहूँगा सच्चे दिल से, तबक़ये हस्ती में हो ॥२॥
 जीना और मरना मेरा है, दूसरों के वास्ते ।
 तुम पियो उलफत की मय, मेरी तरह मस्ती में हो ॥३॥



करके संगत सतगुरु की, भेद अपना जान लो ।
राधास्वामी नाम का, सुभिरन भजन और ध्यान है ॥४॥

[४१-१०५]

घट में गुरु के रूप का, परकाश तारा होगया ।
मिट गया मन का अंधेरा, और उजारा होगया ॥१॥
प्रीत और परतीत से, विश्वास से साधन किया ।
नाम सच्चा मिल गया, जब वह सहारा होगया ॥२॥
भाग अपना क्या सराहूँ, बन गया मेरा जनम ।
प्रेम के मन आते ही, जग का दुलारा होगया ॥३॥
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी जप सदा ।
राधास्वामी नाम, जीने का सहारा होगया ॥४॥

[४२-१०६]

आस कर गुरु की दया की, हो निरास न तू कभी ।
जो निरास हुआ समझले, गुरु का दास न तू कभी ॥१॥
जग के फन्दों में पड़ा, समझा नहीं उपदेश को ।
तज के पृथ्वी को चढ़ा, प्यारे का आकाश न तू कभी ॥२॥
माया छाया एक है, दोनों में सार की गम कहाँ ।
यह समझ आजाये होगा, फिर उदास न तू कभी ॥३॥
कैसे अपने रूप की, आती समझ प्यारे तुझे ।
आया बरस में पक्ष मास में, गुरु के पास न तू कभी ॥४॥
नाम से मिटते हैं संकट, नाम गुरु का मन्त्र है ।
नाम से काटा है माया, जाल फाँस न तू कभी ॥५॥
अब सभलजा नाम में, विश्राम आठों याम ले ।
क्रिया राधास्वामी नाम से, दुख का नास न तू कभी ॥६॥





[४३-१०७]

मैं भली हूँ या बुरी हूँ, तुम से प्रयोजन ही है क्या ।
 लड़ते क्यों रहते मुझसे, सच कहो अनबन है क्या ॥१॥
 बावली हूँ प्रेम के मारग, मैं बुद्धि खोगई ।
 सामने भक्ति के युक्ति, योग और साधन है क्या ॥२॥
 रात दिन लेती हूँ, गुरु का नाम सोते जागते ।
 मुझको बहकाये भला, बलवान चंचल मन है क्या ॥३॥
 अपने आपे में नहीं, घर और बाहर एक हैं ।
 मेरी दृष्टि के लिये, घर परबत और मधुवन है क्या ॥४॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी जपती हूँ ।
 राधास्वामी नाम का, हीरा मिला अब धन है क्या ॥५॥

[४४-१०८]

मीत जब यह होगया, सब से मिताई होगई ।
 मिल गई संगत भले की, जब भलाई होगई ॥१॥
 रह के चन्दन के निकट, चन्दन बने नीम और पलास ।
 बास अब चन्दन की उनमें, मेरे भाई होगई ॥२॥
 गाँव की मैली नदी, गंगा से जब जाकर मिली ।
 अब नहीं मैली नदी वह, गंगा माई होगई ॥३॥
 आत्मा परमात्मा के, मेल से निश्चल हुआ ।
 जग की चिंता मिटगई, वह अगमापाई होगई ॥४॥
 राधास्वामी ने दया की, आसरा अपना दिया ।
 पाके भक्ति माया परबत, रूप राई होगई ॥५॥

[४५-१०९]

आये थे रोते चले, हँसते हुये संसार से ।
 क्या हमारा बिगड़ा सृष्टि, करम के व्यौहार से ॥१॥
 गोये क्यों इसका पता, अब हमने पाया सोच कर ।



बिछड़े थे गुरु के चरण, सतलोक के परिवार से ॥२॥
 क्यों हूँसे इसका भी कारन, खोल कर कहते हैं अब ।
 सीस गुरुपद से लगाया, प्रेम से और प्यार से ॥३॥
 जिसके जो आता है जी में, वह कहे हमको सदा ।
 फूल को क्या हानि पहुँचे, मेघ की बौछार से ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, रूप की आई समझ ।
 मन नहीं दबता है मुक्ति, बन्ध के अब भार से ॥५॥

[४६-११०]

हम न आये आपसे, और आप से जाते नहीं ।
 लाया जो ले जायेगा, अब दुख से घबराते नहीं ॥१॥
 रहते हैं निरद्वन्द हँसते, खेलते दिन रात हम ।
 होगा क्या कल आज चिन्ता, अपने चित लाते नहीं ॥२॥
 सुख हमारा रूप है, सुख में कहाँ दुख का पता ।
 मिट गया अपना भ्रम, औरों को भ्रमाते नहीं ॥३॥
 प्रेम के मार्ग में आये, द्वेष दृष्टि छिन गई ।
 छोड़ कर अनुराग कोई, रागनी गाते नहीं ॥४॥
 राधास्वामी अपते हैं बस, राधास्वामी धाम में ।
 राधास्वामी नाम पाया, यम का भय खाते नहीं ॥५॥

[४७-१११]

सहज में तुम सहज ही, रीती से गुरु का नाम लो ।
 शब्द योग सहज है सहज में, सहज सहज से काम लो ॥१॥
 फल पकेगा जो सहज में, होगा मीठा और मधुर ।
 जिसमें खींचातान हो, भूले न उसका नाम लो ॥२॥
 सुरत को अपनी लगा भ्रू, मध्य में लो चित को साध ।
 मन न होने पावे चंचल, उसकी विरती थाम लो ॥३॥
 करके साधन सुख लगे, मिलने यह पहला लाभ है ।



पीछे जीवन मुक्ति का, सुख आप आठों याम लो ॥४॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी जप सदा ।
 तन के रहते तनके अन्दर, राधास्वामी धाम लो ॥५॥

[४८-११२]

भाग सोया जाग उठा है, गुरु की किरपा होगई ।
 काल का भय अब नहीं, जब उसकी रक्षा होगई ॥१॥
 नाम पाया भक्ति का धन, पाया मन में हूँ सुखी ।
 सुख मिला संकट कटा, अब छाया माया होगई ॥२॥
 ध्यान और सुभिरन भजन, करने जो बैठा शान्त हो ।
 शब्द परगट होगया, जोती की वरषा होगई ॥३॥
 वर मिले भक्ति का बल का, दान दो शक्ति मिले ।
 मेरे सिर पर आपके, चरनों की छाया होगई ॥४॥
 धन्य सतगुरु राधास्वामी, धन्य महिमा आपकी ।
 इस अधम पर आपकी, अब सच्ची दाया होगई ॥५॥

[४९-११३]

नाम पाया गुरु से तूने, नाम से नामी हुआ ।
 काम कर निष्काम होकर, जब तू निष्कामी हुआ ॥१॥
 नाम जिसको मिल गया, सो देवराज सुरेन्द्र है ।
 सुख है उसको नाम ले लेकर, जो विश्रामी हुआ ॥२॥
 जीते जी है हर्ष आनन्द, पीछे मुक्ति शान्ती ।
 उसकी महिमा क्या कहे, कोई जो सतधामी हुआ ॥३॥
 राधास्वामी नाम जो लेता है, तज कर काम क्रोध ।
 वह कहाँ बँधुआ हो जग का, सब का वह स्वामी हुआ ॥४॥

[५०-११४]

जिसने बन्धन में फँसाया, है छुड़ायेगा वही ।
 जाल माया मोह के, आकर कटायेगा वही ॥१॥
 गर्भ में माता के जो रक्षक, बना था हर घड़ी ।



जागता जीता पुरुष, अब भी बचायेगा वही ॥२॥
 सोच क्यों करता है, और इस सोच से क्या लाभ है ।
 तेरी करनी लाभ का, कारन बनायेगा वही ॥३॥
 ध्यान कर सुमिरन भजन कर, मन में उसकी आस कर ।
 होके परगट भीतर और, बाहर चितायेगा वही ॥४॥
 तन में तेरे मन में तेरे, तेरे सांसों सांस है ।
 रह के अपना रूप भी, तुझको दिखायेगा वही ॥५॥
 घट में है वह पट में है, संसार के खटपट में है ।
 तुझको क्यों चिंता है, खटपट को मिटायेगा वही ॥६॥
 राधास्वामी नाम ले, और नाम में विश्राम ले ।
 नाम की धुन राग अनहद में, सुनायेगा वही ॥७॥

[५१-११५]

जब गुरु रक्षक हुआ मेरा, तो भय किस बात का ।
 ध्यान क्यों करने लगी, संसार के उत्पात का ॥१॥
 जागती हूँ मैं तो पाती हूँ, गुरु को साथ में ।
 सोई पहरेदार वह, रहता है मेरा रात का ॥२॥
 चलते फिरते काम करते, नाम उसका लेती हूँ ।
 डर नहीं अब करती हूँ, माया की यम की घात का ॥३॥
 एक रस जीवन है, संशय से नहीं अब काम कुछ ।
 दिन हो चाहे गरमी का, जाड़े का और बरसात का ॥४॥
 सोने से पहले सदा, भजती हूँ राधास्वामी नाम ।
 जागने पर राग सुख से, गाती हूँ परभात का ॥५॥

[५२-११६]

मन मगन मेरा है सुख का, चैन का भागी हुआ ।
 गुरु की किरपा होगई, गुरु पद का अनुरागी हुआ ॥१॥
 भाग क्या अपना सराहूँ, बालपन में गुरु मिले ।



गाके स्तुति और भजन, भक्ति के मैं रागी हुआ ॥२॥
 राधास्वामी मैं हूँ बालक, बाल बिनती सुनके अब ।
 दीजिये अपनी शरण, तब समझूँ बड़भागी हुआ ॥३॥

[५३-११७]

प्रेम औषधि ईर्ष्या, और द्वेष मन के रोग हैं ।
 रोग जब हों दुख विपत्त, आपत्त कलेश और सोग हैं ॥१॥
 सब हैं उसके वह है सबका, उससे न्यारा कौन है ।
 भूल में कैसे पड़े, भरमे हुये सब लोग हैं ॥२॥
 फूट का फल दुख है, दुख में सत का जीवन कहां ।
 संग सत का फल चखो, इस ही में सुख के भोग हैं ॥३॥
 राधास्वामी ने दिखाया, प्रेम का रस्ता हमें ।
 प्रेम में सुख शान्ती, आनन्द के संजोग हैं ॥४॥

[५४-११८]

प्यार कर सब से भरम की, द्वेष दृष्टि त्याग कर ।
 रूप है यह जगत तेरा, इससे तू अनुराग कर ॥१॥
 तू यहां है तू वहां है, लोक में परलोक में ।
 किस जगह जायेगा इस, रचना से कहदे भाग कर ॥२॥
 'नेति' क्यों कहता है, 'एति' भाव को चित दे सदा ।
 'नेति' है वैराग, 'एति' भाव से अनुराग कर ॥३॥
 'नेति' 'एति' दोनों कल्पित, इनका तू स्थान है ।
 त्यागना हो त्याग दोनों, मोह नींद से जाग कर ॥४॥
 राधास्वामी संत सतगुरु, के वचन सुन प्रेम से ।
 पद कमल में सिर झुका, भक्ति अटल बर मांग कर ॥५॥

[५५-११९]

प्रेम छाया से किया, छाया का गुन जाना नहीं ।
 तूने अपना और उसका, रूप पहचाना नहीं ॥१॥



ब्रह्म में माया है शक्ति, शक्ति दुखदाई कहाँ ।
 भ्रम से बलवान ने, बल पाके बल माना नहीं ॥२॥
 माया छाया एक है, दौड़ो तो दौड़े और चले ।
 रुकने से रुकती है, उस से भय कभी खाना नहीं ॥३॥
 जान लो पहचान लो, और अपनी शक्ति मान लो ।
 जान कर पहचान कर, भ्रान्ति में चित लाना नहीं ॥४॥
 राधास्वामी संग कर, कुछ दिन कि तुम्हको ज्ञान हो ।
 ज्ञान पाकर भूल के, चक्कर में फिर आना नहीं ॥५॥

[५६-१२०]

ब्रह्म में माया है, यह उससे अलग होती नहीं ।
 चांद और सूरज से न्यारी, दोनों की जोती नहीं ॥१॥
 जागता है ब्रह्म तब, माया है उसकी जागती ।
 भिन्न होकर ब्रह्म से, माया कभी सोती नहीं ॥२॥
 बल सदा बलवान में, और शक्ति शक्तिवान में ।
 शिव से शक्ति न्यारी होकर, हँसती और रोती नहीं ॥३॥
 सत में जो सत्ता है वह, सत्ता नहीं सत से पृथक् ।
 सत की सत्ता साथ है, और साथ से खोती नहीं ॥४॥
 राधास्वामी संग में, आई समझ अब रूप की ।
 भिन्न सागर से कभी, मूँगा नहीं मोती नहीं ॥५॥

[५७-१२१]

जनम नर का पाके, सत जीवन का भागी बन के रह ।
 भोग ज्ञान आनन्द को, और तू न त्यागी बन के रह ॥१॥
 बैल गदहा कुत्ता बंदर, बनने की इच्छा को छोड़ ।
 इच्छा माया फाँस है, इससे विरागी बन के रह ॥२॥
 भक्त बन हो ज्ञानी ध्यानी, और त्रिवेकी पारखी ।
 कौन कहता है तुम्हें, जग में अभागी बनके रह ॥३॥



करके सतसंगत गुरु की, रूप अपना जान ले ।
 सच्चिदानन्दम् अखंडम्, तू न साँगी बनके रह ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, तू तो है सबसे बड़ा ।
 शब्द का अभ्यास कर, और शब्द रागी बनके रह ॥५॥

[५८-१२२]

राधास्वामी आये जग में, सन्त का अन्तार धार ।
 शब्द मत सिखलाके, जीवों का किया सच्चा सुधार ॥१॥
 दुर्मती को त्याग दो, द्वेष ईर्ष्या अच्छी नहीं ।
 मन में हो परतीत प्रीत, और प्रेम भक्ति से हो पियार ॥२॥
 साम दाम और भेद से, और दुँड से निकला न काम ।
 प्रेम के मारग में आओ, प्रेम का करके विचार ॥३॥
 प्रेम में शक्ति है रहती, द्वेष में है निबलता ।
 प्रेम का बल लेके अब, होजाओ भवसागर से पार ॥४॥
 राधास्वामी योग सीखो, राधास्वामी योग साध ।
 योग का संयोग हो, इसका करो निस दिन प्रचार ॥५॥

[५९-१२३]

राग अनहद का सुनो, अन्तर में अपने आनकर ।
 चित की विरती रोक लो, सुमिरन भजन और ध्यान कर ॥१॥
 आँख कान और मुखको मूँ दो, यह सुगम साधन करो ।
 चढ़ चलो घट के गगन में, पुतलियों को तान कर ॥२॥
 गुरु से गुरु गम लेके, सत संगत में सीखो यह जतन ।
 काम में लग जाओ, गुरु उपदेश को सत मानकर ॥३॥
 बाहरी बातों को छोड़ो, अन्तरी साधन करो ।
 शब्द का लो आसरा, तुम इसकी महिमा जानकर ॥४॥
 राधास्वामी ने कहा, गुरु करना गुरु को जानकर ।
 पानी पीना पीछे, पहले पानी लेना ध्यान कर ॥५॥



[६०-१२४]

सब रहो मिल जुलके, मिल जुलकर करो सब काम को ।
 देखना अनबन न होने, पावे तुममें नाम को ॥१॥
 दुख वहाँ रहता है, कुमति का जहाँ डेरा पड़ा ।
 सुमति से पाता है प्राणी, चैन और विश्राम को ॥२॥
 तज के आलस और निद्रा, त्याग दो परमाद को ।
 काम में लाओ सदा तुम, दिन के आठों याम को ॥३॥
 एक छिन बेकाम रहना, भी कभी अच्छा नहीं ।
 काम से पाते हैं नर, धर्म अर्थ मुक्ति काम को ॥४॥
 राधास्वामी योग साधो, राधास्वामी योग सीख ।
 जीते जी सुख अन्त में लो, सत को और सतधाम को ॥५॥

[६१-१२५]

प्राण की है मुख्यता, और प्राण सबका सार है ।
 प्राण में बल शक्ति है, दोनों का यह भंडार है ॥१॥
 प्राण को समझो समझकर, शब्द साधो प्राण संग ।
 साधना से सहज में, भव जल से बेड़ा पार है ॥२॥
 प्राण का भी शब्द ही है, सार शब्द को भी लो परस्व ।
 यह परख आयेगी, सतसंग के बचन की धार से ॥३॥
 प्राण के समझे बिना, मत शब्द का अभ्यास कर ।
 फिर न छूटेगा कभी तू, जग के कारागार से ॥४॥
 राधास्वामी गुरु की संगत, पहले कर फिर ले दया ।
 इसके पीछे शब्द साधन, मुक्ति ले संसार से ॥५॥

[६२-१२६]

गुरु के मत में आके, गुरु गम पन्थ को पहचान ले ।
 गुरु की संगत करके, गुरु का मर्म ले गुरु ज्ञान ले ॥१॥
 गुरु है ब्रह्मा गुरु है विष्णु, गुरु है शिव की मूर्ती ।



ब्रह्म है परब्रह्म गुरु है, गुरु से गुरु को जान ले ॥२॥
 गुरु मिले सब कुछ मिला, अब किसकी मन में चाह हो ।
 अर्थ धर्म और मोक्ष की, और कामना की खान ले ॥३॥
 ज्ञान भक्ति दोनों गुरु के, आसरे हैं यह समझ ।
 गुरु दया से दोनों पाले, जीते जी निरवान ले ॥४॥
 राधास्वामी सन्त सतगुरु, रूप में परगट हुये ।
 ले शरन अब पद कमल में, झुक के मेरी मान ले ॥५॥

[६३-१२७]

सब जगह रहता हूँ, और सब में मेरा स्थान है ।
 देख लेता है मुझे वह, जिसमें मेरा ज्ञान है ॥१॥
 आँख वाले देखते हैं, रूप मेरा सब जगह ।
 वह समझ लेते हैं, जिनमें समझ है अनुमान है ॥२॥
 काम करता हूँ सभी, निष्काम मेरा काम सब ।
 मुझ में ज्ञान अनुमान है, और मुझ ही में परमान है ॥३॥
 मुझ में सृष्टि स्थिति, और लय के सब प्रबन्ध हैं ।
 नाम जो लेते हैं मेरा, उनको पद निर्वाण है ॥४॥
 राधास्वामी नाम लेकर, राधास्वामी धाम लो ।
 लोक यश परलोक आनन्द, का जो तुमको ध्यान है ॥५॥

[६४-१२८]

सबके घट घट का है वासी, घट ही उसका धाम है ।
 रूप भी सब हैं उसी के, उसके लाखों नाम हैं ॥१॥
 भक्त की भक्ति है, शक्तिवान की शक्ति है वह ।
 ज्ञान है ज्ञानी का, और सन्तों का वह विश्राम है ॥२॥
 एक है और सहस्र है, और सहस्र से भी है अधिक ।
 सब का है सब में है, सब जग का वह रमता राम है ॥३॥
 फूल फल पत्ते कली पौदा है, पौदों का है बीज ।



देह में वह बल में वह है, उसमें धन और दाम है ॥४॥
 राधास्वामी ने बताया, उसके होकर तुम रहो ।
 वह है उसका जो सुमिरता, उसको आठों याम है ॥५॥

[६५-१२६]

बुद्धि जब तुमको मिली, मिलजुल के रहना सीख लो ।
 द्वेष तजकर प्रेम की, युक्ति का गहना सीख लो ॥१॥
 भाइयों से वैर त्यागो, भिन्नता का भाव लो ।
 सुख से मीठे और मधुर, वचनों का कहना सीख लो ॥२॥
 लड़ते लड़ते होगये हो, अब निबल सोचो भी कुछ ।
 यह दशा अच्छी नहीं, सुमती का लहना सीख लो ॥३॥
 ऐसा हो व्योहार जिससे, सुख मिले और शान्ती ।
 कौन कहता है कि दुख, सागर में बहना सीख लो ॥४॥
 राधास्वामी जग में आये, प्रेम का परिचय दिया ।
 मेल का साधन हो, मिलजुल कर निबहना सीख लो ॥५॥

[६६-१३०]

पाके नर जीवन न समझा, तत्व को और सार को ।
 क्यों बुरा कहते हो तुम, ईश्वर को और संसार को ॥१॥
 बुद्धि उसने दी तुम्हें, बुद्धि की शक्ति युक्ति दी ।
 क्यों बिगाड़ा पाके सब, परमार्थ और व्योहार को ॥२॥
 देवताओं से भी उत्तम, उसने तुमको कर दिया ।
 भ्रम में फँसकर न समझा, तुमने वार और पार को ॥३॥
 करलो सतसंगत गुरु की, ज्ञान की दृष्टि खुले ।
 लाओ तट पर नाव अपनी, छोड़कर मँझधार को ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, जनम को करलो सुफल ।
 काटो बन्धन भ्रम के, और त्यागो कारागार को ॥५॥





[६७-१३१]

प्रेमी और प्रीतम नहीं दो, एक हैं वह एक हैं ।
 कौन कह सकता है दो, उनमें नहीं तू है न मैं ॥१॥
 तन को मनको धन को अरपा, अपने प्रीतम के लिये ।
 आप मरकर सच्चे प्रेमी, प्रेम का जीवन जिये ॥२॥
 मैं जो कहता है, अहंकारी विकारी वह हुआ ।
 तू जो कहता है, भ्रम के बस अनारी वह हुआ ॥३॥
 तोड़ दे मैं तू का बन्धन, मुक्त हो और शुद्ध हो ।
 रूप को समझेगा तब तू, ज्ञान पाकर बुद्ध हो ॥४॥
 राधास्वामी ने दिखाया, प्रेम का रस्ता हमें ।
 प्रेम में जो लय हुये हैं, क्या सुनायें कह तुम्हें ॥५॥

[६८-१३२]

“नेति नेति” “एति एति” में, पड़े अनजान सब ।
 उनकी युक्ति सब है मिथ्या, और मिथ्या ज्ञान सब ॥१॥
 बातों से यह सिद्ध करना, चाहते हैं रूप को ।
 जब न हो अनुभव तो निष्फल, उनका है अनुमान सब ॥२॥
 मैं नहीं जाता वहाँ, बानी की गम उसमें नहीं ।
 बुद्धि से सुलझाएँगे क्या, गुथी बुद्धिमान सब ॥३॥
 तत्व सब का एक है, इसमें नहीं संशय कोई ।
 बातों का फैला बतंगड़, भर्म है अज्ञान सब ॥४॥
 काग चिष्टा जगको कहना, और गिरना मुँह के बल ।
 है दशा यह कैसी सोचें, जगके विद्यावान सब ॥५॥
 जाके सतसंग में गुरु के, हमने पाया भेद को ।
 भेदवादी हम नहीं, अब छुट गया अभिमान सब ॥६॥
 राधास्वामी नाम लो, साधन करो कुछ शब्द का ।
 पाओगे गुरु की दया से, रूप का तब ज्ञान सब ॥७॥



[६६-१३३]

कौन तेरा है यहाँ, कोई नहीं तेरा यहाँ ।
 साथ किसका कौन देता है, कोई देगा कहाँ ॥१॥
 चार दिन का है यह मेला, नाव नद संजोग है ।
 सब बिछुड़ जायेंगे, कोई है यहाँ कोई वहाँ ॥२॥
 भूठे नाते बाँध कर, तू हुआ मन में दुखी ।
 देख अपने रूप को, दो दिन का जग का समाँ ॥३॥
 रोक सब बाहर की वृत्ती, होके तू अन्तरमुखी ।
 शब्द का अभ्यास कर, जैसी दशा में हो जहाँ ॥४॥
 राधास्वामी का सहारा, लेके कर सुभिरन भजन ।
 थोड़े दिन पीछे यह अवसर, हाथ आयेगा कहाँ ॥५॥

[७०-१३४]

गुरु हुये संसार में परगट, गुरु से ज्ञान लो ।
 छोड़ दो पाखंड को, गुरु मत की महिमा जान लो ॥१॥
 गुरु है ब्रह्मा गुरु है विष्णु, गुरु ही शिव के रूप हैं ।
 ब्रह्म गुरु परब्रह्म गुरु है, गुरु को सब कुछ मान लो ॥२॥
 ज्ञान है आधार गुरु के, भक्ति गुरु के आसरे ।
 गुरु के सनमुख जाके तुम, सतगुरु से नाम का दान लो ॥३॥
 आया शुभ अवसर न इस, अवसर को छोड़ो हाथ से ।
 गुरु से मिलकर जीते जी, कैवल्य पद निर्वान लो ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, गुरु की आई अब समझ ।
 जनम को करलो सुफल, निज रूप को पहचान लो ॥५॥

[७१-१३५]

जाके गुरु के पास बैठो, और बचन उनके सुनो ।
 जो सुनो उसको विचारो, जो विचारो वह गुनो ॥१॥
 सुन लो गुनके नित करो, बचनों को उनके तुम अहार ।



तुष्ट होकर साधना से, करलो सब साक्षात्कार ॥२॥
 गुरु की संगत बिन नहीं, अधिकार होता ज्ञान का ।
 जब तलक संगत न हो, मिटता नहीं मद मान का ॥३॥
 मान मद अभिमान मन मत, के सभी समझो विकार ।
 मानी अभिमानी को कब, सूझे कभी सार और असार ॥४॥
 राधास्वामी योग सीखो, जो सहज है और सुगम ।
 जीतेजी पाजाओ मुक्ति, और बनालो निज जनम ॥५॥

[७२-१३६]

ध्यान तक करता नहीं है, कोई मेरी बात का ।
 क्या कहूँ है भेद उनमें, मुझमें दिन का रात का ॥१॥
 काल ने चोटी पकड़ रखी है, सब की हाथ में ।
 फिर भी यह करते हैं भगड़ा, पाँत का और जात का ॥२॥
 सबकी उत्पत्ति स्थिति, और लय की लीला एक है ।
 जिसको देखा न्यून जीवन, कीड़ा था बरसात का ॥३॥
 आये है सो जायेंगे, रहने नहीं आया कोई ।
 ज्ञान होता ही नहीं है, इनको यम की घात का ॥४॥
 यह सहेंगे कष्ट आपत, सुनने वाला कौन है ।
 बात को कब मानता है, देवता जो लात का ॥५॥
 राधास्वामी ने कहा, सब प्रेम के रस्ते चलें ।
 ध्यान यह करते नहीं हैं, सतगुरु की बात का ॥६॥

[३७-१३७]

प्रेम का सौदा करो तुम, प्रेम के व्यौहार में ।
 हानी और घाटा नहीं है, प्रेम के व्यौपार में ॥१॥
 प्रेम में है स्वाद अद्भुत, प्रेम का प्याला पियो ।
 होके मतवाला विचरना, सीखो इस संसार में ॥२॥
 प्रेम से मन जीतलो, सबसे निराला शस्त्र है ।



जीत देखो अपनी पक्की, जय है इसके हार में ॥३॥
मेरे दाता प्रेम दे, अपना न दे तू कुछ मुझे ।
इसमें सुख है, मीठा रस मिलता है इसकी मार में ॥४॥
राधास्वामी ने बताया, प्रेम की नौका चढ़ो ।
पार जाओ डूबते हो, क्यों पड़े मँझधार में ॥५॥

[७४-१३८]

सच्ची बन कर रात दिन, तुम सत गुरु का नाम लो ।
शील लो संतोष लो, संसार में धन दाम लो ॥१॥
मन में जब विश्वास हो, दुर्लभ नहीं फिर कोई वस्तु ।
धर्म लो तुम अर्थ लो, मोक्ष लो सत काम लो ॥२॥
इसके सुमिरन से कटेंगे, फन्द माया जाल के ।
मन की सब खटपट मिटे, और उसकी विरती थामलो ॥३॥
उठते बैठते चलते फिरते, जागते सोते हुये ।
खाते पीते नाम लो, और नाम आठों याम लो ॥४॥
जीते जी यश कीरती लो, भक्ति के मारग में आ ।
तन छुटे पीछे सहज में, राधास्वामी धाम लो ॥५॥

[७५-१३९]

काम जो करना हो, चित दे उसे करते रहो ।
छोड़ो दुविधा दुर्मति, दुचिताई से डरते रहो ॥१॥
यह समझ लो तुम हुये, जैसा किया कर्म और विचार ।
अपनी करनी पार उतरनी, है यही उपदेश सार ॥२॥
सोचो मन में अपने, औरों से न पूछो बात को ।
बचके चलना दूर करके, मन के सब उत्पात को ॥३॥
एक चित होकर करो, सुमिरन भजन दिन रात तुम ।
करनी से हो लगन सच्ची, कथनी को दो मात तुम ॥४॥
सहज में साधन हो, कठिनाई की चिंता छोड़ कर ।



काम में अपने लगे, बातों से मुंह को मोड़ कर ॥५॥
 जो करो पूरा करो, करना हो जो वह करलो आज ।
 भक्ति मुक्ति योग युक्ति, का सजा लो विमल साज ॥६॥
 राधास्वामी की दया से, जन्म अपना लो बना ।
 गुरु की सतसंगत करो, सब पूरी होगी कामना ॥७॥

[७६-१४०]

ध्यान में गुरु मूरती को, ध्यान देकर ध्यान दो ।
 ध्यान की जड़ समझो सुभिरन, इसको तन और प्राण दो ॥१॥
 जब भजन हो मेट दो, संकल्प की बातों को सब ।
 शब्द का श्रवण करो, और पुतलियों को तान दो ॥२॥
 मन की दुविधा छोड़कर, दृष्टि जमाओ रूप पर ।
 मूरती को तीसरे तिल में, सदा स्थान दो ॥३॥
 ध्यान और सुभिरन भजन से, लव लगाओ रात दिन ।
 जो सुनो अन्तर में उसकी, ओर चित के कान दो ॥४॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी जप सदा ।
 साधना सतसंग करने, वालों को सन्मान दो ॥५॥

[७७-१४१]

भक्ति की चूनर पहन ली, और सुशीला बन गई ।
 रूखापन चित से गया जब, तब रसीला बन गई ॥१॥
 चित में है परतीत भक्ति, मन दया का पात्र है ।
 रंग गुरु का चढ़ गया, रंग ले रंगीला बन गई ॥२॥
 मीठी बानी बोलती है, प्रेम के रस से भरी ।
 दुर्वचन क्यों निकले मुंह से, जब छवीला बन गई ॥३॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाले नित ।
 कौन कह सकता है अब, तुझको हठीला बन गई ॥४॥





[७८-१४२]

ज्ञान है गुरु ज्ञान गुरु के, नाम ही में ज्ञान है ।
 नाम का सुमिरन करो नित, नाम में कल्याण है ॥१॥
 नाम हो धुनात्मक, वर्णात्मक को छोड़ कर ।
 गाओ अन्तर में उसे, अनहद से अनहद तान है ॥२॥
 नाम ले नामी का अनुभव, जाग उठेगा आप से ।
 नाम के अन्तरमुखी, सुमिरन में उसका ध्यान है ॥३॥
 नाम और नामी में क्या है, भेद उसका जान लो ।
 जानकर सुमिरन हो वह, क्या जाने जो अनजान है ॥४॥
 चाहे आलस क्रोध चाहे, भाव हो या वह नहीं ।
 नाम में निस दिन है मंगल, नाम मंगल खान है ॥५॥
 हो सहज सुमिरन, सहज रीती से धिरती हो सहज ।
 शान्त चित जब नाम का, निर्भ्रान्त होकर गान है ॥६॥
 राधास्वामी ने बताया, पास हो नामी के तुम ।
 सुरत की बैठक जो घट में, नामी का स्थान है ॥७॥

[७९-१४३]

ज्ञान की करनी करो, और तज दो वाचक ज्ञान को ।
 करनी से अनुभव बढ़ेगा, मेटकर मद मान को ॥१॥
 भूख हो उद्यम करो, खाना पकाकर खाओ तुम ।
 त्याग दो मिथ्या समझकर, बातों के पकवान को ॥२॥
 करनी को चित दे नहीं, कथनी से निस दिन काम है ।
 भोंक कर मर जायेगा, तुम कहदो ऐसे स्वान को ॥३॥
 वह है प्यारा मुझको जो, करता करनी रात दिन ।
 सम किया है करनी से, जिसने अपान व व्यान को ॥४॥
 ज्ञान का कथना सुगम है, करनी का जीवन कठिन ।
 हम तो करनी के हैं साथी, गह लिया गुरु ज्ञान को ॥५॥



जब तलक देखा न अपनी, आँखों क्या कहने से लाभ ।
 करनी करने से बढ़ालो, अनुभव और अनुमान को ॥६॥
 कहने को तो सब बहुत, कुछ कहते रहते हैं सदा ।
 जब करेंगे करनी, पायेंगी, तभी परमान को ॥७॥
 राधास्वामी ने कहा, कथनी तजो करनी करो ।
 दो यही उपदेश अपने, जान को पहचान को ॥८॥

[८०-१४४]

सहज में सब काम करना, सहज धिरती धार कर ।
 सहज में परमार्थ हो, और सहज में व्यौहार कर ॥१॥
 सहज धिरती मुख्य है, उत्तम है सुमिरन और भजन ।
 है अधम तीरथ बरत, संगत से सत के प्यार कर ॥२॥
 गुरु पशु बनना नहीं, अच्छा गुरु का मन्त्र ले ।
 मन्त्र लेकर सहज में, भव जल से बेड़ा पार कर ॥३॥
 भक्ति कर भक्ति समझकर, भक्ति को चित दे सदा ।
 भक्त होजा भक्त जन के, मेल का सत्कार कर ॥४॥
 राधास्वामी मत है क्या, अनुभव से समझेगा उसे ।
 अनुभवी हो काम मद और, लोभ मन से मार कर ॥५॥

[८१-१४५]

पुत्र पति सम्बन्धियों से, प्रेम का व्यौहार कर ।
 घर में रहकर हो भजन और, इस भजन से प्यार कर ॥१॥
 पाया शुभ अवसर न इसको, हाथ से खोना कभी ।
 मन से दुविधा मेटकर, निश्चय को अंगीकार कर ॥२॥
 उठते चलते बैठते, सुमिरन रहे सतनाम का ।
 नाम में जीवन हो तेरा, नाम का परचार कर ॥३॥
 भाग को अपने बढ़ाले, सिंध बुंद की गति परख ।
 शुन्द हो सत सिंध ऐसे, प्रेम का विस्तार कर ॥४॥



राधास्वामी की दया ले, बन दया की मूरती ।
शील पाकर हो सुशीला, चित की दुचिता टार कर ॥५॥

[८२-१४६]

प्रेम दुख संकट नहीं है, प्रेम के मारग में आ ।
प्रेम का रस्ता सुगम है, प्रेम का ले आसरा ॥१॥
प्रेम सुख आनन्द है, और प्रेम में है शान्ती ।
यह समझले अपने मनमें अपने, यह नहीं दुख आपदा ॥२॥
सोना अग्नी में पड़ा, उसको सुहागा जब मिला ।
चमका दमका मैला सोना, तप से फिर कुन्दन बना ॥३॥
सोच अपने मन में, प्रेम और प्रीति के व्यौहार को ।
प्रेम में परतीत में, भक्ति में दे मन को लगा ॥४॥
प्रेम का प्याला पिया, जिसने वही मतवाला है ।
राधास्वामी प्रेम मत है, समझा जो ज्ञानी हुआ ॥५॥

[८३-१४७]

प्रेम जिसके मन में आया, प्रेम से प्रेमी बना ।
संयमी है प्रेम का वह, प्रेम का नियमी बना ॥१॥
योग क्या है प्रेम है, वेदान्त क्या है प्रेम है ।
शान्त क्या है प्रेम है, निर्भ्रान्त क्या है प्रेम है ॥२॥
प्रेम है आनन्द यह, आनन्द का भंडार है ।
प्रेम ही को सत्य समझो, प्रेम सबका सार है ॥३॥
प्रेम से अन्तःकरण हो, शुद्ध निर्मल बुद्धि हो ।
कब अशुद्धि रह सकेगी, प्रेम की जब शुद्धि हो ॥४॥
नित्य है यह प्रेम, मुक्ति प्रेम के आधीन है ।
ज्ञान भक्ति शक्ति युक्ति, प्रेम के आधीन है ॥५॥
प्रेम की विद्या अविद्या, रोग की है औषधी ।
क्या कहूँ संसार के यह, सोग की है औषधी ॥६॥



प्रेम का प्याला पिया, जिसने वह मतवाला बना ।
 दुर्मति जाती रही, भोला बना बाला बना ॥७॥
 कैसी पूजापाठ संध्या, कैसे धर्म और कर्म अब ।
 हट गये भगड़े मिला है, प्रेम का सत मर्म अब ॥८॥
 प्रेम है आनन्द दाता, प्रेम का प्याला रसाल ।
 माँगता है उसके बदले, सीस तन मन को कलाल ॥९॥
 जीते जी मरजाना हो, इस रास्ते में आओ तुम ।
 सहज में शम दम तितित्ता, मुक्ति के फल खाओ तुम ॥१०॥
 काग से कोयल बनो, बगले से अब होजाओ हंस ।
 थोड़ा ही जो हाथ आज्ञाये, तुम्हारे प्रेम अंस ॥११॥
 प्रेम प्रेमी और प्रीतम को, मिला करता है एक ।
 प्रेम ही है ज्ञान धन, और प्रेम ही सच्चा विवेक ॥१२॥
 प्रेम ही सुमिरन भजन है, प्रेम ही है ज्ञान ध्यान ।
 करलो संगत प्रेमियों की, कुछ दिनों इसको पिछान ॥१३॥
 प्रेम भव से पार ले जाने का, नौका बन गया ।
 चित की दुचिताई हटी, दुविधा मिटी तन मन गया ॥१४॥
 राधास्वामी प्रेम के हैं, सिंध और हम बूंद हैं ।
 बूंद जब उसमें मिला, तब फिर कहाँ तू और मैं ॥१५॥

[८४-१४८]

तारने वाले ने तारा, तर गये सब तर गये ।
 जिसको तरना था तरे, भवनिधि के वह तट पर गये ॥१॥
 लालची कामी तरे, क्रोधी तरे मोही तरे ।
 नीची योनी में जो थे, वह नाम ले ऊपर गये ॥२॥
 तारने वाले ने तारा, तार तरने का बंधा ।
 अब हो क्या चिंता किसी को, उसके जो दर पर गये ॥३॥
 आये शरणागत जो उसके, कर लिया जीवन सुफल ।



अब नहीं तरने में संशय, काम अपना कर गये ॥४॥
 राधास्वामी ने दया की, लाये नौका शब्द की ।
 जो चढ़े वह तर चले, चूके जो वह सब मर गये ॥५॥

[८५-१४६]

चित की वृत्ती हो न चंचल, करले उसकी रोक थाम ।
 उसके पीछे बैठकर, एकान्त में लो गुरु का नाम ॥१॥
 नाम के सुमिरन से, आजायेगी तुझमें धारना ।
 धारना से ध्यान होगा, ध्यान होगा आठों याम ॥२॥
 ध्यान से प्रगटेगी अन्तर, सतगुरु की मूरती ।
 मूरती का कर भजन, चिन्तन भजन का कर तू काम ॥३॥
 इस भजन चिन्तन के अन्तर, राम अनहद है छुपी ।
 सुन उसे लय होजा उसमें, गह ले सुन्न में लय का ठाम ॥४॥
 जब सहज आये समाधी, दौड़ चल सत लोक को ।
 लख अलख गम ले अगम की, पाले राधास्वामी धाम ॥५॥

[८६-१५०]

मौज के आधार रहना, मौज का लो आसरा ।
 मौज की हो बात निस दिन, मौज में बरतो सदा ॥१॥
 मीत है स्वामी तेरा, कोई नहीं है और मीत ।
 शत्रु कोई है कहाँ, वह आप जब रक्षक हुआ ॥२॥
 सुख में दुख में शान्ती हो, चित की दुविधा मेट कर ।
 शान्ती में सुख है, दुचिताई में दुख और आपदा ॥३॥
 मन बचन और कर्म से, चित के दुखाने से बचो ।
 चित दुखाना हो है हिंसा, पाप यह सबसे बड़ा ॥४॥
 अपने जैसों से हो मिलना, छोटों पर करुणा रहे ।
 बच के चलना शत्रु से, और हो बड़ों से नम्रता ॥५॥
 काम में मन को लगाओ, मिथ्या बातें छोड़कर ।
 काम में जो रहते हैं, उनको नहीं वह व्यापता ॥६॥



राधास्वामी ने बताया, प्रेम के रस्ते चलो ।
नाव नद संजोग है, बिछड़ेगा जो आकर मिला ॥७॥

[८७-१५१]

सहज ब्रेड़ा पार है अब, नाव थी मँझधार में ।
डूबने का भय मिटा है, दुख नहीं संसार में ॥१॥
एक रस जीवन मिला, निर्वन्द हूँ निर्व्रान्त हूँ ।
अब नहीं है भेद, परमार्थ में और व्यौहार में ॥२॥
द्वैत हूँ अद्वैत हूँ, दोनों का आधार हूँ ।
किसको पूजूँ किसको ध्याऊँ, पन्थ की भरमार में ॥३॥
पढ़ के पोथी खोगये, अपना पता पाया नहीं ।
पंडितों को लाभ क्या था, धरम के व्यौहार में ॥४॥
राधास्वामी ने दया की, गुर बताया ज्ञान का ।
सार पाकर सार का मैं, हो रहा हूँ सार का ॥५॥

[८८-१५२]

साध ले तन मन को अपने, मन से करले यह जतन ।
सुरत को थिर कर मिलेगा, तुझको परमार्थ का धन ॥१॥
करनी में चित को लगादे, बातें कहना छोड़दे ।
यह तो है करनी का साधन, तू लगादे इसमें मन ॥२॥
थिर हो आसन थिर हो बानी, थिर हो चित तेरा सदा ।
आयेगी स्थिरता लगेगी, आप फिर सच्ची लगन ॥३॥
प्रेम और भक्ति के मारग में, है मुख्यता प्रेम की ।
प्रेम का श्रवण मनन हो, प्रेम ही का हो कथन ॥४॥
राधास्वामी नाम ले, और नाम आठों याम ले ।
नाम का हो ध्यान सुमिरन, नाम ही का हो भजन ॥५॥





[८६-१५३]

ध्यान में चित को लगा, बातें बनाना छोड़ दे ।
 भ्रम और अज्ञान के, रस्ते में आना छोड़ दे ॥१॥
 सीस पर जब सतगुरु ने, हाथ तेरे रख दिया ।
 मन में कर विश्वास, और धोके में जाना छोड़ दे ॥२॥
 काम वह आपहि करेगा, और करायेगा वही ।
 आस कर सतगुरु की और, भय भय का खाना छोड़ दे ॥३॥
 चित हो चरनों में गुरु के, मन हो उसके ध्यान में ।
 मोह और माया का मन में, ध्यान लाना छोड़ दे ॥४॥
 राधास्वामी नित जपा कर, जाप अजपा जाप हो ।
 है यही करतब इसे कर, और बहाना छोड़ दे ॥५॥

[६०-१५४]

त्याग दे आसा जगत की, आसा दुख का मूल है ।
 आसा वाले के लिये जग, शम्भु का त्रिसूल है ॥१॥
 किसकी आसा कर रहा है, आस करती है निरास ।
 आसा ही अज्ञान है, और आसा तृष्णा भूल है ॥२॥
 पाके नर जीवन समझ ले, सार और निभ्रान्त हो ।
 फिर तुझे प्रतिकूल जग ही, सर्वदा अनुकूल है ॥३॥
 कृष्ण ने अर्जुन को यह, समझाया कर निष्काम कर्म ।
 मुस्कुराता हँसता खिलता, रह जो सच्चा फूल है ॥४॥
 राधास्वामी ने दया की, प्रेम का रस्ता दिया ।
 प्रेम सब का सार है, और शेष मिट्टी धूल है ॥५॥

[६१-१५५]

आस अब किसकी करूँ, जब दास तेरा होगया ।
 मैं हुआ तेरा तो तू भी, स्वामी मेरा होगया ॥१॥
 तू है मेरे साथ पलछिन, क्यों हो अब चिन्ता कोई ।
 मेरे घट में तेरे रहने का, जो डेरा होगया ॥२॥



सौस पर तूने दया का, हाथ रख परिचय दिया ।
 मैंने समझा काल का, सब हेरा फेरा होगया ॥३॥
 जग नहीं स्थिर न, स्थिरताई जग की वस्तु में ।
 यह तो चिड़िया रैन का, सचमुच बसेरा होगया ॥४॥
 राधास्वामी नाम का, सुभिरन हो उठते बैठते ।
 नाम भव के सिंध के, तरने का बेड़ा होगया ॥५॥

[६२-१५६]

काम करता हूँ तेरा, स्वामी सदा निष्काम बन ।
 लाभ की और हानि की, चिंता नहीं कुछ मेरे मन ॥१॥
 मौज का लेकर सहारा, हूँ मैं जीवन काटता ।
 चाहे रखे घर में चाहे, भेजदे तू सघन बन ॥२॥
 चित में क्यों हो भ्रान्ती, जब तू सहायक होगया ।
 आस है तेरी दया की, और नहीं कोई जतन ॥३॥
 जीने की इच्छा नहीं, मरने से भय खाता नहीं ।
 दोनों ही सम होगये हैं, मुझको अब जीवन मरन ॥४॥
 राधास्वामी नाम हो, होठों पै सोते जागते ।
 राधास्वामी का हो निसदिन, ध्यान और सुभिरन भजन ॥५॥
 जग की लीला देख ली, स्वारथ के हैं साथी सभी ।
 अपना कोई भी नहीं, इससे लगी तुझसे लगन ॥६॥
 स्तुति और निन्दा का डर, मन को सताता अब नहीं ।
 मैं हूँ जैसा जानता है, तुझसे करूँ मैं क्या कथन ॥७॥
 मेरे दाता दीन हूँ, आधीन हूँ मैं सर्वदा ।
 यह दया कर तेरी बानी, का रहे श्रवन मनन ॥८॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी नाम लूँ ।
 राधास्वामी छोड़कर, भावे नहीं कोई बचन ॥९॥



[६३-१५७]

नाम की औषधि मिली, संसार का क्यों रोग हो ।
 नाम लेने वालों को क्यों, इस जगत में सोग हो ॥१॥
 नाम का साधन किया, जिसने उसे सब कुछ मिला ।
 लाभदायक अब उसे क्या, ज्ञान कर्म और योग है ॥२॥
 तीन तापों की है औषधि, राधास्वामी नाम एक ।
 दुख सतावे किसको जब, गुरु नाम का संजोग है ॥३॥
 मेल है जब नाम से तब, सुख का मेला होगया ।
 नाम ही हो भगत का, जीवन यह उसका भोग है ॥४॥
 राधास्वामी नाम के, सुमिरन में सिद्धि शक्ति है ।
 योगी पूरी कर कमाई, नाम ही का जोग है ॥५॥

[६४-१५८]

एक चिन्ता नाम की कर, जग की चिन्ता मेटकर ।
 चलते फिरते नाम ले तू, बैठकर या लेटकर ॥१॥
 गुरु के चरणों में झुका, मस्तक डहे सब मान मद ।
 कर कमाई भक्ति की, और प्रेम गुरु के भेंट कर ॥२॥
 चित से कब जाने लगा है, मान मद हंकार का ।
 सीस अपना राधास्वामी, पद के आगे भेंट कर ॥३॥

[६५-१५९]

तेरी लीला कौन समझे, तू तो अपरम्पार है ।
 एक दृष्टि से तेरे, दुखियों का बेटा पार है ॥१॥
 दुख में सुख रहता है तो, हमको नया कुछ भी नहीं ।
 मौज को क्या जीव जाने, दुविधा का सिर भार है ॥२॥
 दुख में सुख रहता है छुपकर, कष्ट का परिणाम सुख ।
 बन्ध में मुक्ति की छाया, मुक्ति बन्धाकार है ॥३॥



राधास्वामी पूरे सतगुरु, ने बताया भेद को ।
मन में अब चिन्ता नहीं है, सुखदाई यह संसार है ॥४॥

[६६-१६०]

कोई दुख सुख का नहीं, दाता तेरी है भूल सब ।
कर्म अपने करते हैं, अनुकूल और प्रतिकूल सब ॥१॥
कर्म की प्रधानता की, क्या नहीं तुझको समझ ।
कर्म से आनन्द है, और कर्म ही है सब सब ॥२॥
यह जगत है वाटिका, करते हैं प्राणी आके काम ।
कर्म के अनुसार इनके, काँटे हैं और फूल सब ॥३॥
जो ठगेगा वह ठगा जायेगा, निस्संदेह आप ।
प्रेमीजन ही पाते हैं, और प्रेम के बहुमूल सब ॥४॥
अपनी करनी आप भरनी, पड़ती है संसार में ।
अपने घर की आप उठाया, करते ही हैं चूल सब ॥५॥
किस भ्रम में तू पड़ा, औरों की बातें छोड़ दे ।
काम में लग अपने करले, कर्म निज अनुकूल सब ॥६॥
राधास्वामी नाम भज, भगड़ों से बचकर रह सदा ।
जो नहीं समझा तो पढ़ना, लिखना होगा धूल सब ॥७॥

[६७-१६१]

राधास्वामी मेरी बिनती, प्रेम से सुन लीजिये ।
चित हटाकर जगत से, चरणों की छाया दीजिये ॥१॥
मन हो निश्चल ध्यान धरने, से वह उकताये नहीं ।
सुरत ठहरे और ठहरने, से वह घबराये नहीं ॥२॥
रात दिन सुभिरन हो रसना, नाम का रस ले सदा ।
मैं भजूँ हित चित से गुरु के, नाम ही को सर्वदा ॥३॥
रूप का हो ध्यान सुभिरन, नाम का अन्तर में हो ।
शब्द का साधन भजन हो, तन की सुधबुध सारी खो ॥४॥



तन मन में इन्द्रियों में बुद्धि, और तुम चित में बसो ।
 अंग संग दिन रात मेरे, घट के भीतर तुम रहो ॥५॥
 हाथ में आओ करूँ, व्यौहार मैं उपकार के ।
 पाँव ऐसे हों, चलूँ मैं पन्थ में करतार के ॥६॥
 आँख में बैठो जगत मैं, आपकी मूरत लखूँ ।
 कान में बैठो सदा मैं, शब्द अनहद का सुनूँ ॥७॥
 चलते फिरते जागते, सोते रहो तुम साथ में ।
 सहज में आजाये, परमारथ की निधि सिधि हाथ में ॥८॥
 मेरा आपा लय तुम्हारे, आपा में होजाये अब ।
 सुरत जागे गगन में, पृथ्वी में वह सो जाये अब ॥९॥
 तू का मैं का मिथ्या भगड़ा, छूटे जीवन मुक्त हूँ ।
 शुद्ध निर्मल आत्मा हो, सुख से आनन्द से जिऊँ ॥१०॥
 राधास्वामी तुम दया सागर, हो सत करतार हो ।
 ऐसी कृपा कीजिये, अब लोप यह संसार हो ॥११॥

[६८-१६२]

कौन कहता है तुम्हें, भाई कि संसारी बनो ।
 मैं यह कहता हूँ कि तुम, भक्ति के अधिकारी बनो ॥१॥
 चित रहे गुरु के चरन में, मन रहे गुरु ध्यान में ।
 चाहे तुम परमारथी हो, चाहे व्यौपारी बनो ॥२॥
 हाट में संसार के, आये हो सौदा के लिये ।
 प्रेम का व्यौहार करके, सच्चे व्यौपारी बनो ॥३॥
 साथ अपने औरों के भी, हित का तुमको ध्यान हो ।
 अपना हित करते रहो, औरों के भी हितकारी बनो ॥४॥
 राधास्वामी नाम का, सुमिरन हो उठते बैठते ।
 पाके नर तन रहके तन में, तुम निःहंकारी बनो ॥५॥





[६६-१६३]

मौज की आई परख अब, चित में दुचिताई कहाँ ।
 मौज के होते हुये, दुचिताई फिर आई कहाँ ॥१॥
 करने वाला काम करता है, हमारा नाम है ।
 करता धरता आप वह, कुछ मुझसे बन आई कहाँ ॥२॥
 अगमा पाई जगत है, दो दिन के मेले का है ढंग ।
 बिछड़ेंगे सब एक दिन, माँ-बाप और भाई कहाँ ॥३॥
 और का है हाथ और, तलवार करती काट है ।
 काट हर तलवार कब, अपनी कभी लाई कहाँ ॥४॥
 मित्र से क्या नेह और, क्या शत्रुओं से द्वेष हो ।
 मित्रता और शत्रुता, किस पुरुष को भाई कहाँ ॥५॥
 सब ही उसके वह है सब का, सबको उससे काम है ।
 तूने निष्फल और मिथ्या, ममता को पाई कहाँ ॥६॥
 राधास्वामी संत सतगुरु ने, हटाया फंद को ।
 सब का दाता आप वह है, दाई और माई कहाँ ॥७॥

[१००-१६४]

तेरे घट में राधास्वामी, राधास्वामी नाम है ।
 घट के भीतर तू परखले, राधास्वामी धाम है ॥१॥
 एक कर व्यौहार परमारथ, जो दीक्षा मिल गई ।
 शब्द के साधन में लगजा, शब्द से विसराम है ॥२॥
 लाभ और हानी की चिंता, को न आने चित में दे ।
 काम कर मन को लगाकर, काम ही से काम है ॥३॥
 जिसके मन में शान्ती हो, भ्रान्ती से वह बचे ।
 भ्रान्ती व्यापे नहीं अब; शान्ती आठों याम है ॥४॥
 जिसने गुरु को मुख्य समझा, कहते हैं गुरुमुख उसे ।
 भय नहीं है भेद का, नहीं दंड का नहीं साम का ॥५॥



दास को दुर्लभ नहीं है, कृतकार्यता गुरु दया से ।
 प्राप्त उसको धर्म अर्थ और, मोक्ष है और काम है ॥६॥
 राधास्वामी सब जगह हैं, सिंध में और बुन्द में ।
 मोती और मूँगे में भी, यह समझो तब बिसराम है ॥७॥

[१०१-१६५]

क्या कहूँ सुमिरन नियम, संजम है सुमिरन योग है ।
 धारना है ध्यान सुख, आनन्द मंगल भोग है ॥१॥
 ज्ञान का फाटक है सुमिरन, ज्ञान का वह धाम है ।
 भाग वाला है जिसे, सुमिरन से कुछ संजोग है ॥२॥
 सुख की चाहत हो करो, सुमिरन कि दुख संकट हटे ।
 औषधि इसकी करो, तुमको जो भवका रोग है ॥३॥
 इससे बढ़कर कुछ नहीं, वृत्ती में जो दड़ता रहे ।
 लौ लगे गुरुचरन में, अन्तर जो मन में सोग है ॥४॥
 राधास्वामी नाम का, सुमिरन हो सोते जागते ।
 उसकी महिमा से यहाँ, अनजान सारा लोग है ॥५॥

[१०२-१६६]

जिसकी तुमको खोज है, परगट वह तेरे मन में है ।
 भर्मा भूला भटका क्यों, दिन रात घर और बन में है ॥१॥
 इन्द्रियों में है वही, बुद्धि में चित अहंकार में ।
 मास में है प्राण में, नस नाड़ी में और तन में है ॥२॥
 खोल कर कहता नहीं, कोई कभी इस बात को ।
 अपने आपे को समझ, वह तेरे आपापन में है ॥३॥
 तू कहाँ और किसमें करता है, भजन किसके लिये ।
 सोच इसको मन में वह, अन्तर तेरे पल छिन में है ॥४॥
 राधास्वामी धाम घट में, घट में राधास्वामी नाम ।
 सुरत में वह शब्द में वह, और वही साधन में है ॥५॥



[१०३-१६७]

घट में दर्शन पाओगे, संदेह कुछ इसमें नहीं ।
 मैं तो घट में हूँ तुम्हारे, ढूँढ़ लो मुझको वहीं ॥१॥
 शब्द सुनते हो मेरा, अन्तर में चित को साध कर ।
 सुरत मेरा रूप है, इसको समझ लेना यहीं ॥२॥
 सूक्ष्म हूँ स्थूल हूँ, कारन हूँ कारन से परे ।
 देख दृष्टि को जमाकर, अपने अन्तर में कहीं ॥३॥
 चाह जब दर्शन की होगी, देख लोगे आप तुम ।
 जागते में सोते में, संध्या में मैं हूँ सब कहीं ॥४॥
 राधास्वामी धाम में, सेवक हूँ राधास्वामी का ।
 मेल मेला राम में, इसकी परख आई नहीं ॥५॥

[१०४-१६८]

कुछ नहीं दुर्गम सुगम सब, कुछ जो गुरु के दास हो ।
 दास वह सच्चा है, जिसमें भक्ति हो विश्वास हो ॥१॥
 मैं हूँ तुझमें तू है मुझमें, मेरा तेरा है भरम ।
 छोड़ मैं तू का भरम, निज रूप की जब आस हो ॥२॥
 मुझको सुमिरो मुझको ध्याओ, हो भजन मेरा सदा ।
 ध्यान सुमिरन और भजन की, रीत साँसों साँस हो ॥३॥
 हूँगा प्रगट जब बुलाओगे, कभी तुम चाह से ।
 मेरे रहने की जगह, भूमी नहीं आकाश हो ॥४॥
 राधास्वामी ने दया की, भेद अन्तर का दिया ।
 देख लोगे मुझको जब, नित शब्द का अभ्यास हो ॥५॥

[१०५-१६९]

जब तुम्हें चिन्ता सतावे, गुरु का तुमको ध्यान हो ।
 मिट रहे अज्ञान पल छिन, मैं जो सच्चा ज्ञान हो ॥१॥
 दुख में संकट में विपत में, सोच मैं चिन्ता में भी ।



नाम का सुमिरन सदा हो, नाम का अनुमान हो ॥२॥
 सोते उठते बैठते, और खाते पीते जागते ।
 गुरु को अपने पास समझो, परचै का परमान हो ॥३॥
 कौनसी आपत है जो, टाले नहीं टलती कभी ।
 नाम है हथियार जानो, तुम नहीं अनजान हो ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, जब शरण तुम्हको मिली ।
 कुछ दिनों अभ्यास पीछे, जीते जी निरवान हो ॥५॥

[१०६-१७०]

तू दया का रूप प्यारे, तू दया भंडार है ।
 कर दयादृष्टि दया मय, तुम्ह ही से अधिकार है ॥१॥
 सन्त सतगुरु तुम्हको कहते हैं, नहीं हूँ जानता ।
 मेरे अनुभव में, दया करुणा का तू भंडार है ॥२॥
 मेरे दाता सीस पर, मेरे दया का हाथ रख ।
 तू है दानी दीनबन्धु, जगत का दातार है ॥३॥
 मेरे अन्तर में समाना, मेरे साँसों साँस में ।
 तू है व्यापक यह समझ दे, सच्चा जो अधिकार है ॥४॥
 आस रख कर गुरु कृपा की, नित करो अभ्यास तुम ।
 रात दिन छिन छिन तुम्हारा, वह सदा रखवार है ॥५॥
 छोड़ो ममता छल कपट, चतुराई गुरु से नेह जोड़ ।
 भक्ति उसकी कर वह सच्चा, प्रेम का भंडार है ॥६॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी को सुमिर ।
 राधास्वामी सर्व रक्षक, सर्वदा हितकार है ॥७॥

[१०७-१७१]

गुरु के चरनों में पड़ा जब, बन गया मेरा जनम ।
 बन गया अब बन गया, फिर क्या बिगाड़ेगा करम ॥१॥
 चलते फिरते जागते, सोते में सुमिरन नाम का ।



यह धरम मेरा हुआ, क्या धारूँ अब दूजा धरम ॥२॥
 भूला भटका काल माया, ने किया मेरा अकाज ।
 मिल गये सतगुरु छुटा, जन्मों का अब सारा भरम ॥३॥
 सैकड़ों पोथी पढ़ीं, निकला न कोई मेरा काम ।
 गुरु की संगत पाई तब, सूझा ठिकाने का मरम ॥४॥
 धन्य सतगुरु राधास्वामी, धन्य महिमा आपकी ।
 हो दया सुभिरन भजन, और ध्यान हो मेरा नियम ॥५॥

[१०८-१७२]

कहता हूँ सच घट में तेरे, राधास्वामी धाम है ।
 घट में सतगुरु सत की संगत, सत सभा सत नाम है ॥१॥
 होगया बाहर मुखी तब, भूला अपने आप को ।
 धँस के अन्तर खोज अन्तर, ही में सबका ठाम है ॥२॥
 मैं हूँ तेरे घट का बासी, और नहीं तुझ से पृथक् ।
 मिलता हूँ चिंता जिसे, मेरी ही आठों याम है ॥३॥
 राधास्वामी धाम का, दर्शन जो घट में हो तुझे ।
 जोते जी निर्वाण सुख, आनन्द और बिसराम है ॥४॥

[१०९-१७३]

छोड़ खटपट मन की अपने, मन में अपना रूप देख ।
 मन ही के दरपन में जग की, सब प्रजा और भूष देख ॥१॥
 मन ही विष्णु लोक है, सत लोक है धुर धाम है ।
 मन में अमृत कुण्ड मन में, नरक का भी रूप देख ॥२॥
 सोचकर तब खोल मुँह को, सिद्धि सारी मन में है ।
 मन की साधारण गति है, मन में अगम अनूप देख ॥३॥
 मन में सब की खान है, मन गुन है मन निर्गुन सगुन ।
 मन में रूप स्वरूप है, और मन में अपना रूप देख ॥४॥



साध ले निज मन को अब तू, शब्द के अभ्यास से ।
सिर झुका चरणों में मन में, राधास्वामी भूप देख ॥५॥

[११०-१७४]

* ज्ञान दीजे ज्ञान दाता, ज्ञान के भंडार से ।
सहज छुटकारा मिले, सबको कठिन संसार से ॥१॥
कहने को तो बंध मुक्ति, कल्पना मन की सही ।
बिन दया सतगुरु के वह, भिटते नहीं हैं जीते जी ॥२॥
नाम का दे आसरा, चरणों में अपने लीजिये ।
शब्द की महिमा बताकर, अपना सेवक कीजिये ॥३॥
सच्चिदानन्दम् अखंडम्, केवलम् निज रूप हो ।
निज दया से जाये, दुखदाई महा भव कूप खो ॥४॥
आपका है आसरा, और आपका विश्वास है ।
राधास्वामी तारिये, यह भी तुम्हारा दास है ॥५॥

[१११-१७५]

जब दया गुरु की हुई, चरणों की भक्ति मिल गई ।
सब निबलता मिट गई, निश्चय की शक्ति मिल गई ॥१॥
आगये सतसंग में, और संग सत का हो गया ।
दुर्मति जाती रही, जब गुरु के मत का हो गया ॥२॥
प्रेम का प्याला पिया, पीते ही मतवाला बना ।
मन की सुध बुध खोगई, भोला बना भाला बना ॥३॥
पांव में मस्तक नवाया, चित से धारा गुरु का रंग ।
कीट जिसको पहिले सब, कहते थे अब ठहरा भिरंग ॥४॥
आप में आपा लखा, आपे में आपा ज्ञान था ।
भरम में लटका हुआ, भूला था और अज्ञान था ॥५॥
शब्द के सुनते ही अन्तर, में जो धिरती सो गई ।
छिन पल में वासना, माया की सारी खोगई ॥६॥



राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी राग को ।
मारहा हूँ धन्य मैं, कहता हूँ अपने भाग को ॥७॥

[११२-१७६]

है यही शिखा गुरु की, गुरु का गुन गाओ सदा ।
गुरु चरन में करदो अरपन, देह धन मन सर्वदा ॥१॥
गुरु तुम्हारे घट में है, घट ही में दर्शन की चाह ।
शब्द गुरु का संग हो, कोई नहीं गुरु दूसरा ॥२॥
वह तुम्हारा तुम हो उसके, है वह घट में रात दिन ।
घट में ढूँढ़ो घट में पाओ, घट का परदा दो उठा ॥३॥
वह अघट व्यापा है घट में, घट ही में पाओगे तुम ।
बात मैं कहता हूँ सच, जिसको मिला घट में मिला ॥४॥
राधास्वामी की दया से, पूरा करलो काम अब ।
नाम लो बिसराम लो, धन धाम लो तुम घट में अब ॥५॥

[११३-१७७]

ढूँढ़ता फिरता है किसको, ढूँढ़ वह तू आप है ।
तू नहीं संभला अभी तक, यह हृदय का ताप है ॥१॥
चाह करना हो तो कर, अपनी यही अच्छी है चाह ।
भूटे बेटे और बहू सब, भूटे माँ और बाप है ॥२॥
त्याग चिंता मन से सबकी, अब समझले मर्म को ।
क्या कहूँ चिन्ता का निसदिन, तुझको रहता ताप है ॥३॥
तूने अपने को फँसाया, मोह के जंजाल में ।
मोह माया कल्पना यह, मन की तोल और नाप है ॥४॥
आप ही अपनी परख कर, आप को पहचान ले ।
तू अकेला एक है, संसार सब चुपचाप है ॥५॥
करले संगत गुरु की कुछ दिन, आये आपे की समझ ।
गढ़ के मूरत मूरती, पूजक बना क्यों आप है ॥६॥



राधास्वामी की दया से, ज्ञान हो निज आप का ।
आप निज का भूलना ही, है भ्रम और पाप है ॥७॥

[११४-१७८]

सहज में भव पार कर दो, नाव है मङ्गधार में ।
है तुम्हारे हाथ रक्षा, हूँ दुखी संसार में ॥१॥
शब्द साखी क्या सुनूँ मैं, सुनते जी अब भर गया ।
मुझको जीता अब न समझो, जीते जी मैं मर गया ॥२॥
तुमने मेरी बांह पकड़ी, अब तुम्हीं को लाज है ।
राधास्वामी सतगुरु मेरे, मेरा अटका काज है ॥३॥

[११५-१७६]

मन मगन जब होगया, और उसे क्या चाहिये ।
मन की दुचिताई मिटे, और दुबिधा चाहिये ॥१॥
है यह मन चंचल इसे, निश्चल करो अभ्यास से ।
रात दिन उसको गुरु, पद से लगाना चाहिये ॥२॥
जब गुनावन यह मचावे, नाम का सुमिरन करो ।
जो न समझो बात यह, सतगुरु से पूछा चाहिये ॥३॥
एक संशय भी न रहने पाये, संशय कष्ट है ।
करले संगत यह भ्रम, चित से मिटाना चाहिये ॥४॥
राधास्वामी की दया से, इसका परिचय ले सदा ।
पाके परिचय अपने अनुभव, को बढ़ाना चाहिये ॥५॥

[११६-१८०]

राधास्वामी माँ हैं मेरे, राधास्वामी बाप हैं ।
राधास्वामी मित्र गुरु, सम्बन्धी सब कुछ आप हैं ॥१॥
राधास्वामी कर्म भक्ति, राधास्वामी ज्ञान हैं ।
राधास्वामी ध्यान सुमिरन, और भजन अनुमान हैं ॥२॥



राधास्वामी सिद्धि शक्ति, परम पद और मुक्ति है ।
 राधास्वामी साधना हैं, योग है और युक्ति हैं ॥३॥
 राधास्वामी करता धरता, राधास्वामी भूप हैं ।
 राधास्वामी सिंध सद्गति, ताल झील और कूप हैं ॥४॥
 धन्य सतगुरु राधास्वामी, नाम का परिचय दिया ।
 नाम हैं वह रूप हैं वह, और अनाम अरूप हैं ॥५॥

[११७-१८१]

किसकी हम चिंता करें, चिंता है कब किस काम की ।
 आत्म अनुभव होगया, सूझी है अब विसराम की ॥१॥
 कृष्ण और अर्जुन कहाँ हैं, और युधिष्ठिर क्या हुये ।
 यह कथा हमको सुनाओ, बसुदेव और बलराम की ॥२॥
 मोह किसका शोक किसका, रूप को पहचान लो ।
 आत्मा की साधना हो, तुम में आठों याम की ॥३॥
 यह जगत तो स्थिर नहीं, स्थिरताई पाओगे कहाँ ।
 क्यों पड़ी है रात दिन, यह तुम को धूम और धाम की ॥४॥
 धन्य सतगुरु राधास्वामी, ज्ञान का परिचय दिया ।
 अब लगन है हमको निस दिन, राधास्वामी धाम की ॥५॥

[११८-१८२]

शब्द है आधार सब का, शब्द का तू ध्यान कर ।
 शब्द के साधन में लगजा, उसकी महिमा जान कर ॥१॥
 ब्रह्म क्या है शब्द है, परब्रह्म क्या है शब्द है ।
 गुरु की संगत कुछ दिनों हो, शब्द का अनुमान कर ॥२॥
 शब्द में है नाम और इस, शब्द ही में रूप है ।
 गुरु गुरु का शब्द निस दिन, शब्द का सन्मान कर ॥३॥
 शब्द तू है शब्द मैं हूँ, शब्द सब का सार है ।
 शब्द शब्द शब्द शब्द शब्द की पहचान कर ॥४॥



शब्द ब्रह्मा शब्द विष्णु, शब्द शिव का रूप है ।
 शब्द को मथ कर परख ले, दूध जल को छानकर ॥५॥
 शब्द से रचना है सारी, शब्द ही से है प्रकाश ।
 राधास्वामी की दया ले, शब्द महिमा गान कर ॥६॥

[११६-१८३]

योग युक्ति भक्ति मुक्ति, सिद्धि शक्ति ज्ञान है ।
 वह इसे समझे जिसे कुछ, ज्ञान का अनुमान है ॥१॥
 ज्ञान अनुभव ज्ञान साधन, ज्ञान के आधीन सब ।
 ज्ञान ही अनुमान है, और ज्ञान ही परमान है ॥२॥
 पहिले साधन हो तो पीछे, ज्ञान की आसा करो ।
 सच्चा साधन सतगुरु का, प्रेम और सतनाम है ॥३॥
 जाओ सतसंगत में गुरु के, जाके बैठो संग में ।
 फिर बचन चित से सुनो, जो ज्ञान और विज्ञान है ॥४॥
 चित की विरती रोक लो, बचनों से करो यह योग तुम ।
 शम की दम की उपरती की, जो तुम्हें पहचान है ॥५॥
 शब्द का लो आसरा, हो शब्द का श्रवण मनन ।
 पीछे निध्यासन हो, निध्यासन ही उसकी जान है ॥६॥
 होगा निध्यासन से गुरु की, बानी का साक्षात्कार ।
 विरती अन्तर में जमे, यह शून्य का स्थान है ॥७॥
 शून्य में समता है और, समता समाधी है सही ।
 शून्य का है स्थल समाधी, समता की सच्ची खान है ॥८॥
 राधास्वामी की दया से, पहुँचोगे सतपद में फिर ।
 यह है तुरिया और, तुरियातीत का स्थान है ॥९॥

[१२०-१८४]

न यहाँ हूँ न वहाँ हूँ, न वहाँ हूँ न यहाँ ।
 दूँदने जाता है वयो, पोयेगा तू मुझको कहाँ ॥१॥



मन में भक्तों के छुपा बैठा हूँ, जा उनसे तू मिल ।
 यह बतावेंगे बतावेंगे, मैं रहता हूँ जहाँ ॥२॥
 स्वर्ग में पायेगा तू किसको, वहाँ क्या है धरा ।
 मैं कहीं आता न जाता हूँ, जहाँ का हूँ तहाँ ॥३॥
 ज्ञान में हूँ ध्यान में हूँ, हूँ क्षमा और शील में ।
 मैं जहाँ रहता हूँ ज्ञान, और शील रहते हैं वहाँ ॥४॥
 सत है क्या समझा नहीं, जाना असत को भी नहीं ।
 राधास्वामी मत को समझो, खोगई बुद्धि कहाँ ॥५॥

[१२१-१८५]

सत हो सत का रूप, सतनामी हो राधास्वामी तुम ।
 सत चरित सत शब्द, सतधामी हो राधास्वामी तुम ॥१॥
 सत पुरुष सतलोक बासी, सत निवासी सत्य सत ।
 सत सहायक और, सत कामी हो राधास्वामी तुम ॥२॥
 सत हो तो सत्ता मिले, चित हो तो चेतनता मिले ।
 मैं हूँ सेवक और, सत स्वामी हो राधास्वामी तुम ॥३॥
 जीतेजी निर्वाण पद को, सत का जीवन है वही ।
 कहते हैं सतपद के, विश्रामी हो राधास्वामी तुम ॥४॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी नित जपूँ ।
 है मुझे विश्वास, सतगामी हो राधास्वामी तुम ॥५॥

[१२२-१८६]

जिसमें है भक्ति की शक्ति, वह नहीं अबला कभी ।
 भक्ति से दुख दूर होंगे, होगी तुम निस दिन सुखी ॥१॥
 रात दिन सुमिरन भजन हो, मन में गुरु का ध्यान हो ।
 तुम बचोगी कष्ट से, आपत से सुनलो जीतेजी ॥२॥
 जब कभी हो सामना, संकट का चरणों में झुको ।
 गुरु से रक्षा होगी सच्ची, बात यह मानो सही ॥३॥



मन में गुरु हों तन में गुरु हों, गुरु हों साँसों साँस में ।
 ऐसे साधन में लगे, और भूल जाओ सब अजी ॥४॥
 राधास्वामी की दया, तुम पर रहेगी रात दिन ।
 सार सबका इसको जानो, यह है मक्खन सब दही ॥५॥

[१२३-१८७]

पदम कहते हैं कमल को, मन कमल का रूप है ।
 मन ही गृही है विरागी, मन ही परजा भूप है ॥१॥
 मन में सारी योग युक्ति, मन की शक्ति साथ है ।
 मन को करता धरता समझो, मन ही पाँव और हाथ है ॥२॥
 रूप जिसने मन का समझा, वह नहीं होगा दुखी ।
 आगई मन की समझ, जिसमें रहेगा वह सुखी ॥३॥
 मन गुफा में बैठ कर तुम, मन से गुरु का नाम लो ।
 चैन लो सुख शान्ती, निरवान लो धुर धाम लो ॥४॥
 मन को बस में करलो, और सब जगत बस में आयेगा ।
 राधास्वामी की दया से, दास सुख धन पायेगा ॥५॥

[१२४-१८८]

जो रमा रहता है सब में, सब का रमता राम है ।
 उसको सच्चे मन से चित से, बुद्धि से प्रनाम है ॥१॥
 प्रेम का भंडार करुणा, और दया का मूल है ।
 शान्ती आनन्द दायक, सतचित्त उसका नाम है ॥२॥
 उसकी भक्ति कीजिये, उससे रहे लौ सर्वदा ।
 जिसके घट में रम के वह, बैठा उसे विश्राम है ॥३॥
 सच्चिदानन्द अखंडम्, केवलम् आनन्द दा ।
 ब्रह्म सर्वाधार सर्वाधार, सर्वाधाम है ॥४॥
 रमने वाले आके रमजा, हृदय को बैठक बना ।
 फिर तो यह घट ही हमारा, राधास्वामी धाम है ॥५॥



[१२५-१८६]

राधास्वामी की शरण ले, जनम को अपने बना ।
छोड़ दे अब मेरे भाई, दुर्गति आलसपना ॥१॥
काम कर दिन रात डट कर, काम ही से काम रख ।
काम हो निष्काम तेरा, उसकी नित कर कल्पना ॥२॥
काम ले तू अर्थ ले तू, धर्म ले तू मोक्ष ले ।
काल माया कर्म का, कर वीरता से सामना ॥३॥
सोचले अपनी दशा को, क्या था कैसा होगया ।
है कठिन संसार मग में, पाँव का अब थामना ॥४॥
राधास्वामी की दया से, संग सत का मिल गया ।
सुन बचन हित चित से प्यारे, सोचना और जाँचना ॥५॥

[१२६-१६०]

गुरु की संगत से हटेंगे, कर्म माया काल सब ।
काट देगा तू सहज में, आप ही भव जाल सब ॥१॥
मुख्य साधन संग सत का, और शेष हैं समझ गौण ।
इससे सूझेगी परम गति, सद्गति की चाल सब ॥२॥
जिसने पाया पाया सत संग से, भक्ति ज्ञान गम ।
तू उतारेगा विवेक और, तरकना की खाल सब ॥३॥
कुछ दिनों संगत हो कुछ दिन, नाम कुछ दिन मुक्त गति ।
इसके पीछे पद है सत का, सत की रीती पाल सब ॥४॥
अर्थ धर्म और काम मुक्ति, की है कुंजी सत का संग ।
राधास्वामी संग कर, दे काट अब जंजाल सब ॥५॥

[१२७-१६१]

जो हुये बाहर मुखी, क्या जाने अन्तर में है क्या ।
जो रहे अन्तर मुखी, क्या समझे बाहर में है क्या ॥१॥
माया ने डाला है छाय़ा, कर लिया माया मुखी ।



जब नहीं ईश्वर मुखी, क्यों माने ईश्वर में है क्या ॥२॥
 काल मुखता मन में आई, काल मुख वह हो गये ।
 क्या बताये काल में, और उसके चक्कर में है क्या ॥३॥
 मन मुखी जब ठहरे, गुरु मुखता से फिर जाते रहे ।
 कह नहीं सकते हैं, मन के नीचे ऊपर में है क्या ॥४॥
 राधास्वामी की दया, आये तो गुरु मुखता मिले ।
 फिर पता देंगे अघर में, और इस घर में है क्या ॥५॥
 मन मुखी माया मुखी है, जीव मुख और काल मुख ।
 भ्रम से क्या देखे अन्तर, और बाहर में है क्या ॥६॥
 राधास्वामी दीन हित, अज्ञान मेंटों ज्ञान दो ।
 चर अचर को देखकर, समझें चराचर में है क्या ॥७॥

[१२८-१२९]

घट में है घट का है वासी, घट में रहता है सदा ।
 आप वह इस घट में रहकर, घट की कहता है सदा ॥१॥
 घट में जो है गुप्त परगट, उसको परगट करलो तुम ।
 चूका परगट करने से जो, दुख विपत्त सहता है वह ॥२॥
 घट में दूँदो घट में पाओगे, नहीं सन्देह कुछ ।
 मन की खटपट में जो पड़ा, भवसिंधु में बहता है वह ॥३॥
 राधास्वामी ने दया की, शब्द का परिचय दिया ।
 प्रेम सेवक को मिला, आनन्द धुन गहता है वह ॥४॥

[१२९-१३०]

सच्चिदानन्दम् अखण्डम्, केवलम् शुद्धम् सदा ।
 नित्य मुक्तम् रूप अपना, तुम समझलो सर्वदा ॥१॥
 ज्ञान है सुख चित है सुख, सत्य सुख का रूप है ।
 क्या कहूँ मैं आत्मा, सुख शान्ती का रूप है ॥२॥
 आत्मा जब सुख हुआ, फिर दुख का भय क्यों मन में हो ।



दुख सतावे क्यों उसे, सुख ही के जो साधन में है ॥३॥
 सुरत सुख है शब्द सुख है, सुख में सुख का बास है ।
 शब्द की करलो कमाई, दूर यम का त्रास है ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, सुख का अब जीवन मिला ।
 सुख मिला घट शब्द के, मिलने का जब साधन मिला ॥५॥

[१३०-१६४]

ज्ञान गुरु का रूप है, इस ज्ञान का कुछ ज्ञान है ।
 ज्ञान से बढ़कर नहीं कुछ, समझो जो है ज्ञान है ॥१॥
 शोल में है ज्ञान वह तन, और यह है आत्मा ।
 समझो बूझो तुम मनन श्रवण, से जो अनुमान है ॥२॥
 तन में जब है आत्मा, फिर किसकी चिंता है तुम्हें ।
 सोच लो चिन्ता से दुचिताई से, कैसी हान है ॥३॥
 चित न हो चंचल न मन, विक्षिप्त होने न पाये कभी ।
 फिर तो केवल ज्ञान है, हाँ ज्ञान है हाँ ज्ञान है ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, अब समझलो ज्ञान को ।
 ज्ञान ही से भक्ति मुक्ति, ध्यान और अवसान है ॥५॥

[१३१-१६५]

छोड़ दो दुविधा को दुविधा, दुख का कारन मूल है ।
 जो फँसा दुविधा में उसको, दुविधा दुख का मूल है ॥१॥
 नाम लो और नाम ही में, शान्ती विश्राम लो ।
 नाम लेने वाले को यह, जग सदा अनुकूल है ॥२॥
 मन की चंचलता मिटेगी, नाम का सुभिरन किये ।
 नाम की महिमा बड़ी, यह नाम ही बहुमूल है ॥३॥
 क्या फाँँ कैसे कहूँ, तुम आप समझो मन में कुछ ।
 नाम का लो आसरा, फिर कुछ नहीं प्रतिकूल है ॥४॥



राधास्वामी की दया से, आप ही उतरेंगा सब ।
मन के ऊपर, भर्म का, अज्ञान का जो झूल है ॥५॥

[१३२-१६६]

मन के मन में अपने मन को, जब लगाओगे कभी ।
आयेगी उसकी समझ, और ज्ञान पाओगे कभी ॥१॥
मान का है मान वह, और सार का वह सार है ।
उसको जो समझे तो, भव सागर से बेड़ा पार है ॥२॥
ज्ञानी को अभिमान मिथ्या, हो रहा है ज्ञान का ।
वह विषय क्या है भला, इस ज्ञान का अनुमान का ॥३॥
बानी मन की गम नहीं, बुद्धि वहां जाती नहीं ।
भेद उस अनजान, अनजाने का वह पाती नहीं ॥४॥
करलो सतसंग कुछ दिनों, गुरु का तो आये कुछ समझ ।
राधास्वामी की दया से, दास पाये कुछ समझ ॥५॥

[१३३-१६७]

जब गुरु की शरण पाई, आस पूरी हो गई ।
मिल गई गुरु पद से जब, माया से दूरी हो गई ॥१॥
उठ गया परदा भ्रम का, भर्म सारा मिल गया ।
अपने आवे की कहाँ, सुध हो हुजूरी हो गई ॥२॥
क्यों सतावे अब झमेला, काल का और कर्म का ।
शान्त हूँ निर्भ्रान्त हूँ, गुरु पद की धूरी हो गई ॥३॥
भय मिटा संकट कटा, भ्रान्ती गई शान्ती मिली ।
अब नहीं ठग सकती, माया की भगोरी हो गई ॥४॥
ज्ञान का परकाश, राधास्वामी ने अब कर दिया ।
भाग जागा नूर पाकर, अब मैं नूरी हो गई ॥५॥



[१३४-१६८]

चुन लिया है ज्ञान के, मोती को भवसागर में आ ।
 ज्ञान ही का है सहारा, ज्ञान ही का आसरा ॥१॥
 ज्ञान जब पाया गुरु का, छोड़ कर अज्ञान को ।
 सार आया हाथ में, अब कुछ नहीं है कल्पना ॥२॥
 किसको युक्ति सूझे जब तक, ज्ञान का परिचय नहीं ।
 जब नहीं अनुभव तो निष्फल, है बनाना बात का ॥३॥
 मिथ्या वाचक ज्ञान उसका, मिथ्या सब अभिमान है ।
 मिथ्या ही मद मान और, अनुमान देता हूँ जता ॥४॥
 राधास्वामी कह गये, धोका है वाचक ज्ञान में ।
 करले करनी रहके रहनी, तेरा तब होगा भला ॥५॥

[१३५-१६६]

आगये जब पन्थ में, गुरु के तो पग हटता नहीं ।
 छोड़ कर गुरु नाम कोई, नाम अब रटता नहीं ॥१॥
 पत्ता पत्ता कौन सींचे, सींचने में लाभ क्या ।
 मूल पकड़ा हाथ में, यह हाथ से छुटता नहीं ॥२॥
 गह लिया जब मूल को; हाथ आगये फल फूल सब ।
 चित की दुर्मत मिट गई, गुरु प्रेम अब घटता नहीं ॥३॥
 जब मिला परिचय तो, परिचय से ही अनुभव बढ़ गया ।
 मन में आई शान्ती, दुचिता से वह बटता नहीं ॥४॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी रट लगी ।
 मन का अब विश्वास, भय की धार से कटता नहीं ॥५॥

[१३६-२००]

है सुफल नर जनम उसका, जो लगा है काम में ।
 काम की जड़ है छुपी, गुरुदेवजी के नाम में ॥१॥
 चलते फिरते जागते सोते, समाधी हो लगी ।



भूलने पावे न गुरु का, नाम आठों याम में ॥२॥
 प्रेम भक्ति की कमाई, में लगे हैं भक्त जन ।
 यह न समझो मन लगा है, जगत के धन धाम में ॥३॥
 टूट जाये लंकं गढ़, रावण का भय जाता रहे ।
 मानसिक फुरना यही है, अब तो रमता राम में ॥४॥
 हम हुये सेवक हमारा, धर्म सेवा बन गया ।
 सेवा रह कर करते हैं, हम राधास्वामी धाम में ॥५॥

[१३७-२०१]

ज्ञान का जब धन मिला है, ज्ञान के भंडार से ।
 भय हो क्यों अज्ञान से, और उसके कारागार से ॥१॥
 सुरत में है शब्द और है, शब्द उसका आसरा ।
 यह बसेगी अब वहाँ, निज शब्द के आधार से ॥२॥
 चढ़ गया पहिले सहस्र दल के, कँवल में ध्यान कर ।
 फिर हुआ सम्बन्ध गहरा, अन्तरी ओंकार से ॥३॥
 सुन्न पर बैठक बनाई, और आसन जब जमा ।
 शून्य की प्रगटी समाधी, सुन्न के व्यौहार से ॥४॥
 कुछ दिनों ऐसा जतन हो, इस जतन से काम है ।
 सुरत चढ़ ऊँचे मिलेगी, रूप सत्याकार से ॥५॥
 सत के आगे है अलख और, है अलख ही में अगम ।
 भेद पाया मैंने, राधास्वामी के दरबार से ॥६॥
 मेरी बन आई, बनी बिगड़ी मेरी संदेह क्या ।
 राधास्वामी ने छुड़ाया, जगत के जंजार से ॥७॥

[१३८-२०२]

आई शरणागत तुम्हारे, आके कैसी खोगई ।
 जागने की विधि न सझी, मोह निद्रा सोगई ॥१॥
 इतकी ठहरी और न उतकी, क्या करूँ मैं हूँ दुखी ।



जनम पाकर नर का अपने, जनम को मैं रोगई ॥२॥
 सुख नहीं संसार का, पाया न सुधरा मेरा काम ।
 लोक और परलोक खोये, क्या से क्या मैं होगई ॥३॥
 आई थी सतसंग में, करने कमाई धर्म की ।
 बीज मन के खेत में, द्वेष ईर्ष्या के बोगई ॥४॥
 राधास्वामी तुम दया सागर हो, कुछ करदो दया ।
 हाथ मैं तो आप, परमारथ से भी अब धोगई ॥५॥

[१३६-२०३]

हंस हो और हंस के, राजा हो ऐसा जान लो ।
 हंस होकर हंसपन के, रूप को पहचान लो ॥१॥
 दूध और पानी मिला है, द्वन्द के संसार में ।
 पानी छोड़ो दूध पीलो, ऐसा गुरु का ज्ञान लो ॥२॥
 तुमको क्या चिन्ता हुई, चिन्ता भी है किस काम की ।
 गुरु सहायक हैं तुम्हारे, गुरु दया का दान लो ॥३॥
 जो चरन में गुरु के आया, वह नहीं रहता दुखी ।
 गुरु है रक्षक ऐसा निश्चय, अपने मन में मान लो ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, कुछ करो सुमिरन भजन ।
 घट के भीतर आके बैठो, पुतलियों को तान लो ॥५॥

[१४०-२०४]

नाम जब गुरु का लिया, हो जाओ गुरु का ध्यान कर ।
 कीट भृंगी की दशा हो, ध्यान हो मन मान कर ॥१॥
 गुरु की संगत के बिना, अधिकार कैसे पाओगे ।
 यह समझ लो तुम, भली प्रकार से अनुमान कर ॥२॥
 जिनको दर्शन की है चिन्ता, पायेगा दर्शन वही ।
 भूल मत इस बात को, सच्चे वचन को मान कर ॥३॥
 गुरु की संगत से मिलेगा, ज्ञान अपने रूप का ।



देख लोगे अपना आपा, आप तुम पहचान कर ॥४॥
 राधास्वामी ने बताया, शब्द का साधन करो ।
 घट में अपने आन कर, और पुतलियों को तान कर ॥५॥

[१४१-२०५]

जब सुशीला होगई, आनन्द मन को मिल गया ।
 जगत की चिन्ता हटी, फिर सुख तो तन को मिल गया ॥१॥
 शील है सच्चा रतन, अनमोल इसको जान लो ।
 वह हुआ धनवान निर्धन, आप धन को मिल गया ॥२॥
 शील ही आनन्द है, और शील ही है शान्ती ।
 शान्तीपन हाथ है, आनन्दपन को मिल गया ॥३॥
 राधास्वामी ने बताया, शब्द का अभ्यास कर ।
 जो करेगा यह यतन, समझो यतन है मिल गया ॥४॥

[१४२-२०६]

ज्ञान जब पाया तो, फिर अज्ञान की क्यों चाह हो ।
 भूलने का भय हो कैसे, दृष्टि में जब राह हो ॥१॥
 गोता मारा सिंध में, और मोती लाया हाथ में ।
 वह न डूबेगा जिसे, गहराई की जब थाह हो ॥२॥
 चोर चोरी इसलिये करता है, निरधन है बहुत ।
 चोरी कैसे वह करे, जो मालोधन का शाह हो ॥३॥
 तुमको चिन्ता क्यों हुई, चिन्ता से अब क्या हानि लाभ ।
 बाँह में जब गुरु के निस दिन, बाँह ही में बाँह हो ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, होगया है मन निडर ।
 अब उसे यम काल माया की, कहाँ परवाह हो ॥५॥

[१४३-२०७]

ज्ञान का ले आसरा, और ज्ञान का आधार हो ।
 फिर सहज भव सिंध से, बेड़ा तुम्हारा पार हो ॥१॥



शब्द में है अर्थ, और अर्थ में है ज्ञान गम ।
 चित की विरती रोक लो, और शब्द गुरुमत सार हो ॥२॥
 मुंह से निकले वचन मीठे, मन में हो करुणा सदा ।
 दीन दुखियों पर दया, घर वालों से नित प्यार हो ॥३॥
 भाग जब उदय होगया, फिर चिंता से क्या लाभ है ।
 उसको क्या खटका रहा, गुरु जिसका राखनहार हो ॥४॥
 राधास्वामी नाम की, घट में लगे सच्ची लगन ।
 यह लगन सच्ची लगे, फिर जग न कारागार हो ॥५॥

[१४४-२०८]

जी में आता है सहज में, भव का सागर मैं तरूँ ।
 मन बड़ा दुखदाई है यह, रुकता नहीं है क्या करूँ ॥१॥
 नाम में लगता नहीं, फिरता डाँवा डोल नित ।
 यह समझ उसको नहीं, किससे हित किससे अहित ॥२॥
 ठानता है हठ हठीला, बनके यह मेरी सदा ।
 भ्रम में पड़कर, गुनावन में है रहता सर्वदा ॥३॥
 कैसा सुभिरन ध्यान कैसा, अपना सुभिरन ध्यान है ।
 मन है चंचल और, चंचलता की उसमें खान है ॥४॥
 राधास्वामी अब दया कीजे, दया की दृष्टि से ।
 दो शरण यह यह मन न बहके, छूटूँ इसकी सृष्टि से ॥५॥

[१४५-२०९]

प्रेम जिसके मन में है, वह जगत का प्यारा बना ।
 जिसने देखा वह उसी की, आँख का तारा बना ॥१॥
 करके सुभिरन और भजन, और ध्यान तन मन साधकर ।
 नाम पाया भक्ति पाया, भक्त वह सारा बना ॥२॥
 घट पर आसन मारकर, बैठा सुनी अनहद की तान ।
 उसका तन ही तानपूरा, और दोतारा बना ॥३॥



चित में दुचितार्ई नहीं, चिंता की कठिनार्ई नहीं ।
 आप राधास्वामी सतगुरु, उसका रखवारा बना ॥२॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी जप सदा ।
 राधास्वामी का हो सेवक, उसका वह प्यारा बना ॥३॥

[१४६-२१०]

शब्द गुरु का नाम है, और शब्द गुरु का रूप है ।
 शब्द हो चैतन्य है, और चैतन्य का वह रूप है ॥१॥
 शब्द का लो आसरा, और शब्द का स्थान लो ।
 शब्द परजा शब्द राजा, रात्र है और भूप है ॥२॥
 शब्द का सुमिरन भजन हो, शब्द ही का ध्यान हो ।
 शब्द ही है एक और यह, शब्द हो बहुरूप है ॥३॥
 शब्द घट में गूँजता है, रात दिन उसको सुनो ।
 मन की चंचलता मिटे, यह अगम अलख अनूप है ॥४॥
 राधास्वामी की दया से, घट के रस्ते में चलूँ ।
 ज्ञान का सूरज है चमका, उसकी चहुँ दिस धूप है ॥५॥

[१४७-२११]

बावली चिंता है कैसी, गुरु तो तेरे पास है ।
 उसकी मन में कर तू आसा, और किसकी आस है ॥१॥
 भक्ति की चूनर पहिन ले, भक्ति का सिंगार कर ।
 ओढ़ चादर शील की, आनन्द सुख की रास है ॥२॥
 तुझमें भक्ति प्रेम है, और तुझमें है प्रतीत प्रीत ।
 तुझमें श्रद्धा तुझमें दृढ़ता, तुझ ही में विश्वास है ॥३॥
 प्रेम में शक्ति है शक्ति, प्रेम की है मूरती ।
 प्रेम जिसके मन में आया, स्वामी का वह दास है ॥४॥
 नाम क्या तेरा है, तेरा रूप है कैसा सखी ।
 क्यों भरम में है पड़ी, यह भरम यम की फाँस है ॥५॥



अपने घट में देख, अपना आपा ले उसको परख ।
 तुझमें ज्योती ज्ञान गम की, ज्ञान का परकास है ॥६॥
 राधास्वामी की दया से, तू हुई सत संगिनी ।
 सत की संगत रात दिन कर, सत ही सांस और भास है ॥७॥

[१४८-२१२]

आके चरणों में पड़ा हूँ, तेरे सबको त्यागकर ।
 ली शरन पद कमल की, सम्बन्धियों से भागकर ॥१॥
 कष्ट पाया दुख उठाया, मोह से व्याकुल हुआ ।
 छोड़ी आलस नींद की, निद्रा से भव के जागकर ॥२॥
 अब नहीं जाता कहीं, जाने लगा क्यों किस जगह ।
 बात आई अब समझ में, प्रेम और अनुराग कर ॥३॥
 एक का हो रहना अच्छा, बहुमता है दुर्गता ।
 एक मता है सद्गता, यह सोचा भाग और त्यागकर ॥४॥
 घूमा भरमा खालिये चक्कर, बगुले के समान ।
 अब तो चित निश्चल हुआ है, प्रेम का वर मांगकर ॥५॥
 कट गई अज्ञान की जड़, आया जब सतसंग में ।
 राग उपजा सत का, सतसंग में गुरु के लागकर ॥६॥
 राधास्वामी मौज की आई समझ, सुनकर बचन ।
 शब्द का श्रवण हुआ, भक्ति के रस में पागकर ॥७॥

[१४९-२१३]

कहते हैं सब सन्त भक्त का, है सहज साधन सही ।
 थोड़े दिन में करलो बुद्धि, ज्ञान का गुर है यही ॥१॥
 पर कोई ऐसा नहीं जो, तत्व का ज्ञाता मिले ।
 प्रश्न पूछूँ उनका उत्तर, मुझको समझाता मिले ॥२॥
 कितने साधक हैं अनाड़ी, जानते कुछ भी नहीं ।
 बहके फिरते हैं कहीं, और मारे फिरते हैं कहीं ॥३॥



टेक बांधी भूठी कुछ, समझा न मत के सार को ।
 ध्यान सुमिरन और भजन के, धरलिया सिर भार को ॥४॥
 कोई कहता है कि पहिले, धाम चढ़ना है कठिन ।
 त्रिकुटी कोई न पहुँचा, व्यर्थ भी सुमिरन भजन ॥५॥
 जो न हो त्रिकुटी का साधक, वह नहीं चेला हुआ ।
 भौंदू सतसंगी को भौंदू, भक्त से मेला हुआ ॥६॥
 काल क्या है कोई बतलाता, नहीं क्या है दयाल ।
 गालियां देते हैं फिरते, यूँही कहते काल काल ॥७॥
 कैसे यह सृष्टि हुई, हम क्यों करें सुमिरन भजन ।
 कोई समझाता ही नहीं, निष्फल हुआ सुमिरन मनन ॥८॥
 भाग उदय मेरा हुआ, सतगुरु की जब पाई शरन ।
 सहज में आई समझ, और सहज ही का था यतन ॥९॥
 धन्य सतगुरु राधास्वामी, धन्य तुम दाता दयाल ।
 होगई मुझ पर दया, टूटा भरम का मोह जाल ॥१०॥

[१५०-२१४]

गुरु का सुमिरन ध्यान करके, गुरु की मैं दासी बनी ।
 देह का अध्यास छूटा, अजर अविनाशी बनी ॥१॥
 गाती फिरती रहती हूँ मैं, राधास्वामी नाम को ।
 नाम से परताप पाया, मानसिक विसराम को ॥२॥
 प्रेम जल के बूंद की, मैं सहज प्यासी हो गई ।
 रटते पी पी आप ही, अपने पिया सी हो गई ॥३॥
 शब्द का साधन हुआ, जप तप से मुँह को मोड़कर ।
 जग से मैं न्यारी बनी, सतगुरु से नाता जोड़कर ॥४॥
 राधास्वामी दीन हितकारी, मेरा उद्धार हो ।
 ऐसी करनी कीजियेगा, सहज बैड़ा पार हो ॥५॥





[१५१-२१५]

आत्मा मेरा सुखी है, देह सुख का ठाम है ।
 मन के साधन सुख का, सुख ही सतगुरु का नाम है ॥१॥
 दुख नहीं चिंता नहीं, आपत नहीं संकट नहीं ।
 सामने आंखों के मेरे, राधास्वामी धाम है ॥२॥
 राधास्वामी की दया से, जन्म का फल पागया ।
 जीते जी सुख भिल गया, दिन रात सुख से काम है ॥३॥

[१५२-२१६]

चित्त का आनन्द का, और रूप सत का होगया ।
 मैं उसी दिन सुधरा, जिस दिन गुरु के मत का होगया ॥१॥
 काल के माया के बन्धन, सब सहज में कट गये ।
 जिन दुखों से मुझको घबराहट, थी आप ही कट गये ॥२॥
 ध्यान से सुभिरन भजन से, मुझको निस दिन काम है ।
 भूलकर जग भर्म को, होठों पे गुरु का नाम है ॥३॥
 घट में सूरज चाँद प्रगटे, सब अँधेरा खो गया ।
 शब्द के सुनते ही, सुन्न की आत्म निद्रा सो गया ॥४॥
 भव मिटा संकट कटा, आनन्द मन में छा गया ।
 धन्य राधास्वामी सतगुरु, मैं शरन में आ गया ॥५॥

[१५३-२१७]

बन्दनम्

बंदनम् अद्वैत द्वैत, अभाव भाव प्रकाशनम् ।
 बंदनम् संसार त्रिविधि, त्रिकार ताप विनाशनम् ॥१॥
 बंदनम् आदर्श इष्ट, अपार पार निवासनम् ।
 बंदनम् गुरु पदम् पदरज, तिमिर दोष विभंजनम् ॥२॥
 नित्य मुक्त विशुद्ध निर्मल, सत्त चित आनन्दमय ।



शान्त बुद्ध अपार अद्भुत, सन्त सतगुरु पद गहे ॥३॥
 ज्ञान ध्यान न कर्म सेवा, भक्ति प्रेम न लह सके ।
 गुरु दया बिन मुक्तिधाम का, रूप न कोई कह सके ॥४॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाइये ।
 राधास्वामी चरन कमल की, ओर सीस झुकाइये ॥५॥



मंगलम्

मंगलम् गुरु देव मूरति, मंगलम् पद पंकजम् ।
 मंगलम् त्रयलोक स्वामी, मंगलम् जन रंजनम् ॥१॥
 धन्य महिमा आपकी है, धन्य अद्भुत ज्ञान है ।
 आप ही के पद कमल में, सद्गति निर्वाण है ॥२॥
 राधास्वामी भक्ति दीजे, पार भव से कीजिये ।
 निज दया से अपना करके, तार मुझको लीजिये ॥३॥



तीसरी धुन

[१-२१६]

गुरु दाता के चरण में आन पड़ी ।

आन पड़ी मैं आन पड़ी, गुरु दाता के चरण में आन पड़ी ॥
 देश विदेश में भरमी भूली, देखे बन मैदाना ।
 भर्मत फिरी चैन नहीं चित को, मिला न ठौर ठिकाना ॥ आन पड़ी
 मस्जिद देखे मन्दिर देखे, देखी कबर समाधी ।
 कुछ भी हाथ न आया मेरे, बढ़ गई मन की उपाधी ॥ आन पड़ी
 पोथी पढ़कर शब्द जाल में, अटकी हो दीवानी ।



भरम मिटा गुरु की संगत मिल, हुई प्रेम मस्तानी ॥ आन पड़ी
 कर्म किया और ज्ञान कथा बहु, मन गुत्थी न सुलझी ।
 गुरु का शब्द सुन शान्ती आई, उलझी गुत्थी सुलझी ॥ आन पड़ी
 तीरथ गई तो पत्थर पानी, बरत में भूख पियासा ।
 तपकर तपी कष्ट तन भोगा, चित मेरा हुआ उदासा ॥ आन पड़ी
 गुरु मिले सत्संग कराया, दया के बचन सुनाये ।
 चिंता डायन घट से भागी, सार तत्व दरसाया ॥ आन पड़ी
 धन्य धन्य गुरु परम सनेही, धन्य तुम्हारी महिमा ।
 राधास्वामी सच्चे जीव हितैषी, किससे मैं दूँ उपमा ॥ आन पड़ी
 [२-२२०]

गुरु चरन कमल की दासी बनी ।
 दासी बनी सुखरासी बनी, गुरु चरन कमल की दासी बनी ॥
 खोजी खोज खोज थक हारी, खोज का अन्त न देखा ।
 खोजे हाथ लगा नहीं कुछ भी, काल करम का लेखा ॥ दासी बनी
 माया छाया एक रूप दोऊ, जाने सब संसारी ।
 भगता के पाछे लगी डोले, सनमुख भागनहारी ॥ दासी बनी
 लोक परलोक धरम और अधरम, चेतन और जड़ काया ।
 दुविधा फँस दोनों खो बैठी, मिला राम न माया ॥ दासी बनी
 जो जो किया कर्म व्यौहार, संस्कार दृढ़ बैठे ।
 बन्धन मोह के मोटे रस्से, अन्तःकरण में पैठे ॥ दासी बनी
 स्वारथ वश मैं देखन आई, राधास्वामी समाजा ।
 गोरस बेचत हरी मिले मेरे, एक पन्थ दो काजा ॥ दासी बनी
 सुरत शब्द मत भेद लखाया, सुखमन पन्थ लखाया ।
 भक्ति ज्ञान का मूल जताया, भरम धिकार नसाया ॥ दासी बनी
 सत गुरु सत नाम सत संगत, अधिकारी कोई पावे ।
 राधास्वामी की कृपा से, फिर भव जाल न आवे ॥ दासी बनी



[३-२२१]

गुरु दाता की शरन में आन गही ।

आन गही मैं आन गही, गुरु दाता की शरन मैं आन गही ॥

सुख सम्पत्त धन धाम बढ़ाई, किसी का नहीं ठिकाना ।

यह तो सब बादर की छाई, झूठा सब मद माना ॥ आन गही

बालू की दीवार जगत है, धिनसत लगे न बारा ।

चार दिना का सकल पसारा, कुल कुटुम्ब परिवारा ॥ आन गही

ज्ञान ध्यान जप तप और संयम, मिथ्या वाद विवादा ।

इन से काज सरे नहीं कोई, उपजे हिये विषादा ॥ आन गही

पल में सिंधु रेत बन जावे, पल में गिरे हिमाला ।

पल में नगर ग्राम सब छूटें, देवल और दीवाला ॥ आन गही

गुरु की शरनागत जब आया, समझ पड़ी गुरु बानी ।

राधास्वामी की दाया से, सहज हुआ निर्वानी ॥ आन गही

[४-२२२]

गुरु दया हुई गुरु प्यारी बनी ॥टेका॥

प्यारी बनी गुरु प्यारी बनी, मैं अपने गुरु की प्यारी बनी ॥

मैं बाली गुरु पितु और माता, गुरु का सहारा पाया ।

गुरु की गोद खेलूँ दिन राती, दुख सुख सब बिसराया ॥ प्यारी

एक रस भक्ति हृदय में छाई, चंचल मन भया निश्चल ।

भाग्य उदय हुआ चिंता भागी, नहीं चित में अब हलचल ॥ प्यारी

एक आस विश्वास गुरु का, दुर्मति अब न सतावे ।

यह गति कोई कोई साधू जाने, गुरु भक्ति जब पावे ॥ प्यारी

ईश ने सिरजा फाँस फँसाया, मया मोह लपटाया ।

गुरु ने सिरजा फन्द कटाया, आवागमन नसाया ॥ प्यारी

धन नहीं मांगूँ मान न मांगूँ, ज्ञान ध्यान नहीं मांगूँ ।

मन रहे चरन कमल गुरु राता, भक्ति रस मैं मांगूँ ॥ प्यारी



दर्पन की सुन्दरी बन खेलूँ, किसी के हाथ न आऊँ ।
काल जाल नहीं मोहि फँसावे, भक्ति भाव चित लाऊँ ॥ प्यारी
जाप मरा अजपा भी मर गया, चुप हुई अनहद बानी ।
राधास्वामी ने खेल खिलाया, प्यारी हुई मस्तानी ॥ प्यारी

[५-२२३]

दुविधा ने गले फाँसी डारी ॥टेका॥
फाँसी डारी फाँसी डारी, दुविधा ने गले फाँसी डारी ॥
पुरुष प्रकृति ने खेल रचाया, काल जाल फैलाया ।
दुविधि प्रकार की चाल चलाई, द्वन्द्व जगत निर्माया ॥फाँसी डारी
चन्द्र सूर की लीला अद्भुत, रात दिवस की लीला ।
ज्ञान अज्ञान अविद्या विद्या, कहीं नीला कहीं पीला ॥फाँसी डारी
जीवन मृत्यु अशुभ शुभ कर्मा, नर्क स्वर्ग में बासा ।
पितरी देव का पंथ दुहीला, देखे कोई तमासा ॥फाँसी डारी
माया ब्रह्म खिलाड़ी दोई, चौसर ठाठ सजाया ।
सुरत की गोठ से खेलन बैठे, हार जीत बिलगाया ॥फाँसी डारी
कोई कच्ची कोई पक्की गोटी, चौसर घर में नाची ।
कच्ची माया चाल चले नित, पक्की लाल बन राची ॥फाँसी डारी
पक्की को भी चैन कहाँ है, पौ लग हो रही कच्ची ।
फिर वही खेल खिलाड़ी खेलें, सुरत खेल कहे सच्ची ॥फाँसी डारी
कुट पिट कर सुरत भई बिहाला, खेल से मुक्ति मांगे ।
नहि कोई देवे सहारा अपना, दुख सुख भव भर्म लागे ॥फाँसी डारी
सतगुरु दया रूप धर आये, सुरत को अंग लगाया ।
शब्द भेद दे दिया सहारा, चौसर को उलटाया ॥फाँसी डारी
काल चक्र का द्वन्द्व पसारा, अब नहीं किंचित व्यापे ।
राधास्वामी की किरपा से, लख लिया आपा आपे ॥फाँसी डारी





[६-२२४]

तू निज स्वरूप क्यों भूल गया ॥टेका॥

भूल गया क्यों भूल गया, तू निज स्वरूप क्यों भूल गया ॥
 दृष्टि पड़ी और पर तेरी, और का रूप प्रकासा ।
 दृष्टि सृष्टि का बढ़ा पसारा, मन में भरम विकासा ॥भूल गया
 दरपन मध्ये तेरी छाया, छाया देख भुलाना ।
 बाहर मुखी भ्रान्ति चित बाढ़ी, अपना पराया ठाना ॥भूल गया
 एक हुआ फिर दो बन आया, द्वैत अद्वैत की बानी ।
 एक एकाई दहाई सैकड़ा, अगणित भर्म कहानी ॥भूल गया
 असल नकल सच्चा और भूठा, लख लख अलख लखाया ।
 लख लख अलख लाख लख पाया, सोचा पढ़ा लिखाया ॥भूल गया
 आप आपको आप पिछानो, गुरु ने दिया संदेसा ।
 कहा और का नेक न मानो, राधास्वामी का उपदेसा ॥भूल गया

[७-२२५]

गुरु दाता दया की नजर रहे ॥टेका॥

नजर रहे स्वामी नजर रहे, गुरु दाता दया की नजर रहे ॥
 एक तुम्हारी आस है स्वामी, और सहारा नाहीं ।
 ध्यान रहे नित सोते जागते, रूप का मन के माही ॥ नजर रहे
 स्वारथ वश हैं प्राणी जग के, मात पिता सुत भाई ।
 पर स्वारथी है रूप तुम्हारा, सबकी तुम से भलाई ॥ नजर रहे
 दुख क्लेश से व्याकुल होकर, मैं चरनों में आया ।
 बालक समझ के अंग लगालो, दो पद कमल की छाया ॥ नजर रहे
 मन मलीन भरमावे छिन पल, चित विश्वास न आवे ।
 ऐसी दया करो राधास्वामी, यह बैरी न सतावे ॥ नजर रहे
 राधास्वामी नाम जपूँ नित, रहूँ मगन मन मानी ।
 अब तो दरस हुआ चरनों का, हित चित मन कर्म बानी ॥नजर रहे



[८-२२६]

कोई जतन करो सुरत गगन चढ़े ॥टेका॥
 गगन चढ़े सुरत गगन चढ़े, कोई जतन करो सुरत गगन चढ़े ॥
 पिंड छोड़ जावे ब्रह्मंडा, पहुँचे गुरु दरबारा ।
 धुन मृदंग की कान में आवे, ओंकार भनकारा ॥गगन चढ़े
 सुन्न शिखर चढ़ आसन मारे, सहज समाध रचावे ।
 मानसरोवर करे अशनाना, हंस की पदवी पावे ॥गगन चढ़े
 भँवर गुफा की खिड़की निरखे, सोहंग सोहंग भाखें ।
 सत्त धाम में बीन बजावे, सत सत सत सत आखे ॥गगन चढ़े
 अलख को लख गम अगम की पावे, राधास्वामी पद में बासा ।
 आस गुरु की चित में धारे, जग से रहे उदासा ॥गगन चढ़े
 एक जनम में गुरु की सेवा, दूजे नाम का साधन ।
 तीजे मुक्ति के धाम बसेरा, चौथे रूप अराधन ॥गगन चढ़े
 राधास्वामी गुरु की दया भई है, शब्द योग को साधा ।
 एक जनम में काम बनाया, मेटा सकल उपाधा ॥ गगन चढ़े

[९-२२७]

भाई समझ बूझ व्यौहार करो ॥टेका॥
 व्यौहार करो व्यौहार करो, भाई समझ बूझ व्यौहार करो ॥
 दिन तो खोया जग के धंदे, रात खाय कर सोये ।
 नर जीवन का सार न जाना, अन्त पीट सिर रोये ॥व्यौहार
 सब कुछ करो विवेक सहित तुम, बिन विवेक व्यौहारा ।
 नर के काम सभी हैं निष्फल, समझे कोई गुरु प्यारा ॥व्यौहार
 काम काज से निश्चत होकर, सत संगत में जाई ।
 प्रेम भक्ति का सौदा करलो, नित नित बढ़े सवाई ॥व्यौहार
 गुरु की भक्ति सदा सुखदाई, कोई-कोई बिरला जाने ।
 बिन जाने परतीत न आने, अनुभव गम गति माने ॥व्यौहार



११२]

॥ शिव शब्द सागर ॥

एक घड़ी की संगत प्यारे, कटें कोटि अराधा ।
राधास्वामी शब्द योग की विधि से, मन वानी को साधा ॥व्यौहार

[१०-२२८]

सत संग की महिमा जान गया ॥टेका॥

जान गया पहचान गया, सतसंग की महिमा जान गया ॥
सिमिट सिमिट जल भरे तलावा, त्यों सद्गुन चित आवें ।
नित सतसंग के बचन से सज्जन, अपना जनम बनावें ॥ जान
एक दिना का काम नहीं है, दिन दिन सतसंग कीजे ।
काल करम के जाल से बचकर, प्रेम भक्ति मन दीजे ॥ जान
शठ सुधरहिं सतसंगत पाई, पारस लोह समाना ।
सत की संगत करे जो प्राणी, बने सुसाध सुजाना ॥ जान
बिन सतसंग काज नहीं होगा, समझ लेहु मन अपने ।
जग व्यौहार पांच दस दिन के, रात समय के सपने ॥ जान
कहता हूँ कह जात हूँ भाई, सतसंग करो बनाई ।
लोक परलोक में यश और कीर्ती, राधास्वामी की शरनाई ॥ जान

[११-२२६]

सजन तू क्यों नहीं सतसंग जाय ॥टेका॥

पांच सेर चावल के भीतर, बीर बहूटी डाली ।
संगत के परताप महातम, फूटी सुन्दर लाली ॥सतसंग जाय
जामुन आम बेर के पौधे, केवड़ा जल से सींचा ।
फल को देख बास केवड़े की, किस विधि अन्तर खींचा ॥सतसंग जाय
तिल का तेल लगे अति प्यारा, गया जो फूल से वासा ।
प्यारी मीठी देख सुगंधी, कर सतसंग निवासा ॥सतसंग जाय
मिट्टी का तेल खूँघ कर सब कोई, अपनी नाक सिकोड़े ।
गंधी कर संशोधन उसका, इतर फुलेल से जोड़े ॥सतसंग जाय



राधास्वामी मौज परखले, कर गुरु का सतसंगा ।
नद नाले गंगा से मिल कर, होगये निर्मल गंगा ॥सतसंग जाय
[१२-२३०]

सजन तू कर सतसंग लव लाय ॥टेका॥
एक घड़ी सतसंग बैठकर, नाम गुरु का लेवे ।
सो प्रानी भवसागर तर कर, शोभा जग को देवे ॥ संग लव
पानी देख शुद्धता बाढ़े, नारी देखे कामा ।
ब्रस कुसंग कुटिलाई बाढ़े, सतसंगत गुरु नामा ॥ संग लव
एक घड़ी हो पाव घड़ी हो, पाव घड़ी की आधी ।
जो सतगुरु की संगत बैठे, मेटे मन की उपाधी ॥ संग लव
प्रेमीजन के संग में आवे, याद गुरु की बानी ।
सो गुरु बानी जनम बनावे, अन्त मुक्ति निर्वाणी ॥ संग लव
संस्कार पलटे सब मन का, बुद्धि प्रेम चित आये ।
राधास्वामी की दाया से, जम का फँद कटावे ॥ संग लव
[१३-२३१]

घट तारा मेरे हुआ जग मग ॥टेका॥
बाहर आँख बन्द जब होगई, अन्तर आँख खुलानी ।
लख परकाश घट लीला न्यारी, सुरत हुई मस्तानी ॥हुआ जगमग
बाहर छुये चरन सतगुरु के, अन्तर भया उजारा ।
कोटिन चन्द्र सूर प्रगटाने, देखे नौलख तारा ॥हुआ जगमग
मिटा अँधेरा भया सवेरा, मोह नींद से जागा ।
परदे उठे भरम के मन से, चित बाढ़ा अनुरागा ॥हुआ जगमग
तिमिर अविद्या सहज ही भागी, ज्ञान जोत लहरानी ।
सिंध रूप में भाटा आया, कैसे करूँ बखानी ॥हुआ जगमग
राधास्वामी सतगुरु दाता, घट का भेद बताया ।
भेद पायकर भेदी होगया, धन करुना धन दाया ॥हुआ जगमग



[१४-२३२]

नहीं सार तत्व समझाय सकी ॥टेका॥

गूंगे ने मीठा गुड़ खाया, खा खा कर रस पाया ।
 किसी को वह कैसे समझावे, बानी शक्ति न पाया ॥समझाय सकी
 अंधों ने छुवा मिलकर हाथी, अपने ज्ञान विचारा ।
 सब झूठे हैं सब सच्चे हैं, समझ का वार न पारा ॥समझाय सकी
 सिंह बचा गाडर के रेबड़, अजा रूप लख मोहा ।
 सतगुरु सिंह ने आन चिताया, सिंह भाव सुन सोहा ॥समझाय सकी
 नमक की पुतली सिंध ओर गई, लगी थाह को लेने ।
 पानी मिल पानी सो ठहरी, लेने के पड़े देने ॥समझाय सकी
 एक अनेक में भेदभाव है, भेद अभेद न जानूँ ।
 राधास्वामी की संगत आ, मन की मन में मानूँ ॥समझाय सकी

[१५-२३३]

भाई सोच समझ व्यौहार करूँ ॥टेका॥

पानी मध्ये पड़ा बतासा, गलते देर न लागे ।
 इस जीवन का कौन भरोसा, बादर गगन से भागे ॥व्यौहार
 न्हाय धोय कर मैल उतारे, नित नये बस्तर धारे ।
 तैसे सुरत उतारे तन को, कोई धिवेकी विचारे ॥व्यौहार
 मल से देह बनी मानुष की, मल मलीन की खानी ।
 नित उठ धोवो लाख जतन कर, शुद्धि में रहे गलानी ॥व्यौहार
 तन की आसा मन की आसा, सीस की आसा नाहीं ।
 भाई सोचो कुछ निज मन में, आसा है परछाई ॥व्यौहार
 सतसंगत कर बुद्धि बढ़ाओ, अपना जनम बनाओ ।
 सुरत शब्द की करो कमाई, राधास्वामी के गुन गाओ ॥व्यौहार





[१६-२३४]

मैं गूंगी मुख से नहीं बोलूँ ॥टेका॥
 पाँव नहीं मैं परवत लाँघूँ, चौदह भुवन में डोलूँ ।
 बिना हाथ के करम करूँ सब, उलझी गुत्थी खोलूँ ॥नहीं बोलूँ
 कान नहीं और शब्द सुनूँ नित, बिन जल नित गुड़ धोलूँ ।
 उँगली बिना उतारूँ बखिये, धरन अकास टटोलूँ ॥नहीं बोलूँ
 बाँह न भुजा न कंधा पंजा, तीन त्रिलोकी तोलूँ ।
 बिना आँख की सुरत सहेली, कहे सुन्न में सो लूँ ॥नहीं बोलूँ
 मानसरोवर मार के गोते, बिन साबुन मन धोलूँ ।
 राधास्वामी से भक्ति बीज ले, हृदय खेत में बो लूँ ॥नहीं बोलूँ

[१७-२३५]

गुरु दाता लगादेंगे पार मुझे ॥टेका॥
 पार मुझे जी पार मुझे, गुरु दाता लगा देंगे पार मुझे ॥
 मौज अधीन सदा मैं बरतूँ, चिंता चित्त न लाऊँ ।
 रात दिवस गुरु का रहे सुमिरन, और सकल बिसराऊँ ॥ पार मुझे
 सोवत जागत भूलूँ नाहीं, वृत्ती धाम रहे अटकी ।
 तन मन की सुध बुध न करूँ कुछ, अधर मंडल चढ़ लटकी ॥पार मुझे
 सहस्रकमलदल देख विराटा, त्रिकुटी गुरु दरबारा ।
 सुन्न में शून्य समाधि अवस्था, देह बंध छुटकारा ॥पार मुझे
 जोत निरख सुनूँ अनहद बानी, बानी लय होजाऊँ ।
 लय चिंतन कर भरम मिटाऊँ, निर्बानी कहलाऊँ ॥पार मुझे
 तीन स्थान यह मुख कर साधूँ, फिर अनुभव घट जागे ।
 भँवर सत्य लख अलख अगमगति, राधास्वामी पद चित लागे ॥

[१८-२३६]

गुरु दाता के चरन चित जोड़ रहूँ ॥टेका॥
 जोड़ रहूँ मन मोड़ रहूँ, गुरु दाता के चरन चित जोड़ रहूँ ॥



सोवत जागत उड्डत बैठत, रहे गुरु का ध्याना ।
 एक भाव हिये अन्तर राखूं, और सकल बिसराना ॥जोड़ रहूँ
 विद्या बुद्धि विवेक विचारा, गुरु गम के अनुसार ।
 येहि विधि तरूँ सहज भव सागर, तारूँ कुल परिवारा ॥जोड़ रहूँ
 एक रूप नयनों में समाया, और नजर नहि आवे ।
 जहाँ जहाँ देखूं गुरु की लीला, समझत मन हरषावे ॥जोड़ रहूँ
 सुनूं तो गुरु का कथन निरंतर, बोलूं तो गुरुबानी ।
 बोल बोल सुन सुन कर चिंतन, रहूँ सदा निरबानी ॥जोड़ रहूँ
 मनुवा मेरा है बड़ भागी, निश्चल अचल अमानी ।
 सब को त्याग चरन गुरु लागा, हो राधास्वामी अभिमानी ॥जोड़ रहूँ

[१६-२३७]

गुरु चरन कमल में विनय करूँ ॥टेका॥
 विनय करूँ मैं विनय करूँ, गुरुचरन कमल में विनय करूँ ॥
 विश्वाभिन्न विश्व हितकारी, विश्वम्भर विश्वासी ।
 अपनी दया से पार लगादे, कटे बन्ध चौरासी ॥विनय करूँ
 करुणामय करुणा के सागर, करुणा के भंडारा ।
 काम क्रोध से मुझे छुड़ाकर, ले चल भव के पारा ॥विनय करूँ
 दीन हितैषी दीन दयाला, दीन अधीन सहाई ।
 दीन समझ भक्ति दे मुझको, लहूँ चरन शरनाई ॥विनय करूँ
 गुन की खानी गुन में आगर, गुन नागर गुनकारी ।
 अवगुन मेट के गुनी बनादे, करदे मुझे सुखारी ॥विनय करूँ
 राधास्वामी भक्ति पदारथ, का हूँ मैं अभिलाशी ।
 प्रेम भाव हिये अन्तर आवे, भजूँ गुरु अविनाशी ॥विनय करूँ

[२०-२३८]

कर घट में प्रीतम का दर्शन ॥टेका॥
 प्रीति रीति की राह कठिन है, नहीं जाने संसारा ।



प्रेम प्रीति जब मन में आवे, स्रभे सार असारा ॥ कर दर्शन
 आवे प्रीति कहाँ चलि जावे, करे कहाँ यह बासा ।
 घट उपजे घट से नहीं जावे, समभे गुरुमुख दासा ॥ कर दर्शन
 सतसंगत बिन प्रीति न आवे, परचय बिन परतीती ।
 बिन परतीत भक्ति सब निष्फल, सीख संत मत रीती ॥ कर दर्शन
 प्रेम प्रीति परतीत पदारथ, भक्ति और निर्वाणा ।
 गुरु की दया बिना नहीं मिलते, यह सिद्धान्त पुराना ॥ कर दर्शन
 प्रीति के मग में पग को धारा, घट में प्रीतम दरसा ।
 राधास्वामी दया से काज बनाया, चरन कमल जब परसा ॥ कर दर्शन
 [२१-२३६]

पी प्रेम पियाला मस्त भई ॥ टेका ॥

मस्त भई मतवाली भई, पी प्रेम पियाला मस्त भई ॥
 अँखियों में लाली के डोरे, लाल का रूप जो देखा ।
 लाली देख लाल बन बैठी, चुका करम का लेखा ॥ मस्त भई
 सुध बुध भूली तनकी अपने, रहा न सोच विचारा ।
 ज्ञान अज्ञान दोऊ तज भागे, काल कला सब हारा ॥ मस्त भई
 पी बोला पी सुधा स्वान्तरस, मुख से पीपी निकसा ।
 उड़ा पपीहा देख दशा मेरी, प्रेम कमल मन बिगसा ॥ मस्त भई
 मैं हूँ कौन पिया मेरा कैसा, अब कुछ समझूँ नहीं ।
 पी पी प्रेम पियाला पैठी, पिया के हृदय माहीं ॥ मस्त भई
 द्वैत अद्वैत का भगड़ा छूटा, तारा चन्द न निरखूँ ।
 राधास्वामी गुरु के चरन बलिहारी, आप पराया न परखूँ ॥ मस्त भई
 [२२-२४०]

घट आनन्द अघट घटा छाई ॥ टेका ॥

घटा छाई जी घटा छाई, घट आनन्द अघट घटा छाई ॥
 बिन जल बरसे रिमझिम पानी, बिजली तेज प्रकाशा ।
 बिन उपाव के सुख मंगल है, निर्मल हर्ष हुलासा ॥ घटा छाई



जगमग जोत दिया बिन बाती, खुली आँख से सूझे ।
 युक्ति यतन बिन अनुभव जागा, तत्व सार गम बूझे ॥घटा छाई
 बिगसे कमल पत्र घट भीतर, बरस गया जब पानी ।
 बूँद पत्र बिन मोती फलके, फलक प्रकाश की खानी ॥घटा छाई
 फूल खिले बहे त्रिविध बयारा, निर्मल मन्द सुगंधी ।
 रोम रोम सुख आनन्द व्यापा, खुली भेद की सन्धी ॥घटा छाई
 जब से घट में आन बिराजा, मोह भरम सब भागा ।
 राधास्वामी की किरपा से, सोया मनुआ जागा ॥घटा छाई

[२३-२४१]

घट भीतर अजब तमाशा है ॥टेका॥
 तमाशा है जी तमाशा है, घट भीतर अजब तमाशा है ॥
 घट के भीतर माल खजाना, हीरे लाल जवाहिर ।
 मैंने अपनी आँखों देखा, खोल कहूँ क्या जाहिर ॥तमाशा
 घट के भीतर बाग बगीचे, फूल पत्र फल कलियाँ ।
 भाँति भाँति की बस्ती बसती, नजर ग्राम सुख गलियाँ ॥तमाशा
 पृथ्वी गगन पवन और अग्नी, जल से भरा भंडारा ।
 बिजली ओजस तेज और क्रान्ती, सबका फैला पसारा ॥तमाशा
 इन्द्र कुबेर विष्णु शिव ब्रह्मा, घट में मेरे बिराजे ।
 मंत्र जंत्र और तन्त्र सकल विधि, अनहद बाजे गाजे ॥तमाशा
 जब से देखी घट की लीला, तृप्त भया मन मेरा ।
 राधास्वामी की किरपा से, मिटा योनि का फेरा ॥तमाशा

[२४-२४२]

अब कुछ गुरुवानी समझ पड़ी ॥टेका॥
 समझ पड़ी जी बूझ पड़ी, अब कुछ गुरुवानी समझ पड़ी ॥
 सहस कमलदल बैठक ठानी, निरख बिराट पसारा ।
 घंटा शंख की धुन सुन पाई, चमके घट रवि तारा ॥समझ०



त्रिकुटी कमल ओम दरवारा, गुरु की संगत आई ।
 श्रुति स्मृति का भ्रम दूर भया, धुन मृदंग सुन पाई ॥समझ
 सुन्न में सहज समाधि रचाई, द्वैत की बजी सरंगी ।
 चन्द्र प्रकाशा तिमिर बिनासा, अब नहीं हूँ कुरंगी ॥समझ
 ऊँचे चढ़ी भँवर की घाटी, बजी सोहंमम बंसी ।
 दुविधा मिटी काल छविदरसी, चल गई सतपद दिनसी ॥समझ
 अलख अगम के पार ठिकाना, राधास्वामी स्थाना ।
 अब न पड़ूँ भव दुख के फन्दे, मिल गया पद निरवाना ॥समझ

[२५-२४३]

भव पार गई सोई पारवती ॥टेका॥

पारवती जी पारवती, भवसागर गई सोई पारवती ॥
 गिर कैलास हिमालय डेरा, विश्वम्भर का संगी ।
 मानसरोवर हंस मंडली, न्हाती प्रेम की गंगा ॥पारवती
 त्याग विराग प्रीति अनुरागा, उदासीनता मूरत ।
 यह सब सुरत निरत के लक्षण, आनन्द सुख की मूरत ॥पारवती
 परवत के आकार है श्रिती, अटल पौढ़ दृढ़ गाढ़ी ।
 शब्द रती अनहद धुन माती, दया छमा मन बाढ़ी ॥पारवती
 सुरत शब्द में शब्द सुरत में, मिलजुल खेल करन्ती ।
 रह अचिन्त सतगुरु के सहारे, प्रीति प्रतीत धरन्ती ॥पारवती
 सतवन्ती सत वरत निवासी, सतभोगी सत भागी ।
 सुरत सती मिल सत्य शब्द में, राधास्वामी चरनन लागी ॥पारवती

[२६-२४४]

घट में अब अनहद धुन प्रगटी ॥टेका॥

रोम रोम आनन्द पसारा, सुरत का भोग बिलासा ।
 इन्द्री थकी थके मन बानी, पायके हर्ष हुलासा ॥धुन प्रगटी
 मकर तार गति तार निकाला, सुरत तार गह डोरी ।
 घर को तज अघर को धाई, भरती डग सोई चौड़ी ॥धुन प्रगटी



मीन समान पकड़ जलधारा, मेघ आकाश सिधार्ई ।
 गगन मंडल के अमी कुण्ड में, गोते मार हंकारी ॥ धुन
 चाल बिहंगम सुरत को भाई, चली उड़ी नभ धामा ।
 हंस रूप हुई सुरत सहेली, त्याग मोह मद माना ॥ धुन
 सहसकमलदल त्रिकुटी आई, सुन्न महासुन्न निरखा ।
 भँवर सत्यपद अलख अगम लख, राधास्वामी को परखा ॥ धुन

[२७-२४५]

मेरा चंचल मनुआ काल से डर ॥टेका॥
 काल से डर प्यारे काल से डर, मेरा चंचल मनुआ काल से डर ॥
 आज कहे मैं काल भजूँगा, काल की गति नहीं जाने ।
 आज काल क्या करता है तू, काल लगा निबराने ॥काल से
 क्या जाने क्या पल में होगा, काल है कठिन कराला ।
 काल भयानक फनधर भाई, काल नाम है काला ॥काल से
 जो करना है अब कर प्यारे, अवसर मिला सुहाना ।
 आज का काम काल पर क्यों तू, छोड़ हुआ दीवाना ॥काल से
 खेल कूद में विषय भोग में, आयु सकल विसर्वाई ।
 वृद्ध अवस्था देह शिथिल भई, अब कुछ करले कमाई ॥काल से
 आज काल में बिगड़ेगा तन, सांस दुधारा जारी ।
 काल का त्याग बहाना भूठा, कर चलने की तयारी ॥काल से
 संगी साथी नहीं हैं तेरे, मात पिता सुत भाई ।
 अपने स्वारथ बंध बंधाने, साथ नहीं कोई जाई ॥ काल से
 बादर की छाई जग लीला, बिनस जाय पल माहीं ।
 राधास्वामी की कर आसा, और की आसा नाहीं ॥ काल से

[२८-२४६]

साधु कौन आया और कौन गया ॥टेका॥
 जन म मरन सब खेल है मन का, मन माया व्यौहारा ।



उत्पत्ति स्थिति प्रलय की लीला, सब माया विस्तारा ॥ कौन
सिंध में लहर उठत दिन राती, काल चक्र का झूला ।
भूले ब्रह्मा विष्णु महेशा, कारन सूक्ष्म स्थूला ॥ कौन
कीचड़ में लतपत कभी होते, कभी नहाते धोते ।
कभी जाग परपंच रचाते, कभी नींद सुख सोते ॥ कौन
वाप के बीरज माँ के रज में, मैंने किया प्रवेशा ।
निज स्त्री के गर्भ में आकर, धार पुत्र का भेसा ॥ कौन
कभी पुत्री कभी पुत्र बना मैं, कभी गुरु कभी चेला ।
समझ जो हो तो समझ बूझ ले, रूप अगम अलबेला ॥ कौन
शब्द स्पर्श रूप रस गंधा, सब ही मेरे रूपाना ।
गमन पवन अग्नी जल पृथ्वी, मैं परजा मैं भूषा ॥ कौन
मैं समुद्र मैं लहर बूंद सब, भाग सृष्टि रच लीना ।
राधास्वामी की संगत पाई, निज स्वरूप तब चीन्हा ॥ कौन

[२६-२४७]

सजन तू कल्पित फाँस फँसा ॥ टेका ।
होना न होना मरना जीना, सब तेरे आधारा ।
तेरे घट समुद्र में कल्पित, जगत प्रपंच पसारा ॥ फाँस फँसा
गोरख धन्धे पड़े हैं अन्धे, भाँई पकड़न निकसे ।
छाँई फाँई भाँई न पाई, इत उत भटक के खिसके ॥ फाँस फँसा
ज्ञान अज्ञान ध्यान अध्याना, सब ही कल्पित साँई ।
योग यतन संयम यह क्या है, फाँई भाँई छाँई ॥ फाँस फँसा
गाये बजाये गीत सुनाये, नाचे हाथ न आवे ।
गेये धोये आँसू बहाये, आदि अन्त कहां पावे ॥ फाँस फँसा
भेद अभेद द्वैत अद्वैता, दोनों हैं एक सारा ।
मिथ्या कल्पित हुये अनहुये, कल्पित सब व्यौहारा ॥ फाँस फँसा
ज्ञानी अज्ञानी मनमानी, ध्यान ज्ञान अभिमानी ।



दोनों फँसे भरम के फन्दे, फन्दे फन्द फँसानी ॥फाँस फँसा
बन में गये तो खाक उड़ाई, घर में रहे तो रोना ।
घर बन को एक न जाना, नित उठ मैल का धोना ॥फाँस फँसा
साँच कहूँ तो कोई न माने, झूठ कहत सकुचाऊँ ।
झूठ साँच सब का सब मिथ्या, केहि समझावन जाऊँ ॥फाँस फँसा
राधास्वामी सतगुरु पूरे, सुरत शब्द मत गाया ।
साधन अनुभव की प्रभुताई, भव निधि पार लगाया ॥फाँस फँसा

[३०-२४८]

सजन कोई साँच न बात कहे ॥टेक॥
योगाचार योग रस माते, क्षणिक ज्ञान क्षण भंगी ।
मध्यम वाले मध्य समाने, शून्यवाद सरवंगी ॥ बात कहे
सांख्य गिनावे गिनती सबकी, योग समाधी गावे ।
वेदान्त वेदान्ती की आशा, करम में करमी फँसावे ॥ बात कहे
जैसी मन की भई कल्पना, तैसा खेल खिलाया ।
खटपट में षट दर्शन भूले, अन्त मिला क्या छाया ॥ बात कहे
पूरा खेल किसी का नाहीं, खेलें खेल खिलाड़ी ।
किसको बताऊँ पंडित मूरख, किसको ज्ञानी अनाड़ी ॥ बात कहे
गुरु की दया साध की संगत, सार तत्व लख पाया ।
राधास्वामी चरन कमल गह, छूटी माया छाया ॥ बात कहे

[३१-२४९]

राधास्वामी दया का वार न पार ॥टेक॥
दया किया मोहि अंग लगाया, कृपा दृष्टि से देखा ।
महर की नजर पड़ी जब मुझ पर, चुका करम का लेखा ॥वार न पार
माया काल के कठिन थे फन्दे, सहज में लिया छुड़ाई ।
प्रीति प्रतीति भक्ति श्रद्धा लख, बखशी निज शरनाई ॥वार न पार



सुरत शब्द मत राह सिखाई, अन्तरमुखी बनाया ।

सतपद अलख अगम राधास्वामी, घट भीतर दिखलाया ॥ वार न पार

[३२-२५०]

नाम सनेही नयनों में आज ॥ टेका ॥

आंखों की कोठरी बनाई, पुतली पलंग विचित्र सजाई ।

पलकों की चिक विमल लगाई, आज आंखों में तू समाजा ॥ नाम

नयन हमारे तेरे दिवाने, रूप अनूप देख ललचाने ।

छवि अद्भुत को देख लुभाने, सूना मंदिर आज बसाजा ॥ नाम

प्रेम पियाला पी मतवाली, आँखें बनी सहज मतवाली ।

ध्यान तेरा कर हुई निहाली, प्रीति पाली को अंग लगाजा ॥ नाम

बिन दर्शन के कल नहीं आवे, हिया जिया रात दिवस अकुलावे ।

चिरह लगन की आग तपावे, बचन बूँद रस छिड़क बुझाजा ॥ नाम

राधास्वामी सतगुरु प्यारा, तू है इन आंखों का तारा ।

चरन कमल का देके सहारा, बिगड़ी मेरी आके बनाजा ॥ नाम

[३३-२५१]

जग चिड़िया रैन बसेरा है ॥ टेका ॥

दस दिन का जीना है जग में, दस दिन सैर तमाशा ।

जिसने आस फांस गले डाली, अन्त में चला उदासा ॥ बसेरा है

महल मकान बनाकर भूले, फूले अपने मन में ।

काल जो अपनी बस्ती छोड़ी, आये उजड़े बन में ॥ बसेरा है

मात पिता भाई सुत बंधु, मीत कुटुम्ब परिवारा ।

चलते समय संग नहीं कोई, कोई न हितू पियारा ॥ बसेरा है

कोई जलावे कोई गाढ़े, कोई नीर बहावे ।

कोई फेंके ऊसर परबत, हड्डी पवन सुखावे ॥ बसेरा है

रावण गया वीर लंकापति, राम गये अवधीसा ।

योगी यती तपी बनखंडी, गये काल के देसा ॥ बसेरा है



तू जायेगा मैं जाऊँगा, जायेगा संसारा ।
 रहने वाला एक नहीं है, झूठ प्रपंच पसारा ॥बसेरा है
 बदन परबत और नगर ग्राम सब, जाने वाले जानो ।
 जल पृथ्वी आकास पवन और, अग्नि को ऐसा मानो ॥बसेरा है
 सूरज चन्द्र गगन मंडल के, तारे अगमापई ।
 सबके सब यह काल के मुँह में, काल बली दुखदाई ॥बसेरा है
 अवसर मिला सुहाना तुझको, मानुष देही पाई ।
 राधास्वामी भज निस बासर, ले गुरु की शरनाई ॥बसेरा है
 [३४-२५२]

राधास्वामी चरन पर बलिहारी ॥टेका॥
 काल करम माया के बस हो, अंधकार में भूला ।
 राधास्वामी दया से गुरुमत समझा, भक्ति हिंडोले भूला ॥बलिहारी
 सबको देखा किया परेखा, पढ़ लिख कर भरमाना ।
 राधास्वामी दया से सतसंगत कर, भ्रम भेद तत्त जाना ॥बलिहारी
 जनम जनम के पातक धोये, करके गुरु सतसंगा ।
 राधास्वामी दया की लहर जो उमड़ी, घट प्रगटी सत गंगा ॥बलिहारी
 एक अनेक का झगड़ा मेटा, भिट गया द्वन्द पसारा ।
 राधास्वामी दया से आंख खुली तब, मिला सार का सारा ॥बलिहारी
 राधास्वामी राधास्वामी गाना, राधास्वामी ध्यान लगाना ।
 राधास्वामी दया से काज बना है, होगया प्रेम दिवाना ॥बलिहारी
 [३५-२५३]

राधास्वामी सतगुरु हितकारी ॥टेका॥
 राधास्वामी ब्रह्मा राधास्वामी विष्णु, राधास्वामी शिव की मूरत ।
 राधास्वामी पूरन ब्रह्म अखंडित, पारब्रह्म की सूरत ॥हितकारी
 राधास्वामी अगुन सगुन राधास्वामी, राधास्वामी इनसे न्यारे ।
 राधास्वामी रक्षक राधास्वामी दानी, राधास्वामी सत रखवारे ॥हितकारी



सत्त कबीर हैं राधास्वामी, नानक राधास्वामी जानो ।
 राधास्वामी गुरु के एक रूप में, सब सन्तन को मानो ॥हितकारी
 राम कृष्ण और बुद्ध विवेकी, और सकल अवतारा ।
 राधास्वामी रूप में सबको समझो, यही सार का सारा ॥हितकारी
 राधास्वामी सतगुरु प्रगटे कलि में, सुरत शब्द मत दीना ।
 राधास्वामी चरन शरन में आकर, जनम सुफल कर लीना ॥हितकारी

[३६-२५४]

सुरत घट में गगन की ओर चली ॥टेका॥
 यह संसार भिपत की खानी, काल कर्म की फाँसी ।
 इसके फन्दे आन फँसाई, अपनी कराई हाँसी ॥ओर चली
 माया को छिनभंगी लखकर, चित को अपने हटाई ।
 पृथ्वी मंडल त्यागके सजनी, गगन की ओर सिध्दाई ॥ओर चली
 भूल भ्रम की भ्रम भुलैयाँ, इस जग का व्यौहारा ।
 जो कोई फँसा राह नहीं पाया, सिरपर करम का भारा ॥ओर चली
 सीधे मारग सब कोई चाले, उलटे को नहीं जाने ।
 उलटे मग की समझ जो आवे, सत का सार पिछाने ॥ओर चली
 घट ही मेरे उलटा रस्ता, सतगुरु ने बतलाया ।
 सुरत शब्द का साधन करके, राधास्वामी धाम में आया ॥ओर चली

[३७-२५५]

सुनो मेरी बिनती गुरु दाता ॥टेका॥
 तुम तो आये जीव उबारन, दया क्षमा के काजा ।
 जो नहीं मेरा काम बनाओ, नाम को आवे लाजा ॥गुरु दाता
 मो सम दुष्ट नहीं कोई दूजा, दम्भी मानी गुमानी ।
 दुखी जानकर चरन लगाओ, प्रेम भक्ति दे दानी ॥गुरु दाता
 दुख कलेश ने चहुँ दिस घेरा, मुझसा दुखी न कोई ।
 मुझे तार लो जत्र मैं जानूँ, पतित अधम गति सोई ॥गुरु दाता



भलों को तुम नहीं तारन आये, तुम्हें बुरे हैं प्यारे ।
 इनकी लाज तुम्हारे हाथ है, तुम इनके रखवारे ॥गुरु दाता
 राधास्वामी दीन दयाला, दीनन के हितकारी ।
 बाँह गहो दुख मेंटों काटो, काल का बन्धन भारी ॥गुरु दाता
 [३८-२५६]

गुरु गम की महिमा जान गई ॥टेक॥
 जान गई पहचान गई, गुरु गम की महिमा जान गई ।
 क्या था कौन था कैसा था वह, यह तो अकथ कहानी ।
 जब तक अपना मुँह नहीं खोले, कोई न समझे ज्ञानी ॥जान गई
 गुप्त न प्रगट न प्रगट गुप्त था, गुप्त प्रगट में व्यापा ।
 एक नहीं न अनेक रूप में, अपने आपका आपा ॥जान गई
 शब्द नहीं न अशब्द की मूरत, निराकार साकारा ।
 अगुन सगुन व्यापक अव्यापक, दोनों दशा से न्यारा ॥जान गई
 मौज हुई धारा वह फूटी, सिंध लगा लहराने ।
 प्रगट हुआ रचना लगी होने, सिंध बुंद के बहाने ॥जान गई
 सत बन तपा ब्रह्म हो निकला, तीन अवस्था ठानी ।
 हिरण्यगर्भ ओर अन्तर्यामी, और विराट महानी ॥जान गई
 तीन दशा यह काल रूप की, बुंद एक सोई मानो ।
 जब लग बुंद की परख न आवे, सिंध भेद नहीं जानो ॥जान गई
 फैला ब्रह्म बड़ा और सोचा, रचलिया सकल पसारा ।
 यह ब्रह्मांड ब्रह्म का अंडा, बिरला समझे सारा ॥जान गई
 पहले एक अनेक बना फिर, एक अनेक प्रकारा ।
 एक अनेक की लीला अद्भुत, कहन सुनने से न्यारा ॥जान गई
 अंडे से ज्यों पच्ची प्रगटे, पच्ची से ज्यों अण्डा ।
 बीज से पेड़ फूल फल टहनी, अन्त में बीज प्रचंडा ॥जान गई
 ब्रह्म से जीव जन्तु प्रगटाये, सुरत सहारा लीना ।



जीव ब्रह्म से यहि विधि निकले, तीन रूप चित दीना ॥जान गई
 तेजस विश्व प्राज्ञ दशा हुई, जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती ।
 जो है ब्रह्म जीव है वैसा, बिरला समझे युक्ति ॥जान गई
 बूंद सिंध से न्यारा होगया, दुख सुख जाल बंधाना ।
 करम ज्ञान की उलझन में फँस, अपना भेद न जाना ॥जान गई
 यह गति देख सिंध दया उमड़ी, लहर रूप में आई ।
 सतगुरु सत दयाल सुखदाई, प्रेम भाव समुदाई ॥जान गई
 गुरु का भेष कृपालु दयाला, निराधार जगधारा ।
 हम जैसा जग में बन आया, धरा सन्त अवतारा ॥जान गई
 सतसंगत में बचन सुना कर, लिया जीव अपनाई ।
 भेद बताकर मरम जताकर, सत के पन्थ चलाई ॥जान गई
 शब्द जहाज बिठाया सबको, भव के पार लगाया ।
 जीव निबल को बल पौरुष दे, सत पद ले पहुँचाया ॥जान गई
 सोई आदर्श इष्ट है सोई, धुरपद सत का वासी ।
 अगुन सगुन साकार अकारा, चैतन धन सुखरासी ॥जान गई
 राधास्वामी परम सनेही, महिमा धन्य तुम्हारी ।
 तुम्हरी दया जीव बहु तर गये, चरन शरन बलिहारी ॥जान गई
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाना ।
 राधास्वामी गुरु दयाला, गुन गा-गा हरषाना ॥जान गई
 [३६-२५७]

उठ जाग सबेरा होगया ॥टेका॥

गई सियाही आई सफेदी, अब क्यों सोवे भाई ।
 रात बीत गई खरज निकला, त्याग नींद अलसाई ॥होगया
 उजले केस की पत कुछ रखले, चौथापन जब आया ।
 चलने की कर अपने तयारी, जग बादर की छाया ॥होगया
 हँसा फूल हँस कर मुरझाया, बास सुवास को त्यागी ।



हँसो ठठोल का समय नहीं है, हो गुरु पद अनुरागी ॥होगया
कोयल कूक सुनाकर चुप हुई, मौन अवस्थाधारी ।
बाद बिबाद से मन को रोकले, शान्ती का अधिकारी ॥होगया
सुमिरि सुमिर भज नाम गुरु का, नाम सन्त मन सारा ।
राधास्वामी की दाया से, जा भव जल पारा ॥होगया
[४०-२५८]

गुरु पद सरोज में नमस्कार ॥टेका॥

नमस्कार जी नमस्कार, गुरुपद सरोज में नमस्कार ॥
भव भय भंजन कष्ट निकंदन, खंजन सकल मोह माया ।
शांती चैन सुख सहज में व्यापा, जो कोई छांह में आया ॥नमस्कार
हरि इच्छा साया में फँस गये, भरम अज्ञान के फन्दे ।
गुरु की कृपा से बंधन काटे, भक्ति प्रेम के धंदे ॥नमस्कार
जब लग मन मत की सूझी, स्वारथ सूझ सुझाई ।
अब गुरु मत गुरुदेव का सेवक, परमारथ लव लाई ॥नमस्कार
कठिन सुगम भया बूंद सिंध बना, भव भय आप ही नासा ।
चिन्ता गई चाह उठ भागी, मिट्टी त्रिलोकी आसा ॥नमस्कार
सहसकमल त्रिकुटी सुन्न महासुन्न, भँवर गुफा सत धामा ।
अलख अगम के पार दूर है, राधास्वामी पद निर्वाणा ॥नमस्कार
[४१-२५९]

भज भज ले राधास्वामी नाम सदा ॥टेका॥

नाम की महिमा सन्त बखानें, नाम संग लव लायें ।
विषय वासना स्वाद त्यागकर, नाम राग धुन गावें ॥नाम सदा
सदना तरगया मीरा तरगई, तरगई गणिका गायन ।
जनम का पापी तरा अजामिल, सोधा नाम रसायन ॥नाम सदा
नाम प्रताप की महिमा भारी, नाम विपत को टारे ।
गो खुर जग का सिंध लँघावे, जनम के पाप किनारे ॥नाम सदा



योग धिराग त्याग जप ध्याना, संजम नियम अचारा ।
 नाम बिना है सब ही निष्फल, करले आप विचारा ॥ नाम सदा
 अष्ट सिद्धि नौ निधि की खानी, भक्ति मुक्ति सुखदाई ।
 राधास्वामी नाम जो हित से लेवे, लहे धन धाम बड़ाई ॥ नाम सदा

[४२-२६०]

आई शाम भज गुरु का नाम ॥ टेका ॥
 दिन तो बीता जग व्यौहारा, समय नींद का आया ।
 सोने से पहले नाम को भजले, मोह मान तज माया ॥ गुरु का नाम
 सोना मौत निशानी समझो, छोटी मौत अवस्था ।
 मौत से पहले चेत नाम लो, सोधो अपनी व्यवस्था ॥ गुरु का नाम
 सिमिट सिमिट जल भरे तलावा, तैसे ही नाम सुभिरना ।
 मन में शुभ गुन रस रस भरना, फिर आनन्द से भरना ॥ गुरु का नाम
 जनम मरन छिन छिन है प्रानी, छिन छिन योनी बासा ।
 जो कोई सुभिर नाम गुरु का, पड़े न यम की फाँसा ॥ गुरु का नाम
 नाम हैं मंगल सुख की खानी, नाम मुक्ति का दाता ।
 जो कोई पीवे नाम सुधारस, रहे नाम मद माता ॥ गुरु का नाम
 राधास्वामी गुरु ने विधि बताई, अन्तर विरती जमाओ ।
 सुरत शब्द की करो कमाई, नाम राग धुन गाओ ॥ गुरु का नाम

[४३-२६१]

नाम सुभिर मन चतुर सुजान ॥ टेका ॥
 नाम कर्म है नाम ज्ञान है, नाम भक्ति और युक्ति ।
 नाम जपे सो सहज ही पावे, जनम मरन से मुक्ति ॥ चतुर
 नू तो पड़ा भरम के पाले, सुभिरन सार न जाने ।
 नाम योग जग जतन सुगम है, सुभिर देख मन माने ॥ चतुर
 नाम बिना निष्फल सब करनी, जप तप सोच विचारा ।
 नाम जहाज चढ़े जो कोई, पहुँच जाय भव पारा ॥ चतुर



गुरु का बल ले नाम सुभिर नित, सतसंगत आधारा ।
 आप ही छूट जाय मेरे भाई, दुखदाई संसारा ॥ चतुर
 धर विश्वास रात दिन प्यारे, करले नाम कमाई ।
 अपनी आंख से आप परखले, राधास्वामी नाम बड़ाई ॥ चतुर
 [४४-२६२]

गुरु नाम का ले आधार सखी ॥टेका॥
 सांस सांस पर नाम सुभिरना, नाम का तार न टूटे ।
 जो कोई इस विधि नाम को सुभिरै, सुख सम्पत्ति जग लूटे ॥आधार
 राजा रानी रंक भिखारी, बड़ा जो नाम को सुभिरै ।
 उसे बड़ा तुम सबसे जानो, नाम न कबहूँ बिसरे ॥आधार
 दुख नहीं व्यापे विपत न आवे, नाम महा सुखदाई ।
 नाम की महिमा सन्त बखानें, नाम से सबकी भलाई ॥आधार
 फेंक के माला हाथ की सजनी, मन की सुमरनी लेना ॥
 बिना जीभ और होंट के सुभिरन, नाम को निज चित देना ॥आधार
 मन थिर तन थिर सुरत निरत थिर, घट की गुफा में पैठो ।
 राधास्वामी नाम का छिन छिन सुभिरन, सुख आसन से बैठो ॥आधार
 [४५-२६३]

जग लीला परख चित चेत गया ॥टेका॥
 चेत गया चित चेत गया, जग लीला परख चित चेत गया ॥
 रेशम का कीड़ा अज्ञानी, मोह नींद में सोया ।
 अपने बंधन मुआ आय फँस, विरथा जीवन खोया ॥चेत गया
 मछली जीभ स्वाद रस भूखी, चारा देख के भूली ।
 कटिया के कांटे उरझानी, मृत्यु हिंडोले भूली ॥चेत गया
 भँवर फूल बास का लोभी, कमल पत्र लपटाना ।
 सारी रात बन्ध में काटी, रोना और पछताना ॥चेत गया
 सुन्दर रूप देख क्यों मोहे, बुद्धि विवेक न खोना ।



दीपक जोत पतिंगा जलता, अन्त पीट सिर रोना ॥चेत गया
 हाथी ने हथनी जब देखी, सूँड से सूँड मिलाया ।
 गिरा शिकारी के गड्ढे में, बेड़ी पांव बँधाया ॥चेत गया
 माखी गिरी शहद की थाली, पंख गये लपटाई ।
 लालच बुरी बला है भाई, सिर धुन जान गँवाई ॥चेत गया
 हिरन बीन के शब्द का प्रेमी, बीन के राग लुभाया ।
 मतवाला हो सन्मुख आया, अपना सीस कटाया ॥चेत गया
 चित ने परखी विषय की लीला, मन में उदासी छाई ।
 राधास्वामी की संगत कर, ली गुरु पद शरनाई ॥चेत गया
 [४६-२६४]

गुरु दाता के नाम से लव लागी ॥टेका॥
 नाम रतन घट खान में पाया, खोदा ज्ञान कुदाली ।
 जगमग जोत सोत घट निकला, मन में हुई निहाली ॥लव लागी
 नाम न भूलूँ तन मन भूलूँ, भूलूँ जग व्यौहारा ।
 अब परमार्थ धन को पाया, सार सार का सारा ॥लव लागी
 मन थिर तन थिर सुरत निरत थिर, चंचल मन थिर कीना ।
 जब मैं थिरता ऐसी पाई, नाम रतन धन चीन्हा ॥लव लागी
 काट की माला कर से डारी, मन माला जब भाया ।
 उठे बैठे खड़े उताने, रहा नाम घट छाया ॥लव लागी
 आंख कान मुख चंद लगाया, सुन्न समाध रचाई ।
 राधास्वामी नाम की धुन सुन पाई, अब मेरी बन आई ॥लव लागी
 [४७-२६५]

अब सतधाम की बासी बनी ॥टेका॥
 अवट नाम जब घट में प्रगटा, मन की दुर्मति भागी ।
 भूली तन की सुध बुध सारी, हुई नाम अनुरागी ॥बासी बनी
 मुख से नाम कान धुन व्यापी, आंख में नाम की जोती ।



चित ने सीप का रूप धारकर, गहलिया नाम का मोती ॥बासी बनी
 पपिहा पी पी शोर मचावे, गगन घटा टिंग उड़कर ।
 मैं निज घट में नाम को सुमिरूँ, सुन्नमंडल घट जुड़कर ॥बासी बनी
 नाम के पर जब भुजा में बांधे, उड़ी मेरु कैलासा ।
 सहस्रकमल त्रिकुटी सुन्न चढ़गई, सतपद लहा हुलासा ॥बासी बनी
 पीछे छोड़ी भँवर की घाटी, अलख अगम गति परखी ।
 राधास्वामी चरनकमल जब बासा, भक्ति पाय अति हरखी ॥बासी बनी
 [४८-२६६]

जिन नाम लिया तन काम किया ॥टेका॥
 राना रानी दाता दानी, मान प्रतिष्ठा भागी ।
 यह सब बड़े हैं इनसे बड़े हैं, नाम राग अनुरागी ॥१॥
 नाम से नाम होत है सबका, नाम की महिमा भारी ।
 मीरा सहजो दया को देखो, नाम से जगत उजारी ॥२॥
 नाम सकल दुख आपत नासे, दुख में नाम जो लेवे ।
 दुख दरिद्र कभी निकट न आवे, सुख से नाम चित देवे ॥३॥
 जप तप योग पाठ और पूजा, नाम संग सब रहते ।
 नियम धरम हैं नाम अधीना, साध सन्त यूँ कहते ॥४॥
 मन से समझ नाम चित लाओ, नाम कभी न भुलाना ।
 राधास्वामी मत में आकर, राधास्वामी जप जपवाना ॥५॥
 [४९-२६७]

दुविधा दुचिताई भाग गई ॥टेका॥
 आँख कान जिभ्या को रोंधा, अन्तर किया निवासा ।
 अन्तरमुखी सुरत हुई मेरी, प्रगटा हर्ष हुलासा ॥१॥
 आँख कान जिभ्या को रोंधा, सम की अवस्था जागी ।
 सम को धार समाधी पाई, गुरु गम की अनुरागी ॥२॥
 आँख कान जिभ्या को रोंधा, प्रगटी अनहद बानी ।



बानी सोई सुख खानी ठहरी, आनन्द मंगल दानी ॥३॥
 आँख कान जिभ्या को रोंधा, जोत सार लख पाया ।
 जोत में जोत की लीला अद्भुत, लख लख हर्षाया ॥४॥
 आँख कान जिभ्या को रोंधा, गुरु पद ध्यान लगाया ।
 राधास्वामी की भई दाया, हटी जगत की माया ॥५॥
 [५०-२६८]

गुरु दाता की दया पर बलि जाऊँ ॥टेक॥

अंग लगाया दास बनाया, दिया चरन का सहारा ।
 बानी सुनाया मन को चिताया, अधम पतित को तारा ॥बलि
 काल जाल माया के फन्दे, उलझा उलझ के हारा ।
 प्रेम चरन का देकर मुझको, बन्ध काट दिया सारा ॥बलि
 चरन न भूलूँ भूलूँ तन मन, और सकल बिसराऊँ ।
 व्यापे नाम चोटी से एड़ी, नाम का जीवन पाऊँ ॥बलि
 दुविधा में फँस उमर गँवाई, समझ न अपनी आई ।
 अपने रूप का ज्ञान मिला अब, सतगुरु की प्रभुताई ॥बलि
 राधास्वामी दीन दयाला, दीनानाथ कृपाला ।
 चरन कमल की छांह में लेकर, कर दिया मुझे निहाला ॥बलि
 [५१-२६९]

लीला बरनी बरन न जाय ॥टेक॥

पिंगला चढ़ा सुमेर की चोटी, लम्बे डग नित भरते ।
 बिना हाथ तोले आकासा, सब लख अचरज करते ॥बरन न
 गूँगा बिन जिभ्या बिन बानी, पिंगल शास्त्र सुनावे ।
 सुनने वाला अर्थ न समझे, दया लाग अर्थावे ॥बरन न
 लूला काम करे सब अपने, हाथ नहीं कोई रखता ।
 दोनों आँखों का जो अन्धा, धरन अकास को लखता ॥बरन न
 लगी समुद्र में आग निराली, मछली गाँछ पै बैठी ।
 जल को त्याग गगन उड़ जाई, गगन मंडल में पैठी ॥बरन न



चींटी के पेट से हाथी निकला, सिंह बाघ सब खाये ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, जिन यह दृश्य दिखाये ॥ बरन न
 [५२-२७०]

नाम सुमिरि भव तरना है, हाँ ॥ टेका ॥
 नर देही भव सागर तरनी, दया से हाथ में आई ।
 जो कोई इसका सार न जाना, बिरथा जनम गँवाई ॥ तरना
 नाव पड़ी मँझधार में तेरी, खेवट सतगुरु पूरा ।
 नाम सुमिर जा भव जल पारा, जो माया रन खरा ॥ तरना
 नाम मंत्र से बस में आवे, काल कराला नागा ।
 नाम पाये जो नाम न सुमिरे, विष से मरे अभागा ॥ तरना
 एक नाव से सबही मिलते, नौ निधि सिद्धि शक्ति ।
 जीतेजी नर पावे मुक्ति, करे जो नाम की भक्ति ॥ तरना
 राधास्वामी नाम सार है, सार सार का सारा ।
 जो सुमिरे यह नाम निरंतर, सहज जाये भव पारा ॥ तरना

[५३-२७१]

सन्त मत मारग भीना है, हाँ ॥ टेका ॥
 त्याग स्थूल सूक्ष्म गति निरखे, फिर कारन की बारी ।
 कारन तज महा कारन धावे, तब समझो अधिकारी ॥ भीना है
 धरम करम व्यौहार न छोड़े, ढूँढ़े सार न इनमें ।
 सुरत शब्द में सार छुपा है, करे प्राप्त सो तिन में ॥ भीना है
 संजम नियम जप तप कर्मा, नहीं किंचित कठिनाई ।
 सहज योग की सहज रीति है, सहज ही सहज भलाई ॥ भीना है
 सतगुरु सत्त नाम सतसंगत, समझ सहज में धारे ।
 फिर अन्तर में करे चढ़ाई, जड़ चैतन निरवारे ॥ भीना है
 राधास्वामी ने भेद बताया, सुरत शब्द मत गाया ।
 सुरत शब्द मत सब का टीका, सुरत में शब्द को पाया ॥ भीना है



[५४-२७२]

सहज योग विधि उलटी है, हाँ ॥टेक॥

जग के धरम करम व्यौहारा, सो मारग प्रवृत्ति ।

सहज जोग साधन से प्यारे, सहज में नित्य निवृत्ति ॥उलटी है

वृथवी छोड़ गगन को धावे, बेधे जाय ब्रह्मंडा ।

लख विराट अव्याकृत अन्तर, हिरण्य गर्भ प्रचन्डा ॥उलटी है

माया सकल ब्रह्म के ऊपर, परब्रह्म दरबारा ।

इनके आगे चढ़े जो साधक, निरखे सत्य पसारा ॥उलटी है

उलटे नाम का सहज में सुभिरन, मुख में बन्द लगाना ।

आँख कान खुलने नहिं पावें, सुन अनहद धुन काना ॥उलटी है

तन थिर मन थिर सुरत निरत थिर, करे जो सूझे युक्ति ।

युक्ति पाये सुरत शब्द साथे, सहज मिले पद मुक्ति ॥उलटी है

अलख अगम की गति लख पावे, अन्तर रूप प्रकाशा ।

राधास्वामी चरन कमल में, पावे अन्त निवासा ॥उलटी है

सहज योग की सहज कमाई, सहज सहज चितलाना ।

राधास्वामी की किरपा से, सहज में धुर निर्वाणा ॥उलटी है

[५५-२७३]

गुरुदाता की दया पर बलिहारी ॥टेक॥

मैं तो कामी क्रोधी लम्पट, रोम रोम बना हंकारी ।

हाथ दया का सिर पर फेरा, मेरी करली रखवारी ॥बलिहारी

कपट न देखा छल नहीं देखा, नहीं निरखी गति संसारी ।

अपनी कृपा की ओर दृष्टि कर, काटा मेरा संकट भारी ॥बलिहारी

मानुष देह का सार न जाना, जनम जुवा में गया हारी ।

गुरु ने बाँह गही मेरी आकर, होकर सच्चे हितकारी ॥बलिहारी

भक्ति भाव व्यौहार न जाना, नहीं बरता आश्रमचारी ।

ब्राह्म ब्राह्म कर शरन पड़ा जब, दया दृष्टि मुझ पर डारी ॥बलिहारी



[५६-२७४]

अखियाँ बिन दरशन तरस रहीं ॥टेका॥

सूखे होंट आँख पथराई, हूल कलेजे पैठा ।
 थर थर काँपे निबल अंग मेरा, मन बैरी बन बैठा ॥ तरस
 दिन को चन रात नहीं निद्रा, व्याकुल चित घबराऊँ ।
 जगत अधेरा सूझे नहीं कुछ, कहाँ आऊँ कहाँ जाऊँ ॥ तरस
 दाना पानी न मोहि सुहावे, किसी की बात न भावे ।
 रोग सोग की समझ कठिन, पता वैद्य नहीं पावे ॥ तरस
 विरह की आग हिये में भड़की, सुलग रही दिन राती ।
 धुवाँ न उठे न ज्वाला फूटे, किसे दिखावन जाती ॥ तरस
 मनकी उपजी मन में रहानी, मन कुरेद की खानी ।
 मन ही समझे मन की कहानी, और कोई क्या जानी ॥ तरस
 घट में उठी चाह प्रीतम की, घट में दर्शन माँगूँ ।
 घट की आँख से रूप निहारूँ, घट चरनन से लागूँ ॥ तरस
 घट में आओ दरस दिखाओ, घट का मन्दिर सूना ।
 घट को बसाओ जोति जलाओ, हो प्रकाश दिन दूना ॥ तरस
 प्रीतम शब्द सुरत चित का अंग, प्रेम बंक की नाली ।
 सुरत शब्द का मेल मिले जब, सुख से रहूँ निहाली ॥ तरस
 देकर दरस पीर मेरी मेटो, हरो त्रिगुन दुख साला ।
 दया करो मैं दयापात्र हूँ, राधास्वामी दयाला ॥ तरस

[५७-२७५]

घट नाचे सुरतिया उमंग भरी ॥टेका॥

सहज कमलदल ठुमकत आई, दीपक जोत जलाई ।
 आरत ठानी थाली सजाई, घंटा शंख बजाई ॥ उमंग भरी
 त्रिकुटी मंडल गुरु अस्थाना, ओंकार धुन गाता ।
 थिरक थिरक नाचे सुरत प्यारी, गुरु गम लख मुस्काना ॥ उमंग भरी



थाप पखावज सुनकर मोहि, सुन्न की मिली अवस्था ।
 सारंग सारंग बजी सारंगी, सहज समाध व्यवस्था ॥उमंग भरी
 मोर चाल चक्कर जब काटा, भँवर गुफा चढ़ दौड़ी ।
 वंसी सुनी सोहंगम् की धुनि, निरखी खिड़की चौड़ी ॥उमंग भरी
 सुरत ने निरतरूप जब धारा, नाच हुई मस्तानी ।
 वही है लीला सत की भाई, सत पद में ठैरानी ॥उमंग भरी
 राग नाच सब कोई जाने, यह है नाच निराला ।
 बिरला समझे सन्त की बानी, पड़े न यम के पाला ॥उमंग भरी
 तुरिया तुरियातीत अलख लख, अगम अगोचर आई ।
 राधास्वामी धाम में नाच रचाया, धुरपद पदवी पाई ॥उमंग भरी

[५८-२७६]

साधू जग है पद अद्वैत ॥टेका॥

जो कुछ देखा एक को देखा, एक एक का लेखा ।
 एक बिना कुछ दृष्टि न आया, बहु विधि किया परेखा ॥पद अद्वैत
 कहने को तो दो हैं आँखें, देखें दोउ मिल एका ।
 दो कानों से सुनें बात एक, सुझे सहज विवेका ॥पद अद्वैत
 एक चन्द्र है एक है सूरज, एक एक सब तारे ।
 मंगल बुध वीर शुक्र शनि, देखे न्यारे न्यारे ॥पद अद्वैत
 एक डार के पात फूल सब, एक एक दरसाये ।
 जीवजन्तु सुर असुर राक्षस, एक एक कर जाये ॥पद अद्वैत
 तुम हो एक एक हैं हम भी, एक एक एक पहचानूँ ।
 राधास्वामी पद अद्वैत बखाने, समझ बूझ मन मानूँ ॥पद अद्वैत

[५९-२७७]

मैं आप आप में खोगया ॥टेका॥

आप कौन हैं आप कौन हैं, आप आप को जाना ।
 आप भूल गया आप में भूला, अपना आपा ठाना ॥खोगया



आपा ठान के एक हुआ जब, एक एकाई कहाया ।
 एक एकाई दहाई सैकड़ा, लाख हजार बनाया ॥खोगया
 पदमनील और शंख महाशंख, अनगितनी गिन भूला ।
 गिनती गिनी करोर भाँति से, गिनती गिन गिन फूला ॥खोगया
 भूला भूला भूल में अटका, भूल भुलैय्याँ भूला ।
 भूला भूल कर भूल भूल से, भूल भुलैय्याँ भूला ॥खोगया
 धन दौलत के पड़ा फेर में, लगा हिसाब बनाने ।
 बेटे पोते और परपोते, उपजाये मन माने ॥खोगया
 ज्ञान ध्यान की रीति चलाई, खटपट के षट दर्शन ।
 रोया हँसा बिचारा सोचा, लख सुन्दरि बिच दरपन ॥खोगया
 जोग जुगत की ओर झुका फिर, सिद्धि शक्ति भरमाई ।
 आपा आप में आपको भूला, आपकी सुध नहीं पाई ॥खोगया
 पूरव दौड़ा पच्छिम दौड़ा, तीरथ वरत बहाना ।
 आपा अपना हाथ न आया, ऐसा बना सियाना ॥खोगया
 राधास्वामी सतगुरु प्रगटे, घट की राह दिखाई ।
 खाया आपा आप मिला अब, आप आप में पाई ॥खोगया

[६०-२७८]

नित जाग जाग कर सोगया ॥टेका॥

मैं हूँ कौन रूप मेरा कैसा, नाम रूप नहीं जानूँ ।
 जोती प्रगटी घट में मेरे, जोत निरख सुख मानूँ ॥सोगया
 जोत निरख सुख पाकर कुछ दिन, थका तो आलस आई ।
 नींद की इच्छा हुई तो मैंने, दिन को रात बनाई ॥सोगया
 सोया सोकर फिर उठ बैठा, सूरज के प्रकाशा ।
 यह सूरज मेरे घट से निकला, जोत में किया बिलासा ॥सोगया
 आलस निद्रा जोत से आई, आलस पाँव पसारा ।
 फिर सोया सो सोकर जागा, लखे चन्द्र और तारा ॥सोगया



तारे सूरज चांद वस्तु क्या, मेरे घट की जोती ।
 आंख बिना कहो सूरज कैसा, जोत में जोत की सोती ॥ सोगया
 सूरज चांद सितारे भाई, तेरी आंख की भाई ।
 दो आंखों में सूर चन्द्र हैं, आंखों की परछाई ॥ सोगया
 खुली आंख परछाई दरसे, बंद आंख क्या देखे ।
 सोच समझ क्या पड़ा भ्रम में, भ्रम विकार के लेखे ॥ सोगया
 जाग जाग उठ जाग जाग तू, जाग मेरा कर संग ।
 आलस नींद जाये छिन पल में, न्हाये जो मानस गंगा ॥ सोगया
 सोकर खो बैठा निज आपा, मैं आया हूँ जगाने ।
 राधास्वामी की दाया से, जाग के लगजा ठिकाने ॥ सोगया

[६१-२७६]

आजा शरन बचा लूँगा ॥टेक॥

तू है मेरा मैं हूँ तेरा, तन मन धन से प्यारा ।
 तू आंखों का तारा मेरा, मैं तेरा रखवारा ॥बचा लूँगा
 जुज कुल का है कुल जुज का है, धर मन में परतीती ।
 जब जुज है तब कुल से प्यार कर, सीख शब्दमत रीती ॥बचा लूँगा
 स्वारथ बस नहीं बना हूँ तेरा, नहीं स्वारथ मन मेरे ।
 परमार्थी परम उपकारी, क्या आया चित तेरे ॥बचा लूँगा
 तन के बन्धन मन के बन्धन, धन के बन्ध बंधाना ।
 बन्ध बन्ध में बन्ध बन्ध में, बन्ध बन्ध उरझाना ॥बचा लूँगा
 जब कोई नहीं तेरा सहाई, मैं ही रहा सहाई ।
 अब भी सदा सहाई तेरा, तज दुर्मति दुचिताई ॥बचा लूँगा
 उलटी समझ तेरे मन भाई, मन से मुझे भुलाया ।
 भूला भंटका देख के अब मैं, तुझे बचाने आया ॥बचा लूँगा
 राधास्वामी दीन दयाला, दीन अधीन सहाई ।
 परम सनेही परम हितैषी, ले उनकी शरनाई ॥बचा लूँगा



[६२-२८०]

तू सोया सो सो खोगया ॥टेक॥

बंजारों के संग में आया, धन दौलत ले हाथा ।
 बनिज और व्यौहार की चिंता, भूल के छोड़ा साथ ॥खोगया
 साथ छोड़कर हुआ आलसी, पांव पसार के सोया ।
 क्या तुझको यह समझ नहीं थी, जो सोया सो खोगया ॥खोगया
 तेरे ताक में लगे चोर हैं, ठग डाकू बटमारे ।
 जाग जाग उठ जाग भाग अब, सो नहीं पांव पसारे ॥खोगया
 कोई राजा बन लूटे तुझको, कोई नवाब दरबारी ।
 मूरख चेत चेत के अवसर, पूँजी बचाले सारी ॥खोगया
 किस सुख नींद में सोया प्राणी, यह सुख दुख का रूपा ।
 दुख है मान बढ़ाई प्रतिष्ठा, दुख प्रजा दुख भूषा ॥खोगया
 अपने आपे में तू कहां है, यम के हाथ बिकाना ।
 तन मन धन तेरा नहीं अपना, मन बच कर्म बेगाना ॥खोगया
 तेरा समय नहीं है तेरा, तेरा कथन न तेरा ।
 सोना खाना उठना बैठना, चिंतन मनन न तेरा ॥खोगया
 तेरी हँसी नहीं है तेरी, कोई बात न तेरी ।
 कठपुतली बन नाचत डोले, कोई घात न तेरी ॥खोगया
 लूट लूट में लूट पड़ी है, लूट लूट सब लूटे ।
 सोच समझ यह तन का भांडा, लुटकर छिन में फूटे ॥खोगया
 मानुष जनम दिया है जिसने, जिसने मनुष बनाया ।
 वही दया और क्षमा साथ ले, तुझे बचावन आया ॥खोगया
 पल पल रक्षा हुई है तेरी, सोच समझ मन अपने ।
 तू भरमा भरमा क्यों डोले, देख जगत के सपने ॥खोगया
 राधास्वामी दीन दयाला, करें सदा रखवारी ।
 उनकी शरण में जल्दी आजा, जो सच्चा व्यौपारी ॥खोगया



[६३-२८१]

जगत में कैसी लूट पड़ी ॥टेका॥

माता कहे पूत है मेरा, भाई भाई बनावे ।
 घर की तिरिया तन से लिपटी, पति कह रार मचावे ॥लूट पड़ी
 बहन बीर कह हँस मुसकावे, मुस के धन ले जावे ।
 पुत्रबधू कहे ससुर सियाना, भूठे भाव दिखावे ॥लूट पड़ी
 राजा कहे मेरी है परजा, करे कमाई उद्यम ।
 मक्खन काढ़ मुझे दे उत्तम, पिये छाछ नित मध्यम ॥लूट पड़ी
 पण्डित दान दक्षिणा मांगे, साधू भिक्षाधारी ।
 तीरथ मठ मूरति और मन्दिर, लूटें लूट की बारी ॥लूट पड़ी
 मरते समय आग यह बोली, इसे जला खा जाऊँ ।
 मिट्टी कहे गाढ़ दे मुझमें, अपना अंश बनाऊँ ॥लूट पड़ी
 हवा सुखावे पानी घुलावे, सिमटावे आकासा ।
 चकित हुआ यह देख के लीला, लूट का अजब तमाशा ॥लूट पड़ी
 मैं हूँ कौन कौन है मेरा, इसकी समझ न आई ।
 देख लूट का जग बिस्तारा, लूट हुई दुखदाई ॥लूट पड़ी
 कभी कभी भूल भरम में फँसकर, आप लुटूँ लुटवाऊँ ।
 लूट लूट के लुट गया सारा, लूट का मर्म न पाऊँ ॥लूट पड़ी
 राधास्वामी को संगत पाई, समझ लूट की आई ।
 व्याकुल चित चरनों में आया, ली सतगुरु शरनाई ॥लूट पड़ी

[६४-२८२]

भाई शब्द योग तुम चित लाओ ।

शब्द का पहले रूप समझलो, सार सार का सारा ।
 शब्द आकाश माया का गुण हैं, चेतन का भंडारा ॥तुम चित
 शब्द के मारे मरते प्राणी, शब्द जिलावें जीवें ।
 अजर अमर बन सुख को भोगें, शब्द अमृत जब पीवें ॥तुम चित



शब्द राग सुन राग बढ़े जित, शब्द विराग से त्यागी ।
 कैसे कहूँ खोल कर प्यारे, शब्द पवन जल आगी ॥तुम चित
 गुरु गम लेकर घट में कमाई, सुन धुन अनहद बानी ।
 चित विरती का निरोध सहज हो, सुरत बने असमानी ॥तुम चित
 विन गुरु गम नहीं घट में चलना, मन मत कभी न होना ।
 गुरुमत ले गुरु ज्ञान समझले, सुन्न समाध में सोना ॥तुम चित
 विन गुरु ज्ञान का धन नहीं मिलता, विन गुरु निरधनताई ।
 शब्द अधीन गुरु उपदेशा, गुरु की है प्रभुताई ॥तुम चित
 मनमत में है चंचलताई, काल करम व्यौहारा ।
 गुरुमत में है निश्चलताई, गुरु गम ज्ञान पसारा ॥तुम चित
 शब्द सुरत में सुरत शब्द में, शब्द सुरत एक सारा ।
 शब्द सुरत का मर्म है न्यारा, पावे गुरु मुख प्यारा ॥तुम चित
 पृथ्वी छोड़ गगन को धावे, गगन में शब्द विलासा ।
 तीन सुन्न के पार ठिकाना, राधास्वामी पद में बासा ॥तुम चित

[६५-२८३]

भाई जोति मैं जोति मिलाना है ॥टेका॥

सहस कमल दल जगमग जोती, जोति जोति की धारा ।
 चाँद सूरज की शोभा न्यारी, लख लख लाखों तारा ॥मिलाना है
 नीला पीला लाल वर्ण की, हरी बैंगनी ज्योती ।
 श्याम कंज फुलवारी निरखी, फूटी ज्योत की सेती ॥मिलाना है
 आगे चढ़ी सुरत मतवारी, त्रिकुटी ओम् प्रकाशा ।
 गुरु की ज्योति लाल रंग निरखी, उपजा उमंग हुलासा ॥मिलाना है
 सुन्न मंडल शशी स्वेत रंग का, मन शीतल हुआ तेरा ।
 सहज समाध ज्योति लख जागे, सुख प्रगटे बहुतेरा ॥मिलाना है



भँवर गुफा भूमर भूमकाहट, भूमक दमक अति दमके ।
 ज्योतिमें आँखकी ज्योति मिले जब, ज्योति ज्योति मिल चमके ॥ मिलाना है
 सत में सच्च खण्ड की ज्योति, ज्योति सिंध लहराना ।
 ज्योति सिंध में गोते मारा, अधर ध्वजा फहराना ॥ मिलाना है
 अलख अगम लख गम को पावे, सुरतवन्त अधिकारी ।
 राधास्वामी धाम में चैन विलासा, हो रहे भव के पारी ॥ मिलाना है

[६६-२८४]

सुख पाय सहज सुख रासी बनी ॥ टेक ॥
 नहीं सुख वाद विवाद में किंचित, नहीं सुख बचन विलासा ।
 कथा वारता सुख कहो कैसा, सुख का अन्तर बासा ॥ रासी बनी
 दौड़ दौड़ दौड़त मेरी हिरनी, समझ की निपट अधूरी ।
 वह अज्ञानी मर्म न पावे, अन्तर है कस्तूरी ॥ रासी बनी
 पोथी पढ़ पढ़ बात बनावे, भरमे और भरमावे ।
 पड़ा पेट का फन्दा भारी, अन्तर ज्ञान न पावे ॥ रासी बनी
 जोग जुगत कर जोगी हारा, रिद्ध सिद्ध के धंदे ।
 रिद्धि सिद्धि नौ निधि शक्ति, मन माया के फन्दे ॥ रासी बनी
 भोग विलास में सुख को ढूँढ़े, बाहरमुखी अनारी ।
 इतनी समझ उसे नहीं आई, माया प्रबल नारी ॥ रासी बनी
 बाहर है सुख की परछाई, अन्तर सुख की ज्योती ।
 अन्तर सिंध जो मारे गोते, चुनले सुख के मोती ॥ रासी बनी
 राधास्वामी भेद बताया, अन्तर चाल चलाई ।
 अन्तर धँस अन्तरमुख बनकर, अन्तर सुख धन पाई ॥ रासी बनी

[६७-२८५]

दुख मुझे छोड़ अब भाग गया ॥ टेक ॥
 दो आँखों से द्वन्द को निरखा, द्वन्द में दुख विस्तारा ।



द्वन्द्व जगत में दुख है व्यापा, जगत में दुख पसारा ॥भाग गया
 गृही दुखी दुखी बनवासी, जपी तपी दुख मूरत ।
 ज्ञानी दुखी दुखी अज्ञानी, निरख लो उनकी खूरत ॥भाग गया
 दुख के मारे तीरथ भागे, छोड़ कुटुम्ब परिवारा ।
 साधन आराधन सब दुख हैं, कोई कोई करे बिचारा ॥भाग गया
 राजा दुखी दुखी है परजा, पढ़ लिख दुख भया दूना ।
 जहाँ देखा तहाँ दुख ही दरसा, सुख से सब जग सूना ॥भाग गया
 अपने मनमें समझ बिचारो, कौन सुखी संसारा ।
 किसी का कहना चित्त न लाओ, समझो बुधि अनुसार ॥भाग गया
 पूरनता नहीं किसी में भासे, सब ही देखे अधूरे ।
 जो हैं ऐसे अधूरे जग में, वह सुख के कहाँ पूरे ॥भाग गया
 राधास्वामी मौज हुई और, घट में पाया बासा ।
 मन को जीत जीत मन अपना, अब सुख चैन बिलासा ॥भाग गया
 [६८-२८६]

हम आये आये आये हैं ॥टेका॥

तुमको दुखी देख आँखों से, मन में दया समाई ।
 दया रूप धर प्रगटे जग में, दया यहाँ ले आई ॥आये हैं
 खरज दया का गगन प्रकाशा, किरनें दया की धारा ।
 दया सिंध उमगा और बाढ़ा, दया भाव विस्तारा ॥आये हैं
 सुर नर मुनि की यह है रीती, लग स्वारथ करें प्रीती ।
 हम में नहीं है स्वारथ किंचित, लख लख करो प्रतीती ॥आये हैं
 उदर निमित्त करें सब भेसा, योगी जती उदासी ।
 माँगें भीक ज्ञान की गम नहीं, तुम उनके विश्वासी ॥आये हैं
 भूल भ्रम तज कर सत संगत, हिये की आँख खुलाओ ।
 राधास्वामी रूप निरख कर, दया से काज बनाओ ॥आये हैं





[६६-२८७]

जग भानु उजाला होगया ॥टेका॥

भिटा अन्धेरा भया सबेरा, अन्धकार तज भागा ।
 ज्ञान ज्योति घट बीच प्रकाशा, घट घट घट घट लागा ॥होगया
 तिमिर अविद्या नहीं अब छाई, घट अकास भया निर्मल ।
 चंचलताई चित से भागी, चंचल मन भया निश्चल ॥होगया
 निश्चल मन की साध के वृत्ती, निज स्वरूप जब देखा ।
 सुखी हुये मुस्काये हँसे हम, भिटा करम का लेखा ॥होगया
 उलट दृष्टि तिलपट को खोला, आँख तीसरी पाई ।
 इसी आँख की अग्नि ज्योति से, काम विकार जलाई ॥होगया
 काम गया निष्काम बने तब, चढ़े मेरु कैलासा ।
 भीतर बाहर ऊपर नीचे, चहुँ दिस बिमल उजासा ॥होगया
 डाकू चोर राह तज भागे, भय बस पास न आवें ।
 माया ठगनी काल ठगारी, अब किसको भरमावें ॥होगया
 राधास्वामी ने खेल खिलाया, खेल खेल की रीती ।
 खेल खेल में ज्ञान सिखाया, उपजी मन परतीती ॥होगया

[७०-२८८]

नाम अमोल रतन है जग में ॥टेका॥

नाम भिला तो सब मिला, नाम है सबका सार ।
 जो कोई सुमिरे नाम नित, व्यापे नहीं संसार ॥जग में
 सुख देवे दुख को हरे, काटे कष्ट क्लेश ।
 जीवत शान्ती चित बसे, अन्त में सतगुरु देश ॥जग में
 जप तप संयम नियम यम, सब हैं नाम अधीन ।
 नाम भक्ति के सिंध का, प्रेमी भक्त है मीन ॥जग में
 चंचल मन निश्चल बने, उपजे हर्ष हुलास ।
 मन में भजे जो नाम को, कभी न होय उदास ॥जग में



नाम तेरे घट में बसे, बिन जिभ्या ले नाम ।
 राधास्वामी की दया, पूरन हों सब काम ॥जग में
 [७१-२८६]

बचन सतसंग के नहीं सुने ।

सतसंग किया लाभ क्या पाया, बना न प्रेम अनुरागी ।
 समय निरर्थक अपना खोया, कैसा मंद अभागी ॥नहीं सुने
 आसन तन मन स्थिर नाहीं, चित्त में नहीं स्थिरताई ।
 फिर सतसंग से मुझे बतादे, क्या हो तेरी भलाई ॥नहीं सुने
 हृदय का कठोर बन आया, गुरु की बात न मानी ।
 पत्थर का कोर हु न भीगा, चहुँदिस सौ मन पानी ॥नहीं सुने
 औंधा घड़ा गहे नहीं पानी, बरसे मेह अखंडा ।
 संगत का कुछ दोष नहीं है, मन चंचल परचंडा ॥नहीं सुने
 अमृत बरसे लाख गगन से, नीम होय नहीं मीठा ।
 गुरु के बचन का रंग जमे नहीं, निरस चित्त जब सीठा ॥नहीं सुने
 कोई कोई संगत जाकर सोवें, गुरु संगत नहीं जागें ।
 भाग हीन अधिकार हीन नर, यम की राह में लागें ॥नहीं सुने
 शठ सुधरहिं सतसंग में गुरु के, पारस लोह समाना ।
 पर दूर पड़ा तो सोना क्यों हो, लोहा लोह रहाना ॥नहीं सुने
 नद नाले का पानी बहकर, ऊसर रेत में आवे ।
 गंगा की धारा नहीं पहुँचे, गंग रूप क्यों पावे ॥नहीं सुने
 राधास्वामी दीन दयाला, सतसंग जीव चिताये ।
 जीव सुने नहीं गुरु की बानी, केहि विधि अंग लगावें ॥नहीं सुने
 [७२-२६०]

अमृत नित बरसे सतसंग में ॥टेका॥

मूरख प्राणी को नहीं गम कुछ, यम के हाथ बिकाने ।
 निश्चल चित्त गुरु बचन सुने नहीं, मन नहीं ठौर ठिकाने ॥सतसंग में



एक घड़ी या आधी घड़ी हो, या आधी की आधी ।
 संगत गुरु की करे चेतकर, मेटे सकल उपाधी ॥सतसंग में
 सतसंगत मानसर समाना, जुड़ मिल हँस जो आवे ।
 सीतल तन मन होगया सारा, अमृत कुण्ड नहाये ॥सतसंग में
 हँसा बगला चले मानसर, अपने चित अनुमाना ।
 हँसा तो चुने मोती मुक्ता, बगला मछली खाना ॥सतसंग में
 कोई छन्नी बनकर आवे, कोई छाज के ढँगा ।
 छन्नी सार वस्तु को त्यागे, छाज सार गहे अंगा ॥सतसंग में
 चित शिवेक धरकर सतसंगत में, तज मन की दुचिताई ।
 ततक्षण पल के सतसंगत में, निश्चय तेरी भलाई ॥सतसंग में
 अमृत बरसे गगन मंडल से, अमृत मय गुरु बानी ।
 राधास्वामी की बानी सुन, बने सहज निरवानी ॥सतसंग में
 [७३-२६१]

निज मन को सम कर लेना है ॥टेका॥

समता आई ममता भागी, सम का मिला सहारा ।
 सम को पाइ सुरत हुई निश्चल, लखा शब्द भंडारा ॥लेना है
 सम में ताल ताल में सम जब, राग सुहाना लागे ।
 बिन सम राग अलाप है मिथ्या, सुनने वाला भागे ॥लेना है
 सम की समझ बूझ नहीं जबलग, नहीं सुन्दर व्यौहारा ।
 चित की समता बिन नहीं पावे, परमार्थ का सारा ॥लेना है
 सुखमन मध्य ढूँढ़ सम स्थल, सम्यक आसन मारी ।
 जागी कुण्डलनी पर चढ़ने का, होजा तू अधिकारी ॥लेना है
 नहीं दायें बायें न भटकना, सम्यक हो वाचा मा ।
 सम्यक करम में सम्यक बानी, सम संकल्प निशाना ॥लेना है
 तिल को छोड़ तोड़ गढ़ त्रिकुटी, जा सुन्न के मैदाना ।
 सम्यक सहज समाधि रचाले, महासुन्न स्थाना ॥लेना है



सम्यक शब्द सुने जब घट में, शून्य पार चढ़ जावे ।
 भँवरगुफा सोहंगम सम्यक, सो सतपद पहुँचावे ॥लेना है
 सुरत शब्द मत गुरु ने बताया, अनुभव सम्यक ज्ञाना ।
 सम्यक साधन बिन नहीं पावे, अलख अगम निरवाना ॥लेना है
 राधास्वामी सतगुरु आये, घट का भेद बताया ।
 सम कर सुरत निरत मन चित को, सुरत में रहा समाया ॥लेना है

[७४-२६२]

सत भाव हिये में लाना है ॥टेक॥

तुम हो सत सत जीवन समझो, तुम में सत सत जीना ।
 सत में असत का भान कहाँ है, सत अमृत नित पीना ॥लाना है
 निश्चय श्रद्धा प्रेम प्रीति, परतीत आस्तिक लक्षण ।
 जिनमें यह नहीं समझो नास्तिक, नास्ति आस्ति विलक्षण ॥लाना है
 नास्ति नास्तिक असत हों कैसे, मिथ्या कल्पित बानी ।
 हमने तो देखी नहीं अब तक, नास्तिकता की निशानी ॥लाना है
 जो नहीं हो वह भासे कैसे, बन्ध्या पुत्र समाना ।
 भ्रम भ्रांती में पड़े हो क्यों तुम, समझो गुरुमत ज्ञाना ॥लाना है
 तुम जिसको माया कहते हो, वही ब्रह्म की खानी ।
 ब्रह्म शक्ति वाला जब ठहरा, माया शक्ति कहानी ॥लाना है
 शक्ति शक्तिवान की शोभा, नहीं है उससे न्यारी ।
 यूँ ही बात बनाना छोड़ो, बोलो बचन विचारी ॥लाना है
 सत में जो सत्ता रहती है, वही है उसकी शक्ति ।
 सत्ता बिन कोई सत नहीं होता, करो सत्त की भक्ति ॥लाना है
 द्वन्द्व भाव को कल्पित जानो, एक एक चित लाओ ।
 भ्रम भ्रांति कहो क्योंकर आवे, जब सतसंगत जाओ ॥लाना है
 राधास्वामी की है बानी, आप आपको जानो ।
 अपना आपा आप विचारो, किसी का कहा न मानो ॥लाना है



[७५-२६३]

गुरु मुखता सब का सार है ॥टेका॥

गुरुमुखता कोई गुरु मुख जाने, और न जाने कोई ।
 गुरुमुख नहीं काल माया मुख, जीव मुखी नहीं सोई ॥सार है
 माया मुखता धरम करम सब, लोभ मोह के धन्दे ।
 रोचक दशा भयानक गति मति; पड़े भरम के फन्दे ॥सार है
 समय को देख मान मद बाढ़े, अहंकार चित ठाने ।
 काल निरंजन की परिछाई, अहं सोहंगम माने ॥सार है
 जीवमुखी आधीन दीन है, रोवे और चिन्लावे ।
 बिन समझे बूझे की नीति, स्तुति गाये सुनावे ॥सार है
 यह सब यम के हाथ बिकाने, लगे न ठौर ठिकाने ।
 गुरु मुख ज्ञान यथार्थ बूझे, गुरु मत को पहचाने ॥सार है
 कर सतसंग भेद सत मत लख, बहक न बारम्बारा ।
 राधास्वामी की कृपा से, हो भव द्वन्द से न्यारा ॥सार है

[७६-२६४]

राधास्वामी दया ले जा भव पार ॥टेका॥

माया तुझ से नहीं अलग है, माया तेरी बुद्धि ।
 माया का कुछ रूप समझले, तब चित आवे शुद्धि ॥जा भवपार
 बुद्धि का प्रपंच है सारा, बुद्धि ही भव सागर ।
 बुद्धिवान हो बुद्धिमान हो, चतुर सियाना नागर ॥जा भवपार
 दशा बदल गई समय को पाकर, समय काल है भाई ।
 काल से कैसी व्याकुलताई, तज मिथ्या दुचिताई ॥जा भवपार
 माया काल के भरम भुलाना, भरमा भूला डरना ।
 चालक ने निज छाया देखी, छाया लख घबराना ॥जा भवपार
 कर सतसंग विवेक सहित नित, शब्द सार निरवारी ।
 शब्द समझ कर रूप परख ले, राधास्वामी की बलिहारी ॥जा भवपार



[७७-२६५]

मेरी सुरत सियानी चेत अब ॥टेका॥

सुरत सियानी भई अज्ञानी, चेतन रूप विसारा ।
 पड़ी काल माया के फन्दे, लखे न सार असारा ॥चेत अब
 सुरत सियानी हुई दिवानी, भरम रही संसारा ।
 यह संसार और कुछ नाहीं, सन संकल्प पसारा ॥चेत अब
 सुरत सियानी भव भरमानी, भरम का भेद न बूझे ।
 भरम हिंडोले जो कोई भूले, कैसे तत्व की सूझे ॥चेत अब
 सुरत सियानी मद लपटानी, मान गुमान फँसानी ।
 मोर तोर की बंधी जेवरी, बन्धन बन्ध बंधानी ॥चेत अब
 सुरत सियानी उपजी गलानी, सत संगत में आई ।
 राधास्वामी दया रूप निज जाना, ली सतगुरु शरनाई ॥चेत अब

[७८-२६६]

सुख को किसमें कहां ढूँढूँ ॥टेका॥

जो कुछ है सब मेरे भीतर, सत्त चित्त आनन्दा ।
 आंख खुले बिन सूझे कैसे, घट के सूरज चन्दा ॥कहां ढूँढूँ
 मैं हूँ बुन्द सिंधु गति मेरी, लहर बुलबुले मुझमें ।
 खोल कहूँ माने कोई नाहीं, धीर चुलबुले मुझमें ॥कहां ढूँढूँ
 मुझमें जीव प्रकृति ईश्वर, मुझमें ब्रह्म ब्रह्मांडा ।
 मैं हूँ खंड खंड में व्यापा, रूप है मेरा अखंडा ॥कहां ढूँढूँ
 मुझमें सृष्टि की रचना फैली, मैं बालक पितु माता ।
 जनम मरन मेरी है लीला, आता कहीं न जाता ॥कहां ढूँढूँ
 गुरु की सेवा साध की संगत, करे तो जाने प्राणी ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, अपना रूप पिछानी ॥कहां ढूँढूँ





[७६-२६७]

गुरु चरन कमल की दासी बनूँ ॥टेक॥
 दासी बनूँ अविनासी बनूँ, हाँ दासी बनूँ प्रेम प्यासी बनूँ ॥
 गुरु हुये मेरे मैं हुई गुरु की, मैं हूँ गुरु की दासी ।
 दासी होकर हुई अविनासी, मीन प्रेम जल प्यासी ॥दासी बनूँ
 दासी हुई सीस चरनन धर, अरपा मन धन बानी ।
 गुरु ने हाथ दया का फेरा, दी भक्ति सुख खानी ॥दासी बनूँ
 मेरा मुझमें कुछ नहीं अपना, गुरु का है सब मुझमें ।
 भक्ति मुक्ति गुरु की है सारी, तेरा होगा तुझमें ॥दासी बनूँ
 गुरु संगत मिल हुई गुरु की, मन चिन्ता नहीं व्यापे ।
 जग का दुख नहीं मुझे सतावे, हैं गुरु आप ही आपे ॥दासी बनूँ
 अंग लगाकर गुरु ने मुझको, अपनी दासी बनाई ।
 राधास्वामी नाम दान दे, सुख की रासी बनाई ॥दासी बनूँ

[८०-२६८]

अपने गुरु की मैं दासी बनूँगी ॥टेक॥
 दासी बनूँगी सुखरासी बनूँगी, अपने गुरु की मैं दासी बनूँगी ॥
 छबि गुरु की आँखों में समाई, दूजी छबि न समावे ।
 भरी कोठरी जब सराय की, और ठौर नहीं पावे ॥दासी बनूँगी
 प्रेम अमृत जब भरा पियाला, अब क्या उसमें धरना ।
 भरगया मन जब प्रेम से गुरु के, अब न रहा कुछ भरना ॥दासी बनूँगी
 मछली जल से मिली तो जल से, अपना नाता जोड़ा ।
 जल और मछली के नाते को, बतादो किसने तोड़ा ॥दासी बनूँगी
 भँवरा लोभी कमल बास का, बास सुवास लुभाया ।
 दुर्गन्धी के निकट न जावे, प्रेम के बास बसाया ॥दासी बनूँगी
 भाग जगा गुरु दर्शन पाया, जनम सुफल हुआ अपना ।
 राधास्वामी की दाया से, देख लिया जग सपना ॥दासी बनूँगी



[८१-२६६]

दुविधा दुर्मति की है खानी ॥टेका॥

जबसे दुविधा चित में व्यापी, मन आई हैरानी ।
 व्याकुल भये सार नहीं सूझे, फँस गई द्वन्द गलानी ॥है खानी
 एकचित होय न समता आवे, भूल भरम भरमानी ।
 दुख कलेश चिंता का बंधन, यम के फाँस फँसानी ॥है खानी
 राधास्वामी संग की अन्त में सूझी, पाई शब्द निशानी ।
 शब्द समझ दुविधा गई मन से, होरही ठौर ठिकानी ॥है खानी

[८२-३००]

सजनी प्रेम तराजू तुलजा ॥टेका॥

प्रेम तराजू चढ़ सम पावे, बन्द कली चित खुलजा ।
 आनंद सुख तेरे भाग में आवे, हर्ष पवन लग फुलजा ॥हाँ तुलजा
 भवसागर के दुख सुख झूटे, भक्ति प्रीति के पुलजा ।
 पार जाये सतधाम धिराजे, मिल जुग सत में रलजा ॥हाँ तुलजा
 नर तन पाके कर सत संगत, जग से क्यों व्याकुलजा ।
 राधास्वामी सतसंग मारले गोते, सत के सिंह में घुलजा ॥हाँ तुलजा

[८३-३०१]

मेला मेल मिले का मेला ॥टेका॥

जब लग मेल मिले नहीं मन का, तब लग मेला नहीं ।
 कपट नोन दूध जल डाला, खंड खंड बिलगाही ॥हाँ मेला
 सहस कोस गुरु चेला रहते, सुरत धार मिल संगी ।
 पास में रहते दो कपटी जन, दूर वरुँ चित भंगी ॥हाँ मेला
 जल मछली का मेल मिला है, यही मेल की रीती ।
 बिछड़त प्रान तजे छिन पल में, देखलौ प्रेम प्रतीती ॥हाँ मेला
 घट में सुरत है शब्द गगन में, मिलत समाधी लागे ।
 बिना मेल कहो समता कैसी, मेल से समता जागे ॥हाँ मेला



गुरु के चरन से मेल मिला जब, उपजा हर्ष हुलासा ।
राधास्वामी दया से काज हुआ पूरा, पाया सतपद बासा ॥हाँ मेला

[८४-३०२]

मैं अपने मन से हार गई ॥टेका॥

मेरा मन नहीं बस में मेरे, नित उत्पात मचावे ।
क्रोध की आग चित्त में भड़के, तन मन सकल जरावे ॥हार गई
मेरी जिभ्या बस नहीं मेरे, बोले अनुचित बानी ।
लाभ किसी का उससे क्या हो, मेरी करती हानी ॥हार गई
मेरी आंख न बस में मेरे, अवगुन देखनहारी ।
गुन की ओर दृष्टि नहीं जावे, दोष दृष्टि की मारी ॥हार गई
कान मेरे बस में नहीं मेरे, परनिंदा अनुरागी ।
सुनें और की दोष कहानी, प्रेम भजन को त्यागी ॥हार गई
सतसंगत के बचन कौन सुने, आलस नींद सतावे ।
राधास्वामी ऐसी दशा से, तुम धिन कौन बचावे ॥हार गई

[८५-३०३]

जगत की झूठी परतीती ॥टेका॥

सुख आनन्द के समय साथ दें, दुखी देख कर भागें ।
स्वारथ बस ऋषि मुनि सुर नर सब, अपने हित को लागें ॥परतीती
पुत्र पिता पति पत्नी भगनी, स्वारथ के आधीना ।
निज स्वारथ की आस नहीं जब, मनके सकल मलीना ॥परतीती
रोग सोग में देख देह को, अपना चित्त हटावें ।
काल समय देहान्त हुये पर, धन सामिग्री बटावें ॥परतीती
नारी कहे नर बहुत पियारा, बेलि वृद्ध लपटानी ।
प्राण तजे उसको तज भागी, भूत भूत चिन्लानी ॥परतीती
कोई गाढ़े कोई जलावे, कोई जलधार बहावे ।
फिर नहीं नाम कोई ले उसका, अपने मन से भुलावे ॥परतीती



ऐसे जग की प्रीति रीति पर, क्यों इतना अभिमाना ।
ममता त्याग त्याग दे ममता, कर सतगुरु का ध्याना ॥परतीती
राधास्वामी जग में आये, अपना दिया सहारा ।
सुरत शब्द का पन्थ चलाया, किया भवसागर पारा ॥परतीती

[८६-३०४]

रंग पाय सुरंगी होगई ॥टेक॥

जग का संग साथ जब त्यागा, धारा गुरु का संगी ।
गुरु का रंग जमा जब मन में, अब नहीं कभी कुटंगा ॥होगई
गुरु का रंग संग कर आया, सतसंग की सुन बानी ।
काल करम के लाख भ्रकोले, मेरी करें न हानी ॥होगई
शब्द योग की विधि अनोखी, सीख किया अभ्यासा ।
मन तब तज पृथ्वी का मंडल, गगन मंडल किया बासा ॥होगई
ब्रह्मेन्द्र ओंकार अस्थाना, पहिले किया निवासा ।
ऊपर चढ़ी सुरत जब निरखी, गिर सुमेर कैलासा ॥होगई
घट में सुरत शिष्य की बैठक, गगन में गुरु अस्थाना ।
सुरत शब्द संजोग महातम, दोनों एक ठिकाना ॥होगई
सुरत में शब्द शब्द शब्द में सुरत, सुरत शब्द मिल एका ।
सहित विवेक दशा यह पाई, छूटा जगत अनेका ॥होगई
द्वैत अद्वैत का संशय भागा, चित की दुचिताई त्यागी ।
बनत बनत मेरी बनआई, हुई गुरुरूप अनुरागी ॥होगई
कीट भृंगी के रूप बना है, ध्यान धारना प्रगटी ।
अब नहीं सहस कमलदल बासी, जब आई गढ़ त्रिकुटी ॥होगई
राधास्वामी समर्थ दाता, दया से अंग लगाया ।
रंग छुड़ाया भव दारुण का, अपना रंग दिलाया ॥होगई

[८७-३०५]

तू एड़ी चोटी तक व्यापा ॥टेक॥

तू नयनों में आन बिराजा, और कौन अब आवे ।



रात की निद्रा फिर फिर लौटे, घर सूना नहीं पावे ॥तू व्यापा
गूँजे नाम तेरा कानों में, सोई अनहद बानी ।
क्या कहूँ कान हुये मेरे कैसे, बहरे या निरवानी ॥तू व्यापा
मन के दरपन सुन्दर बसता, और की पड़े न भाँई ।
नहीं संकल्प विकल्प सतावे, जम कर बैठा साँई ॥तू व्यापा
जिभ्या नाम तेरा है जपती, निस दिन आठों यामा ।
बात चीत किसकी करूँ किससे, गहा रसीला नामा ॥तू व्यापा
हाथ पाऊँ नस नाड़ी में तू, आय किया विसरामा ।
सिर में सोच समझ लख पाया, राधास्वामी धामा ॥तू व्यापा

[८८-३०६]

अब अपना आपा जान गया ॥टेका॥

नहीं स्थूल सूक्ष्म नहीं कारन, नहीं मैं तन मन बुद्धि ।
पाप पुण्य नहीं मुझमें समाये, नहीं अशुद्धि न शुद्धि ॥जान गया
जीवन ब्रह्म न माया शक्ति, व्यष्टि समष्टि नाहीं ।
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति अवस्था, मन के आधार रहाई ॥जान गया
जनम मरन मेरा नहीं होता, अमर रूप है मेरा ।
जब सतगुरु ने आन चिताया, छुट गया मेरा तेरा ॥जान गया
छाया ज्योती मेरे सहारे, करते खेल निराले ।
मैं इनमें नहीं यह नहीं मेरे, पड़ा न इनके पाले ॥जान गया
राधास्वामी सतगुरुदाता, संतसंग बचन सुनाया ।
बचन सुना दुविधा तज भागी, अपना आपा पाया ॥जान गया

[८९-३०७]

गुरु स्वामी करो तुम मेरी सहाय ॥टेका॥

मैं बालक तुम मात पिता हो, आया शरन तुम्हारे ।
अब तो चिन्ता चित नहीं व्यापे, तुम हो सदा रखवारे ॥मेरी सहाय
मैं अजान कुछ जानूँ नाहीं, बाल विनय सुन लीजे ।



माँगन की विधि मोहि न आवे, जो भावे सो दीजे ॥ मेरी सहाय
सत गुरु शरन रतन धन खानी, चरन शरन नित माँगूँ ।
और नहीं कोई चाह है मन में, पद सरोज में लागूँ ॥ मेरी सहाय
तुम्हरी गोद खेलूँ दिन राती, आनन्द चित बसाऊँ ।
दुख कलेश नहीं भुके सतावे, नाम सुमिर हरषाऊँ ॥ मेरी सहाय
राधास्वामी परम दयाला, दया से लो अपनाई ।
करम न व्यापे भरम न व्यापे, सदा गहूँ शरनाई ॥ मेरी सहाय

[६०-३०८]

तेरी काया नगरी कासी है ॥ टेक ॥

काया में शिव शम्भु शक्ति हैं, काया में अविनाशी है ।
जोतिर लिंग शब्द धन धारा, सुरत उरधरु कासी है ॥ कासी है
सुख आनन्द अवस्था वाहन, नंदी वृष कैलासी है ।
चैतन धार बहे नित गंगा, सोई धार अकासी है ॥ कासी है
तीन लोक में कासी नगरी, न्यारी ज्ञान प्रकासी है ।
जल धरि त्रिकुटी से बूंद जो गिरता, शब्द अमी सुख रासी है ॥ कासी है
राधास्वामी नाम जो ले काया में, सच्चा कासी निवासी है ।
कासी से जो ऊपर जावे, पक्का साधु उदासी है ॥ कासी है
राधास्वामी नाम पाये निज काया, सो सत धाम का बासी है ।
राधास्वामी नाम जो गावे, उसकी कटी चौरासी है ॥ कासी है

[६१-३०९]

जब आँख खुले तब नजर पड़े ॥ टेक ॥

किसी की समझ में सार नहीं आवे, कोई किसी से क्यों भगड़े ।
भगड़ा रगड़ा भव भ्रम भय है, मोह जाल में कौन अड़े ॥ नजर पड़े
पुस्तक पोथी पन्थ संप्रदा, पक्षपात के कठिन कड़े ।
मन को बाँध विचार शून्य नर, भव कीचड़ में आन गड़े ॥ नजर पड़े
पड़ा सो गड़ा गड़ा सो भिगड़ा, जो भिगड़े सोई अधिक सड़े ।



सड़े गले से हो दुर्गन्धी, द्वेष फाँसे छोटे और बड़े ॥नजर पड़े
कर सतसंग चाल चल सतकी, करम सीस पर दंड जड़े ।
राधास्वामी बल संसार सिंध तर, शब्द नाव के बीच चढ़े ॥नजर पड़े
[६२-३१०]

गुरु ने अमृत नाम पिलाया ॥टेका॥

मोह जाल की फाँसी काटी, चौरासी से आन छुड़ाया ।
अब नहीं काल कर्म का भय कुछ, अभयदान दे जीव चिताया ॥नाम०
खटका भटका भटका छूटा, सत मारग की राह चलाया ।
भूल भरम दुविधा संशय से, सहज रीति से सहज बचाया ॥नाम०
सहज योग विधि सहज कमाई, सहज सहज भव सिंध तराया ।
सहज शब्द गति सहज समाधी, सहज सुन्न में सहज रचाया ॥नाम०
एक रस जीवन प्रेम भक्ति का, दया कृपा से सब ही दिलाया ।
आओरे जीव करो सत संगत, समय अमोलक काहे गँवाया ॥नाम०
राधास्वामी आये जीव चितावन, संत रूप धर जीव चिताया ।
धन जो जीव शरण में आये, बिना कष्ट निज काम बनाया ॥नाम०
[६३-३११]

बाबा अपनी ओर निहार ॥टेका॥

और न को क्या देखें बाबा, निज जीवन को सुधार ।
काम न आवे कोई तेरे, कुल कुटुम्ब परिवार ॥बाबा०
बहुत गई थोड़ी रही आयु, मन नहीं सोच विचार ।
केहि विधि मैं समझाऊँ तुझको, समझावत थका हार ॥बाबा०
कान सुने नहीं आँख न देखे, गहे न हाथ पसार ।
दाँत का काम आँत लगी करने, बिन रस का आहार ॥बाबा०
आदर मान बढ़ाई भिट गई, नहीं समाज सतकार ।
औरन की तो बात कहूँ क्या, रूठे घर की नार ॥बाबा०
माया तज दे आस जगत की, भज सतगुरु करतार ।
राधास्वामी की दाया से, चल भव जल के पार ॥बाबा०



[६४-३१२]

तेरी गति मति कौन लखे ॥टेका॥

वेद न जाने महिमा तेरी, ऋषि मुनि फिरें भरम की फेरी ।
 शारद तेरे दर की चेरी, आन ही आन बके ॥तेरी
 अवरम्पार पार निहःपारा, तू है सार असार का सारा ।
 अजर अमर अधिनासी प्यारा, घट घट व्याप रहे ॥तेरी
 नहीं एक और नहीं अनेका, सब विधि किया विचार विवेका ।
 भूले ज्ञानी ध्यानी भेका, कोई न भरम लहे ॥तेरी
 तू प्रकाश है तू परछाँई, तू है परम तत्व तू भाँई ।
 कैसे अस्तुति करूँ गोसाँई, सुध बुध भरम लहे ॥तेरी
 अनहित सहित सकल हितकारी, निराधार तू जगदाधारी ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सेवक चरन चहे ॥तेरी

[६५-३१३]

मुझे नाम मिला है धरनी धर ॥टेका॥

धरनी धर जी धरनी धर, मुझे नाम मिला है धरनीधर ॥
 बुन्द अघात गिरे गिर ऊपर, पड़े बरफ और पाला ।
 सहे चोट मुख से नहिं बोले, परबत ऐसा हिमाला ॥धरनीधर
 साधु सहे कुटिल की वानी, चित चिंता नहीं लावे ।
 स्तुति निंदा सम कर राखे, धीरज मन में बसावे ॥धरनीधर
 काम करूँ और मुख से न बोलूँ, काम में राखूँ प्रीति ।
 कथनी तज करनी लव लाऊँ, मन धर प्रेम प्रतीती ॥धरनीधर
 साध सूरमा सती तीन यह, त्यागें तन की आशा ।
 मौज अधार जियें जग अन्दर, सहित उमंग हुलासा ॥धरनीधर
 धरनी धरे सकल का भारा, सिरपर चिंता त्यागी ।
 तैसे सेवक रहे जगत में, राधास्वामी का अनुरागी ॥धरनीधर





[६६-३१४]

मुझे नाम का हीरा प्राप्त हुआ ॥टेक॥

प्राप्त हुआ जी हाथ लगा, मुझे नाम का हीरा प्राप्त हुआ ॥
 शब्द साखी कोई साधू परखे, और जौहरी हीरा ।
 प्रेम प्रतीत कोई प्रेमी परखे, काछी ककड़ी खीरा ॥प्राप्त हुआ
 हीरा नाम रतन धन खानी, गुरु संगत मिल पाया ।
 दुख दरिद्र नहीं मुझे सतावे, व्यापे काल न माया ॥प्राप्त हुआ
 वाद विवाद में उमर गँवाई, जीवन स्वाद न पाया ।
 सतसंगत परताप महातम, घट में नाम धन पाया ॥प्राप्त हुआ
 बिन ग्राहक नहीं हीरा खोले, जौहरी चतुर सियाना ।
 मूल बिना ग्राहक नहीं मिलता, जाने साध सुजाना ॥प्राप्त हुआ
 सुमिरन भज ध्यान घट डब्बा, नाम का हीरा राखूँ ।
 सुरत शब्द अभ्यास कमाऊँ, राधास्वामी राधास्वामी भाखूँ ॥प्राप्त हुआ

[६७-३१५]

जिसे काल करम भरमाता है, उसे मायाजाल फँसाता है ॥टेक॥
 जो आया है जायेगा एक दिन, यह जाने सब कोई ।
 चिंता फिर क्यों तुझे सतावे, बुद्धि त्रिवेक को खोई ॥फँसाता है
 दिन से रात रात से दिन है, यह जग का व्यौहारा ।
 एक दशा में कौन है रहता, ऐसा है संसारा ॥फँसाता है
 दुविधा में फँस भूले प्राणी, नर जीवन को खोया ।
 एकचित होय न सुख को पावे, अन्त पीट सिर रोया ॥फँसाता है
 समझ बूझ कर गुरु की संगत, अब तो मूढ़ अज्ञानी ।
 सांस सांस आयु है घटती, तज दुविधा हैरानी ॥फँसाता है
 सुमिरन भजन ध्यान को चित दे, वाद विवाद को त्यागी ।
 राधास्वामी दया करेंगे, होजा प्रेम अनुरागी ॥फँसाना है



[६८-३१६]

मन मगन भया बकवास गया ॥टेका॥

बकवास गया समवाद गया, शास्त्रार्थ गया पक्षपात गया ॥
 चैन कहां जहां नैन लड़े हैं, नेम कहां जहां प्रेम रहे ।
 बुद्धि कहां जहां रूप परख आई, भगड़ा जहां कहां क्षेम रहे ॥मन
 चिंता चित फिर धीर कहां, कहां आरत के मन चेत रहे ।
 पक्ष के साथ में न्याय कहां, उपकार कहां जहां हेत रहे ॥मन
 तन मन कहां जहां भक्ति जमी, परमारथ में व्यवहार कहां ।
 जब परमतत्व की गम पाई, फिर तुमही कहो संसार कहां ॥मन
 और के होय आधीन जो नर, सुख सम्पत्ति निकट कहां आवे ।
 चाहे ब्रह्मा बृहस्पति इन्द्र बने, मन भूल के शांति नहीं पावे ॥मन
 जब लोभ हो मन में तो लाज कहां, जब क्रोध तो धर्म का संग नहीं ।
 राधास्वामी रंग जो धार लिया, फिर चढ़ता दूजा रंग नहीं ॥मन

[६९-३१७]

रह धरनी सुमिरो धरनीधर ॥टेका॥

धरनीधर है नाम गुरु का, बिरला कोई कोई माने ।
 धरे जीव का भार सीस पर, सोई धरनीधर जाने ॥धरनीधर
 छोड़ कुसंगत कर सतसंगत, ज्ञान ध्यान चित लाना ।
 दुविधा दुर्मति दूर हटाना, भव के फन्द न आना ॥धरनीधर
 घट का शुभ अधिकार जो जागे, संस्कार खुल खेले ।
 तब तज धर को अधर सुधारे, चित से भरम को ठेले ॥धरनीधर
 भोग वासना छल चतुराई, कपट दम्भ नहीं व्यापे ।
 माया काल भरम सब भागें, चिंता दुख न सतावे ॥धरनीधर
 अक्षत देह गुरु दर्शन पाया, धरपद धुरपद जाना ।
 चढ़ा अधरपद गुरु के सहारे, राधास्वामी पद परसाना ॥धरनीधर





[१००-३१८]

मेरे प्यारे भाई ले गुरु की शरनाई ॥टेका॥

भरम फाँस में मन उरभाना, नहिं स्रभे कोई अपना बिराना ।

भूला मोह मया मद माना, समझ न अब तक आई ॥भाई ले

गुरु हैं तेरे तू है गुरु का, तू बालक गुरु पितु और माता ।

क्यों नहीं चरन कमल रहे राता, कैसे कहूँ समझाई ॥भाई ले

छिन पल सुभिरन गुरु का नामा, चित पावे तेरा विश्रामा ।

त्याग मान अभिमान के कामा, चरन शरन हित लाई ॥भाई ले

तेरा काम मौज से होगा, मौज अधीन भोग और जोगा ।

मौज को छोड़ सहे रोगा सोगा, मौज में तेरी भलाई ॥भाई ले

तू रणवीर धीर रण स्ररा, तेरा काम करे गुरु पूरा ।

हो रह चरन कमल का धूरा, राधास्वामी के गुन गाई ॥भाई ले

[१०१-३१६]

सुरत प्यारी चित्त में धर अनुराग ॥टेका॥

तू तो प्रेम की सच्ची मूरत, प्रेम का लिया सोहाग ।

तेरी महिमा क्या कोई जाने, तेरा बड़ा है भाग ॥सुरत

बाहर जग से आंख बन्द कर, अन्तर जग में जाग ।

जागृत स्वप्न एक करले तू, सुन अनहद धुन राग ॥सुरत

मूरख की बातों में मत जा, उनका मन्द है भाग ।

उनमें काल का विष तन व्यापा; काल है विषधर नाग ॥सुरत

सुख दुख करले सम मन अपने, चित में रहे बैराग ।

कमल नीर की रहनी सो है, ऐसी रहनी लाग ॥सुरत

मन के बोड़े कर असवारी, मोड़ के उसकी बाग ।

राधास्वामी धाम सुरत नृत खेले, अद्भुत मंगल भाग ॥सुरत

[१०२-३२०]

माई तज दे जग की आसा ॥टेका॥

नर जीवन है अगमापाई, जल के बीच ब्रतासा ।



गलत देर नहीं लागे माई, सब परपंच तमासा ॥माई
जो कोई बांधे आसा जग की, अन्त में रहे निरासा ।
किसकी आसा करे तू माई, आसा वाला उदासा ॥माई
पिंजरे तन में जीव का पंछी, बंधा प्राण के सांसा ।
सोस निकलते देर न लागे, निष्फल भोग बिलासा ॥माई
छिन पल में सब जलेगा यह तन, ज्यों चिनगी से घासा ।
इस शरीर की कौन चलावे, जलें मेरु कैलासा ॥माई
गुरु की दया साधु की संगत, आनन्द हर्ष हुलासा ।
राधास्वामी नाम को भज नित, माई सांसों सांसा ॥माई

[१०३-३२१]

नहीं कोई बचा अवगुनी गुनी, ठगनी ने ठग लिये ऋषि मुनी ॥टेक॥
बनी मेनका बन में आई, बनवासी के भेषा ।
विश्वाभिन्न का भंग किया तप, पटक काम के देसा ॥नहीं
शिव भगवान काम के बैरी, काम के हाथ फँसाने ।
मोहिनी रूप देख भये मोहित, बुद्धि न रही ठिकाने ॥नहीं
नारद भक्त शिरोमणि ज्ञानी, आदि ऋषि विज्ञानी ।
मोहे लक्ष्मी की सुन्दरता लख, बने मूढ़ अज्ञानी ॥नहीं
कहीं ज्ञान कहीं जप तप क्रिया, कहीं ठिठोल कहीं हांसी ।
माया हाथ में लेकर डोले, भूल भरम की फांसी ॥नहीं
दीनबन्धु शिव दयाल गोसांई, गुरु अनाम अत्राया ।
बचा शरन जो तेरे आया, राधास्वामी की दाया ॥नहीं

[१०४-३२२]

क्यों भूला तू प्यारे मग में, भरमा क्यों डाकू और ठग में ॥टेक॥
सतगुरु आये तोहि चितावन, दया से अंग लगाया ।
भवजल पार उतारन कारन, शब्द जहाज बनाया ॥हाँ मग में
बड़े बने तो हुये कबीरा, नन्हे बने तो नानक ।



दोनों रूप बिसारा तूने, राधास्वामी आये अचानक ॥हाँ मग में
 विद्या अविद्या फाँस फँसातू, द्वन्द जाल में उरभा ।
 दुविधा दुचिताई के बन्धन, कैसे कहूँ तू सुरभा ॥हाँ मग में
 मेरा कोई नहीं है अपना, सब स्वारथ के साथी ।
 भूठे सुख धन धाम बड़ाई, भूठे घोड़े हाथी ॥हाँ मग में
 कर सतसंग विवेक धार चित, सीख शब्द मत रीती ।
 सहज योग का सहज है साधन, धर मन में प्रतीती ॥हाँ मग में
 सहज समाधि अखंड सुन्न पद, घट में अघट का बासा ।
 राधास्वामी की शरन में आजा, कर सतलोक निवासा ॥हाँ मग में
 अजपा जाप सहज है साधन, साधन अनुभव जागे ।
 बिन साधन अनुभव नहीं भाई, बिन अनुभव क्या माँगे ॥हाँ मग में
 कुछ दिन सतसंग कुछ दिन साधन, कुछ दिन मुक्ति बिलासा ।
 बन्धन मुक्ति मानसिक लीला, कामी देख तमासा ॥हाँ मग में
 जाप मरे अजपा मर जाये, अनहद भी मर जाये ।
 सुरत समानी शब्द में आकर, ताहि काल नहीं खाये ॥हाँ मग में
 नानक और कबीर की बानी, विविध अनेक सुनाई ।
 वही अलाप अब नये ढंग में, राधास्वामी ते गाई ॥हाँ मग में

[१०५-३२३]

माई सुख से जनम बिताओ ॥टेका॥

सो सुख हैं गुरु चरन प्रेम में, नित गुरु के गुन गाओ ॥
 सुख नहीं जग प्रपंच में माई, सुख नहीं भोग बिलासा ।
 सुख है गुरु के प्रीति रीति में, नित आनन्द हुलासा ॥माई
 सुख नहीं मान बड़ाई दिखाये, सुख नहीं धन परिवारा ।
 सुख है अन्तरवृत्ती जमाये, गुरु का ले के सहारा ॥माई
 सुख नहीं बाहर परबत बन में, सुख नहीं सैर तमासा ।
 सुख है तेरे अन्तर माई, अन्तर कर जिज्ञासा ॥माई



नित उठ गुरु की भजन बंदगी, नित गुरु संगत करना ।
 घट में भजन हो घट में संगत, घट गुरु नाम सुभिरना ॥माई
 तेरे घट में गुरु बिराजे, गुरु सत चित आनन्दा ।
 सो गुरु रूप है तेरा माई, ढूँढ़ त्याग सब धन्दा ॥माई
 घट में पैठ बैठ कर पूजा, घट मन्दिर उजियारा ।
 घट में पिंड ब्रह्मांड पसारा, घट में सुख विस्तारा ॥माई
 राधास्वामी सतगुरु दाता, घट में तेरे बिराजे ।
 घट दर्शन घट सेवा संगत, घट सुन आनन्द बाजे ॥माई
 [१०६-३२४]

तू भूली भरमानी माई ॥टेक॥

जगत पिता तेरे घट में रहता, तू उसको क्यों भूली ।
 जो उस पिता को चित से भुलावे, जग की सहे ठिठोली ॥तू भूली
 चिता तज दे दुर्मति तज दे, तज दे तज दुचिताई ।
 मन में धार पिता की आसा, पिता से तेरी भलाई ॥तू भूली
 सच्चा स्वामी सदा सनेही, जनम जनम का संगी ।
 उसके रंग रंगी नहीं माई, होगई हाय कुरंगी ॥तू भूली
 पिता सहाई तेरा है माई, और की क्यों है आसा ।
 जो कोई और की आसा लावे, फाँसे काल की फाँसा ॥तू भूली
 राधास्वामी समरथ दाता, छिन पल के रखवारे ।
 चित देकर नित नाम का सुभिरन, रह रह उनके सहारे ॥तू भूली
 [१०७-३२५]

प्यारी प्रेम प्यार ले सीख ॥टेक॥

प्यारी जब पति की हुई, सब जग करे पियार ।
 आदर सुख सम्पति लहे, कहलावे बर नार ॥ प्यारी
 अन्तर घट जब पीव बसे, मुख से क्यों ले नाम ।
 पतनी को जब पीव भजे, तब पावे विश्राम ॥ प्यारी
 एक पति का प्रेम चित, व्याप रहा घट माँह ।



पत्नी को अब दुख कहाँ, पति ने पकड़ी बांह ॥प्यारी
नैन हमारे घर बने, पुतली पलंग समान ।
सेज बिछी पीव संग है, होगये सुख महान ॥प्यारी
एक पति तो पुरुष है, और पुरुष जग नांह ।
पत्नी पाले प्रेम पिउ, राधास्वामी करें निवाह ॥प्यारी
[१०८-३२६]

पत्नी पतिव्रत धरम निवाह ॥टेका॥
अपने पति की प्यारनी, जग की प्यारी होय ।
जो पति की प्यारी नहीं, दुख ग्रसित रहे सोय ॥ पत्नी
पत्नी तो पति की बनी, और का हिये में ध्यान ।
ताको इस संसार में, जीवन नरक निदान ॥ पत्नी
पति बल अबला बली हो, पति सुख से सुख रूप ।
प्रेम पति का चित बसे, क्यों पड़े दुख के कूप ॥ पत्नी
एक तत्व के रूप दो, पति पत्नी के भाव ।
मिल जुल खेलें जगत में, प्रेम प्रतीत प्रभाव ॥ पत्नी
प्रीतम पति का अंग है, प्रेमी पत्नी भेस ।
अन्तर बाहर प्रेम रंग, प्यार प्रीति के देस ॥ पत्नी
पतिव्रता के एक है, कुलटा के दो चार ।
कुलटा नरकी जीव है, पतिव्रता वरनार ॥ पत्नी
सन्त पन्थ में आयकर, चल तू प्रीति की राह ।
प्रेम की दृढ़ता मन रहे, राधास्वामी हाथ निवाह ॥ पत्नी
[१०९-३२७]

पत्नी पति की ओर निहार ॥टेका॥
पति तेरे ब्रह्मा विष्णु हैं, पति सच्चे त्रिपुरार ।
रमा उमा का रूप तू, शारद सुन्दर नार ॥ पत्नी
अमला विमला निर्मला, सो अबला क्यों होय ।



पति का बल ले चित्त में, सबला कहिये सोय ॥ पत्नी
शक्ति भक्ति संयुक्त बन, योग युक्ति मन ठान ।
बाहर भीतर पति दरस, सहज समाध प्रमान ॥ पत्नी
योग भोग पति संग है, जीवन मुक्त सदेह ।
पतिव्रता का रूप यह, पति से सच्चा नेह ॥ पत्नी
पति का सुमिरन पति भजन, पति का निसदिन ध्यान ।
यही सन्त मत पन्थ है, पुरुष का रूप ले जान ॥ पत्नी
पति मूरति गति चन्द्रमा, पत्नी चित्त चकोर ।
रात दिवस पति दरस है, दृष्टि पति की ओर ॥ पत्नी
परमारथ व्यौहार में, एक भाव मन राख ।
जनम सुफल कर आपना, राधास्वामी राधास्वामी आख ॥ पत्नी

[११०-३२८]

सजनी प्रेम के सिंधु नहा ।ष्टेका।

उठत तरंग विचित्र अद्भुति, नहीं कुछ जात कहा ।
सुन्दर सुखवि स्वरूप सुहावन, शोभावान महा ॥सजनी
कोई बड़भागी गोते मारे, प्रीति प्रतीति गहा ।
गोते मार शांत चित्त होकर, भक्ति का मोती लहा ॥सजनी
भक्ति का मोती अमोल अमारा, पावे सिंधु थहा ।
क्या पावे जो भाग का मन्दा, दुविधा धार वहा ॥सजनी
राधास्वामी दया से काम बनाया, जो सतसंग रहा ।
बिन सतसंग न बुद्धि मति शीतल, त्रिविधि अग्नि दहा ॥सजनी

[१११-३२९]

सखी लख मानुष जनम का स्मर ।ष्टेका।

भक्ति रीति के मार्ग पग धर, चित्त में प्रेम पियार ।
परमारथ का अर्थ साध ले, सुधरा रहे व्यौहार ॥सखी
पन्थ में आकर बन पन्थाई, पन्थ की डगार संभार ।



सतगुरु दया भव निधि से तरजा, औरों को ले तार ॥सखी
घट की खट पट मेट के सजनी, सुरत का कर सिंगार ।
सुरत को शब्द में सहज लगादे, राधास्वामी की बलिहार ॥सखी
[११२-३३०]

मन मगन भया तब क्या चाहिये ॥टेका॥
आसा वासा चित्त न उपजे, शान्ती सहित मौन गहिये ।
राग विराग ईर्ष्या दुरमति, त्याग मुक्त रहिये ॥क्या चाहिये
देह गेह का नेह नहीं है, द्वन्द्व धार में क्यों बहिये ।
सार असार समझ बूझ तन, रूप का ठाठ बाट लहिये ॥क्या चाहिये
नहीं कोई शत्रु न मीत हमारा, बुरा भला किससे कहिये ।
योग ज्ञान जप तप और संयम, रूप अग्नि में सब दहिये ॥क्या चाहिये
ब्रह्मलोक सतलोक निवासा, किसको तजि किसको लहिये ।
काल चक्र के दूट गये हैं, पर पुरजे टुकड़े पहिये ॥क्या चाहिये
राधास्वामी सुफल नर देही, भव दुख सुख अब क्या सहिये ।
जीतेजी निर्बान की सद्गति, जीवन मुक्ति की गति लहिये ॥क्या चाहिये

बिनती

करुणा निधान कृपाल सतगुरु, प्रणतपाल महेश्वरम् ।
सतरूप सतपद धाम धुर, सत भाव सत विश्वम्भरम् ॥
दे भक्ति शक्ति मुक्ति युक्ति, तार लीजें दीन को ।
आया शरनागत तुम्हारे, शरन दीजें हीन को ॥
अति कठिन काल कराल भाया, जाल बन्धन में पड़े ।
हम जीव निबल समर्थहीन, सहते दुख संकट बड़े ॥
नहिं बुद्धि समझ विवेक ज्ञान, न भक्ति ध्यान की सम्पदा ।
केवल तुम्हारी एक आस, भरोस रहती है सदा ॥
नाम दीजे प्रेम दीजे, दान दीजे भक्ति का ।
राधास्वामी अपना जन समझ कर, दया कीजे सर्वदा ॥





[११२-३३२]

मंगलम्

मंगलम् अशब्द अरूप, शब्द रूप स्वामी ।
 मंगलम् अलख अनाम, अगम नाम नामी ॥
 मंगलम् दीन बंधु, दीन नाथ दाता ।
 मंगलम् अभेद भेद, आनन्द धन व्राता ॥
 महिमा अनन्त आदि, अन्त कौन गावे ।
 भेद तेरा कौन जाने, कौन कह सुनाये ॥
 सन्त भेस प्रगट जगत, जीव को चिताया ।
 काल कर्म फन्द काट, धुर ले पहुँचाया ॥
 श्रथम तत्व निज स्वरूप, पय कमल नमामी ।
 गाऊँ ध्याऊँ रात दिवस, भजूँ राधास्वामी ॥

चौथी धुन

[१-३३३]

आस आस जीव बँधे, आस जम की फाँसी ॥टेका॥
 आस ले निरास बने, चित्त से उदास बने ।
 दुविधा साँस साँस बने, जग कराई हाँसी ॥आस आस जीव
 कोई चाहे धन का दान, कोई माँगे मन का मान ।
 कोई ज्ञान कोई ध्यान, अपना रूप नासी ॥आस आस जीव
 बन्धन फँस मुक्ति माँगे, जोग जतन जुक्ति माँगे ।
 भक्ति सिद्धि शक्ति माँगे, परम तत्व दासी ॥आस आस जीव
 कोई भजे त्रिपुरार, कोई कृष्ण से पियार ।
 कोई बुद्ध का विहार, वसे पुरी काशी ॥आस आस जीव



लखे नाहिं अपना रूप, पड़े भव के द्वन्द कूप ।
 सो नहीं प्रजा न भूप, माया विश्वासी ॥आस आस जीव
 खोल कहूँ माने नाहिं, भगड़ा करे गह के बांह ।
 नहीं ले गुरु पद की छांह, मीन जल में प्यासी ॥आस आस जीव
 राधास्वामी निज स्वरूप, अद्भुत अचरज अनूप ।
 गोता मार तन के कूप, होजा सुखरासी ॥आस आस जीव

[२-३३४]

मन के नाच सारे नाचें, ऋषि मुनि नर देवा ॥टेका॥
 ऊँची नीची चाल चलें, द्वन्द जग की अग्नि जलें ।
 दुविधा की गोद पलें, पावें नहीं मेवा ॥मन के नाच॥
 दुचिता पड़ विपत सहें, भली बुरी बात कहें ।
 सम चित कर नाहीं रहें, करें काल सेवा ॥मन के नाच॥
 मन से बचे भक्त दास, सुख दुख की त्याग आस ।
 राधास्वामी संग निवास, गुरु के नाम लेवा ॥मन के नाच॥

[३-३३५]

मनुआ मतवाला बना, रह रह कर नाचे ॥टेका॥
 कबहूँ आनन्द हुलास, कबहूँ जग से निरास ।
 कबहूँ होय उदास, दुविधा रंग राचे ॥मनवा मतवाला॥
 ऊँचे चले विहंग चाल, नीचे डूबे पताल ।
 क्षण दुखिया क्षण निहाल, काम करे कांचे ॥मनवा मतवाला॥
 राधास्वामी दीनबन्ध, काटो इस मन के फन्द ।
 मिटे सकल कलह द्वन्द, दीन जीव बाचे ॥मनवा मतवाला॥

[४-३३६]

मनुआ कुछ सोच समझ, दो दिन जग जीना ॥टेका॥
 ओस से न प्यास बुझे, कैसे समझाऊँ तुझे ।
 समझे तू नाहीं मुझे, रहे नित मलीना ॥मनुआ कुछ



मुठी से बयार नावे, मिथ्या भव फँसे आपे ।
 दुख से कलेजा काँपे, सार तत्व से हीना ॥मनुआ कुछ
 सपना है माया खेल, सपना धिछोह मेल ।
 सपना आनन्द केल, सत्त से बिहीना ॥मनुआ कुछ
 फटा चित का जव आकास, कैसे न हो कोई उदास ।
 सुई डोर नहीं पास, कठिन काम सीना ॥मनुआ कुछ
 पृथ्वी गगन दो हैं पाट, चलती चक्की का लाट ।
 पिसे जीव करम डाट, समझ भेद भीना ॥मनुआ कुछ
 चहुँ दिस लगी है आग, भगत बने जल्द भाग ।
 झूठा प्रपंच त्याग, हो न चित से दीना ॥मनुआ कुछ
 राधास्वामी सिंध ज्ञान, जीव बुन्द के समान ।
 बुन्द सिंधु दशा जान, होजा जल मीना ॥मनुआ कुछ

[५-३३७]

मनुआ तू कहा मान, चेत चेत बौरे ॥टेका॥
 दाह जगत है उपाध, अन्तर वृत्ती को बांध ।
 सुरत शब्द जोग साध, अपने हेत बौरे ॥मनुआ तू
 करम धरम भूल भरम, कोई नहीं जाने मरम ।
 कभी नरम कभी गरम, ध्यान देत बौरे ॥मनुआ तू
 अन्तर तेरे सुख हुलास, तू भटके झूठी आस ।
 अपने घट का बिलास, क्यों न लेत बौरे ॥मनुआ तू
 सुरत शब्द परम योग, मंगल आनन्द भोग ।
 मिटें सकल रोग सोग, भव का सेत बौरे ॥मनुआ तू
 बैरी है माया काल, फँसा इनके मोह जाल ।
 चल चल सतगुरु की चाल, सीस रेत बौरे ॥मनुआ तू
 शस्त्र अस्त्र वस्त्र साज, रण भूमि दे पग आज ।
 करले अपना आप काज, जीत खेत बौरे ॥मनुआ तू



राधास्वामी परम सन्त, सृष्टि के आदि अन्त ।
देत तेहि सच्चा मन्त्र, सेंटमेंत बौरे ॥मनुआ तू

[६-३३८]

मनुआ चित हिये धार, सतगुरु की बानी ॥टेक॥
काया माया छाया एक, तीनों भरम खानी ।
पकड़े नहीं आवे हाथ, यतन योग हानी ॥मनुआ चित
मिथ्या परपञ्च सारा, भ्रांति की निशानी ।
जो कोई भूल गया, अन्त पछतानी ॥मनुआ चित
जागृत स्वप्न है समान, एक भाव जानी ।
सतसंग में बैठ बैठ, तज दे मन मानी ॥मनुआ चित
पढ़ा लिखा सोचा समझा, आयु सब बितानी ।
अब तक नहीं समझा हाय, क्या कहूँ बखानी ॥मनुआ चित
राधास्वामी नाम सुमिर, मन चित कर्म बानी ।
सत असत कर विवेक, रूप ले पिछानी ॥मनुआ चित

[७-३३६]

गगन मंडल धूम मची, देखो सुरत मेला ॥टेक॥
घट की राह अधर चलो, चलने की बेला । गगन मंडल
सुखमन का नाका तोड़, बंक नाल ठेला ॥ गगन मंडल
अंस बंस हंस पाँत, करत नित केला । गगन मंडल
शब्द गुरु सुख समाज, संग सुरत चेला ॥ गगन मंडल
शंख ढोल झांझ बजत, सारंग धुन बेला । गगन मंडल
राग रंग नाच देख, अद्भुत अति खेला ॥ गगन मंडल
अन्तर आनन्द लहो, बाह्य विपत भेला । गगन मंडल
जगत मोह आस फांस, काल का झमेला ॥ गगन मंडल
राधास्वामी दीनबन्धु, दया से देत हेला । गगन मंडल





[८-३४०]

संगत कर गुरु की सखी, घट विवेक आवे ॥टेका॥
 अमृत रस वचन भरे, मन आनन्द पावे ॥ संगत कर
 ज्ञान ध्यान भक्ति सूझे, काल न सतावे ॥ संगत कर
 योग युक्ति यतन मिले, भ्रान्ति भरम जावे ॥ संगत कर
 चंचल मन अचल बने, विकलता नसावे ॥ संगत कर
 राधास्वामी गुरु के गुन को, सांसें सांस गावे ॥ संगत कर

[९-३४१]

चल तू सुरत गगन ओर, त्याग जग की आसा ॥टेका॥
 तिल को उलट ले दुरबीन, लख अजब तमाशा ॥ चल तू
 अन्धकार मिटे सकल, प्रगटे परकाशा ॥ चल तू
 अनहद धुन तूर बजे, आनन्द का विलासा ॥ चल तू
 पिंड और ब्रह्मांड त्याग, सतपद ले बासा ॥ चल तू
 राधास्वामी धाम पाय, मेट जग की त्रासा ॥ चल तू

[१०-३४२]

भक्तन के लाज काज, सतगुरु जग आये ॥टेका॥
 साजा मंडल समाज, थापा भक्ति का राज ।
 सुख सम्पत्त रहे गाज, आनन्द भर लाये ॥भक्तन के
 घट में बाढ़ी प्रतीति, उपजा मन प्रेम प्रीति ।
 सीखी सुरत शब्द रीति, चरनन लव लाये ॥भक्तन के
 प्रगटा है सत का नूर, बाजा अनहद तूर ।
 काल करम हुये दूर, ज्ञान गम्य पाये ॥भक्तन के
 काम क्रोध लोभ मोह, अहंकार दुर्मति द्रोह ।
 माया ममता का मोह, चित्त न रहाये ॥भक्तन के
 राधास्वामी प्रेम रूप, अद्भुत अचरज अनूप ।
 ज्ञान ध्यान ब्रह्म रूप, देखा हर्षाये ॥भक्तन के



[११-३४३]

चेत चेत चेत अभी, चेत मेरे भाई ॥टेका॥
 राह से कुराह भया, भूला भरमाना ।
 कहां बसे कहां नसे, ठौर ना ठिकाना ॥चेत चेत
 संगी नाहिं साथी नाहिं, कोई ना सहाई ।
 ताक में हैं चोर डाकू, कोई ना सहाई ॥चेत चेत
 सोया सो पूँजी खोया, पूँजी खोय रोया ।
 फल पाया आप बुरा, जैसा बीज बोया ॥चेत चेत
 वह तो नहीं तेरा देस, देस है बिगाना ।
 यहां सब बेगाने बसें, कोई ना येगाना ॥चेत चेत
 गुरु ने उपदेश दिया, और मुझे चिताया ।
 संत पन्थ धार हिये, कटे मोह माया ॥चेत चेत
 लूट पड़ी लूट ले, बचाले धन अपना ।
 सह न काल कर्म चोट, सोधले मन अपना ॥चेत चेत
 राधास्वामी संत रूप, तेरे हैं सहाई ।
 उनकी ओर ध्यान लगा, ले चरन शरनाई ॥चेत चेत

[१२-३४४]

नाम सुमिर प्यारे भाई, नाम में भलाई ॥टेका॥
 नाम काम क्रोध मारे, नाम कष्ट विपत्त टारे ।
 नाम पतित जीव तारे, नाम है सुखदाई ॥नाम सुमिर
 नाम ज्ञान नाम ध्यान, नाम भक्ति मुक्ति खान ।
 नाम शक्ति है महान, सुमिर लव लाई ॥नाम सुमिर
 तीरथ बरत जप को छोड़, भर्म मोह नाता जोड़ ।
 चित को नाम से ले जोड़, सहज नाम गाई ॥नाम सुमिर
 भाव हो चाहे कुभाव, नाम ही से मन लगाव ।
 यही सच्चा है उपाव, काम ले बनाई ॥नाम सुमिर



॥ शिव शब्द सागर ॥

आँख कान होंठ बन्द, नाम सुमिर मेट द्रन्द ।
 काट काल कर्म फन्द, सतसंगत जाई ॥ नाम सुमिर
 नाम का समाज साज, नाम करे पूरा काज ।
 नाम सुमिर सुमिर आज, क्या है कठिनाई ॥ नाम सुमिर
 राधास्वामी नाम ज्ञान, नाम शब्द और प्रमान ।
 अंतर भज घट में आन, विगड़ी ले बनाई ॥ नाम सुमिर

[१३-३४५]

ठुमक चली गगन मंडल, सुरत भीनी भीनी ॥ टेका ॥
 जब लग नहीं भीनी होय, शब्द जोत जाय खोय ।
 सुन्न की समाधि सोय, तत्व कैसे चीन्ही ॥ ठुमक
 माया मोह दिया त्याग, चित गये द्वेष रग ॥
 जागा सोया सूक्ष्म भाग, नहीं अब मलीनी ॥ ठुमक
 सहस कमल सहस जोति, सहस ज्योति लखी सोत ।
 लख लख सुरत मगन होत, शब्द की अधीनी ॥ ठुमक
 घन्टा शंख नाद सुनी, अवगुन तज भई गुनी ।
 अनहद धुन सहज धुनी, छांट ताहि लीनी ॥ ठुमक
 आगे चढ़ी ओंकार, त्रिकुटी त्रय गुन विचार ।
 गुरु के संग किया प्यार, सच्ची श्रुति लीनी ॥ ठुमक
 सुन्न ब्रह्मेन्द्र गई, सुन्दर छवि खान भई ।
 सारंग धुन शब्द भई, समता चित भीनी ॥ ठुमक
 तीनों पद त्याग दिया, चौथे पद नाम लिया ।
 भँवर में सत में वास किया, राधास्वामी चीन्ही ॥ ठुमक

[१४-३४६]

थिक थिक मेरी सुरति नाचे, नाच है रंगीला ।
 गगन मंडल भूम चली, अचरज लख लीला ॥ थिक थिक
 गुरु का रंग धार दिये, होगई रंगीला ।



सज धज से सजीली बनी, मिल गया सजीला ॥थिक थिक
शब्द सुनत जोति लखत, छबि सहित छबीला ।
घट सुख आनन्द पाय, निसदिन हर्षीला ॥थिक थिक
बिजली सम दमक रही, रंग दमकीला ।
तारा बन उड़ी गगन, चकित चमकीला ॥थिक थिक
राधास्वामी संग पाय, लाल नहीं पीला ।
शीलवन्त प्रेमवन्त, स्वरत सुशीला ॥थिक थिक

[१५-३४७]

राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाइये ॥टेका॥
माया से नाता तोड़, काल कर्म सीस फोड़ ।
गुरु चरनन चित्त जोड़, और सब भुलाइये ॥राधास्वामी
त्याग जग के द्वेष राग, आसा तृष्णा से भाग ।
गुरु चरनन नित जाग, भक्ति युक्ति पाइये ॥राधास्वामी
भूठे सब धाम ठाम, भूठे धन और दाम ।
साँचा राधास्वामी नाम, उससे लव लगाइये ॥राधास्वामी

[१६-३४८]

नाम सुभिर नाम सुभिर, गुरु पर बलि जाना ॥टेका॥
भूठ जगत छोड़ भाग, सत पद से रहा लाग ।
जागा आज सोया भाग, हित चित हरषाना ॥ नाम
मैं तो सब बिधि मलीन, भक्ति भाव से विहीन ।
देखा सतगुरु ने दीन, नाम दिया दाना ॥ नाम
चला प्रेम प्रीत चाल, मन बानी बहे दोऊ बेहाल ।
सतगुरु ने किया निहाल, उपजा सत ज्ञाना ॥ नाम
उमंग बढ़ी भक्ति धार, जाका नहीं वार पार ।
त्याग दिया जग असार, छूटा आना जाना ॥ नाम



नाम का महातम जान, अरपा तन मन प्रान ।
राधास्वामी लगा ध्यान, पाया निरवाना ॥ नाम

[१७-३४६]

चेतो मेरे बन्धु मीत, अवसर शुभ पायो ॥ टेका ॥
इस जग से होत हान, तजो काम क्रोध मान ।
लागे नित गुरु का ध्यान, मन को ठैरायो ॥ चेतो
दिन में जग का व्यवहार, रात सोया तन को हार ।
दोनों खोया गँवार, चित न चेत आयो ॥ चेतो
बाल पना खोया खेल, तरुणाई तिरिया से मेल ।
बूढ़ेपन कष्ट भेल, सतगुरु बिसरायो ॥ चेतो
दो दिन की लोक लाज, दो दिन का जग का काज ।
दो दिन का सुख समाज, नित ना रहायो ॥ चेतो
कुल कुटुम्ब भूठे मीत, उनको क्यों देते चीत ।
ले प्रसाद गुरु का सीत, बन्धन कटवायो ॥ चेतो
राधास्वामी चरन शरन, नाम का हो श्रवण मनन ।
सुभिरन और ध्यान भजन, कर अब लव लायो ॥ चेतो

[१८-३५०]

नाम सुभिर नाम सुभिर, नाम सुभिर भाई ॥ टेका ॥
भूठा सब जगत काज, भूठे हैं लोक लाज ।
भूठों का जुड़ा समाज, भूठा बंधु भाई ॥ नाम
नाम ही हैं साँचा काम, साँचा है गुरु का नाम ।
नाम ही जप आठों याम, नाम से भलाई ॥ नाम
चहुँ दिस लागी है आग, भागत बने उठ भाग ।
मोह नींद से तू जाग, ले सतगुरु शरनाई ॥ नाम
राधास्वामी कमल चरन, हित चित से धार शरन ।
मन में लगी सच्ची लगन, गुरु ही सुखदाई ॥ नाम



[१६-३८१]

मन में गुरु रूप बसा और सब भुलाया ॥ टेका ॥
 सतसंग बैठ बैठ, सार वस्तु पाया ।
 गुरु सम नहीं देव कोई, ऋषि मुनि मिल गाया ।
 गुरु मिले काम बना, भव भय बिसराया ॥ मन में
 उलट नाम सुरत साध, सुमिरन दिलवाया ।
 घट के पट को खोल दिया, दर्शन करवाया ॥ मन में
 सहस्र कमल ज्योतिं प्रगट, घंटा बज वाया ।
 ओम शब्द गुरु का मंत्र, त्रिकुटी जप पाया ॥ मन में
 राधास्वामी दीनबन्धु, अंग से लगाया ।
 अब तो भया मन निश्चित, पाये चरन छाया ॥ मन में

बिनती

[३८२]

गुरु मध्य आदि अनंत अद्भुत, अमल अगम अगोचरम् ।
 विश्व विरजपार अपार निर्गुन, सगुन सत्य विश्वेश्वरम् ॥
 जेहि मति लखे नहीं गति लखे, यह शुद्ध तत्त्व विचार है ।
 जो चरन कमल की ओट आया, भव से बेड़ा पार है ॥
 गुरु विष्णु मूरत शिव की सूरत, गुरु को ब्रह्मा जान तू ।
 गुरु ब्रह्म है परब्रह्म हैं, यह सोच समझ के मान तू ॥
 कर गुरु की संगत रात दिन, नर जनम अपना सुधार ले ।
 दे फेंक माया बोझ सिरसे, यम का सीस न भार ले ॥
 सीस दे तन मन को दे, गुरु भक्ति रतन अमोल ले ।
 राधास्वामी भेद बताया तुम को, हिये तराजू तोल ले ॥





स्तुति

नाम दान प्रदान कीजे, गुरु दीन दयाल ।
 चरन का नित ध्यान सुभिरन, चित न व्यापे काल ॥
 सर्व समर्थ सर्व अंग संग, सर्व जगत आधार ।
 शुद्ध मन से पद कमल को, करूँ निस दिन प्यार ॥
 सिंधु भव अति अगम दुस्तर, सूझे वार न पार ।
 विकल मन रहे सोच छिन छिन, कैसे जाऊँ किनार ॥
 दया कीजे मेहर कीजे, लीजे चरन लगाय ।
 भक्ति दीजे तार लीजे, कीजे मेरी सहाय ॥
 शब्द में रत रहूँ पल पल; सुरत पावे चैन ।
 राधास्वामी दया सागर, भजूँ मैं दिन रैन ॥

पांचवी धुन

[१-३५४]

धोबिया प्रगटा जग में सजनी, लीजो चूनर धुलाय ॥टेका॥
 जनम जनम की मैली चुनरिया, देखत जिया धवराय ॥धोबिया
 काम क्रोध कीचड़ लपटानी, दुरगंध बास बसाय ॥धोबिया
 धोबिया आया चतुर सियाना, अवघट घाट सजाय ॥धोबिया
 कर्म की भट्टी तप की अग्नी, ज्ञान का साबुन लाय ॥धोबिया
 सतसंग शिला पै मल मल धोवे, चूनर मैल भराय ॥धोबिया
 फटे न बिगड़े सूत न बिखरे, सहज ही साफ कराय ॥धोबिया
 राधास्वामी धोबिया न्यारा, शब्द का रंग दिलाय ॥धोबिया





[२-३५५]

घट में परगट अनहद धुन की, अब तो नई निराली तान ॥ टेका ॥
 बिना बोल के राग अनोखा, मीठा मधुर महान ॥ घट में
 तार न टूटे सुर नहीं बिगड़े, ताल सुहेल सुहान ॥ घट में
 चंचल मन भया सहज में निश्चल, सुन, सुरत के कान ॥ घट में
 नर देही को सुफल कराया, छूट गया मद मान ॥ घट में
 जब से सुनी अनाहत की गत, आप भया कल्याण ॥ घट में
 सुरत शब्द का सुगम है साधन, करे तो पावे जान ॥ घट में
 राधास्वामी भेद बतावें, शब्द सुरत का गान ॥ घट में

[३-३५६]

आई वर्षा की ऋतु सजनी, करले मचल मचल स्नान ॥ टेका ॥
 गगन बूंद की झड़ियां लागीं, रिमझिम रिमझिम आन ॥ आई
 चमके बिजली गरजे अकासा, छाई घटा महान ॥ आई
 बिन जल निर्मल बदरा बरसे, परखे साधु सुजान ॥ आई
 नहीं मीठा नहीं खारा पानी, अमृत रस की खान ॥ आई
 सुरत शब्द की वर्षा न्यारी, घट परगट दरसान ॥ आई
 न्हाय धोय तन मैल छुड़ाले, करल शान्त जिव ग्रान ॥ आई
 राधास्वामी गावें हित से, राग मल्हार की तान ॥ आई

[४-३५७]

मेरा मनुआ भया रंगीला, गुरु का रंग हिये में धार ॥ टेका ॥
 त्याग रंग मोह मद का सब, परचित प्रेम पियार ॥ मेरा
 लाली लाली आँखियां भई मतवाली, सूझा सार असार ॥ मेरा
 दुर्मति भागी चिंता त्यागी, लगा लगन का तार ॥ मेरा
 मस्ती आई रंग जमाई, छोड़ा नव का द्वार ॥ मेरा
 दसवे दर का पाट खुलाया, निरखी विमल बहार ॥ मेरा
 सुन्न में सहज समाधि रचाई, मन की ममता मार ॥ मेरा
 राधास्वामी खेल खिलाया, छूट गया संसार ॥ मेरा



[५-३५८]

आया सावन का महीना, भूलें सखियां मिल जुल आय ॥टेका॥
 गगन मंडल में पड़ा हिंडोला, अधर ध्वजा फराय ॥ आया
 सूर्य चांद के गढ़े खम्भ दो, शब्द की डोर बंधाय ॥ आया
 सुरत निरत की चतुर सहेली, प्रेम के पैंग बढ़ाय ॥ आया
 गावे गीत सुहानी धुन के, हिया जिया चित उमगाय ॥ आया
 तन मन की सब सुध बुध बिसरी, अंतर वृत्ति जमाय ॥ आया
 रिमझिम रिमझिम रिमझिम बदरा, बरस बरस बरसाय ॥ आया
 बिजली चमके जोत प्रकाशे, दादुर शोर मचाय ॥ आया
 भीजरही तन मन की चुनरिया, भक्ति बूंद रस पाय ॥ आया
 राधास्वामी भुलावन आये, शब्द का योग बताय ॥ आया

[६-३५९]

सजनी चलो बाग में पी के, आई सावन की बहार ॥टेका॥
 हरी भरी ब्यारी लगे सुहावन, फूले फूल अपार ॥ सजनी
 कहीं जूही कहीं बेला चम्पा, कहीं केतकी अनार ॥ सजनी
 कमल खिलें भँवरा मँडलाने, बिगसे हार सिंगार ॥ सजनी
 पिया के गले प्रेम से डालो, गूथ-गूथ के फूल के हार ॥ सजनी
 बरसे मेह अखंडित धारा, चहुँ दिस बहे बयार ॥ सजनी
 काली काली घटा गगन में छाई, स्रभे बार न पार ॥ सजनी
 रह रहकर नभ चमके बिजली, भीनी भीनी बरसे फुहार ॥ सजनी
 उमड़ उमड़कर सब बह निकले, सागर नद नदी नार ॥ सजनी
 बिरह तपन की आग बुझाओ, कर पी का दीदार ॥ सजनी
 भाग जगे अवसर शुभ पाया, यह नहिं बारम्बार ॥ सजनी
 घुमर घुमर राधास्वामी परिकरमा, गाओ राग मलार ॥ सजनी





[७-३६०]

कांटा लगा विरह का हिय में, मेरा सिसक सिसक दम जाय ॥टेक
जल बिन मछली चैन न पावे, तड़पे और अकुलाय ॥कांटा
स्वांति बूंद बिन पपीहा तरसे, पी पी रटन लगाय ॥कांटा
कमल की चाह में रसिया भँवरा, घुमर घुमर मंडलाय ॥कांटा
तैसी दशा है मेरी सजनी, मैं क्या करूँ उपाय ॥कांटा
पिया बिन हिया जिया मेरा तड़पे, छिनभर चैन न पाय ॥कांटा
विरह अग्नि की ज्वाला भड़की, तन मन सब सुलगाय ॥कांटा
पिया मिले तो पीर मिटे यह, प्रेम की औषधि लाय ॥कांटा
जगत अंधेरा दृष्टि में मेरे, पिया बिन कोई न सुहाय ॥कांटा
राधास्वामी मेहर करें जब, तब बिगड़ी बन जाय ॥कांटा

[८-३६१]

मैं हूँ गुरु का भोला बालक, निस दिन खेलूँ प्रेम का खेल ॥टेक॥
बायें हाथ परतीत की गोली, दायें प्रीति गुलेल ।
धांय धांय मद मोह को मारूँ, काल का नहीं दबेल ॥ मैं हूँ
माया की रनभूमि पैठि कर, रन से करूँ कुलेल ।
बांका राजपूत बन नाचूँ, बैरी दल को ठेल ॥ मैं हूँ
राधास्वामी सतगुरु पाया, सीस चरन में मेल ।
मेरा काज हुआ अब पूरा, जग दुख आपत भेल ॥ मैं हूँ

[९-३६२]

मैं तो चला गुरु के पन्थ, प्रेम परतीत से धरकर पांव ॥टेक॥
परवत कठिन विकट मैदाना, नहीं कहीं शरन न छांव ।
घाटी अटपट टेढ़ा मारग, केहि बिधि मारग जांव ॥ मैं तो
काम सिंह को बन में मारा, दिया न क्रोध को ठांव ।
भक्ति युक्ति का शस्त्र निराला, महिमा कैसे गांव ॥ मैं तो



प्रेम दात सतगुरु ने बख्शा, निज बल का निज दाँव ।
दुर्गम दास ने घाटी तोड़ी, ले ले राधास्वामी नाँव ॥ मैं तो

[१०-३६३]

जिसके मन नहीं चिंता व्यापे, जग में वही है दास फकीर ॥ टेका ॥
अभय रहे चित्त गुरु पद राखे, धीर वीर गम्भीर ।
शांत भाव व्यवहार परमारथ, कभी न हो दिलगीर ॥ जिसके
अपनी पीर न उर में साले, लखे पराई पीर ।
पर की पीर न जिसे सतावे, सो अधरम बे पीर ॥ जिसके
अपना रूप सँभाले पल पल, काट मोह जंजीर ।
यह फकीर है गुरु को प्यारा, महावीर चित्त धीर ॥ जिसके
चाह गई चिंता सब भागी, आया भव निधि तीर ।
हंस रूप धर त्याग नीर को, गह लिया ज्ञान का चीर ॥ जिसके
राधास्वामी गुरु का सच्चा बालक, पहर विराग का चीर ।
तन के रहते मुक्ति विदेही, सहे न द्वन्द शरीर ॥ जिसके

[११-३६४]

मैं हूँ भोला भाला बालक, गुरु की गोद रहूँ दिन रात ॥ टेका ॥
चिंता जग की मुझे न व्यापे, हरष हरष हरषात ।
बोझ उतारा काल का सिरसे, मन्द मन्द मुस्कात ॥ मैं हूँ
बाहर भीतर लख गुरु मूरत, चित्त में रूप बसात ।
गुरु गम निरख परख कर हरखों, दुख मन में नहीं आत ॥ मैं हूँ
गुरु मेरे भाई सगे सगाई, गुरु मेरे पितु मात ।
गुरु सम्बन्धी मीत पियारे, गुरु का सिर पर हाथ ॥ मैं हूँ
यक रस जीवन समय बिताऊँ, क्या जाड़ा बरसात ।
गुरु की शरन मिली अति कृपा, गुरु ही जात और पाँत ॥ मैं हूँ
राधास्वामी गुरु ने अंग लगाया, दिया प्रेम की दात ।
अब तो सुफल भई नर देही, काल करे नहिं घात ॥ मैं हूँ



[१२-३६५]

आया देखन जग का मेला, धर गुरु चरनन में परतीत ॥टेका॥
 रमा उमा गायत्री सारद, नाचें गा गा गीत ।
 काल चक्र का पड़ा हिंडोला, दृश्य महा रमनीत ॥ आया
 पुरुष प्रकृति ने सभा रचाई, खेलें हार और जीत ।
 करम हाथ से पाँसे डारे, अनूकूल विपरीत ॥ आया
 सुरत गोट चौरासी घर में, दौड़ दौड़ भय भीत ।
 कभी पक्की कभी कच्ची बन बन, पिटें खेल की रीत ॥ आया
 गुरु के संग मिल नाता जोड़ा, खा खा भक्ति का सीत ।
 मार धाड़ से बचकर निकला, होगया सहज अतीत ॥ आया
 सहज सहज में बन्धन काटे, सीख शब्द की रीत ।
 राधास्वामी दया से काज बनाया, दे चरनन में चीत ॥ आया

[१३-३६६]

शम दम साधन करले प्यारी, अवसर अच्छा पाया आज ॥टेका॥
 चित को रोक रोक मन इन्द्री, सहज प्रेम दल साज ।
 भक्ति युक्ति आनन्द विलासा, अन्तर जुड़े समाज ॥ शम दम
 सुरत शब्द का साधन सीधा, कर मन मुकुर को माँज ।
 ऊँचे चढ़ निज रूप परखले, द्वन्द पसार से भाज ॥ शम दम
 सहस कमलदल त्रिकुटी आजा, सुन्न में रारंग गाज ।
 भँवर सोहंगम बजाले बंसी, सत पद का ले राज ॥ शम दम
 राधास्वामी भेद बतावें, सन्तों के महाराज ।
 चरन कमल की छाँह में आजा, करले अपना काज ॥ शम दम

[१४-३६७]

आया तन की अयोध्या नगरी, करले तू अब अपना काज ॥टेका॥
 दशरथ दस इन्द्री का कुल है, इन्द्री विषय तज भाज ।
 बन में जप तप योग का संयम, प्रेम का जोड़ समाज ॥ आया



सत तम रज वानर रिछ निश्चर, मंगल दल नित साज ।
लंका गढ़ माया बिस्तारा, आग लगा दे आज ॥ आया
सीता सती सत्य की वृत्ती, लेकर अवध का राज ।
राधास्वामी भेद बतावें, सन्तों के सिरताज ॥ आया

[१५-३६८]

उत्तम पुरुष वही है जग में, चले जो प्रेम प्रीत की राह ॥ टेका ॥
आसा तृष्णा मोह माया तज, चित न उठावे चाह ।
काम क्रोध मद दूर निकाले, चिंता भव की दाह ॥ उत्तम
सुरत शब्द का साधन सीखे, मन में द्वेष न डाह ।
घट में अन्तर धिरती जमावे, भक्ति का परन निबाह ॥ उत्तम
राधास्वामी राधास्वामी मुख से भाखे, अपना भाग सराह ।
लगन लगे दुख आपत नासे, ले गुरु चरन पनाह ॥ उत्तम

[१६-३६९]

मनसा होगी तेरी पूरी, मन से करले गुरु का ध्यान ॥ टेका ॥
मूल नाम गुरु नाम है, मूल रूप गुरु रूप ।
मूल भजन गुरु शब्द का, गुरु निर्वाण के भूप ॥
गुरु की प्रीत हिये में धार, मिलेगा तब सच्चा गुरुज्ञान ॥ मनसा
तीरथ में है पत्थर पानी, व्रत में कठिन कलेश ।
वाद बिवाद से मन हो चंचल, तत्व गुरु उपदेश ॥
करे जो गुरु की संगत प्रानी, वह फिर पड़े न भव की खान ॥ मनसा
गुरु विष्णु गुरु शिव की मूरत, गुरुको ब्रह्मा जान ।
गुरु ब्रह्म गुरु परब्रह्म है, अपनी बुद्धि पिछान ॥
गुरु की भक्ति सब का सार है, और सब भरम अज्ञान ॥ मनसा
भटक भटक कर भटका जग में, भट का बारम्बार ।
जाके मन में अटक समाना, जाय न भव के पार ॥
तू सोच समझ चित धार, बात यह सांची मन से मान ॥ मनसा



राधास्वामी सतगुरु पूरे, धरा सन्त अवतार ।
 सुरत शब्द मत योग बताया, सार सार का सार ॥
 दिन गुरु भक्ति ज्ञान नहीं पावे, सब संतन ने किया बखान ॥ मनसा
 [१७-३७०]

सब आये आप ही आप हाथ में, पकड़ लिया जब मूल ॥ टेका ।
 पात पात को सींचते, पेड़ को दिया सुखाय ।
 जो कोई सींचे मूल को, आप पेड़ हरियाय ॥
 ले मूल सीख यह मन्त्र, न यह उपदेश गुरु का भूल ॥ सब
 पात पात का निरखना, अज्ञानी व्यवहार ।
 ज्ञानी परखे मूल को, फल पावे तत सार ॥
 सोच यह मन में अपने जल्दी, मिटे द्वन्द का मूल ॥ सब
 गुरु के नाम को सुमिरकर, नाम और विसराय ।
 गुरु रूप का ध्यान कर, मोह भ्रम नस जाय ॥
 भजन कर शब्द योग चितलाय, सहे नहीं फिर यम का त्रिमूल ॥ सब
 एकहि साधे सब सधे, सब साधे सब जाय ।
 एक से सब कुछ होत है, एक से प्रेम लगाय ॥
 ले पहर भक्ति का चीर, फेंककर सब माया के भूल ॥ सब
 राधास्वामी नाम ले, राधास्वामी गाय ।
 राधास्वामी सुमिर मन, हिये गुरु रूप बसाय ॥
 लगा घट बाग में आम का पेड़, न वो तू कीकर और बबूल ॥ सब
 [१८-३७१]

बंसी धुन सुन राधा प्यारी, चल चल राधास्वामी स्थान ॥ टेका ॥
 भँवर गुफा में बजी बांसुरी, सोहंगम सुर तान ।
 मन से दूर निकार विकार, मोह मया मद मान ॥ बंसी
 तेरा भाग जगा गुरु किरपा, भया जनम कल्याण ।
 नर देही अब सुफल भई है, मिट गई विपत महान ॥ बंसी



सुमिरन भजन से ध्यान रहे नित, धर सतगुरु का ध्यान ।
 ऊँचे चढ़ तज पृथ्वी मंडल, मिल गया शब्द धिमान ॥ बंसी
 यह जग समझ रैन का सपना, छिन भर थिर न रहान ।
 सांस सांस जप नाम गुरु का, भक्ति भाव हिये आन ॥ बंसी
 राधास्वामी समरथ दाता, दिया नाम का दान ।
 नाम रतन धन प्रगटा घट में, धन दौलत की खान ॥ बंसी

[१६-३७२]

चिंता चित से तज दे सारी, सतगुरु करेंगे तेरी सहाय ॥टेका॥
 सुमिरन भजन ध्यान चित देना, जग में सुयश कीरती लेना ।
 भक्ति महातम प्रभाव को चीन्हा, सुख आनन्द घट पाय ॥चिंता
 क्यों दुख पाता क्यों घबराता, सतगुरु तेरे हैं पितु माता ।
 जो कोई चरन शरन में जाता, उसे वह लेंगे बचाय ॥चिंता
 राधास्वामी साँच हैं रखवारे, रह तू उनके चरन सहारे ।
 सुन यह सांची बात को प्यारे, अपना मन समझाय ॥चिंता

[२०-३७३]

मन मतंग बलवान है तेरा, जुगती जतन से उसको जीत ॥टेका॥
 मन चंचल है मन है भोगी, मन ही बना है रोगी सोगी ।
 अब इस मन को बनाले जोगी, धार ले सुरत शब्द की रीत ॥मन
 जो चंचल है वही है निश्चल, मेंटदे उसकी अब तू हलचल ।
 संशोधन कर पंथ में चल चल, सीखले भक्ति प्रेम प्रतीत ॥मन
 मन की निंदा कभी न करना, सरपर कष्ट का भार न धरना ।
 कमलपत्र सम भवनिधि तरना, गुरु के नाम का गाना गीत ॥मन
 सतसंगत जब आया प्राणी, अब नहीं उसकी होगी हानी ।
 नित सुन चित से गुरु की बानी, खाकर जिये प्रसादी सीत ॥मन
 राधास्वामी गुरु ने विधि बताई, इस विधि से कर अपनी भलाई ।
 अब तो तेरी सहज बन आई, कर उनके चरण में प्रीत ॥मन



[२१-३७४]

सब हैं जाने वाले जग में, रहने वाला कोई नहीं ॥टेका॥
 रामचन्द्र अवधेश भुवाला, दीनानाथ दीन प्रतिपाला ।
 गये त्यागकर धर्म रटाला, रमने वाला कोई नहीं ॥सब
 रावण गया बुद्धि बल शीला, साहस उद्यम में फुरतीला ।
 छैल छबीला रंग रंगीला, थमने वाला कोई नहीं ॥सब
 सोलह कला कृष्ण औतारा, जिनकी गति का वार न पारा ।
 गये सहित कुल और परिवारा, रुकने वाला कोई नहीं ॥सब
 परसराम क्रोधी अभिमानी, तेजस्वी बल बुद्धि की खानी ।
 ऐसे गये न नाम निशानी, टिकने वाला कोई नहीं ॥सब
 मच्छ कच्छ बाराह पसारा, भिट गये जाने सब संसारा ।
 गये छोड़ माया विस्तारा, बसने वाला कोई नहीं ॥सब
 बावन बलि सहस्राबाहू, नर भूषण नरेश नर नाहू ।
 सह-सह गये ताप त्रय दाहू, बचने वाला कोई नहीं ॥सब
 विश्वामित्र अगस्त वशिष्ठा, गौतम न्याय शास्त्र का सृष्ठा ।
 कपिल तत्व के दृष्टि का दृष्टा, गुनने वाला कोई नहीं ॥सब
 दुरयोधन दिल्ली का राजा, जिसने भारत दल को साजा ।
 चला त्यागकर सकल समाजा, सुनने वाला कोई नहीं ॥सब
 राधास्वामी संत शिरोमणि आये, दे चितावनी जीव चिताये ।
 सुरत शब्द मत पन्थ चलाये, चलने वाला कोई नहीं ॥सब

[२२-३७५]

जब तू हुआ गुरु का सेवक, गुरु को हरदम तेरा ध्यान ॥टेका॥
 जो कोई आया शरन गुरु के, गुरु उसके रखवारे ।
 उसको करना धरना क्या है, रहे गुरु के सहारे ॥
 सतगुरु दाता आप करेंगे उसका, सोच समझ कल्याण ॥ जब तू



प्रेम प्रीति परतीत सहज है, क्या जाने संसारी ।
 यह तो जाने कोई गुरुमुख, गुरु का आज्ञाकारी ॥
 सतगुरु बरुशेंगे निज किरपा से, उसे भक्ति युक्ति का दान ॥ जब तू
 जो गुरु के हैं गुरु उनके हैं, गुरु को दास पियारा ।
 गुरु सेवक के आंख के तारे, सेवक गुरु का दुलारा ॥
 कैसे होगा कभी जगत में, गुरु के सेवक को कुछ हान ॥ जब तू
 दास दुखी तो गुरु दुखी है, वह सुखिया गुरु सुखिया ।
 दास की चिंता गुरु को रहती, वह सब में है सुखिया ॥
 सेवक बनेगा एक दिन भक्त शिरोमणि, ज्ञानी चतुर मुजान ॥ जब तू
 यह कहता हूँ सच्ची बानी, गुरु को प्यारा दास ।
 ऋद्धि सिद्धि नौनिधि गुरु देंगे, मुक्ति न छांड़े पास ॥
 राधास्वामी सिंधु रूप, और सेवक बुन्द समान ॥ जब तू

[२३-३७६]

मारग चलो मुसाफिर सोच समझकर, बैठे होय अकाज ॥ टेका ॥
 जो चलते हैं गिरते पड़ते, पहुँचेंगे निज धाम ।
 जो बैठे हैं सुस्त अपाहिज, सो समझो बेकाम ॥
 उनसे कुल सृष्टि करती है, सदा शरम और लाज ॥ मारग
 लड़का गिरा उठा फिर संभला, संभल भया बलवान ।
 अब तो आई देह में शक्ति, सहज में हुआ जवान ॥
 तू भी आलस छोड़ किया कर, निसदिन अपने जन्म का काज ॥ मारग
 हाथ पै हाथ धर क्यों बैठा, पन्थ में आजा भाई ।
 पंथाई हो सत के मारग चल, ले गुरु की शरनाई ॥
 हो जावेगा निस्संदेह, राजा परजा का सिरताज ॥ मारग
 करम सहज है करम कठिन है, समझ समझ की बात ।
 जो समझे सो काम बनावे, अनसमझा पछतात ॥
 करम करो हित चित से अपना, करम साज दल साज ॥ मारग



कथनी बदनी छोड़ के प्यारे, करनी से लव लाओ ।
 करनी से रहनी पावेगा, यह है ठीक उपावो ॥
 संदेसा दिया जानकर तुझको, सतगुरु राधास्वामी महाराज ॥ मारग
 [२४-३७७]

भूला भूलूँ गगन में चढ़ कर, आई बरखा की बहार ॥ टेका ।
 भव के मध्य में पड़ा हिंडोला, ज्योत के पवन से ले भकभोला
 भक्ति पेंग से खाये भकोला, भूली भूल अपार ॥ भूला
 रिमझिम रिमझिम बदरा बरसे, नन्हीं फुहार गिरे ऊपर से ।
 पिया के दरस को जिया मेरा तरसे, रहूँ नित मन को मार ॥ भूला
 बिजली चमके गरजे अकाशा, चित उपजावे नई नई आशा ।
 चरन कमल में अब मिले वासा, तन मन चित बुद्धिवार ॥ भूला
 नभ में पिया मैं पृथ्वी वासी, इस चिंता से सदा उदासी ।
 कब देखूँ प्रीतम सुखरासी, बिरह बिपत सब टार ॥ भूला
 उड़ चल मेरा शब्द हिंडोला, होजा होजा उड़न कठोला ।
 उड़ उड़ जैसे उड़े ममोला, चल पिया के दरबार ॥ भूला
 लाली लाली दशा दृष्टि में आवे, देख देख हिया जिया रस पावे ।
 दुर्मति दुर्गति ममता जावे, पाऊँ पद ओंकार ॥ भूला
 राधास्वामी राधास्वामी रा० स्वा० गाऊँ, रा० स्वा० रा० स्वा० ध्याऊँ ।
 राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी पाऊँ, सुन सुन राग मल्हार ॥ भूला

बन्दनम्

चरन शरन की बन्दना, नित कोई और न काम ।
 गुरु बसो चित आये मेरे, बख्श दो निज नाम ॥
 तेरी शरनागत हुआ फिर, किसकी राखूँ आस ।
 आसा तो तेरी दया की, जग से रहूँ उदास ॥



रूप ध्याऊँ, नाम गाऊँ, शब्द राता मन ।
 आठों याम तेरा ही सुमिरन, भाम मेरा धन ॥
 सीस पर निज कर कमल धर, लिया चरन लगाय ।
 पतित पापी तर गया, गुरु शरन तेरी आय ॥
 मुक्ति की नहीं चाह मन में, भक्ति प्यारी लाग ।
 राधास्वामी की दया से, भाम पूरन जाग ॥

प्रार्थना

नमो सद्गुरुम्, सच्चिदानन्द रूपम् ।
 नमो अद्भुतम्, अद्वितीयम् अनूपम् ॥
 नहीं रूप कोई हैं, सब रूप तेरे ।
 तेरे सब ही परजा हैं, और भूय तेरे ॥
 धरा सन्त अवतार, जग को चित्ताया ।
 दुखी दीन को अंग, अपने लगाया ॥
 दिया संग सत का, मिला सत का जीवन ।
 तेरे नाम पर सीस, तन मन है अर्पन ॥
 झुके राधास्वामी, चरन हँसते हँसते ।
 तुझे कहते हैं सब, नमस्ते नमस्ते ॥

बटवी धुन

[१-३८०]

अगनी दो पहिचान, तुम मेरे सद्गुरु दाता । टेका ।
 सत हो या आनन्द की मूरत, या हो तत्त्व के ज्ञान तुम । मेरे
 कोई कहे गुन सगुन हो निर्गुन, कोई रचना की जान तुम । मेरे
 निराकार साकार अकारा, इनके नाम निशान तुम । मेरे



शब्द अशब्द सुरत भंडारा, या इनसे अलगान तुम ॥ मेरे
कौन हो क्या हो क्या कोई जाने, अपनी करो बखान तुम ॥ मेरे
जगदाधारी जगत से न्यारे, निराधार निर्वान तुम ॥ मेरे
निगम अगम भूले चतुराई, 'नेति' 'एति' की खान तुम ॥ मेरे
साखी शब्द कहत सकुचाऊँ, ज्ञान अनुमान प्रमान तुम ॥ मेरे
राधास्वामी अपना भेद बताओ, मेरी ओर दो कान तुम ॥ मेरे

[२-३८१]

राजों के महाराज, तुम मेरे सतगुरु स्वामी ॥टेक॥
हित अनहित सब के हितकारी, प्रगटे जन के काज तुम ॥मेरे
परमारथ के कारन आये, साज के संत समाज तुम ॥मेरे
दुखियों का मेढो दुख दारुन, रखलो उनकी लाज तुम ॥मेरे
ज्ञानी ध्यानी ऋषि मुनि देवा, सबके हो सिरताज तुम ॥मेरे
राधास्वामी परमदयाला, चरन शरन दो आज तुम ॥मेरे

[३-३८२]

सतसंग वचन सुनाइये, मेरे सतगुरु प्यारे ॥टेक॥
बिन सतसंग त्रिवेक न आये, सच्चा पंथ लखाइये ॥ मेरे
देखा देखी भेड़ चाल है, सार तत्व समझाइये ॥ मेरे
तीरथ आपसे चरण में रहता, मोहि असनान कराइये ॥ मेरे
गुरु के रूप में साहब बसता, अपना दरस दिखाइये ॥ मेरे
मैं भुजंग तुम चंदन के तुल, अपने अंग लगाइये ॥ मेरे
कोटि ग्रन्थ पढ़ पढ़ क्यों मरना, निज उपदेश चेताइये ॥ मेरे
मैं कमुदिन तुम चन्द्र समाना, अमृत धार चुवाइये ॥ मेरे
तुम नौका मैं लोह कठिन हूँ, भवनिधि सहज तराइये ॥ मेरे
राधास्वामी अपनी दया से, भ्रम बिकार नसाइये ॥ मेरे

[४-३८३]

अमृतधार बहाइये, सतगुरु जग तारन ॥टेक॥
हम सब काल कर्म के मारे, दया से अब तो जिलाइये ॥सत०



कर्म न ज्ञान न भक्ति न सेवा, कोई उपाय बताइये ॥ सत
काठ की नाव में लोहा भारी, कैसे ही उसको तिराइये ॥ सत
चरण शरण की प्यास है भड़की, अमृत बूंद पिलाइये ॥ सत
तृष्णा अग्नी दहे शरीरा, दर्शन देके बुझाइये ॥ सत
नाम दान दे अपना कीजे, अब कुछ देर न लाइये ॥ सत
मैं हूँ पतित तुम पतित उधारन, हाथ पकड़ के उठाइये ॥ सत
ब्राह्म ब्राह्म शरणागत आया, निज पद छाँह दिलाइये ॥ सत
राधास्वामी सतगुरु पूरे, सत की राह लगाइये ॥ सत

[५-३८४]

चरन ओट सहवास हो, सतगुरु करतारा ॥ टेका ॥
मैं निरास नहीं कोई सहाई, आपकी मेहर की आस हो ॥ सतगुरु
मन के अटपट उमर गँवाई, अब तो कुछ अवकास हो ॥ सतगुरु
घट से तिमिर अधिद्या भागे, ज्ञान सूर परकास हो ॥ सतगुरु
श्रद्धा प्रेम भक्ति चित बाढ़े, दुरमति कुमति का नास हो ॥ सतगुरु
राधास्वामी मौज दिखाओ न्यारी, आनन्द हर्ष हुलास हो ॥ सतगुरु

[६-३८५]

आया गुरु दरबार मैं, मेरे सतगुरु साईं ॥ टेका ॥
बल पौरुष से हीन भया हूँ, बुद्धी का लाचार मैं ॥ मेरे
ज्ञान भक्ति नहीं कुछ बन आवे, कर्म का निपट गँवार मैं ॥ मेरे
परमार्थ स्वारथ दोऊ खोये, भर्म रहा संसार मैं ॥ मेरे
कैसी करूँ उपाय न सूझे, दान धर्म व्यवहार मैं ॥ मेरे
कायर सम सबको तज डारा, कुल कुटुम्ब परिवार मैं ॥ मेरे
घर नहीं चैन न बन में शान्ति, घूमा बस्ती उजार मैं ॥ मेरे
राधास्वामी धाम की ओर दृष्टि गई, आप पड़ा गुरु द्वार मैं ॥ मेरे



[७-३८६]

अपना दो निज ज्ञान, तुम गुरु अंतर्दामी ॥टेक॥

जड़ चेतन चेतन जड़ ग्रन्थी, या इनसे बिलगान तुम ॥ गुरु
हिरण्यगर्भ के अव्यक्त हो, अथवा विराट महान तुम ॥ गुरु
सबल ब्रह्म के शुद्ध ब्रह्म तुम, कै प्रकृती प्रधान तुम ॥ गुरु
द्वन्द्व जगत में प्रगट हुये हो, क्या सृष्टी की जान तुम ॥ गुरु
गो गोचर नहीं मन के विषय नहीं, शब्द अनुमान प्रमान तुम ॥ गुरु
सब में व्यापक सब से न्यारे, क्या कूटस्थ निशान तुम ॥ गुरु
राधास्वामी कुछ भेद बतादो, ज्ञान विज्ञान सुज्ञान तुम ॥ गुरु

[८-३८७]

बरुशो प्रेम की दात तुम, प्रभू प्राण अधारे ॥टेक॥

नाम रूप तज शरण में आई, चरण ओट दो आज तुम ॥ प्रभू
मैं अबला बल शक्ति से खाली, हो पूरे बलराज तुम ॥ प्रभू
प्रीत प्रतीत पहिनाओ भूषण, अंग अंग दो साज तुम ॥ प्रभू
घूँघट तिल में देखूँ तुमको, हो सुरेन्द्र महाराज तुम ॥ प्रभू
आँख की पुतली पे आसन मारो, हृदय में रहो विराज तुम ॥ प्रभू
नहीं किसी की अब हूँ तुम्हारी, कर दो मेरा काज तुम ॥ प्रभू
राधास्वामी समर्थ रख लो अब की, लाजवती की लाज तुम ॥ प्रभू

[९-३८८]

साध जनम का काज तू, प्यारी सुरत सहेली ॥टेक॥

आज का काम जो काल पै छोड़ा, अपना करे अकाज तू ॥ सुरत
गया समय फिर हाथ न आवे, अवसर गहले आज तू ॥ सुरत
घट में घट घट ऊपर चढ़जा, ले त्रिकुटी का राज तू ॥ सुरत
झोड़ कुसंगत कर सतसंगत, जा सतगुरु के समाज तू ॥ सुरत
प्रेम प्रीत परतीत सहज है, मन मनसा को माँज तू ॥ सुरत



सत का नूर दृष्टि में आवे, हिये की आँख को आंज तू ॥सुरत
राधास्वामी चरण ओट दृढ़ करले, भक्त साज दल साज तू ॥सुरत

[१०-३८६]

सब विधि है अनजान हम, प्रभू सतगुरु स्वामी ॥टेका॥
समझ विवेक बुद्धि नहीं पाई, अपना रूप न जान हम ॥प्रभू
तुम तो मात पिता सम्बन्धी, बाल अकार समान हम ॥प्रभू
चंचल मूढ़ महा अज्ञानी, ग्रसित मोह मद मान हम ॥प्रभू
अब तो आन पड़े शरणागत, बने विवेकी सुजान हम ॥प्रभू
राधास्वामी प्रेम शक्ति दो, पायें भक्ति का दान हम ॥प्रभू

[११-३६०]

मानुष जनम सुधार तू, मेरी सुरत सुहागिन ॥टेका॥
पिया की शरण में जल्दी आजा, चित धर प्रेम पियार तू ॥मेरी
माँग भरा भक्ति सेंदूर से, माँग परम सिंगार तू ॥मेरी
क्षमा की चूनर दया की साड़ी, पहर के चल दरबार तू ॥मेरी
पिया के महल का सुख आनन्द ले, डाल जगत सिर छार तू ॥मेरी
राधास्वामी साँचे प्रीतम, चरन कमल हिये धार तू ॥मेरी

[१२-३६१]

भक्ति साज दल साजरी, मेरी सुरत पियारी ॥टेका॥
क्यों तू सोई माह नींद में, काल सीस पर गाजरी मेरी ॥ सुरत
जाग जाग उठ जाग अचेती, सोये होय अकाजरी मेरी ॥ सुरत
डाकू चोर लगे तेरे पीछे, उनसे बचकर भाजरी मेरी ॥ सुरत
सतगुरु आये तोहि चितावन, चेत के करले काजरी मेरी ॥ सुरत
राधास्वामी गुरु की ले शरनाई, अवसर पायो आजरी मेरी ॥ सुरत

[१३-३६२]

कर चित से सतसंग, अब मेरी सुरत सुभागी ॥टेका॥
मोह भरम के बंधन तजदे, ज्यों केंचुली भुजंग अब ॥मेरी



जग के रंग से भई कुरंगी, धार गुरु का रंग अब ॥मेरी
गहरा ध्यान जमे घट भीतर, कीट से होजा भृंग अब ॥मेरी
अन्तर जोत जगे तेरे जगमग, जल ज्यों दीप पतंग अब ॥मेरी
सुन सुन शब्द अनाहद की धुन, होजा बन की कुरंग अब ॥मेरी
मन समुद्र में उमड़े सजनी, प्रीत प्रतीत तरंग अब ॥मेरी
मान मनी के भूल निशे को, पी पी प्रेम की भंग अब ॥मेरी
माया काल के रन में पग दे, कर दोनों से जंग अब ॥मेरी
राधास्वामी दया से काज बनेगा, हो न कभी दिल तंग अब ॥मेरी

[१४-३६३]

सहजवृत्ती चितधार री, कुछ सोच सुरतिया ॥टेका॥
ज्यों तैराक रहे पानी पर, लम्बे हाथ पसार री कुछ ॥सोच
ज्यों बालक तिल तिल नित बाढ़े, अपना हृदय उभाररी कुछ ॥सोच
सहज योग का सहज है साधन, सहज का आसन माररी कुछ ॥सोच
सहज शब्द गूँजे घट भीतर, अनहद धुन भनकार री कुछ ॥सोच
सहज सहज में सहज सहज में, राधास्वामी नाम पुकार री कुछ ॥सोच

[१५-३६४]

अन मत चित नहीं ठानरी, गुरु मत अनुरागी ॥टेका॥
नारी पुत्र के बंध बंधाना, हृदय सतगुरु ज्ञान री ॥ गुरु मत
कहाँ से आया क्यों तू आया, करले कुछ अनुमान री ॥ गुरु मत
सुभिरन भजन में कौन बसे घट, किस का अन्तर ध्यान री ॥गुरु मत
बात बनाना छोड़ दे प्यारे, तज आपा अभिमान री ॥ गुरु मत
लगन लगी नहीं राधास्वामी से, समझ तू चतुर सुजानरी ॥गुरु मत

[१६-३६५]

मन की दुरगति टार री, मेरी सुरत अचेती ॥टेका॥
करता बन कर काम करे नित, लेती दुख सुख भार री मेरी ॥सुरत
स्वारथ बस परलोक नसाया, नहीं परमारथ प्यार री मेरी ॥सुरत
चोर राख मन धन लुटवावे, करे न गुरु रखवार री मेरी ॥सुरत



भजन भाव में रहे अलसानी, टारे जान बेगार री मेरी ॥सुरत
राधास्वामी गुरु का दरस ततकाला, घट के नैन उधार री मेरी ॥सुरत
[१७-३६६]

सुरत अचेती चेतरी, मेरी सुरत अचेती ॥टेक॥
काम किया स्वारथ का अब कर, कुछ परमारथ हेत री मेरी ॥सुरत
बन कर वीर जीत ले प्यारी, काल करम का खेत री मेरी ॥सुरत
संशय भर्म पड़े तेरे पीछे, उनकी गरदन रेत री मेरी ॥सुरत
मौज अधीन काम कर जगमें, भार सीस क्यों लेत री मेरी ॥सुरत
राधास्वामी सुभिर सुभिर राधास्वामी, गुरु सिखावन देत री मेरी॥”
[१८-३६७]

कहना मेरा मानरी, मेरी सुरत अचेती ॥टेक॥
निज स्वरूप जब से तू भूली, अपना किया अपमान री मेरी ॥सुरत
सत्त धाम की राजकुमारी, क्यों पड़ी योनि की खान री मेरी ॥सुरत
माया ने भर्माया तुझको, अटकी मया मद मान री मेरी ॥सुरत
शुभ अवसर मानुष तन पाया, अब तो ले गुरु ज्ञान री मेरी ॥सुरत
राधास्वामी सतगुरु दाता, देंगे भक्ति का दान री मेरी ॥सुरत
[१९-३६८]

सुरत अचेतरी जाग री, मेरी सुरत अचेती ॥टेक॥
जनम जनम सोबत तेरी बीता, मोह नींद तज भाग री मेरी ॥सुरत
रात गई है मिटा अन्धेरा, उठ गा जीवन राग री मेरी ॥सुरत
हृदय थाल लेकर सज आरत, ज्योती प्रेम अनुराग री मेरी ॥सुरत
राधास्वामी दया से जागे तेरा, सोया खोया भाग री मेरी ॥सुरत
[२०-३६९]

घट में दीवा बालरी, आज आई दिवाली ॥टेक॥
सुरत की सूत की पूरे बाती, प्रेम तेल हिये डालरी आज ॥आई
शब्द अग्नी की जोत जलावे, वायु विषय से संभालरी आज ॥आई



जगमग जोत प्रकाशे चहुँदिस, तिमिर अविद्या टाल री आज ॥आई
राधास्वामी घट की दिवाली मनावें,और सकल जंजाल री आज॥आई

[२१-४००]

गुरु धुर धाम को भाग री, मेरी प्यारी सुरतिया ॥टेका॥
जनम जनम भव निद्रा सोई, समझ चेत उठ जाग री मेरी ॥प्यारी
गुरु बल मोह की तोड़दे रसरी, जैसे कांचा ताग री मेरी ॥ ”
शब्द शिला पर धो मेरी सजनी, कलि मल के सब दाग री मेरी॥”
सुमिरन मंत्र से जीतले अबकी, काल करम के नाग री मेरी ॥ ”
राधास्वामी चरन धार सिर ऊपर,भक्ति प्रेम वर मांग री मेरी ॥ ”

[२२-४०१]

नहीं तेरा है देश यह, मेरी प्यारी सजनी ॥टेका॥
सत पद तेरा निज अस्थाना, आन पड़ी परदेश यह मेरी ॥प्यारी
कठिन कर्म के काट दे बन्धन, धार सहज उपदेश यह मेरी ॥ ”
इन्द्री मन नहीं रूप हैं तेरे, सब माया के भेस यह मेरी ॥ ”
घट में शब्द धार जो प्रगटी, सोई सत्त संदेश यह मेरी ॥ ”
राधास्वामी सहजयोग बिधि गाई,नहीं कठिन लवलेश यह मेरी ॥”

[२३-४०२]

भूल भ्रम सब त्याग री, मेरी प्यारी सहेली ॥टेका॥
इसका विष चढ़कर नहीं उतरे, जग है काला नाग री मेरी ॥प्यारी
शब्द डोर गह घट में चढ़ चल, जागे भाग सुभाग री मेरी ॥ ”
त्रिकुटी में लख गुरु की मूरत, चरन कमल में लाग री मेरी ॥ ”
सुन्न में सहज समाध रचाले, दुचिता को दे आग री मेरी ॥ ”
राधास्वामी दया के सागर, देंगे अचल सुहाग री मेरी ॥ ”

[२४-४०३]

प्रेम भाव उर धार री, मेरी प्यारी सुरतिया ॥टेका॥
अंतर में गुरु की संगत कर, दरस परस सत्कार री मेरी ॥प्यारी



तिलपट मध्ये अद्भुत मूरत, अचरज अगम अपार री मेरी ॥प्यारी
मन माथे दे तिलक केपरिया, डाल गये बिच हार री मेरी ॥ ”
तिल की जोत में साधले आरत, जगमग रूप निहार री मेरी ॥ ”
घट में पूजा घट में सेवा, घट में भक्ति बहार री मेरी ॥ ”
घंटा शंख बजे मन मन्दिर, अनहद धुन फनकार री मेरी ॥ ”
सुमिरन भजन ध्यानकर मन में, राधास्वामी की बलिहार री मेरी ॥”

[२५-४०४]

गुरु चरनन चित धार री, मेरी प्यारी सुरतिथा ॥टेका॥
अपने स्वारथ वश लिपटाने, कुल कुटुम्ब परिवार री मेरी ॥प्यारी
एक में सुख और अनेक में दुख है, टेक एक की धार री मेरी ॥ ”
कर्म की गठरी को हलकी करले, राख न सिरपर भार री मेरी ॥ ”
एक आस विश्वास गुरु का, भक्ति ज्ञान का सार री मेरी ॥ ”
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, होजा द्वन्द के पार री मेरी ॥ ”

[२६-४०५]

भोग वासना भूल री, अलबेली सहेली ॥टेका॥
दुख कलेश का मेट दे संशय, प्रेम हिंडोले झूल री ॥अलबेली
क्यों मुरझाई सुख से खुलजा, जैसे हँसता फूल री ॥अलबेली
जो प्रतिकूल पन्थ नहीं पग दे, तिसके सब अनुकूल री ॥अलबेली
छोस्त फिरें भरम वश प्रानी, ममता नर का झूल री ॥अलबेली
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, हो पदकमल की धूल री ॥अलबेली

[२७-४०६]

प्रेम का कर सत्कार री, मेरी सुरत मुशीला ॥टेका॥
प्रेम है भूषण सुन्दर वस्तर, प्रेम का कर सिंगार री मेरी ॥सुरत
प्रेम ही मूल तत्व है प्यारी, प्रेम का कर व्यौहार री मेरी ॥सुरत
प्रेम प्रेम कर प्रेम को चित दे, प्रेम का पन्थ संचार री मेरी ॥सुरत
प्रेम योग है प्रेम है भक्ति, प्रेम का आसन मार री मेरी ॥सुरत



प्रेम ज्ञान का सच्चा साथी, प्रेम विवेक विचार री मेरी ॥सुरत
प्रेम की हाट में प्रेम का सौदा, प्रेम बनजि व्यौपार री मेरी ॥सुरत
राधास्वामी प्रेम रूप धर आये, परम सन्त औतार री मेरी ॥सुरत

[२८-४०७]

चल गुरु के सतसंग री, मेरी सुरत सहेली ॥टेका॥
सतसंगत अमृत जल बरसे, सतसंग निर्मल गंग री मेरी ॥सखी
सतसंग प्रेम सिंध है सजनी, उमड़े प्रीत तरंग री मेरी ॥सखी
बास सुवास मिले सत संगत, पावे रंग सुरंग री मेरी ॥सखी
सतसंगत का ध्यान रहे नित, कीट सहज हो भृंग री मेरी ॥सखी
राधास्वामी गुरु की कर सतसंगत, काल करम कर भंग री मेरी ॥सखी

[२९-४०८]

गुरु पद का करले ध्यान री, मेरी सुरत सहेली ॥टेका॥
आज गुरु की शरणागत में, सब विधि हो कल्याण री मेरी ॥सुरत
चिंता त्याग त्याग दे चिंता, यही है सच्चा ज्ञान री मेरी ॥सुरत
जो कुछ होगा मौज से होगा, मौज को परख सुजान री मेरी ॥सुरत
अंतर में तेरे सतगुरु बसते, घट में रूप पिछान री मेरी ॥सुरत
गुरु के चरन शरन जो आया, नहीं उनकी हो हान री मेरी ॥सुरत
सुमिरन ध्यान भजन कर सजनी शब्दयोग की जान री मेरी ॥सुरत
राधास्वामी नाम जो कोई सुभिरे, जीते जी निर्वाण री मेरी ॥सुरत

[३०-४०९]

करले अपना काम अब, मेरी चतुर सुरतिया ॥टेका॥
आलस तज निद्रा को तजदे, तज मद मोह निकाम अब ॥ मेरी
सुमिरन ध्यान भजन नित करना, सुमिर सुमिर गुरुनाम अब ॥ मेरी
गुरु से पावे चार पदारथ, मोक्ष धर्म धन काम अब ॥ मेरी
जो आया गुरु की शरणागत, सब विधि पूरन काम अब ॥ मेरी
जीते यश कीर्ती इस जग में, पीछे राधास्वामी धाम अब ॥ मेरी



थिर नहीं वह संसार री, सुन सखी सहेली ॥टेका॥
जो आये हैं जायेंगे सजनी, कुछ अब सोच विचार री सुन ॥
बन्धन काट मोह माया के, यह उसके परिवार री सुन ॥सखा
संगी साथी कोई नहीं है, यह अपने चित धार री सुन ॥सखी
मिथ्या है सब जगत पसारा, मिथ्या में क्या सार री सुन ॥सखी
राधास्वामी नाम सुमिर घट भीतर, मानुष जनम सुधार री सुन ॥सखी
[३२-४११]

अपनी ओर निहार री, अलबेली सुरतिया ॥टेका॥
औरन को क्या निरखे सजनी, तू है सबका सार री ॥अलबेली
घट में तेरे प्रीतम बसता, हित चित से कर प्यार री ॥अलबेली
तू है प्रेम की मूरत प्यारी, प्रेम की तू भंडार री ॥अलबेली
सब कुछ तेरे घट में बसत है, घट के नैन उधार री ॥अलबेली
बाहर की सब आसा तज दे, अंतर दृष्टि पसार री ॥अलबेली
घट चेला गुरु गगन बिराजे, सुरत से मन में विचार री ॥अलबेली
राधास्वामी गुरु ने भेद बताया, चरन कमल सिर धार री ॥अलबेली
[३३-४१२]

गुरु संग नेह लगाओ री, मेरी प्यारी सुरतिया ॥टेका॥
सुमिरन भजन ध्यानकर चित में, मोक्ष पदारथ पाओ री मेरी ॥सुरत
गुरु का रूप बसा तेरे अंतर, उस पर वृत्ति जमाओ री मेरी ॥सुरत
लख लख अलख दशा घट भीतर, अनहद धुन नित गाओ री मेरी ॥
सुमिरन सबका सार है प्यारी, सुमिरन सहज उपाओ री मेरी ॥सुरत
ध्यान गुरु का रूप है सजनी, रूप अनूप को ध्याओ री मेरी ॥सुरत
नाम का तार गूँज रहा अंतर, सुन मुख आनन्द पाओ री मेरी ॥सुरत
दुख को त्याग हर्ष नित बाढ़े, उसकी चाह बढ़ाओ री मेरी ॥सुरत
भँवर में जीवन नाव पड़ी है, तट पर उसको लाओ री मेरी ॥सुरत
राधास्वामी गुरु का दयाभाव ले, चरन शरन में जाओ री मेरी ॥सुरत



अपना रूप सँभार री, तू रंगीली बहुरिया ॥टेका॥
शील क्षमा का भूपन सुन्दर, पहर के करले सिंगार री तू ॥रंगीली
मीठे बचन मधुर रस बानी, मुख से सदा निकार री तू ॥ ”
दया भाव की ओढ़ चुनरिया, अपने आप संवार री तू ॥ ”
कर्म बचन मन से सब का हित, कर सजनी उपकार री तू ॥ ”
साँच चदरिया तन पर सोहे, काम क्रोध मद मार री तू ॥ ”
सब कोई हर्ष से करे बड़ाई, यह सुन्दर बरनार री तू ॥ ”
राधास्वामी पंथ ठुमक कर पगदे, सतगुरु नाम उचार री तू ॥ ”

[३५-४१४]

कर दो भव सागर पार, तुम मेरे सतगुरु दाता ॥टेका॥
डूबत कोई न संग न साथी, काढ़ो आज किनारे तुम ॥ मेरे
मैं अचेत अज्ञान की मूरत, ज्ञानी पुरुष अपार तुम ॥ मेरे
मैं बिलपूँ भव दुख के कारन, देखो नैन निहार तुम ॥ मेरे
आसा बासा सब की त्यागी, हो साँचे रखवार तुम ॥ मेरे
राधास्वामी दीन दयाला, सृष्टि के आधार तुम ॥ मेरे

[३६-४१५]

बंसी की धुन सुन कान, सुरत मेरी गगन चढ़ी ॥टेका॥
सहस कमलदल घंटा बाजा, जब तिल को दिया तान सुरत ॥मेरी
त्रिकुटी ओंकार धुन मृदंग, सुन हुआ चतुर सुजान सुरत ॥ ”
सुन्न महासुन्न सारंग सारंग, किंगरी शब्द प्रमान सुरत ॥ ”
भँवर गुफा सोहंगम बंसी, बंसीधर लिया जान सुरत ॥ ”
सतपद अलख अगम राधास्वामी, पहुँची ठौर ठिकान सुरत ॥ ”

[३७-४१६]

सोच विवेक विचार, जो तू सच्चा ज्ञानी ॥टेका॥
मन के अटपट खटपट सूझी, झटपट ताहि सुधार जो ॥तू सच्चा
बिन साधन अनुभव नहीं जागे, साधन से कर प्यार जो ॥तू सच्चा



वाचक ज्ञान से काम बने नहीं, वाच वो लक्ष्य सँभार जो ॥ तू सच्चा
तत्व भेद सतसंग में पाले, सतसंग सबका सार जो ॥ ”
प्रीत प्रतीत के पंथ में पग दे, प्रेम का पंथ सँवार जो ॥ ”
जीत काम मद मोह लोभ को, मार अहम् अहंकार जो ॥ ”
सुरत शब्द का सहज है साधन, सहज सहज निर्वार जो ॥ ”
घर में रह घर का उद्यम, घट में कर दीदार जो ॥ ”
राधास्वामी जीव चितावन आये, धार सन्त अवतार जो ॥ तू सच्चा
उनकी शरन में जल्दी आजा, कर अपना उपकार जो ॥ तू सच्चा
राधास्वामी योग की बने कमाई, जा भवसागर पार जो ॥ तू सच्चा
कोई न तेरा तू न किसी का, कुल कुटुम्ब परिवार जो ॥ तू सच्चा
राधास्वामी नाम सुमिर नित, जीवन का आधार जो ॥ तू सच्चा

[३८-४१७]

सतगुरु परम दयाल री, कोई कदर न जाने ॥ टेका ॥
देह धरें जीव भार उठावें, काटें यम का जाल री कोई ॥ कदर
जीव अनाड़ी जग भ्रकमारें, दुख सुख संग बेहालरी कोई ॥ कदर
दया मेहर निज बचन सुनावें, मेटें घट दुख सालरी कोई ॥ कदर
छूटन की वह युक्ति बतावें, घट में चलावें चाल री कोई ॥ कदर
दया मेहर से करनी करावें, कर दें मालामाल री कोई ॥ कदर
घट के बैरी सभी नसावें, मारे काल कराल री कोई ॥ कदर
निस दिन तेरी दया बिचारें, जस माता संग बालरी कोई ॥ कदर
अन्त समय जब तेरा आवे, आप हुये रखवाल री कोई ॥ कदर
घट तेरे में प्रगट करावें, अपना रूप विशाल री कोई ॥ कदर
पकड़ चरन तू निज घर जावें, काल करम पामाल री कोई ॥ कदर
राधास्वामी सतगुरु मोहि अस भेटे, होगई मैं खुशहाल री कोई ॥ कदर

[३९-४१८]

गुरु मूरत हिये में धारो री, गुरु मूरति ॥ टेका ॥
गुरु बिन काल नहीं पड़त घड़ी एक, छिन छिन रूप निहारो री ॥ गुरु



काम क्रोध मद लोभ ईर्ष्या, घट से सकल निकारो री ॥गुरु मूरति
क्रोटिन चन्द सूर उदय तारे, तिमिर विकार निकारो री ॥गुरु मूरति
गुरु की आसा चित्त बसाओ, जगत वासना जारो री ॥गुरु मूरति
तिल को उलट करो नित दर्शन, सहज ही होत उजारो री ॥गुरु मूरति
बन्धन काटो मोह मया के, गुरु का नाम पुकारो री ॥गुरु मूरति
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु चरनन मन बारो री ॥गुरु मूरति

[३६-४१६]

सुरत चढ़ी आकास री, अपने अन्तर घट ॥टेक॥
सहस कमल दल दृष्टि डाली, गुरु दरशन की आस री,
खोला निज तिलपट ॥ सुरत
त्रिकुटी गुरु मूरति लख पाई, कर अज्ञान का नास री,
तज मन के खटपट ॥ सुरत
सुन्न में सहज समाध रचाई, आई गिरि कैलास री,
हंसन के जमघट ॥ सुरत
भँवर गुफा सोहंग धुन बंसी, माया काल विलास री,
सत धाम अधर बट ॥ सुरत
अलख अगम के पार ठिकाना, राधास्वामी पद में बास री,
दर्शन कर झटपट ॥ सुरत

[४०-४२०]

राधास्वामी नाम प्रभाव री सुख जीवन मिलना ॥टेक॥
राधास्वामी शब्द गूँज रहा घट में, चित्त की वृत्ति लगाव री,
सुरत कान से सुनना ॥राधा०
राधास्वामी रूप लगे अति प्यारा, अन्तर दृष्टि जमाव री,
ले रूप का भरना ॥राधा०
राधास्वामी पद परसा जब घट ने, मिला आनंद का दाव री,
मुख से क्या कहना ॥राधा०



राधास्वामी बास सुवास बसा हूँ, प्रेम के फूल चढ़ाव री,
सेवा न बिसरना ॥ राधा०
राधास्वामी चरनामृत नित पीना, सीत प्रसादी खाव री,
आनन्द से जीना ॥ राधा०

[४१-४२१]

साज के सन्त समाज री, सतगुरु हुये परगट ॥ टेका ॥
घट के अन्तर मन मन्दिर में, ठाड़े गुरु महाराज री,
भूमध्य के तिल पट ॥ साज
सहस जोत का दीवा बाला, चांद सूरज दोऊ लाज री,
जोती के जमघट ॥ साज
सखियां आरत मंगल गावें, मन ममता को मांज री,
तज मन के खटपट ॥ साज
दया क्षमा करना चित बाढ़ी, जुड़ा विचित्र समाज री,
अपने अन्तर घट ॥ साज
राधास्वामी का दर्शन कर चित से, छोड़ कुटुम्ब कुल लाज री,
चढ़ बंक के अवघट ॥ साज

[४२-४२२]

आये गुरु महाराज री, अपने दासी घर ॥ टेका ॥
लाई प्रेम की थाली दासी, मंगल आरत साज री,
लख गुरु प्रीतम वर ॥ आये
प्रीति प्रतीति के भूषण बस्तर, अरपे सन्त समाज री,
मन धन न्यौछावर ॥ आये
चरन कमल लग उमंग बढ़ाया, मनमानो कियो काज री,
मांगा भक्ति वर ॥ आये
शबरी के बेर राम बन खाये, रखली दया से लाज री,
करुणा के सागर ॥ आये



राधास्वामी दीन दयाला, हुए प्रसन्न चित आज री,
दासी के ऊपर ॥ आये

[४३-४२३]

चल सतगुरु के देस तू, मेरी सुरत सहेली ॥टेका॥
माया मंडल दुख अस्थाना, क्यों सहे बिपत कलेस तू,
योनी की खानी ॥ चल
इन्द्र जगत मन का विस्तारा, मन की न सुन लवलेस तू,
हो गुरु गम ज्ञानी ॥ चल
घट में भोग अघट रस भक्ति, धार प्रेम का भेस तू,
रह नित हरखानी ॥ चल
नींद भूख परमाद त्याग दे, धर चित गुरु उपदेस तू,
तज मान गुमानी ॥ चल
दे बिखेर राधास्वामी दया से, काल करम के केस तू,
ले पद निर्वाणी ॥ चल

[४४-४२४]

आई राधास्वामी धाम री, तज जग की आसा ॥टेका॥
पहिले पहुँची सहस कमल दल, जगमग जोत की ठाम री,
ज्यों दीप उजासा ॥ आई
फिर त्रिकुटी में डेरा डाला, ओम् का लेकर नाम री,
ब्रह्मरेन्द्र निवासा ॥ आई
ताके आगे सुन्न मैदाना, हंसन का विश्राम री,
गिरवर कैलासा ॥ आई
भँवर गुफा की खिड़की खोली, माया काल को थाम री,
गुरु बल विश्वासा ॥ आई
सत पद अलख अगम जा पहुँची, पूरा करलिया काम री,
राधास्वामी पद बासा ॥ आई



[४५-४२५]

राधास्वामी धुन नित गाज री, अपने अन्तर घट ॥टेक॥
 राधास्वामी दर्शन भाग से पाया, सहस्र कमल दल आज री,
 जब उलटा तिलपट ॥ राधा०
 राधास्वामी ओम रूप गढ़ त्रिकुटी, सोभा सहित विराज री,
 तज मन के खटपट ॥ राधा०
 राधास्वामी शून्य पुरुष सुन मंडल, संग ले हंस समाज री,
 मानसरोवर के तट ॥ राधा०
 राधास्वामी सोहंग भँवर गुफा में, कोटि कृष्ण छवि लाज री,
 सच्चे बंसी बट ॥ राधा०
 राधास्वामी सतपद अलख अगम में, दरस परस किया काज री,
 बच काल के औचट ॥ राधा०

[४६-४२६]

जागे पूरन भाग री, नर जनम बनाया ॥टेक॥
 माया ममता छल चतुराई, सब को दीना त्याग री,
 जब गुरु संग पाया ॥ जागे
 सुरत कुंवारी शब्द से व्याही, सहित सुभाग सुहाग री,
 सिंगार कराया ॥ जागे
 नाक के सीध लगाई कंधी, काढ़ी चित की मांग री,
 सेंदूर भराया ॥ जागे
 माथे बिंदी जगमग झूमर, लड़ मोतिन की मांग री,
 निज रूप सजाया ॥ जागे
 घंटा बीन मरंगी बाजी, अनहद मंगल राग री,
 राधास्वामी गाया ॥ जागे





[४७-४२७]

अनहद बाजे बाज री, सुन सुरत के काना ॥टेक॥
 सहस कमल दल घन्टा बाजे, धुन रही चहुँ दिस गाज री,
 क्या करूँ बखाना ॥अनहद
 थाप मृदंग पखावज त्रिकुटी, साधू जन के समाज री,
 गुरु पद अस्थाना ॥अनहद
 सारंग सारंग सुन्न में सरंगी, हंस मंडली साज री,
 अमृत जल पाना ॥अनहद
 भँवर गुफा में मुरली बंसी, महाकाल के राज री,
 कोई मर्म न जाना ॥अनहद
 सतपद बीन मधुर मुद मंगल, यहां किया अपना काज री;
 राधास्वामी धर ध्याना ॥अनहद

[४८-४२८]

चल राधास्वामी धाम री तज काया कासी ॥टेक॥
 सहस कमल हरद्वार की पौड़ी, ले सतगुरु का नाम री,
 नित भज अविनासी ॥ चल
 राज प्रयाग ब्रह्म गढ़ त्रिकुटी, ओंकार गुरु ठाम री,
 सत चित सुखरासी ॥ चल
 सुन्न मानसर गिरि कैलासा, हंसन का विश्राम री,
 नहीं चित में उदासी ॥ चल
 महासुन्न का ऊँचा परवत, सहज समाध अकाम री,
 सुरत भई अकासी ॥ चल
 भँवर गुफा घाटी अति सुन्दर, महाकाल का ग्राम री,
 माया हुई दासी ॥ चल
 सत सुमेर सतपद अस्थाना, आनन्द आठों याम री,
 नहीं आस निरासी ॥ चल



अलख अनाम अगम के पारा, राधास्वामी धाम से काम री,
निज रूप प्रकाशी ॥ चल

[४६-४२६]

मेरी सुरत सहेली आओ री, सतगुरु के चरना ॥टेका॥
जग में प्रगट भये राधास्वामी, दरस परस चित लाओ री,
आ उनके शरना ॥ मेरी
जुगन जुगन का प्यासा मनुआ, गुरु उपदेश चिताओ री,
क्यों आलस करना ॥ मेरी
सत संगत की अमृत बानी, सुनकर जनम बनाओ री,
सहज भव तरना ॥ मेरी
कुछ दिन सतसंग वचन विलासा, फिर निज घट में न्हाओ री,
सुरत शब्द के भरना ॥ मेरी
जीते जी जीवन मुक्ति फल, राधास्वामी दया से पाओ री,
अवसर न बिसरना ॥ मेरी

[५०-४३०]

राधास्वामी धाम सिधार री, सखी सुरत सियानी ॥टेका॥
नहीं वहाँ काल कलेस न माया, नहीं सिर कर्म का भार री,
आनन्द की खानी ॥ राधा०
नहीं वहाँ तीन ताप का भय दुख, नहीं यम का अधिकार री,
वह पद निर्वानी ॥ राधा०
द्वन्द्व द्वैत पाखंड विवादा, नहीं सत असत विचार री,
जाये मन नहीं बानी ॥ राधा०
तीन त्रिलोकी काल रचाई, वह है इसके पार री,
अनुभव गति जानी ॥ राधा०
राधास्वामी आये दिया संदेशा, सुरत का पाऊँ उभार री,
हो धुर अस्यानी ॥ राधा०



बिनती

[४३१]

दया दृष्टि कीजे, मुझे तार लीजे ।
 लगा अपने चरणों में, भव पार कीजे ॥
 रहे वासना नाम को, भी न मन में ।
 कटे दिन मेरा, भक्ति में और भजन में ॥
 सदा सर्वदा, नाम ही की लगन हो ।
 तुम्हारा ही सुभिरन, तुम्हारा मनन हो ॥
 तजी वासना, और चरणों में आया ।
 न व्यापे मुझे, जगत की मोह माया ॥
 जपूँ जागते सोते, मैं राधास्वामी ।
 कहूँ पद में झुककर, नमामी नमामी ॥

प्राथना

[४३२]

दया दृष्टि से, खोलदे आँख मेरी ।
 रहे वासना, मन में भक्ति की तेरी ॥
 तेरी आस है, और तेरा ही सहारा ।
 शरण देके कर, सिंधु से भव के पारा ॥
 करूँ तन से और मन से, मैं काम तेरा ।
 रहे रात दिन, होठों पर नाम तेरा ॥
 सदा सर्वदा मन में, हो ध्यान तेरा ।
 तेरा ही हो अनुमान, और ज्ञान तेरा ॥
 जपूँ राधास्वामी, भजूँ राधास्वामी ।
 पढ़ूँ राधास्वामी, लिखूँ राधास्वामी ॥



नातिवीं धुन

[१-४३३]

कैसे अपना भाग सराहूँ ॥टेक॥

प्रेम प्रीति परतीति पदारथ, प्राप्त भये अब कुछ नहीं चाहूँ ॥ कैसे
श्रद्धा भक्ति हो टेक गुरु की, जीते जी यह परन निबाहूँ ॥ कैसे
चरण न छूटे तन चाहे छूटे, अब तो राधास्वामी शरन पड़ा हूँ ॥ कैसे
निरख परख कर घट की लीला, सत्तलोक की ओर चला हूँ ॥ कैसे
राधास्वामी धाम में बासा पाया, चौरासी के भय से छुटा हूँ ॥ कैसे

[२-४३४]

मैं तो होगया नाम दिवाना ॥टेक॥

सांसें सांस नाम का सुभिरन, यही मेरा है पानी दाना ॥ मैं तो
नहीं कोई जाने नाम महातम, जो जाने सो चतुर सुजाना ॥ मैं तो
चलते फिरते सोते जगते, जपत हिया जिया हरषाना ॥ मैं तो
धर्म कर्म संयम तप किरिया, भूल गये नहीं नाम भुलाना ॥ मैं तो
राधास्वामी नाम जो कोई सुभिर, सहज ही पावे पद निर्वाणा ॥ मैं तो

[३-४३५]

नित प्रति गुरु की अस्तुति गाना ॥टेक॥

परनिन्दा की ओर न चित दूँ, मन तो गुरु गुन मांहि लुभाना ॥नित
अन्तर प्रगटी अद्भुत मूरत, देखि देखि तेहि जिया ललचाना ॥नित
जगमग जोत सहसदल निरखी, त्रिकुटी पद ओंकार लखाना ॥नित
सुन्न महासुन्न स्वेत प्रकाशा, भँवर गुफा सूरज दरसाना ॥नित
सतपद अलख अगम राधास्वामी, मिलगया सुरत को शब्द ठिकाना ॥”

[४-४३६]

प्रगटी अनहद धुन घट अंतर ॥टेक॥

सहसकमलदल घंट शंख सुनि, त्रिकुटी पद ओंकार का मंतर ॥प्रगटी
सुन्न महासुन्न रारंग सारंग, भँवर में सोहंग बंसी जंतर ॥प्रगटी



सत में बीन मधुर धुन गाजी, अलख अगम का सूझा तंतर ॥प्रगटी
राधास्वामी बल जब पाया, निर्बल सहज भया बलवंतर ॥प्रगटी
धनधन राधास्वामी सतगुरु पूरे, जीव दुखी के सुखी करंतर ॥प्रगटी
[५-४३७]

राधास्वामी सत चित आनन्द मूरत ॥टेका॥
जा दिन गुरु पद सीस झुकाया, समझा आया शुभ महरत ॥राधा०
सत भी पाया चित भी पाया, देखी आनन्द वाली मूरत ॥राधा०
गुरु भक्ति का दीवा वाला, प्रेम प्रीति की बाती पूरत ॥राधा०
कर्म धर्म संयम जप तप की, मुझको अब नहीं रही जरूरत ॥राधा०
राधास्वामी मौज दिखाई, भिट गई मन की सभी कदूरत ॥राधा०
[६-४४८]

कैसे गुरु के मैं गुन गाऊँ ॥टेका॥
जग के आस फन्द सब काटे, ऐसी दया पर बलि बलि जाऊँ ॥कैसे
बिपत पड़ी रक्षा गुरु पाई, अब क्यों दूजा देव मनाऊँ ॥ "
नाम दान दे किया निहाला, अब नहीं जग की आस बढ़ाऊँ ॥ "
पकड़ी बांह दया से मेरी, चरन कमल लग नित लपटाऊँ ॥ "
राधास्वामी दीन दयाला, तुम्हरी दया पार भव जाऊँ ॥ "
[७-४३६]

बरसे गगन बदरिया रसीले ॥टेका॥
श्याम कुञ्ज में बिजली चमके, ठहरे नाहिं नजरिया रसीले ॥बरसे
जोत निरंजन श्याम घटा में, सूझे कैसे डगरिया रसीले ॥बरसे
त्रिकुटी सुन्न भँवर को निरखा, नहीं यह तेरी नगरिया रसीले ॥बरसे
पन्थ में आई हूँ आसा लेकर, पहुँचूँ सत की सिजरिया रसीले ॥बरसे
अमृत बून्द प्रेम से भरदे, सुरत निरत की गगरिया रसीले ॥बरसे
प्रीति की धार बहादे प्यारे, भीजे तन की चुनरिया रसीले ॥बरसे
राधास्वामी तेरी खातिर, माया काल से भगरिया रसीले ॥बरसे



[८-४४०]

रंगदे मन की साड़ी रंगीले ॥टेक॥

जनम जनम की मैली साड़ी, मैल बोझ से भारी रंगीले ॥रंगदे
काम क्रोध कीचड़ में लतपत, होगई फूहड़ नारी रंगीले ॥रंगदे
सतसंग शिला ज्ञान का साबुन, मलमल धो साड़ी कारी रंगीले ॥रंगदे
प्रेम का रंग सुहाना लगादे, अब न फिरूँ मारी मारी रंगीले ॥रंगदे
राधास्वामी प्रीतम अंग लगाले, तेरी हो जाऊँ प्यारी रंगीले ॥रंगदे

[९-४४१]

छवि अद्भुत दिखलादे छबीले ॥टेक॥

मैं प्यासी तेरे दर्शन जल की, अमृत बून्द पिलादे छबीले ॥ छवि
मन बुद्धि की सुकड़ी कली को, हँसी खुशी से खिलादे छबीले ॥ छवि
विरह के काँटे से फटा कलेजा, भक्ति टाँका सिलादे छबीले ॥ छवि
काल करम माया की मारी, अपनी दया से जिलादे छबीले ॥ छवि
राधास्वामी सतगुरु दाता, प्रेम की दात दिला दे छबीले ॥ छवि

[१०-४४२]

रंग दे चूनर मोरी रंगरेजवा ॥टेक॥

शब्द सुरत का ताना बाना, सुरत चूनर मोरी कोरी रंगरेजवा ॥रंगदे
चुन्नट देदे गोट लगादे, करा दे शब्द की डोरी रंगरेजवा ॥रंगदे
पैय्याँ परूँगी गुन मानूँगी, अस्तुति करूँगी तोरी रंगरेजवा ॥रंगदे
प्रीत के कुंड प्रेम रंग भरकर, बोर के दे झकझोरी रंगरेजवा ॥रंगदे
ठुमक ठुमक पिया के घर जाऊँ, माया काल की चोरी रंगरेजवा ॥रंगदे
ऐसी सजीली चूनर निकसे, कोई करे न ठिठोली रंगरेजवा ॥रंगदे
पहर ओढ़ राधास्वामी रिभाऊँ, खेलूँ भक्ति की होरी रंगरेजवा ॥रंगदे





बिनती

[४४३]

न मन में हो भव भय, न आशा किसी की ।
 न चिन्ता न दुविधा, न त्रासा किसी की ॥
 न अभिमान मद मान, का भाव भावे ।
 न द्वेष ईर्ष्या मेरे, चित को सतावे ॥
 कमल पद की लूँ, छाँह में नित बसेरा ।
 मेरे मन के भीतर, रहे तेरा डेरा ॥
 भजन ध्यान सुमिरन, करूँ चलते फिरते ।
 चलूँ पन्थ पर तेरे, मैं गिरते पड़ते ॥
 कहूँ राधास्वामी, सुनूँ राधास्वामी ।
 लिखूँ राधास्वामी, गुनूँ राधास्वामी ॥

प्रार्थना

[४४४]

साज मंगल साज आये, जगत गुरु दातार ।
 भक्त काज समाज साजी, धन्य पतित उधार ॥
 शब्द नाव चढ़ाये जन को, किया भव जल पार ।
 दीन हीन अधीन की सुध, लीन कृपा धार ॥
 भक्ति भाव की रीति निर्मल, जाने क्या संसार ।
 आप सतगुरु ने सिखाई, धार सन्त अवतार ॥
 नाथ बिनती सुनो मेरी, तुम हो परम दयार ।
 जो न पकड़ो बाँह को तुम, बूढ़ूँ काली धार ॥
 सर्व समर्थ साईयाँ, दुख बिपत मेटनहार ।
 राधास्वामी कृपा सागर, तुम मेरे रखवार ॥



आठवीं धुन

[१-४४५]

भरोसा तेरा है तेरी आस मन में ।
 लगा रहता हूँ तेरे सुभिरन भजन में ॥
 यही है जतन और यही काम मेरा ।
 जपा करता हूँ रात दिन नाम तेरा ॥१॥
 तेरी मौज में रह के निस दिन सुखी हूँ ।
 नहीं भय न चिंता न जग से दुखी हूँ ॥
 खुली आँख से तेरा दर्शन जो पाया ।
 भिटे सहज में मान मद मोह माया ॥२॥
 न जोगी न साधु न ज्ञानी बना मैं ।
 न भोगी असाधु न मानी बना मैं ॥
 जो था पहले अब भी वही रूप मेरा ।
 न व्यापा मुझे काल का हेरा फेरा ॥३॥
 न जागा न सोया न सुषुप्ति में आया ।
 न आसा निरासा के भय ने सताया ॥
 न दौड़ा न बैठा न लेटा कभी मैं ।
 न माता पिता और न बेटा कभी मैं ॥४॥
 नहीं ब्रह्म माया का है द्वन्द्व मुझको ।
 न उलझा सका कर्म का फन्द मुझको ॥
 सहज रूप है और सहज कर्म बानी ।
 सहज में सहज की सहज हो निशानी ॥५॥
 सहसदल अनेक और त्रिकुटी की त्रिपुटी ।
 दशा द्वैत की सुन्न में भी न प्रगटी ॥



महासुन्न अद्वैत का भाव छूटा ।

भँवर में नहीं काल माया ने लूटा ॥६॥

अलख हूँ अंगम हूँ अनामी बना हूँ ।

कहूँ कैसे कैसा कहाँ और क्या हूँ ॥

गुरु राधास्वामी ने आकर चिताया ।

मेरा रूप मुझको सहज में लखाया ॥७॥

[२-४४६]

जहाँ आँख खोली वहीं तुझको पाया ।

कहीं ज्योति था तू कहीं था तू छाया ॥

कमल है कमल का बना रूप तुझसे ।

हुआ भँवरा और बास तू लेने आया ॥२॥

पवन है अकास आग मिट्टी है पानी ।

तू सब कुछ है और सब में है छाया ॥३॥

कहीं होके परगट दिया सबको दर्शन ।

कहीं छुप गया छुपके छवि को छुपाया ॥४॥

छुपा आग के रूप चकमक में बैठा ।

हरी मेंहदी में लाली का रंग लाया ॥५॥

जिधर देखता हूँ तुझे देखता हूँ ।

मेरी दृष्टि में आप तू ब्रह्म माया ॥६॥

दया राधास्वामी की मुझ पर हुई अब ।

परम सन्त औतार धरकर चिताया ॥७॥

[३-४४७]

तेरा आसरा है तेरा है सहारा ।

शरण में पड़ा तेरे तू है हमारा ॥१॥

निरास हूँ जग से मैं आसा तेरी है ।

दया की हो दृष्टि मिटे कण्ट सारा ॥२॥



खुली आँख से मैं करूँ तेरा दर्शन ।
 चला जाऊँगा फिर मैं भव सिंधु पारा ॥३॥
 अमृत पिला मुझको दे सत का जीवन ।
 काल और करम का हूँ मैं मारा मारा ॥४॥
 साहस नहीं दिल में शक्ति नहीं है ।
 संग्राम में जग के सब से है हारा ॥५॥
 माया मुखी होके मन से दुखी हूँ ।
 समेट अपनी माया को घट चमके तारा ॥६॥
 सुरत शब्द से मेरा घट हो उजाला ।
 मेरे मेट अज्ञान का अंधकारा ॥७॥
 अलख और अगम के परे धाम तेरा ।
 मैं चढ़ जाऊँगा जो तू देगा सहारा ॥८॥
 गुरु राधास्वामी की हम पर दया हो ।
 हमें तार दो समझें तुम जग को तारा ॥९॥

[४-४४८]

दया दृष्टि हो नित दया हो दया हो ।
 मेरे अवगुणों पर तुम्हारी चमा हो ॥१॥
 नहीं ज्ञान भक्ति नहीं कर्म सेवा ।
 न मन का मिटा आज लग भर्म भेवा ॥२॥
 विवेकी नहीं हूँ न पंडित न ज्ञानी ।
 बना हूँ सकल विधि से अज्ञान खानी ॥३॥
 पड़ा हूँ शरण में शरण दीजिये अब ।
 मुझे छांद में चरनों के लीजिये अब ॥४॥
 दया अद्भुती कीजिये राधास्वामी ।
 तुम्हारे चरण में नमामी नमामी ॥५॥



[५-४४६]

न काशी न कावा न कैलास में है ।

तू देख अपने घट में तेरे पास में है ॥१॥

तेरे घट के भीतर वह मालिक बसा है ।

न मसजिद न मन्दिर न आकास में है ॥२॥

नहीं खाली उससे यह सारा जहां है ।

कहां देखता किसकी तलास में है ॥३॥

लगा बन्द तीनों सुरत को चढ़ाओ ।

अनहद की धुन घट के आकाश में है ॥४॥

गंगा के जल से नहीं होगी तृप्ति ।

चलो घाट मन के जो तू प्यास में है ॥५॥

वह व्यापक हो रग रग में आकर समाया ।

तेरी जान तन में तेरी सांस में है ॥६॥

भरम में पड़ा तू किधर ढूँढ़ता है ।

गुरु तेरे अन्तर वह परकाश में है ॥७॥

कहीं नाम है और कहीं बेनिशां है ।

हमारे ही मन के वह विश्वास में है ॥८॥

गधास्वामी ने भेद अपना बताया ।

उसे मिलने की युक्ति अभ्यास में है ॥९॥

[६-४५०]

सदा नाम से लौ लगाया करो तुम ।

सुफल अपना जीवन बनाया करो तुम ॥१॥

बसाकर गुरु मूरती मन के मन्दिर ।

सिर्फ प्रेम दीपक जलाया करो तुम ॥२॥

कभी तो उन्हें भी खबर हो रहेगी ।

करुणा राग अपना सुनाया करो तुम ॥३॥



वह दाता दयालु अवश्य देंगे दर्शन ।

सदा ध्यान उनका लगाया करो तुम ॥४॥

भजन ध्यान से यह भटकने न पावे ।

निठुर मन को निसदिन चिताया करो तुम ॥५॥

मिलेंगे गुरु अपने जीवन के साथी ।

तड़प मन में दर्शन बढ़ाया करो तुम ॥६॥

मनोकामना होगी पूरन तुम्हारी ।

राधास्वामी का नाम गाया करो तुम ॥७॥

[७-४५१]

मुझे रूप का अपने निज ज्ञान दीजे ।

वह क्या कैसा है उसका परमान दीजे ॥१॥

जो यह ज्ञान का चन्द्र रूप साई ।

पड़ी दुख की इस जोति में कैसे भाई ॥२॥

कहा करते हैं ज्ञानी माया नहीं है ।

जो माया न होगी तो काया नहीं है ॥३॥

बिना काया कैसे यह संभव कथन है ।

असंभव सभी योग युक्ति मथन है ॥४॥

श्रवण और मनन कैसे फिर होंगे दाता ।

बिना इसके मन ध्यान किसमें लगाता ॥५॥

है क्या भेद मन और माया में प्यारे ।

बतादो मैं समझूँ उसी के सहारे ॥६॥

बतादो मुझे सार तुम राधास्वामी ।

तुम्हारे चरन में नमामी नमामी ॥७॥

[८-४५२]

सुनो मेरे भाई कथा यह पुरानी ।

नहीं जानते आज कल जिसको ज्ञानी ॥१॥



नहीं ब्रह्म माया में है भेद कोई ।
 जो है ब्रह्म माया भी है वस्तु सोई ॥२॥
 जो सत है वही सुख वही चित है प्यारे ।
 कथन के लिये तीन हैं एक सारे ॥३॥
 करम सत में और चित में है ज्ञान की गम ।
 यही आत्मा में है आनन्द उत्तम ॥४॥
 जहाँ सत वहीं वहीं सुख है व्यापा ।
 जो तीनों को समझे लखे अपना आपा ॥५॥
 इसी आवे का रूप अपना समझना ।
 समझकर न अज्ञान में फँस भटकना ॥६॥
 करे गुरु की संगत समझ तब यह आवे ।
 मिले राधास्वामी जुगत जोग पावे ॥७॥
 [६-४५३]
 मेरे अवगुणों की करो तुम न गिनती ।
 सुनो करके करुणा मेरे मन की बिनती ॥१॥
 दया रूप हो तुम दया दृष्टि कीजे ।
 मेरी भावनाओं की शुभ सृष्टि कीजे ॥२॥
 कमल पद की अपने मुझे छाँह दीजे ।
 मेरी बाँह में अपनी अब बाँह दीजे ॥३॥
 तुम्ही मेरे दाता तुम्ही मेरे स्वामी ।
 तुम्हारे चरन में नमामी नमामी ॥४॥
 बनाओ मुझे तुम दया से सुशीला ।
 सदा देखूँ संतोष भक्ति की लीला ॥५॥
 सदा सर्वदा मन में सुमिरन भजन हो ।
 तुम्हारी दया बानी का नित कथन हो ॥६॥
 दयासिंधु हो राधास्वामी दयाला ।
 करो दीन दुखियों का अब प्रतिपाला ॥७॥



[१०-४५४]

नहीं सिर्फ शहरों में तू कूबकू है ।

जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है ॥१॥

मेरे दायें बायें मेरे आगे पीछे ।

मेरे साथ में है मेरे रूबरू है ॥२॥

मेरी साँस साँस और दम का हमदम ।

मेरी जान तन है मेरे दूबदू है ॥३॥

है कसरत में वहदत में खिल्लत में जाहिर ।

बनों का है बातिन तुही मूबमू है ॥४॥

खियाबाने गुलशन में है तू तरावत ।

नमू बर्ग में और फूलों में बू है ॥५॥

तेरी ही है रग रग में रेशा रवानी ।

तू खुद मैं में मैं है तू ही तू में तू है ॥६॥

अगर नैकदे का है पीरेमुँगाँ तू ।

तो तू मैं है और जाम मीना सुबू है ॥७॥

राधास्वामी ने भेद मुझको बताया ।

तेरी जाँ की जाँ है तेरी रूह की रूह है ॥८॥

[११-४५५]

निहाँ में अयाँ है अयाँ में निहाँ है ।

बताऊँ मैं क्या तू यहाँ है वहाँ है ॥१॥

मुहीते गुजो कुल है कुल और जुज है ।

भरा हर जगह तुझसे सारा जहाँ है ॥२॥

कहीं हद कहीं तू बना आप बेहद ।

कही बामकाँ है कहीं लामकाँ है ॥३॥

गुलिस्ताँ में गुलबर्ग गुल की नजाकत ।

बना कोयल और बाग में नग्मेख्वाँ है ॥४॥



समाया मेरे रग में रेशे में आकर ।
 नहीं तुझसे खाली मेरा जिस्म जाँ है ॥५॥
 यह जो खरतें हैं तेरी खरतें हैं ।
 कहीं नाम है तू कहीं तू निशाँ है ॥६॥
 जहाँ मैंने देखा फकत तुझको देखा ।
 हजारों ही शक्तों में जल्वा कुना है ॥७॥
 लतीफ़ा है जौहर खुलासा है सबका ।
 सताइश में हर नुकतेदाँ तर जवा है ॥८॥
 मुकदर है मकदूर खुदरत बना तू ।
 यह खादिर हमेशा तेरा मदहख्वाँ है ॥९॥
 वह हैरत बना आप खुद राधास्वामी ।
 जो मुर्शद के फज्लोकरम में अयाँ है ॥१०॥

[१२-४५६]

गुरु ने सहजयोग आकर सिखाया, परमार्थ पुरुषार्थ का गुर बताया ।
 सचाई के अनुभव का मारग दिखाया, कृपा दृष्टि की रास्तेपर लगाया ॥
 जगाया उठे नींद से सोने वाले ।
 वह संभले जो पहले न संभले संभाले ॥१॥
 कटे मोह के और अविद्या के बंधन, नहीं अब कहीं नाम को भी है उलझन
 बचन सुनते ही शब्द का भाया साधन, भिला सच्चिदानंद का घट में दर्शन
 थे बाहरमुखी जो वह अन्तरमुखी है ।
 मिटा दुख क्लेश और अब वह सुखी है ॥२॥
 सहारा दिया संग का अपने आकर ।
 लगाया कमल पद में चित से चिताकर ॥
 दया के लमा के बचन निज सुना कर ।
 सरल भाव भक्ति की महिमा जताकर ॥



भजन ध्यान सुमिरन की युक्ति बताई ।
 खुली आँख से जग की दुरगति दिखाई ॥३॥
 नहीं द्वैतवादी के उलभन फँसे हम ।
 न अद्वैतवादी के दलदल धँसे हम ॥
 चरन की मिली छाँह उसमें बसे हम ।
 स्वरूप अपना देखा सहज में हँसे हम ॥
 किनारे लगी आके नौका हमारी ।
 है अब भक्ति की रीति मन को पियारी ॥४॥
 सहज रूप है और सहज कर्म बानी ।
 सहज ज्ञान के हम सहज ही हैं ज्ञानी ॥
 नहीं पक्ष के और नहीं मत के मानी ।
 कमल पत्र सम तैरे भवनिधि के पानी ॥
 कहाँ ब्रह्म माया का है द्वन्द्व हम में ।
 न बन्धन न उलभन का है फन्द हम में ॥५॥
 सहसदलकमल तीसरे तिल को फोड़ा ।
 चढ़े त्रिकुटी ओम् से नाता जोड़ा ॥
 महासुन्न और सुन्न मद मोह छोड़ा ।
 भँवर में महाकाल का मान तोड़ा ॥
 पहुँचकर अधर सत की सत्ता लखी जब ।
 सुफल अपना जीवन सहज में किया तब ॥६॥
 अलख लख अगमलोक के ठहरे बासी ।
 हुये सुख के रूप और आनन्द रासी ॥
 नहीं पृथ्वी के हम न हम हैं अकासी ।
 है भव द्वन्द्व की ओर से अब उदासी ॥
 दया अद्भुती तुमने की राधाश्यामी ।
 तुम्हारे चरन में नमामी नमामी ॥७॥



बिनती

[४५७]

सुनो बिनती नाथ मेरी, जीव सहत कलेश ।
 भव का बन्धन काट इनके, दया करो विशेष ॥
 तरन तारन नाम धारा, तार दीजे आज ।
 है तुम्हारे हाथ अब तो, स्वामी सब की लाज ॥
 रोग भोग बियोग में, नहीं भक्ति साधन जोग ।
 दीन बन्धु बरुश दीजे, शरन का संजोग ॥
 नाम दीजे काम कीजे, लीजे चरन लगाय ।
 सब भिखारी हैं तुम्हारे, इनकी कीजे सहाय ॥
 पतित पावन भय मिटावन, यह कहूँ कर जोर ।
 राधास्वामी की मेहर से, छूटे मोर और तोर ॥



प्रार्थना

[४५८]

कृपा सिंधु पूरन धनी, तुम सब के हितकारी ।
 मंगल मय मंगल सदन, गुरु मंगलकारी ॥
 दीन बन्धु करुना अयन, करुना के सागर ।
 सगुन अगुन गुनवान हो, नागर गुन आगर ॥
 नहीं कोई महिमा कह सके, तुम अपरम्पारा ।
 दया दृष्टि से देखिये, दे अपना सहारा ॥
 नाम रूप के जगत से, प्रभु तुम हो न्यारे ।
 नाम रूप दरसाय कर, बने सब के प्यारे ॥
 भक्ति दान का दान दे, अपना कर लीजे ।
 राधास्वामी नाम धन, कृपा मोहे दीजे ॥





नवीं धुन

[१-४५६]

प्रेम नगर के डगर में सजनी, सिरके बल तू आवरी ॥टेका॥
 प्रीत रीति अमृत रस मीठा, हित चित मन कर्म पावरी ।
 जग का फीका स्वाद त्याग दे, मन बचन मेरा बावरी ॥प्रेमनगर
 मानुष देह दया से पाया, फिर नहीं ऐसा दावरी ।
 नर शरीर सुर को भी दुर्लभ, सुगम सुसाध सुभावरी ॥प्रेमनगर
 जैसे बने तैसे करले कमाई, मन धर भक्ति का भावरी ।
 घट में परगट गुरु की लीला, निरख निरख हरषावरी ॥प्रेमनगर
 अन्तर में तेरे नौबत झड़ती, धँस चल सहित हियावरी ।
 अनहद बानी मंगल खानी, नित प्रति निसदिन गावरी ॥प्रेमनगर
 राधास्वामी दया की मूरत, सांच दिल दरयावरी ।
 चरण कमल की ओट पकड़ले, स्रभे सुगम उपावरी ॥प्रेमनगर

[२-४६०]

पृथ्वी मंडल छोड़ के सजनी, उलट के चल असमानरी ॥टेका॥
 सीधा मारग त्याग दे चित से, उलटे का कर ध्यानरी ।
 उलटे पन्थ है घर का रस्ता, कहना मेरा मानरी ॥ पृथ्वी
 गगन मंडल में सहस कमलदल, ओंकार अस्थानरी ।
 घंटा शंख पखावज बाजे, सुन अनहद दे कानरी ॥ ”
 सुन्न में गंग जमुन की धारा, तिरबैनी अस्नानरी ।
 मान सरोवर हंस केल करें, नीर चीर को छानरी ॥ ”
 भँवर गुफा सोहंग धुन बंसी, कोटि कृष्ण करें गानरी ।
 कोई कोई अवधू ज्ञानी समझे, गोपी गोप का तानरी ॥ ”
 सत्त धाम में बीन सुहानी, सुख आनन्द की खानरी ।
 अलख अगम राधास्वामी पद ऊँचा, पहुँचे संत सुजानरी ॥ ”



उलट के अन्तर लख घट लीला, तब पावे गुरु ज्ञान री ।
 दाह जगत का सुख सब भूटा, अपनी बुद्धि पहचान री ॥ पृथ्वी
 गुरु गम सुगम सुहावन प्यारी, कैसे करूँ बखान री ।
 राधास्वामी दया करें जब पूरी, स्रभे पद निरवान री ॥ पृथ्वी
 [३-४६१]

त्याग भरोस जगत का प्यारी, धार गुरु की आस तू ॥ टेका ॥
 गुरु को खोज चरन में लगजा, भज गुरु साँसों साँस तू ।
 गुरु समान कोई देव न दूजा, देखले धरन अकास तू ॥ त्याग
 गुरु की दया जीते जी पाले, आनन्द हर्ष हुलास री ।
 तन के बिछड़े सत्तधाम में, करे सदा सहवास तू ॥ त्याग
 सोच समझ कुछ मन में अपने, जग में रही निवास तू ।
 स्वारथ बस सब कुटुम्ब कबीले, इनसे भई उदास तू ॥ त्याग
 बिपत पड़े तन मन सब बैरी, उरभी चिंता फाँस तू ।
 आसा तृष्णा मोह मया सब, समझ काल का त्रास तू ॥ त्याग
 राधास्वामी सदा सहाई, आजा उनके पास तू ।
 हो सतसंग विवेक सहित नित, कर अज्ञान का नास तू ॥ त्याग
 [४-४६२]

विरह आग कलेजे भड़की, निस दिन सोच रहे मन में री ॥ टेका ॥
 जा दिन पिया से भया बिछोहा, आये पड़ी पिंजरे तन में री ।
 बिलपूँ तड़पूँ पिया के कारन, सृगनी भटकी ज्यों बन में री ॥ विरह
 अखियन नीर बहे जल धारा, जोत नहीं मेरे नैनन में री ।
 काँटा विरह का उरमें साले, कैसी फँसी हूँ उलझन में री ॥ विरह
 स्वाँती बूँद जस रटती पपिहरा, मैं रटती पिया छिन छिन में री ।
 पिया बिन कोई न मोहि सुहावे, सुख नहीं बिन पिया जीवन में री ॥ विरह
 मैं पृथ्वी पिया गगन विराजे, कैसे मिलूँ सजनी छिन में री ।
 पंख नहीं जो उड़कर चालूँ, जीव पड़ा नित चिंतन में री ॥ विरह



राधास्वामी दया के सागर, दया करो प्रभू इस पन में री ।
पल में चाहो पिया से मिलावो, सुरत शब्द के साधन में री ॥ बिरह

[५-४६३]

आये पड़े भव के दुख सागर, डूब रही मँझधार में रे ॥ टेका ॥
गोते खाते विकल शरीरा, कष्ट अधिक संसार में रे ।
है कोई ऐसा चतुर खिवग्या, करदे काढ़ किनार में रे ॥ आये
अपना बल कुछ काम न आवे, चित है सोच विचार में रे ।
कौन सुने मेरी किसको सुनाऊँ, शक्ति नहीं है पुकार में रे ॥ आये
संकट भारी बिपत घनेरी, रहा न वार न पार में रे ।
बूढ़त का कोई संग न साथी, कुल कुटुम्ब परिवार में रे ॥ आये
हाय हाय मैं केहि विधि निकसूँ, बैरी काल शिकार में रे ।
एक भरोसा राधास्वामी का, संत जीव उपकार में रे ॥ आये
राधास्वामी दाता दया विचारो, मैं नहीं वार न पार में रे ।
वाँह पकड़ मोहि आप बचाओ, खींचो निज दरवार में रे ॥ आये

बिनती

[४६४]

आदि अनादि अनन्त अमाया, निःकाया महिमा भारी ।
देव दनुज नर किन्नर करता, सन्त जनन के हितकारी ॥
क्या कोई जाने तुम्हारी लीला, अगम अपार अरूप हो तुम ।
भेद न पावे ऋषि मुनि कोई, सारे जगत के भूष हो तुम ॥
सुनत कान बिन लखत नैन बिन, चलत बिना पद निस बासर ।
बिन जिभ्या बोले बहु वानी, ग्रहन करत सब कुछ बिन कर ॥





प्रार्थना

[४६६]

मंगल मय गुरु चरन, ताप त्रय हर लेने वाले ।
 भव दुख सकल मिटाये, शान्त पद देने वाले ॥
 भव सागर अति अगम पन्थ, नहीं स्रभे कोई ।
 शब्द जहाज चढ़ाये, पार गुरु कीन्हा सोई ॥
 बूढ़त रहे मङ्गधार, भिला नहीं कोई सहाई ।
 आये गुरु दातार, बाँह गह मेरी ठौर लगाई ॥
 नाम रूप का भेद दिया, भ्रम भेद मिटाया ।
 पद अभेद दरसाये, भेद का फन्द छुड़ाया ॥
 राधास्वामी पद कमल, मन मधुप लुभाना ।
 मन बानी के परे, भिला धुर पद निरवाना ॥

दसवीं धुन

[१-४६७]

राधास्वामी नाम की बलिहारी, गुरु नाम महा मंगलकारी ॥ टेक ॥
 राधास्वामी नाम को, जो गावे तर जाय ।
 कलि कलेश सब नाश हों, सुख पावे दुख जाय ॥
 हो सहज सहज भवजल पारी ॥ राधास्वामी ०
 ऐसा नाम अपार, कोई न जाने भेद ।
 जो जाने सो पार हो, सहे न योनि का खेद ॥
 जीवन न बने कभी संसारी ॥ राधास्वामी ०
 राधास्वामी गाय कर, जनम सुफल करले ।
 यही नाम निज नाम है, मन अपने धरले ॥
 यही नाम है सच्चा हितकारी ॥ राधास्वामी ०



राधा सुरत का मूल है, स्वामी शब्द का मूल ।

सब आये इस वृक्ष में, डाल पात फल फूल ॥

राधास्वामी नाम है सरकारी ॥ राधास्वामी०

बैठक स्वामी अङ्गुली, राधा निरखन हार ।

और न कोई लख सके, शोभा अगम अपार ॥

शोभा ही बने शोभा धारी ॥ राधास्वामी०

गुप्त रूप जहाँ धारिया, राधास्वामी नाम ।

बिना मेहर नहिं पावई, जहाँ कोई विश्राम ॥

कोई समझे रहस्य को अधिकारी ॥ राधास्वामी०

राधास्वामी सुमरिये, राधास्वामी गाय ।

राधास्वामी ध्याइये, मन चित बुद्धि लगाय ॥

गुरु देव करें तेरी रखवारी ॥ राधास्वामी०

[२-४६८]

राधास्वामी नाम की बलिहारी, गुरु नाम महा मंगलकारी ॥ टेक ॥

राधास्वामी नाम को, जो गावे तर जाय ।

कलि कलेश सब नाश हों, सुख पावे दुख जाय ॥

इस नाम की महिमा है भारी ॥ राधास्वामी०

ऐसा नाम अपार यह, भेद न कोई जान ।

जो जाने सो पार है, जग नहीं जन्मे आन ॥

भिलती है बन्ध से छुटकारी ॥ राधास्वामी०

राधास्वामी गायकर, जनम सुफल करले ।

यही नाम निज नाम है, मन अपने धर ले ॥

नहीं कृत्रिम नाम हो हितकारी ॥ राधास्वामी०

राधा सुरत का मूल है, स्वामी शब्द का मूल ।

निज स्वरूप के वृक्ष में, डाल पात फल फूल ॥

यह नाम नहीं है संसारी ॥ राधास्वामी०



बैठक स्वामी अद्भुति, राधा निरखनहार ।

और न कोई लख सके, शोभा अगम अपार ॥

निज सुरत है शब्द की दरबारी ॥ राधास्वामी०

गुप्त रूप जहाँ धारिया, राधास्वामी नाम ।

बिना मेहर नहीं पावई, जहाँ कोई विश्राम ॥

बड़ भागी कोई हो अधिकारी ॥ राधास्वामी०

अलख अगस अनाम का, राधास्वामी नाम ।

तिरलोकी के है परे, राधास्वामी धाम ॥

वहाँ रंग न रूप न रेखा री ॥ राधास्वामी०

[३-४६६]

तेरी दया का दृढ़ विश्वास हुआ, चरनों में पड़ा निज दास हुआ ॥ टेका ॥

करूँ बीनती दोऊ कर जोरी, अरज सुनो राधास्वामी मोरी ।

संसार से सहज उदास हुआ ॥ तेरी दया०

सत्त पुरुष तुम सतगुरु दाता, सब जीवन के पितु और माता ।

ढारस बाँधी घट में उजास हुआ ॥ तेरी दया०

दया धार अपना कर लीजे, काल जाल से न्यारा कीजे ।

तब समझूँ गा माया का नास हुआ ॥ तेरी दया०

सतयुग त्रेता द्वापर बीता, काहु न जानी शब्द की रीता ।

सब में अज्ञान का बास हुआ ॥ तेरी दया०

कलियुग में स्वामी दया बिचारी, परगट करके शब्द पुकारी ।

विद्या सत ज्ञान का भास हुआ ॥ तेरी दया०

जीव काज स्वामी जग में आये, भव सागर से पार लगाये ।

तब दुखी जीव सुख रास हुआ ॥ तेरी दया०

तीन छोड़ चौथा पद दीना, सत्तनाम सत गुरु गति चीन्हा ।

अनुभव का आप विकास हुआ ॥ तेरी दया०



जगमग जोत होत उजियारा, गगन सोत पर चन्द्र निहारा ।

घट ब्रह्मरेन्द्र कैलास हुआ ॥ तेरी दया०

स्वेत सिंघासन छत्र विराजे, अनहद शब्द गैव धुन गाजे ।

हिया उमगा हर्ष हुलास हुआ ॥ तेरी दया०

क्षर अक्षर निह अक्षर पारा, बिनती करे जहाँ दास तुम्हारा ।

पृथ्वी छूटी गुजर आकास हुआ ॥ तेरी दया०

लोक अलोक पाऊँ सुख धामा, चरन शरन दीजे विश्रामा ।

राधास्वामी चरन निवास हुआ ॥ तेरी दया०

[४-४७०]

तुझे किसने कहा कि वह पास नहीं, वह तुझमें है कासी कैलास नहीं ॥ टेक

ढूँढ़त ढूँढ़त थक गये, पता न देवे कोय ।

सन्तों के सतसंग में, उसका दर्शन होय ।

यह समझ ले पृथ्वी आकाश नहीं ॥ तुझे०

घट में है स्रष्टे नहीं, घट नहीं ढूँढ़े कोय ।

चारों धाम में थक गये, अपना आपा खोय ।

निगुरा क्या पावे वह दास नहीं ॥ तुझे०

साँस साँस में रम रहा, सबका रमता राम ।

आँख खुले दर्शन मिले, घट में जपे जब नाम ।

वह करम वरम अभ्यास नहीं ॥ तुझे०

अपना आपा परख ले, सुरत शब्द की चाल ।

अपने आप में वह रहे, समझ के हो तू निहाल ।

इसे कैसे मिले जिसे आस नहीं ॥ तुझे०

राधास्वामी नाम ले, घट में बंद लगाय ।

तब तब छिन दर्शन मिले, भ्रान्ती भरम भुलाय ।

वह तीरथ वरत उपवास नहीं ॥ तुझे०



[५-४७१]

क्या करना था क्या मैंने किया, संसार को क्यों चित अपना दिया ॥टेका॥

भूली भूली क्यों फिरी, फूली काम के संग ।

बिसराया गुरुदेव को, अपना मन किया भंग ।

नहीं घट में जलाया भक्ति दीया ॥ संसार को
मान ईर्ष्या द्वेष की, अन्तर में खुली खान ।

ज्ञान रतन परखा नहीं, व्याप रहा अज्ञान ।

क्या लेना था, क्या मैंने लिया ॥ संसार को
प्रेम पियाला पटक कर, विषय घूँट क्यों पी ।

जो कोई विष को पिये, वह फिर कैसे जी ।

नित विषय के बिष को घोल पिया ॥ संसार को
जीना उसका सुफल है, जिये जो प्रेम के काज ।

नहिं तो मरजाना भला, यहि जीवन को लाज ।

जिया अपने लिये तो क्या वह जिया ॥ संसार को
राधास्वामी दीन हित, कीजे मेरी सहाय ।

रहूँ चरन की ओट में, त्याग भरम समुदाय ।

तुम ही हो प्यारे सच्चे पिया ॥ संसार को

[६-४७२]

संसार महा दुखदाई है, क्यों धोखे में मेरे भाई है ॥टेका॥

क्यों आया क्या कर चला, क्या लिया अपने साथ ।

गये जो क्या लेकर गये, क्या था उनके हाथ ।

कर ध्यान तू क्या सौदाई है ॥ संसार
मेरा तेरा कर मरा, कोई गया नहीं संग ।

देह तजी चलते समय, ज्यों केंचुली भुजंग ।

अब भी तुझे समझ न आई है ॥ संसार



फूल खिले मुरझा गये, कुमलाये गये सूख ।
 ऐसे ही सबकी दशा, डाली जड़ और रुख ।
 यहाँ जो है अगमा पाई है ॥ संसार
 जगमग तारे रात के, कहने लगे प्रभात ।
 मंद दशा अपनी हुई, क्या कह मुख से बात ।
 क्यों आलस तुझको भाई है ॥ संसार
 पंच तत्व के मेल से, बना है नर का शरीर ।
 पाँच पाँच में मिलेंगे, कैसे आवे धीर ।
 यह दशा तो सब पर आई है ॥ संसार
 प्रान देह के संग को, देख है कैसा मेल ।
 प्रान देह तजकर चला, क्या विचित्र है खेल ।
 कोई यहां न संगी सहाई है ॥ संसार
 राधास्वामी संग में, करले अपना काज ।
 काल सदा सिर पर खड़ा, सज चलने का साज ।
 सठ संगत ही सुखदाई है ॥ संसार

[७-४७३]

दुर्लभ अधिकारी को क्या है जी, अधिकार बिना क्या मिला है जी ॥ श्लोक ॥
 खोजी तो कोई नहीं, सब करें वाद विवाद ।
 विन करनी कैसे मिले, निकट प्रेम का स्वाद ।
 बातों में न कुछ भी घरा है जी ॥ दुर्लभ
 आरत अधिकारी मिले, साधु होय दयाल ।
 कुञ्जी भेद की दान दे, जिन में करे निहाल ।
 फिर तीर निशाने लगा है जी ॥ दुर्लभ
 शम दम सावधान मन, मुक्ति की हो चित चाह ।
 दयावंत गुरुदेव तब, आप लखावै राह ।
 अधिकार का उनको पता है जी ॥ दुर्लभ



आये समुन्दर के निकट, मन में धार उमंग ।
 मोती तो उसको मिले, डूबे सिंध अभंग ।
 तटवासी निराश रहा है जी ॥ दुर्लभ
 प्रेम पियाला वह पिये, तन की छाँड़े आस ।
 तन का प्यार जिसे रहा, अंत में हुआ उदास ।
 राधास्वामी ने भेद दिया है जी ॥ दुर्लभ
 [८-४७४]

भव जनम का हेरा फेरा है, क्यों तुझको संशय ने घेरा है ॥ टेक ॥
 नहीं आई अब तक समझ, अब कुछ समझले भीत ।
 आलस निद्रा छोड़ अब, आयु जायेगी बीत ।
 भूठा सब मेरा तेरा है ॥ भव
 आये है सो जायेंगे, जाना बिस्वा बीस ।
 जनम मरन चक्की चले, डालेंगे उनको पीस ।
 यहाँ कोई सहाई न तेरा है ॥ भव
 पन्थी आया पन्थ में, पन्थाई के भाव ।
 आगे को पग दे नहीं, कैसे स्रभे उपाव ।
 दुविधा दुचिता का डेरा है ॥ भव
 दस दिन जीना जगत में, जीने की नहीं आस ।
 इसकी आसा क्या करे, गुरुमुख गुरु का दास ।
 जग चिड़िया रैन बसेरा है ॥ भव
 काल शिकारी ताक में, तू है वारा बाट ।
 सोच सोच कुछ सोचले, कर चलने का ठाठ ।
 क्यों बाढ़ का राह में डेरा है ॥ भव
 ज्ञान सूर परकाश से, करले अपना काम ।
 काम सहज है बंधुआ, भज भज गुरु का नाम ।
 आगे फिर घोर अंधेरा है ॥ भव



सुमिरन भजन और ध्यान में, अपना लगाले चित ।

राधास्वामी की दया, कुछ तो कर निज हित ।

उठ जाग तू अभी सवेरा है ॥ भव

[६-४७५]

गुरु चरणों में ठौर ठिकाना मिले, पदकमल की छाँह में आना मिले ॥ टेक ॥

देखा माना जान लिया, दुखदाई संसार ।

भव सागर गम्भीर अति, सुझे वार न वार ।

तरने का इससे बहाना मिले ॥ गुरु

भक्ति मिले परतीत मिले, निश्चय श्रद्धा पाय ।

प्रेम मगन मन निच रे, तन का सोच भुलाय ।

जो दिवाना बनाये दिवाना मिले ॥ गुरु

नशा चढ़े इस ढंग का, उतरे नहीं खुमार ।

नाम अटल माता रहे, पिये अभी रस धार ।

दे मस्ती ऐसी मस्ताना मिले ॥ गुरु

भूखा प्रेम अहार का, प्यासा प्रेम के नीर ।

भूख प्यास सब दूर हों, रहे निश्चित शरीर ।

ऐसा मुझे पानी दाना मिले ॥ गुरु

राधास्वामी आदि गुरु, दया क्षमा भंडार ।

दया दृष्टि अब कीजिये, मेरा हो उद्धार ।

तुम जैसा कोई सियाना मिले ॥ गुरु

[१०-४७६]

गुरु गहकर हाथ संभालो मुझे, भव जाल फँसा हूँ निकालो मुझे ॥ टेक ॥

पाँच शत्रु पीछे लगे, करें सदा उत्पात ।

तुम मेरी रक्षा करो, देकर नाम का दान ।

समरथ गुरु उनसे बचालो मुझे ॥ गुरु गह०



दीन अधीन मलीन चित, चंचल मूढ़ कुचाल ।
 गुरु दाता दुख भंजना, काटो यह जंजाल ॥
 हूँ मौत के मुँह में बचालो मुझे ॥ गुरु गह
 एक तुम्हारी आस है, आस किसी की नाँह ।
 शक्ति नहीं असक्त हूँ, पकड़ो मेरी बाँह ॥
 पद कमल की छाँह में पालो मुझे ॥ गुरु गह
 मेरे दिल में नित बसो, रख कर अपने संग ।
 हिया जिया में बाढ़े सदा, प्रेम प्रतीत उमंग ॥
 भव भय के भंवर से, उछालो मुझे ॥ गुरु गह
 बिनती कब तक मैं करूँ, आयु बीती जाय ।
 राधास्वामी दीन हित, अब तो करो सहाय ॥
 दुखदाई दसा से हटालो मुझे ॥ गुरु गह

[११-४७७]

अज्ञान का फन्द कटा देना, गुरु ज्ञान की जोति दिखा देना ॥ टेका ॥
 क्या हूँ कहाँ हूँ कौन हूँ, कहाँ से आया भाग ।
 तुम कैसे मिले अब मुझे, क्यों चित बढ़ा अनुराग ॥
 यह अकथ कहानी सुना देना ॥ अज्ञान
 विद्या अविद्या वस्तु क्या, जनम मरन क्यों होय ।
 ईश जीव सम्बन्ध क्या, समझे क्योंकर कोय ॥
 भली भाँति यह मरम समझा देना । अज्ञान
 जनम न लेना हानि क्या, जनम लिया तो लाभ क्या ।
 जनम मरन में दुख महा, कौन उसे है चाहता ॥
 बस गुत्थी को तुम सुलझा देना ॥ अज्ञान
 परमारथ व्यौहार क्या, क्या है इसमें भेद ।
 किस विधि बरनें यह विषय, शास्त्र स्मृति भेद ॥
 जो तत्व हो उसे बता देना ॥ अज्ञान



भरम जाल के फाँस में, फाँस पाया बहु दुख ।

अब गुरु का संग मिला, मन कुछ पावे सुख ॥

राधास्वामी निज पंथ लखा देना ॥ अज्ञान

[१२-४७८]

दो दिन का मेला ठेला है, फिर क्या है तू आप अकेला है ॥ टेका ॥

तिरिया बोली पुरुष से, तू है जनम का मीत ।

अन्त समय नहीं संग हुई, यही यहाँ की रीत ॥

यह मिथ्या सारा भ्रमेला है ॥ दो दिन०

माता बोली पुत्र से, पुत्र पुत्र है तू ।

घर को बसा व्यौहार कर, सुन्दर आवे बहू ॥

सबने इस खेल को खेला है ॥ दो दिन०

बाप कहे बेटा मेरा, स्वारथ बस लपटान ।

बिन स्वारथ बेटा नहीं, कर न उसका ध्यान ॥

फिर बेटा नहीं मिट्टी का ठेला है ॥ दो दिन०

धन दौलत सब हैं भरे, यह नर का अभिमान ।

चलते समय विचार कर, सब हैं धूल समान ॥

नहीं संग छदाम न धेला है ॥ दो दिन०

परमारथ व्यौहार में, देखा यह व्यौहार ।

बाप पुत्र चेला गुरु, इनमें कहाँ कुछ सार ॥

नहीं गुरु यहाँ कोई न चेला है ॥ दो दिन०

जहाँ स्वारथ तहाँ जगत है, कही सुनी मत मान ।

अपनी आँखों देख लो, जान मान पहचान ॥

नहीं समझ तो दुख नित भेला है ॥ दो दिन०

राधास्वामी संग में, तत्व को मरम को बूझ ।

शब्द योग अभ्यास कर, ले अनुभव की झूझ ॥

यह साधन सुगम सुहेला है ॥ दो दिन०



[१३-४७६]

जब चढ़े सुरत नभ के मंडल, नहीं चित भंग न मन चंचल ॥ टेक ॥

मन के तीन स्वरूप हैं, मूढ़ अबुद्धि कुचाल ।

यह सुधरे छिन में अभी, जब हों गुरु दयाल ॥

फिर फँसे न माया के दल दल ॥ जब चढ़े०

गुरु पद परस के शान्त हो, अब नहीं आन्ती न भर्म ।

चाह मिटी चिंता गई, कटे जनम का कर्म ॥

चले सत की ओर हो सँभल सँभल ॥ जब चढ़े०

अलख लखा वो अगम गम, अकथ की कथा विचार ।

निज घट में बासा किया, सतगुरु की बलिहार ॥

अन्तर में धँसा, बाहर से मचल ॥ जब चढ़े०

मैं क्या हूँ और क्या तजूँ, नहीं गहन नहीं त्याग ।

इतने तोड़ा भाव को, उत्तकी ओर को भाग ॥

यहाँ से वहाँ पहुँचा सहज निकल ॥ जब चढ़े०

राधास्वामी की दया, सुफल भई नर देह ।

अब क्यों भरमावे मुझे, कुल परिवार और गेह ।

मिले गुरु भक्ति का यह है फल ॥ जब चढ़े०

[१४-४८०]

मेरी रक्षा करो गुरु देव आज, नहीं माँगू मान नहीं धन न राज ॥ टेक ॥

चरन कमल की ओट दो, छिन में करो निहाल ।

दया सिंधु गुरु देव तुम, तुम हो दीन दयाल ॥

अब तो तुमको आप लाज ॥ मेरी०

बार बार चिनती करूँ, चित चरनन से जोड़ ।

मन भागे इस जगत से, झूठा नाता तोड़ ॥

भक्ति के साज को नित साज ॥ मेरी०



सुमिरन भजन न ध्यान में, मन चंचल ठहराये ।

फिर तू बतादे बाबले, कैसे आनन्द पाये ।

करनी करो लो गुरु शरनी ॥ यह समझ

गुरु के संग में जाय कर, सीख शब्द अभ्यास ।

आप ही प्रगटे हिये में, उज्जल विमल प्रकाश ।

इस विधि भव सागर से तरनी ॥ यह समझ

बिन गुरु ज्ञान न भक्ति है, बिन गुरु नहीं परतीत ।

बिन गुरु भरमत क्यों फिरे, यह नहीं अच्छी रीत ।

अब आओ राधास्वामी की चरनी ॥ यह समझ

[१७-४८४]

सीखो नित प्रेम का रंग ढंग, यह समझलो गुरु है अंग संग ॥ टेका ॥

धीरज समता में रहे, शान्ति रहे भरपूर ।

घट में उगे अनेक विधि, ज्ञान के चन्द्र और सूर ।

बाढ़े प्रतीति और उमंग ॥ सीखो नित

नद नाले बह बह बहे, फूटी अटूटी धार ।

निर्मल होगये आप ही, मैल अशुद्धि टार ।

मिले आकर जब वह संग गंग ॥ सीखो नित

आँखें ठहरी रूप में, लगे जो सच्चा ध्यान ।

अनहद धुन प्रगटे विमल, उसी ओर रहे कान ।

घट में लगे बजने मोर चंग ॥ सीखो नित

सहस्र कमल के मध्य में, श्याम कंज अमूध्य ।

चित्त अपनी बैठक करे, फिर नर क्यों हो बद्ध ।

निरवान की शोभा दे तरंग ॥ सीखो नित

राधास्वामी आदि गुरु, सदा करे कल्याण ।

आप ही आप मिले सकल, भक्ति मुक्ति सतज्ञान ।

हो मस्त जो पिये प्रतीति भंग ।



[१८-४८५]

तुम्हें चिंता नहीं है क्या मेरी, जो दया में ऐसी हुई देरी ॥ टेका ॥

दिन को सुख आनन्द नहीं, नींद न आवे रात ।

दवा हृदय छाती फटे, कैसे कहूँ कुछ बात ।

चहुँ ओर से विपत्ता ने लिया घेरी ॥ तुम्हें

रात गई दिन भी गये, बीते बरस और मास ।

पिया निर्दई न दया करे, किसकी राखूँ आस ।

मेरे पांव पड़ी दुख की बेड़ी ॥ तुम्हें

आँखों से आँसू बहे, जैसे मेघ की धार ।

तड़प तड़प तड़पी बहुत, तड़प का वार न पार ।

कोई मुझसा दुखी नहीं जग हेरी ॥ तुम्हें

तड़पे जल से निकल कर, जैसे निर्जल मीन ।

तैसे ही गति है मेरी, होगई दीन अधीन ।

हो बिकल करूँ हेरा फेरी ॥ तुम्हें

गीली लकड़ी आग में, पड़ी सदा धुंदवाय ।

जली बरी जल बर मरी, बचन का कौन उपाय ।

हुई राख की भारी मैं ठेरी ॥ तुम्हें

राधास्वामी परम हित, दया दृष्टि से देख ।

मेटो दुखदाई दशा, कटे करम का लेख ।

गुरु दर की अब तो बनी चेरी ॥ तुम्हें

[१९-४८६]

तुमने सतसंग से क्या पाया, नहीं समझ में सार तत्व आया ॥ टेका ॥

सुमिरन ध्यान भजन का, प्रगटा नहीं प्रभाव ।

फिर क्या लाभ भया तुम्हें, हाथ पड़ा नहीं दाव ।

यूँ ही भरमे और भरमाया ॥ तुमने ०



सहस्रकमल भ्रूमध्य की, समझ न आई बात ।
 त्रिकुटी पद परखा नहीं, मन का मचा उत्पात ।
 कहाँ सुन्न समाध में लव लाया ॥ तुमने०
 शब्दार्थ के ज्ञान की, नहीं पाई कुछ गम ।
 समय अमोलक खोगया, नहीं दम है नहीं शम ।
 क्या हुआ जो शब्द भजन गाया ॥ तुमने०
 आसन मारे क्या हुआ, नहीं समाहित चित ।
 तुमने गुरु के संग में, किया न अपना हित ।
 माया और काल ने अटकाया ॥ तुमने०
 चेत चेत अब चेत ले, चेत के करले काम ।
 सोच सोच कुछ सोच मन, सोच के जप गुरुनाम ।
 राधास्वामी ने सब विधि समझाया ॥ तुमने०

[२०-४८७]

जब ओढ़ी सत की कामरिया, सुनी भँवर सोहंगम बाँसुरिया ॥ टेक ॥
 सोहम् सोहम् धुन उठी, गूँज रही चहुँ ओर ।
 बंसी की धुन मधुर सुन, मगन हुआ मन मोर ।
 सुरत नहीं रही गाँवरिया ॥ जब०
 माया काल की लख दशा, अब न पड़ूँ अज्ञान ।
 सुन बंसी की तान को, सत के चलूँ मैदान ।
 सतगुरु संग फिरे मेरी भाँवरिया ॥ जब०
 आँख खुली दर्शन मिला, चमका सत का नूर ।
 निकट हुई गुरुदेव से, अब तो रही न दूर ।
 दुविधा की भागी चामरिया ॥ जब०
 योग ज्ञान संजोग से, प्रगट भये गुरुदेव ।
 चरन कमल चित जोड़कर, करूँ निरंतर सेव ।
 मिला मुझको मेरा साँवरिया ॥ जब०



राधास्वामी भज सदा, मेटा मन का विकार ।

जहाँ देखूँ गुरुदेव हैं, महिमा अगम अपार ॥

हुई छर सुरत मेरी पामरिया ॥ जब ओढ़ी०

[२१-४८८]

सतगुरु की दया करे रखवारी, नहीं अब होता मैं संसारी ॥टेक॥

कमल नीर में ज्यों रहे, मैं बिचरूँ संसार ।

दुख सुख कुछ व्यापे नहीं, गुरु के चरन अधार ॥

गुरु दरस की आसा चित धारी ॥ सत गुरु की०

घर में रहकर भक्ति करूँ, नहीं विवेक विचार ।

गृह त्याग सब भर्म है, मन को रखूँ सँभार ॥

उपदेश दिया गुरु हितकारी ॥ सत गुरु की०

बाहर भीतर एक रस, व्याप रहा गुरुज्ञान ।

आनन्द सुख का जीवना, इसी में है कल्याण ॥

मेरी दशा रहे सब से न्यारी ॥ सत गुरु की०

सत्त नाम को सुभिर नित, बुद्धि मन ठैराय ।

परख ले महिमा अगम की, नहीं माया भरमाय ॥

नहीं चिन्ता सतावेगी भारी ॥ सत गुरु की०

राधास्वामी दीन हित, सच्चे दीन दयाल ।

रक्त मेरे होगये, अब क्यों व्यापे काल ॥

राधास्वामी चरन की बलिहारी ॥ सत गुरु की०

[२२-४८९]

मुझे दीन दयाल शरन दीजे, गहूँ ओट चरन की शरन दीजे ॥टेक॥

तुम्हें न भूलूँ रात दिन, भूलूँ अपनी देह ।

नाम में लबलागी रहे, त्यागे जग का नेह ॥

करे सुभिरन ध्यान वह मन दीजे ॥ मुझे दीन०



बल शक्ति से हीन हूँ, चित का महा मलीन ।

दया कीजिये दीन पर, आपके हैं आधीन ॥

सुधरे सँभले वह यतन दीजे ॥ मुझे दीन०

आज तुम्हारी कृपा से, जग से हुआ निरास ।

नहीं भरोसा किसी का, आपका हुआ विश्वास ॥

भक्ति का दिव्य रतन दीजे ॥ मुझे दीन०

आरत की यह बीनती, सुनिये दयाल कृपाल ।

संयम भरम को मेट कर, तन छिन करो निहाल ॥

निर्धन को प्रेम का धन दीजे ॥ मुझे दीन०

एक तुम्हारी चाह हो, और न कोई चाह ।

सब विधि हो रहूँ आपका, सहित उमंग उत्साह ॥

मन सधे वही साधन दीजे ॥ मुझे दीन०

दृष्टि में आओ मेरे, दर्शन घट में नित ।

यही है सच्ची लालसा, इसी से मेरा हित ॥

दृढ़ प्रेम हो ऐसा बचन दीजे ॥ मुझे दीन०

राधास्वामी जगत के, तुम हो पितु और मात ।

बने काम एक दृष्टि से, मिटे सकल उत्पात ॥

सत पद का सत जीवन दीजे ।

[२३-४६०]

मेरे घट में गुरु अविनासी बसे, मन बुद्धि भक्ति के रस से रसे ॥ टेक ॥

बाग में फूल गुलाब का, खिल कर शोभा दे ।

सिंध में मोती सीप हो, जो जिसका होले ॥

सब अपने अपने भाव लसे ॥ मेरे घट में

बन में नाचे मोरगन, फूले फले बन राय ।

जिसकी जैसी गति रुचे, गति मति से हर्षाय ॥

प्राकृत दशा से सकल हँसे ॥ मेरे घट में



चाह नहीं संसार की, भक्ति प्रेम की चाह ।

राधास्वामी की दया, गुरु के हाथ निवाह ॥

बरसा प्रेम की घट बरसे ॥ मैं घट में

[२४-४६१]

तुम भूले भूले भूल गये, मन ममता में पड़ कर फूल गये ॥ टेका ॥

मन मत में गुरुमत रहे, मन मत है अहंकार ।

अहम् भाव हृदय बसा, अपना किया अपकार ॥

माया के हिन्डोले भूल गये ॥ तुम भूले ०

दो दिन का रहना यहाँ, गुरु से करलो हेत ।

भव दारुन से तरन का, यही सुगम है सेत ॥

यहाँ से प्रतिकूल अनुकूल गये ॥ तुम भूले ०

भूल भुलैयाँ जगत है, भूले बहु विधि भूल ।

अन्त काल सिर सहेंगे, दुखदाई त्रिखल ॥

लघु भूल गये बहु भूल गये ॥ तुम भूले ०

भव सागर उमड़े सदा, उठे लहर अपार ।

गुरु के साथ में मानुवाँ, सहज उतरजा पार ॥

नहीं जो समझे जड़ मूल गये ॥ तुम भूले ०

राधास्वामी दीन हित, दीन दयाल महान ।

कर उनका सतसंग नित, आनन्द का हो भान ॥

सतसंग से भव के खल गये ॥ तुम भूले ०

[२५-४६२]

मैं आई सतगुरु की शरनी, नर जनम सुफल भया अब सजनी ॥ टेका ॥

नहीं सुख बाद विवाद में, पक्षपात सुख नाँहि ।

द्वेष ईर्ष्या सुख कहाँ, सुख भक्ति के माँहि ॥

तज सबको करूँ प्रेम करनी ॥ मैं आई ०



ग्रंथी ग्रंथन की खुली, पच पच मरी पद ग्रन्थ ।
 गुरु मिले शीतल भई, लख सत पद का पन्थ ॥
 नहीं भूल करूँ कथनी बदनी ॥ मैं आई०
 भाग जगा सोया मेरा, दया करी गुरु देव ।
 सब की आसा त्याग कर, मेटा मन का भेव ॥
 क्यों मृत्यु लोक में नित मरनी ॥ मैं आई०
 अवश्यमेव भोक्तव्यम्, कृतकर्म शुभाशुभम् ।
 गुरु चरणम् नमस्तव्यम्, सद्गुरुम सर्व परम् ॥
 जैसी करनी वैसी मरनी ॥ मैं आई०
 विज्ञानं सद्प्रसादेना, गुरु विन शब्द न कथ्यते ।
 जपस्तपो व्रतं तीर्थं, विन गुरुपद न लभ्यते ॥
 राधास्वामी नाम सदा भजनी ॥ मैं आई०

[२६-४६३]

पहुँचादो प्रेम नगरियाजी, मैं तो भूल गई हूँ डगरियाजी ॥ टेका ॥
 चलते चलते थक गई, और न स्रभे छोर ।
 कहाँ को चली हूँ सुध नहीं, बहका मन चित चोर ॥
 रस्ते में पाऊँ रगरिया जी ॥ पहुँचादो
 चलते चलते दिन गया, साँझ आई और रात ।
 कहाँ ठहरूँ जाऊँ कहाँ, समझ न आई बात ॥
 हो सके तो करदो उजरियाजी ॥ पहुँचादो
 मैं तुमको भूली नहीं, भूली अपनी देह ।
 ऐसी भूली सुध नहीं, कहाँ ग्राम कहाँ गेह ॥
 तुम कैसे मुझको बिसरियाजी ॥ पहुँचादो
 नाम तुम्हारा होंट पर, मन में तुम्हारा ध्यान ।
 देह पड़ी है पन्थ में, निकट तुम्हारे प्रान ॥
 क्या कहूँ जो मुझ पै, गुजरिया जी ॥ पहुँचादो



भूखी प्रेम के स्वाद की, प्यासी प्रेम के नीर ।

प्रेम ज्ञान गुरु दीजिये, जो तुम धार गम्भीर ॥

भरो घट की प्रेम गगरिया जी ॥ पहुँचादो

पन्थ में नंगे पांव हूँ, दुख से रही घबराय ।

काँटा लगा बिरह का, तड़प तड़प अकुलाय ॥

क्यों लेते नहीं हो खबरिया जी ॥ पहुँचादो

राधास्वामी इष्ट पद, धुर पद सर्वाधार ।

कब पहुँचूँगी चरन में, भव के दुख सुख टार ॥

भोगूँगी सत की सेजरिया जी ॥ पहुँचादो

[२७-४६४]

नहीं कर्मी हुई नहीं ज्ञानी हुई, मैं अपने गुरु की अभिमानी हुई ॥ टेक ॥

गुरु गम निगमागम मता, है रहस्य का भेद ।

जो कोई जाने भेद यह, सहे न भव का खेद ॥

गुरु मिले सहज निर्वानी हुई ॥ नहीं कर्मी

निश्चल जप तप यम नियम, संयम ज्ञान विचार ।

जब लग गुरु का संग नहीं, कठिन जीव उद्धार ॥

गुरु भक्ति विवेक की खानी हुई ॥ नहीं कर्मी

गुरु मूरति हृदय बसी, ध्यान धारना पाय ।

समता आई चित्त में, यह समाधि समुदाय ॥

कर योग यत्न गुरु ध्यानी हुई ॥ नहीं कर्मी

समता गुरु के रूप में, लख लख गुरु का रूप ।

समदर्शी मैं होगई, तज चंचलता कूप ॥

गुरु प्रेमी बनी मस्तानी हुई ॥ नहीं कर्मी

गुरु अखंड है सिंघगति, जीव है बुन्द समान ।

राधास्वामी की दया, लिया रहस्य पहिचान ॥

पड़ सागर पानी पानी हुई ॥ नहीं कर्मी



[२८-४६५]

निज दरस दिखादो अपना पिया, मेरा तरस रहा है बहुत जिया ॥टेका॥

आँखों में भाई पड़ीं, राह निहार निहार ।

जिन्हा में छाले पड़े, नाम पुकार पुकार ।

किसने कभी जप तप ऐसा किया ॥ निज दरस

सहस्र नेत्र देखूँ तुम्हें, सहस्र कमल भ्रूमध्य ।

सहस्र जोत निरखत रहूँ, दोऊ आँख कर बंद ।

दर्शन बिन नित अकुलाय हिया ॥ निज दरस

त्रिकुटी चढ़ छवि को लखूँ, लाल का अपने रूप ।

अँखियन में लाली खुबे, ओम ओम कहूँ भूप ।

लाली जोती का बालूँ घट में दिया ॥ निज दरस

मुन्न सरोवर स्नान कर, चन्द्रकार मुख लेख ।

तन मन बुद्धि चित खो रहे, रूप तुम्हारा देख ।

तब मानूँगी दरस का चैन लिया ॥ निज दरस

अँखियाँ एकटक घूम रहीं, अंशा अंशी समान ।

भँवर गुफा सोहंगमा, सोहंग सोहंग भान ।

अब दरस अमी रस घोल लिया ॥ निज दरस

देख लिया भ्रान्ती गई, सत सरूप तुम पीव ।

भर्म मिटा दो एक का, नहीं ब्रह्म नहीं जीव ।

राधास्वामी ने मेरा उपकार किया ॥ निज दरस

अलख अगम अद्वैत तुम, अकह अपार अनाम ।

अकथ कथा विचार कर, चुप हुई सुरत सुजान ।

राधास्वामी हिये का टाँका सिया ॥ निज दरस

[२९-४६६]

रुहो है यहां सत की बजरिया जी, मुझे लेनी है प्रेम चदरिया जी ॥टेका॥

मोल तोल नहीं करूँगी, प्रेम वस्तु अनमोल ।



सीस काट दूँगी अभी, सुनकर प्रेम का बोल ।

मैं ओढ़ के बनूँगी गुजरिया जी ॥ कहीं है०
 प्रेम प्रेम सब कोई कहे, प्रेम न जाने भेद ।
 सौदा करे जो प्रेम का, सहज भिटे भव खेद ।

माया की पड़े न नजरिया जी ॥ कहीं है०
 एक प्रेम की चाह है, और न दूजी चाह ।
 प्रेम रतन जिसको मिले, जग में शाहन्शाह ।

कोई प्रेम के पन्थ न परियो जी ॥ कहीं है०
 बाढ़े पाकर भक्त जल, जैसे कमल की नाल ।
 घटे न तिलभर वह कभी, प्रेम की ऐसी चाल ।

जिसे प्रेम मिले नहीं मरिया जी ॥ कहीं है०
 प्रेमी ढूँढ़त मैं फिरूँ, प्रेमी मिले न कोय ।
 प्रेमी से प्रेमी मिले, प्रीतम प्रगटे सोय ।

जप तप में आयु गुजरिया जी ॥ कहीं है०
 घटे बढ़े रोये हँसे, उसे न कहना प्रेम ।
 प्रेमभाव मन में बसा, नहीं तप संयम नेम ।

बसे छिन में प्रेम नगरिया जी ॥ कहीं है०
 प्रेम पियाला जो पिये, काटे अपना सीस ।
 तब प्रीतम का स्वाद ले, निकट हो विश्वा बीस ।

नहीं किसी को उसकी खबरिया जी ॥ कहीं है०
 आपा अपना लख पड़े, घट जब प्रेम बसाय ।
 राता माता नाम मद, नहीं कहीं आवे जाय ।

क्यों भरम के कूप में गिरिया जी ॥ कहीं है०
 एक रस प्रेम का स्वाद है, पीते करे निहाल ।
 इसका पीना कठिन है, माँगे सीस कलाल ।

नहीं माया की वह कलवरिया जी ॥ कहीं है०



पन्थ सम्प्रदा बहुत हैं, मत और धर्म अनेक ।

प्रेम का रस्ता किधर है, जो नित परखे एक ।

बन्दू चलकर प्रेम नगरिया जी ॥ कहीं है०

वाद विवाद में प्रेम कहां, पक्षपात नहीं होय ।

प्रेम दिवानी हो रहूँ, मन की दुविधा खोय ।

तन मन धन को बिसरिया जी ॥ कहीं है०

पढ़ पढ़ कर मर मर गये, लाखन पोथी ग्रन्थ ।

लख नहीं पाया एक ने, प्रेम का सच्चा पन्थ ।

द्रोष अग्नि में जर जर मरिया जी ॥ कहीं है०

प्रेम का मारा नहीं जिये, कितना करो उपाय ।

जनम मरन के टाट को, उलट दिया सिमटाय ।

किसे कभी लगी प्रेम कटरिया जी ॥ कहीं है०

काम क्रोध मद लोभ सब, छिन में जावे भाग ।

भसम करे माटी करे, प्रेम प्रचण्ड की आग ।

दुविधा दुचिता सब टरिया जी ॥ कहीं है०

प्रेम प्रेम नित प्रेम हो, प्रेम की बन्धी टेक ।

प्रेम महा बलवान है, लखे न एक अनेक ।

इस प्रेम से कोई न लरिया जी ॥ कहीं है०

सुरत शब्द में प्रेम है, शब्द सुरत में प्रेम ।

अन्धकार मेटे सकल, घट में जरे सब टेम ।

सब विद्या अविद्या बिसरिया जी ॥ कहीं है०

ढूँढ़त ढूँढ़त थक गई, मिला न प्रेम का घाट ।

घर बाहर की ना रही, हो गई बारह बाट ।

मिला प्रेमी पुरुष न तिरिया जी ॥ कहीं है०

आई हूँ जाऊँ नहीं, रगर प्रेम की धार ।



जो होना हो हो रहे, मरूँगी तीन को मार ।
 नहीं छोड़ूँगी अब तो रगरिया जी ॥ कहीं है०
 प्रेम चदरिया ओढ़ कर, अब तो चली दरबार ।
 सुरत सहेली सुहावनी, पायेगी दीदार ।
 राधास्वामी नितनाम सुमिरया जी ॥ कहीं है०

[३०-४६७]

गुरु का नहीं सीखा रंग ढंग, माया ने कर दिया चित को भंग ॥ टेका ॥
 क्या करना था क्या किया, करता धरता बन ।
 कहाँ से कहाँ को ले गया, बहका कर यह मन ॥
 सूझी उसे देखो क्या तरंग ॥ माया ने०
 शुक आया गुरुदेव हो, सुनो परीक्षित बात ।
 करले अपने काम को, नहीं यम करे उत्पात ॥
 दिन सात में काटे फिर भुजंग ॥ माया ने०
 पड़े परीक्षा कठिन है, पूरा उतरे जो ।
 वही परीक्षित शिष्य है, शुक का गुरु मुख सो ॥
 मन में रहे नित भक्ति उमंग ॥ माया ने०
 समय मिला अवसर मिला, खोया समय अमोल ।
 देख देख अचरज महा, मुख नहीं आवे बोल ॥
 इस दशा को लख हुआ हृदय दंग ॥ माया ने०
 भरमा भरमा भटक कर, जनम को दिया गँवाय ।
 अब पछताये क्या बने, हाथ न कुछ भी आय ॥
 क्यों पीली भरम की घोल भंग ॥ माया ने०
 चलना है दस दिवस में, रहना नहीं है मीत ।
 तजो न माया उलझ कर, भक्ति भाव की रीत ॥
 गुरु देव को करलो अंग संग ॥ माया ने०



दरस परस मंजन करो, पियो प्रेम का नीर ।

राधास्वामी की दया, मन के बनो गम्भीर ॥

देखो देखो है बहती प्रेम गंग ॥ माया ने०

[३१-४६८]

घट में खुली प्रेम की क्यारी जी, निरखूँ नित छवि फुलवारी जी ॥टेका॥

श्रद्धा फूल गुलाब का, जूही दया का फूल ।

देख देख आनन्द लहूँ, तन मन की सुध भूल ॥

यह हृदय हुआ सुखकारी जी ॥घट में खुली०

मन लोभी भँवरा बना, लोभा देख बिलास ।

रात दिवस हर्षत उड़े, त्याग जगत की आस ॥

यह दशा है अति ही भारी जी ॥घट में खुली०

फूली फूली मैं फिरूँ, सदा मगन मन माँहि ।

अब किस की चिंता करूँ, चिंता कोई नाहि ॥

भक्ति लगी चित को प्यारी जी ॥घट में खुली०

बास सुबास को पाल कर, अब क्यों रहूँ उदास ।

बसी बसी बस बस गई, बसी प्रेम की बास ॥

नहीं फिरूँगी मारी मारी जी ॥घट में खुली०

सत चित आनन्द बाटिका, अन्तर शोभा दे ।

नित सुख और मंगल लहूँ, प्रेम का सौदा ले ।

करूँ पल पल में रखवारी जी ॥घट में खुली०

धन्य भाग सतगुरु मिले, दिया प्रेम का दान ।

दान पाय धनवान हूँ, खुली प्रीत की खान ॥

प्रगटी उभरी उजियारी जी ॥घट में खुली०

राधास्वामी की दया, पाई बिमल बहार ।

सीचूँ क्यारी को सदा, दुर्मति दुर्गति टार ॥

बनवारी की हूँ दरवारी जी ॥घट में खुली०



[३२-४६६]

जग बहती है भक्ति की देखो गंग, तुम निर्मल करलो अपना अंग ॥टेका॥

दरस परस मंजन करो, पियो प्रेम का नीर ।

मेढो दुख त्रय ताप को, ठंडा करो शरीर ॥

भूलो नहीं करलो सत का संग ॥ जग बहती है०

आँखें हर्षी देख कर, चित बाढ़े अनुराग ।

सुभिरन ध्यान में मन लगे, दुश्चिताई को त्याग ॥

उठे प्रेम प्रतीत की नित तरंग ॥ जग बहती है०

गंगा के तट आय कर, बिन नहाये नहीं जाओ ।

भव सागर के तरन का, यही है एक उपाओ ॥

रहे हिया जिया में सच्ची उमंग ॥ जग बहती है०

नर शरीर के मैल हैं, काम क्रोध अभिमान ।

छूटेंगे जब करोगे, गुरु संग गंगा स्नान ॥

आलस का न आने पाये ढंग ॥ जग बहती है०

ढारस श्रद्धा भाव की, रहे हिये में छाँय ।

राधास्वामी की दया, भव दारुण न सताय ॥

यह समझलो गुरु है अंग संग ॥ जग बहती है०

[३३-५००]

मेरे घट की क्यारी हरी रहे, क्यों हरी अकेली भरी रहे ॥टेका॥

खिले गुलाब प्रतीत का, शोभा क्यारी दे ।

फूले सुगंधी प्रेम की, सब कोई आनन्द ले ॥

अँखियों को दृश्य की तरी रहे ॥ मेरे घट०

चंपा दया का फूल दे, फूल दया के फूल ।

भरम का भँवरा सन्निकट, कभी न आवे भूल ॥

फूलों की निरंतर भरी रहे ॥ मेरे घट०



सेवति केतकी मोतिया, शान्ती जूही कुन्द ।
 एक रूप भासैं सदा, मेट कुरंगी द्वन्द ॥
 सम दृष्टि चमेली खरी रहे ॥ मेरे घट ०
 भक्ति अनार में फूल लगे, फूटी लाली नित ।
 बिगसैं कमल उमंग के, देख के उमगे चित ॥
 माया की बेली मरी रहे ॥ मेरे घट ०
 सुरत मालिनी गूधकर, लाये भाव का हार ।
 हरषे आनन्द सुख लहे, राधास्वामी गले डार ॥
 दुष्कर्म कटेली जरी रहे ॥ मेरे घट ०
 [३४-५०१]

अब दरस की चाह उठी भारी, मुझे दरस दे हरो विपता सारी ॥ टेक ॥
 दृष्टि जमाऊँ रूप में, रूप में चित ठैराय ।
 करो दया से मेरी रखवारी ॥ अब दरस
 आँखों में मेरे बसो, देखूँ तुमको नित ।
 इसी दरस के आसरे, सच्चा मेरा हित ॥
 हो दुखियों के तुम हितकारी ॥ अब दरस
 एक टक देखूँ आँख भर, पलक न कभी भ्रमाय ।
 जीवन मेरा सुफल हो, सत गुरु करो सहाय ॥
 सहज में जाऊँ पारी ॥ अब दरस
 चित चकोर चन्दा बने, चन्द्र मेरे गुरु देव ।
 देवी देव को त्याग कर, करूँ तुम्हारी सेव ॥
 लखूँ अन्तर में सुरत प्यारी ॥ अब दरस
 खुली आँख देखूँ तुम्हें, घट की आँखें खोल ।
 राधास्वामी दीन हित, चित को करो अडोल ॥
 चरन शरण की बलिहारी ॥ अब दरस





[३५-५०२]

मुझे तार दो मेरी है बारी, तुम हो गुरु सच्चे हितकारी ॥ टेक ॥
 त्राहि त्राहि चरनों पड़ी, व्याकुल जिया घबराय ।
 दीन दुखी की ओर लख, सतगुरु बनो सहाय ।
 काटो जग का संकट भारी ॥ मुझे तार
 भव समुद्र का पार नहीं, उठे लहर अपार ।
 साथी संगी कोई नहीं, नाव पड़ी मझधार ।
 अब तक मैं फिरी मारी मारी ॥ मुझे तार
 किसी का नहीं है आसरा, नहीं कोई आधार ।
 तुम बिन कोई सूझे नहीं, करे जो मेरी संभार ।
 गुरु तुम हो सच्चे हितकारी ॥ मुझे तार
 सहजो तरी दया तरी, मीरा तर गई नाथ ।
 शबरी तर गई भीलनी, पकड़ तुम्हारा हाथ ।
 मेरी ओर करो दृष्टि न्यारी ॥ मुझे तार
 राधास्वामी दीन हित, निहकामी निज देव ।
 संकट काटो दुख हरो, मेटो मन का भेव ।
 मैं जाऊँ सहज भव जल पारी ॥ मुझे तार

[३६-५०३]

जब गुरु की बंधी मन में आसा, अज्ञान भरम घट का नासा ॥ टेक ॥
 अखंड मंडलाकारम्, व्याप्तम् एन चराचरम् ।
 अद्भुतम् एकम् केवलम्, गुरु चरणम् नित्यं बन्दनम् ।
 नहीं जाऊँ सुमेरु और कैलासा ॥ जब गुरु०
 सत्यम् चित्तम् आनन्दम्, अकथ अनीह अगोचरम् ।
 अधिष्ठानम् आधारम्, कूटस्थ नमाम्यहम् ।
 घट लख पड़े ज्ञान का परकासा ॥ जब गुरु०
 माया रहितम् मंगलम्, अमलम् निर्मलम् सदा ।



नमो नमो पद पंकजम्, सेवितम् पद सर्वदा ।

गुरु चरन में मिला मुझे बासा ॥ जब गुरु०

विराटम् च हिरण्यगर्भम्, सबलम् शुद्धम् दुर्लभम् ।

ओंकारम् च सोहंगम्, सत्यम् सत्यम् वराननम् ।

राधास्वामी ने काटा यम फाँसा ॥ जब गुरु०

[३७-५०४]

सुरत चढ़ गई आज अटरिया जी, खोली भ्रूमध्य कुठरिया जी ॥ टेका ।

सहस्रकमलदल ज्योति लख, ज्योति निरंजन बास ।

पचरंगी फुलवारी खिली, फैली बास सुवास ।

धुन घंटा शंख उचरिया जी ॥ सुरत०

त्रिकुटी गढ़ लंका चढ़ी, मेघनाद सुन कान ।

लाली ऊषा मध्य में, लाल सूर का भान ।

धुन ओ३म् मृदंग पकड़िया जी ॥ सुरत०

सुन्न सिखर कैलाश में, चन्द्र का दरसन पाय ।

आगे बढ़ी उमंग से, सारंगी धुन गाय ।

तिस परे थी घोर अंधिरिया जी ॥ सुरत०

गुरु बल अंधियारी मिटी, किया मानसर स्नान ।

चार गुप्त धुन मधुर बहु, पड़ी सुरत के कान ।

नहीं जाये वह लीला विसरिया जी ॥ सुरत०

भँवर गुफा आई महल, सोहंगम् दरबार ।

महाकाल का निरखकर, सहज किया दीदार ।

यहाँ बाजी सुरीली बाँसुरिया जी ॥ सुरत०

घूमी फिरी विचार कर, पाया अद्भुत भेद ।

सोहं सोहं कह बढ़ चली, भेट करम का भेद ।

चौड़ी थी भँवर भँवरिया जी ॥ सुरत०

पहुँची सत मैदान में, चौड़ा उसका घाट ।

सत सत सत बानी प्रगट, सत सत सत का ठाठ ।



यहाँ बीन मधुर सुन तरिया जी ॥ सुरत०

अलख अगम का दरस कर, गुप्त भेद लिया चीन्ह ।

सुरत सखी हरषी बहुत, अब नहीं दीन अधीन ।

राधास्वामी चरन में परिया जी ॥ सुरत०

धन्य धन्य तुम धन्य हो, सतगुरु सर्वाधार ।

तुम्हरी महिमा दया का, कहीं नहीं वारापार ।

भिली ओढ़ के शब्द चुनरिया जी ॥ सुरत०

[३८-५०५]

षट अषट प्रेम की घटा छाई, भक्ति गुरु रिमझिम भरी लाई ॥ टेक ॥

तीन ताप का दुख मिटा, प्रीति लता रही छाया ।

ज्ञान कर्म जप तप क्रिया, कै भोगे समुदाय ।

सुरत शब्द की वर्षा जब आई ॥ घट०

शीतल तन में आत्मा, प्रेम की ठंडक पाय ।

द्वेष ईर्ष्या अग्नि को, छिन में दिया बुझाय ।

मस्ती से फिरे सुरत मगनाई ॥ घट०

इन्द्री देह के भर गये, नद नाले और कूप ।

धार जो फूटी प्रेम की, होगई सिंधु स्वरूप ।

तब जीव को ब्रह्म दशा भाई ॥ घट०

सिंधु बुन्द दोऊ एक हैं, एक हैं एक समान ।

सिंधु में बुन्द अनेक हैं, बुन्द में सिंधु रहान ।

नहीं बुन्द सिंधु रहे बिलगाई ॥ घट०

बुन्द समाना सिंधु में, यह जाने सब कोय ।

सिंधु बुन्द में है छिपा, नजर न आवे सोय ।

जब गुरु मिले ऐसी समझ पाई ॥ घट०

बुन्द का भाव कहाँ प्रगट, बुन्द ही सिंधु रहाय ।

सिंधु में बुन्द की खान है, बुन्द में सिंधु समाय ।

बिरले जन को प्रतीत आई ॥ घट०



सिंधु बुन्द तू क्या करे, अनसमझे की बात ।
 बुन्द अधार यह सिंधु है, देख के कर साक्षात ।
 है बुन्द से सिंधु की प्रभुताई ॥ घट०
 जीव ब्रह्म में है बसा, जब घट आवे प्रेम ।
 ब्रह्म जीव में कहाँ रहे, क्या है उसका नेम ।
 जा गुरु की ले अब शरनाई ॥ घट०
 बुन्द में बुन्द और सिंधु है, सिंधु बुन्द है सिंधु ।
 सोच समझ मन में भला, कहाँ दोनों की संधि ।
 घट बैठ परख यह सच्चाई ॥ घट०
 राधास्वामी गुरु मिले, भेद दिया भरपूर ।
 सुरत शब्द शब्द सुरत है, भरम भया तब चूर ।
 हरखत मन गुरु महिमा गाई ॥ घट०

बिनती

[५०६]

गुरु के चरन सरोज में, कोटि कोटि दंडोत ।
 गुरु की दया अपार से, छूटे भव के खोट ॥
 तीन ताप के भँवर में, बूढ़े बारम्बार ।
 गुरु समरथ ने दया की, बूढ़त लिया निकार ॥
 गुरु समान दाता नहीं, गुरु समान नहीं देव ।
 गुरु की पल पल बंदना, निस दिन कीजे सेव ॥
 गुरु आज्ञा में जायकर, तन मन सीस झुकाय ।
 काल करम से बचन का, और न कोई उपाय ॥
 गुरु से कुछ माँगूँ नहीं, उनसे माँगूँ यह ।
 राधास्वामी दया करो, कर चरनन की खेह ॥



प्रार्थना

[५०७]

दीन हित करुना निधान, कृपाल सुख सागर महा ।
 जान अपना दास दीजे, भक्ति प्रेम की सम्पदा ॥
 आया शरणागत तुम्हारे, त्याग सब का आसरा ।
 एक तुम्हारी आस है प्रभु, कीजिये मुझ पर दया ॥
 बुन्द केहि विधि सिंधु तजकर, पाये सुख अरु शांती ।
 ज्ञान घन के रूप तुम हो, मेट दो सब भ्रांती ॥
 है तुम्हारी सब में सत्ता, सत्त मुझको कीजिये ।
 काल माया से छुड़ाकर, मुक्ति का पद दीजिये ॥
 राधास्वामी सतगुरु, करतार गुन निर्गुन हो तुम ।
 नाम सच्चा दान दीजे, सत्यनाम की धुन हो तुम ॥

ग्यारहवीं धुन

[१-५०८]

अपनी शरण में लेलो, मेरे कृपाल दाता ।
 चरणों की भक्ति देदो, मेरे दयाल दाता ॥१॥
 दुख कष्ट के भ्रमेले, दिन रात मैंने भ्रमेले ।
 पापड़ इन्ही के बेले, मेरे दयाल दाता ॥२॥
 बोझा है भारी सिर पर, फिरता हूँ मारा दूर दूर ।
 हैं एक जैसे वन घर, मेरे दयाल दाता ॥३॥
 भक्ति न ज्ञान पाया, भ्रमा भ्रम में आया ।
 अज्ञान घट में छाया, मेरे दयाल दाता ॥४॥



संकट में मैं फँसा हूँ, दुख कष्ट में बसा हूँ ।
 दलदल में मैं धँसा हूँ, मेरे दयाल दाता ॥५॥
 दुखिया की लाज रखलो, चरनों की छाँह देदो ।
 दृष्टि मेहर की करदो, मेरे दयाल दाता ॥६॥
 राधास्वामी दीन हितकर, अपनी शरण में रखकर ।
 निज धाम दो दया कर, मेरे दयाल दाता ॥७॥

[२-५०६]

तुम बिन नहीं है कोई, मेरे दयाल दाता ।
 रखना कृपा की दृष्टि, मुझ पर कृपाल दाता ॥१॥
 जब से जगत में आया, दुख में बिताये दिन को ।
 शरनाई ली चरन की, अब कर निहाल दाता ॥२॥
 माया का जाल भारी, चहुँ ओर में तना है ।
 हाथों को अपने फैला, निस दिन संभाल दाता ॥३॥
 अपराध क्या किये थे, ऐसा जो जन्म पाया ।
 गहरी है भव की खाई, उससे निकाल दाता ॥४॥
 रख लाज मेरी अब तू, तेरा ही आसरा है ।
 मुझको न अब सताये, बेपीर काल दाता ॥५॥
 संकट में मैं घिरा हूँ, बुद्धि नहीं ठिकाने ।
 आकर बचाले मुझको, तू बाल बाल दाता ॥६॥
 दे पद कमल की छाया, तुझसे लगी रहे लव ।
 राधास्वामी तुम अकेले, हो प्रतिपाल दाता ॥७॥

[३-५१०]

देखा है रूप बाहर, अंतर में अब दिखादो ।
 बानी सुनी जो मुख से, अंतर में अब सुनादो ॥१॥
 बाहर दिया सहारा, अंतर की अब है बारी ।
 दोनों की करदो समता, ऐसी विधि मिलादो ॥२॥



व्यापक हो सब जगह हो, सब वस्तु में मिले हो ।
 आपे में मेरे प्रगटो, परदा अभी उठादो ॥३॥
 तुम हो तुम्हारे सत का, सत्ता ही यह जगत है ।
 फिर भेद क्यों है स्वामी, मेरा भरम मिटादो ॥४॥
 अज्ञान ज्ञान में क्यों, क्यों ज्योति में अंधेरा ।
 यह पूछता हूँ तुम से, अब यह मरम जतादो ॥५॥
 तुम हो तो कौन मैं हूँ, मैं तू का क्यों है भगड़ा ।
 जी चाहता है खुलकर, अंधेरा यह मिटादो ॥६॥
 गुरु राधास्वामी प्यारे, आँखों के मेरे तारे ।
 सेवक हूँ मैं तुम्हारा, चित से मुझे चितादो ॥७॥

[४-५११]

तुम कौन और क्या हो, अपना पता बतादो ।
 क्या रूप नाम क्या है, कैसे हो यह जतादो ॥१॥
 कहता है कोई निगुण, कोई सगुण बताता ।
 मैं पूछता हूँ तुम से, तुम भेद यह सुनादो ॥२॥
 सुनता हूँ नाम को नित, पर नाम रूप क्या है ।
 जब नाम है तो फिर अब, निज रूप को दिखादो ॥३॥
 मन से मनन हो चिंतन, आँखों से पाऊँ दर्शन ।
 बानी का मुख से श्रवण, ऐसी विधि मिलादो ॥४॥
 जब हो तो आओ आगे, आँखों को खोल देखूँ ।
 ऐसे न मानूँगा मैं, तुम आके अब मनादो ॥५॥
 हट से यही प्रतिज्ञा, संकल्प दृढ़ है पूरा ।
 बिनती यही है निसदिन, बिगड़ी को अब बनादो ॥६॥
 गुरुदेव राधास्वामी, तुम से लगन लगी है ।
 तुमको न भूलूँ दाता, ऐसा मुझे चितादो ॥७॥



[५-५१२]

लैता हूँ नाम तेरा, दाता दयाल है तू ।
 कर अब संभाल मेरी, मेरा संभाल है तू ॥१॥
 तेरी दया हुई जब, फिर काल का भ्रम क्यों ।
 यह मैंने समझा मन से, सच्चा कृपाल है तू ॥२॥
 संशय नहीं कि बहका, था जग की भ्रांती से ।
 व्यापक हृदय में स्वामी, अब बाल बाल है तू ॥३॥
 दिन रात ध्यान सुभिरन, दिन रात का भजन है ।
 मेरा श्रवण मनन तू, और मेरी चाल है तू ॥४॥
 गुरु पूरे राधास्वामी, तुझसे लगन लगी है ।
 करदे निहाल मुझको, समझा निहाल है तू ॥५॥

[६-५१३]

तेरी दया हो मुझपर, मेरे कृपाल दाता ।
 रख कर शरण में अपने, करदे निहाल दाता ॥१॥
 तेरी दया की दृष्टि, से पार जाऊँगा मैं ।
 भव सिंधु में पड़ा हूँ, उससे निकाल दाता ॥२॥
 लंपट हूँ मोह मद में, बुद्धि नहीं ठिकाने ।
 फैला के हाथ अपना, मुझको संभाल दाता ॥३॥
 बेपीर काल निस दिन, यूँ ही सता रहा है ।
 उससे बचालो मुझको, तू बाल बाल दाता ॥४॥
 गुरु पूरे राधास्वामी, तेरा ही आसरा है ।
 चहुँ ओर में तना है, माया का जाल दाता ॥५॥

[७-५१४]

आया तेरी शरण में, कर मेरी लाज प्यारे ।
 तेरी दया से पूरा, हो मेरा काज प्यारे ॥१॥
 भक्ति का आसरा हो, भक्ति दे अपनी मुझको ।



हिल चित से मैं सजाऊँ, भक्ति का साज प्यारे ॥२॥
 तुम में है सारी शक्ति, तुम में है योग युक्ति ।
 दुख से दिला दे मुक्ति, तेरा है राज प्यारे ॥३॥
 जब आगया शरन में, दुख दूर करदे मेरा ।
 कल का भरोसा क्या है, कर काम आज प्यारे ॥४॥
 गुरु दाता राधास्वामी, तेरा ही आसरा है ।
 आया शरण में तेरे, सब जग से भाज प्यारे ॥५॥

[८-५१५]

सतगुरु फकत जगत में, दुख से छुड़ाने वाले ।
 भव सिंधु में जगत के, सब हैं डुबाने वाले ॥१॥
 माता पिता तुम्हारे, तिरिया व सुत सखा रे ।
 स्वारथ से अपने सारे, नाता लगाने वाले ॥२॥
 जितने सगे घनेरे, कहते हो जिनको मेरे ।
 आखिर में कोई तेरे, नहीं काम आने वाले ॥३॥
 यम की पड़ेंगी मारें, मुझ्के जकड़ के तानें ।
 कोई न उस ठिकाने, होंगे बचाने वाले ॥४॥
 पाया मनुष्य तन को, करले पवित्र मन को ।
 भूलो न देख धन को, दौलत कमाने वाले ॥५॥
 राधास्वामी नाम सुमिरन, कर तुझको होगा दर्शन ।
 कट जाय भव का बंधन, सतपद को जाने वाले ॥६॥

[९-५१६]

ऐ शीलवन्त स्वामी, करदो मुझे सुशीला ।
 व्यौहार में कुशल हो, मैं देखूँ उसकी लीला ॥१॥
 है ज्ञान संग मेरे, रहता है तन में व्यापा ।
 मैं तुमसे पूछती हूँ, क्या मेरा है यह आपा ॥२॥
 उत्तम है ज्ञान इसमें, संदेह कुछ नहीं अब ।



अनुभव बढ़े जो मन का, संशय रहित हूँ मैं तब ॥३॥
 सत चित है रूप मेरा, सत देह ज्ञान मन है ।
 आनन्द आत्मा है, आनन्द की लगन है ॥४॥
 आनन्द मेल से हो, सुलभा दो आके उलभन ।
 गुत्थी यह मेरी सुलभे, सुन चैन पाऊँ ततछिन ॥५॥
 अज्ञान से भ्रम से, संशय से मैं दुखी हूँ ।
 ऐसी दया हो स्वामी, दुख दूर हो सुखी हूँ ॥६॥
 गुरु पूरे राधास्वामी, आई शरण तुम्हारे ।
 रख लीजो लाज मेरी, भिनती यही है प्यारे ॥७॥

[१०-५१७]

उसकी हो जुस्तजू क्या, जो अपने रूबरू है ।
 यह जुस्तजू नहीं है, तौहीने जुस्तजू है ॥१॥
 अधे बने हैं आविद, आँखें नहीं हैं खुलती ।
 क्या ढूँढ़ते हैं उसको, जो अपने दूबदू है ॥२॥
 दार्ये है अपने बायें, इसजा है और उसजा ।
 आँखें खुली तो देखा, वह अपने चारसू है ॥३॥
 क्या खीलो खाल में है, क्या फरजी हाल में है ।
 जो है जुवां पै बैठा, क्या उसकी गुफ्तगू है ॥४॥
 दिलदार और दिलवर, दिलकश है दिलरुबा है ।
 खुरशीद रू अगर है, वह मेरा माहरू है ॥५॥
 वह दिल में खुद है कायम, दिल घर है जिसका दायम ।
 दिल को संभल के देखा, वह दिल में मूबमू है ॥६॥
 राधास्वामी की मेहर से, कर शग्ल जिक्र सुन्ता ।
 पहुँचेगा अपने मसकिन, जहां तेरी जुस्तजू है ॥७॥





बिनती

[५१८]

सर्व समर्थ साइयाँ, भव द्वन्द मेटनहार ।
 अगुन सगुन अमोह अविचल, सकल जगदाधार ॥
 अजर अमर अपार अद्भुत, अगम अलख अमान ।
 तुम्हरे चरन सरोज में, प्रभु ज्ञान गम की खान ॥
 जीव निबल अनाथ आरत, सहत विपत कलेश ।
 अपनी मेहर से बन्ध काटो, ले चलो निज देश ॥
 तरन तारन नाम धारा, आये जीव के काज ।
 चरन शरन में सब पड़े हैं, राखो उनकी लाज ॥
 हाथ फेरो सीस पर, और पकड़ो उनकी बांह ।
 राधास्वामी सतगुरु, यह पड़े भव जल माँह ॥

~ ❁ ~

प्रार्थना

[५१९]

धन धन सुखदाता जग पितु माता, आदि अनन्त अमाना ।
 धन धन प्रतिपाला दीन दयाला, सार भक्ति अरु ज्ञाना ॥
 पूरन काम अनाम अमाया, गुनातीत अधिनासी ।
 भव दुख भंजन कष्ट निकन्दन, जन रंजन सुखरासी ॥
 महिमा गोतीता चरित पुनीता, गावे निस दिन जती सती ।
 शारद अज शेषा गौरि महेशा, ध्यावें पावें ज्ञान अती ॥
 धन धन असुरारी जय हितकारी, दीन जनन के सुखकारी ।
 धन मंगलकारी भव दुखहारी, धन धन धन गुरु हितकारी ॥

—:०:—



बारहवीं धुन

[१-५२०]

गुरु दाता चरण की धूर मिले ॥टेक॥

करूँ धरूँ आँखों का अन्जन, दिव्य दृष्टि भरपूर मिले ॥ गुरु०
 सूझे अण्ड खण्ड ब्रह्माण्डा, निकट पदारथ दूर मिले ॥ ”
 खुले नयन सरूप निहारूँ, माया भरम सब दूर मिले ॥ ”
 सहज सहज में सहज सहज में, प्रेम भक्ति की मूर मिले ॥ ”
 राधास्वामी चरन की आस रहे नित, सतपद का सतनूर मिले ॥ ”

[२-५२१]

गुरु दाता करो मेरी आप संभार ॥टेक॥

मैं तो करम धरम का बंधुआ, चहुँ दिस व्याप रहा संसार ॥ गुरु०
 मेरा दाव चले नहीं कोई, माया काल महा बरयार ॥ ”
 आसा तृष्णा बन्ध बन्धाना, मोह मया गले फाँसी डार ॥ ”
 अब तो आपकी शरण पड़ा हूँ, दया से कीजे मेरा सुधार ॥ ”
 राधास्वामी दीन दयाला, जान प्रान के तुम आधार ॥ ”

[३-५२२]

गुरु प्यारे दरस दो मोहि अरना ॥टेक॥

दरशन बिन मोहि चैन न आवे, रात दिवस का है तपना ॥टेक॥
 बाहर भीतर दरशन दीजे, रहे नाम का नित जपना ॥ गुरु०
 अनुभव ज्ञान की खोलदो दृष्टि, भरम का दूर करो टपना ॥ ”
 इन्द्रजाल संसार की लीला, जाग भिटे मेरा यह सपना ॥ ”
 राधास्वामी दया दृष्टि हो, काल के भय से न हो कयना ॥ ”



[४-५२३]

गुरु दाता मौज करो आज नई ॥टेका॥

अमृत वचन धार बरसादो, भूमण्डल हो सुधामई ॥ गुरु०
 सहज तरें सब भव सागर से, मुझ सम पापी कई कई ॥ "
 पतित उधारन पतित उद्धारो, नहीं नाम की लाज गई ॥ "
 भाग जगा तब दर्शन पाया, गुरु मिले अब भली भई ॥ "
 राधास्वामी ठुन्ड अवस्था मेटो, दृष्टि रहे नहीं प्रान रई ॥ "

[५-५२४]

गुरु स्वामी दया की दृष्टि करो ॥टेका॥

मेरे मन के पात्र में दाता, भक्ति प्रीति की वस्तु भरो ॥ गुरु०
 माया काल की रणभूमी में, शस्त्र अस्त्र ले अधिक लरो ॥ "
 गुरु जब मिले जिलोवन हारे, मैं न मरूँ चाहे कोई मरो ॥ "
 अपना भाग सराहूँ कैसे, भव सागर से सहज तरो ॥ "
 राधास्वामी चरन ओट नहीं त्यागूँ, अब तो शरण में आन परो ॥ "

[६-५२५]

गुरु दाता की छवि पर बलिहारी ॥टेका॥

व्यापक अव्यापक हृद बेहद, कहन सुनन से वह न्यारी ॥ गुरु०
 चरन पताल मध्य गगना पर, दिव्य सीस सोभा भारी ॥ "
 रोम रोम कोटिन रवि चन्दा, देव दनुज आज्ञाकारी ॥ "
 रूप अरूप स्वरूप अमाया, कौन कहे महिमा भारी ॥ "
 अखिल ब्रह्मांड रोम एक रहता, निराधार जगदाधारी ॥ "
 गुरु का चित्र लखे नहीं कोई, निराकार नहीं साकारी ॥ "
 सगुन अगुन अव्यक्त व्यक्त नहीं, शारद शेष कहत हारी ॥ "
 बुद्धि न बूझे मन नहिं सूझे, बानी अटकी मझधारी ॥ "
 राधास्वामी रूप में दरस मिला जब, सेवक जान प्राण वारी ॥ "



[७-५२६]

गुरु प्यारे दया करो दृष्टि संभार ॥टेक॥

मैं भूली भरमी मारग में, हिया जिया व्याप रहा संसार ॥ गुरु०
 दुविधा छल चतुराई के बस, डूब रही भव सिंधु मँझार ॥ ”
 कोई जग में मीत न मेरा, मतलब के सब कुल परिवार ॥ ”
 मैं अनजान समझ नहीं मुझमें, अपनी मेहर से करो सुधार ॥ ”
 राधास्वामी जीव हितैषी, तुम हो रचना के आधार ॥ ”

[८-५२७]

गुरु प्यारे से प्रेम लगा मेरा ॥टेक॥

सबको त्याग चरन में लागी, छूट गया मेरा तेरा ॥ गुरु०
 अन्तर धँस गई सुरत सुहागिन, शब्द रतन घट में हेरा ॥ ”
 सुन सुन धुन भई चरन दिवानी, सुन्न नगर में किया डेरा ॥ ”
 काल न व्यापे कर्म न मोहे, मिटा चौरासी का फेरा ॥ ”
 राधास्वामी दया से काज बना है, अब न पड़ूँ भव के घेरा ॥ ”



बिनती

[५२८]

सिरजन हारा पालन हारा, करतारा जगदाधारा ।
 तेरी गति मति क्या कोई जाने, वेद कहे अरम्पारा ॥१॥
 भव भय भंजन जन मन रंजन, सगुन अगुन मायाधीशा ।
 तू सुखरासी घट घट बासी, ज्ञान गुनातीत ईशा ॥२॥
 गुनआगर नागर सुखसागर, अमल विमल निर्मल दाता ।
 निज सेवक पर दयादृष्टि हो, तू है सबका पितु माता ॥३॥





प्रार्थना

[५२६]

दीन बन्धु कृपाल स्वामी, जगत के आधार ।
 प्रेम भक्ति दान दीजे, कीजे बेड़ा पार ॥
 मुक्ति की नहीं मन में इच्छा, भक्ति दीजे दान ।
 प्रेमियों का साथ दीजे, साध संगत मान ॥
 तारलीजे अधम पापी, को दया से आज ।
 राधास्वामी सतगुरु, अब मेरी तुमको लाज ॥

तेरहवीं धुन

[१-५३०]

सत संगत में अमृत बरसे, सत संगत ॥टेक॥
 मूरख जन कोई भरम न जाने, यूँ ही तृष्णा से तरसे ॥सत संगत०
 ज्ञानी पिये सुधारस नामा, सतगुरु चरन कमल परसे ॥ ”
 सार तत्व भेद लख पावे, तत्व त्रिवेक का गुर दरसे ॥ ”
 शठ सुधरहिं सत संगत पाई, सहज ही सहज काज सरसे ॥ ”
 राधास्वामी चरन पकड़ मेरे प्यारे, छोड़ो न यह सिधि निधि करसे ॥”

[२-५३१]

तेरा रूप अनूप अपार, दूजा क्या देखे ॥टेक॥
 कर सतसंग त्रिवेक सहित नित, होजा भवजल पार ॥ दूजा०
 तुझमें शब्द अनाहद गूँजे, तुझ में नूर का सार ॥ ”
 देवी देव रहें तेरे काया, तुम में ब्रह्म पसार ॥ ”
 ज्ञान ध्यान का मरम है तुझ में, तुझमें तत्व विचार ॥ ”
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, तज दे भरम विकार ॥ ”



[३-५३१]

गुरु दाता सहज में तारेंगे, गुरु दाता ॥टेका॥
 सोच विचार त्याग मन बौरे, भव निधि पार उतारेंगे ॥गुरु दाता०
 सिर पर हाथ गुरु ने फेरा, आय ही आय सँभारेंगे ॥ ”
 तेरा बल कुछ पेश न जावे, काल करम को मारेंगे ॥ ”
 ममता मोह का बन्धन काटें, बिगरी तेरी सुधारेंगे ॥ ”
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, कलि कलेश सब टारेंगे ॥ ”

[४-५३३]

यह दुनिया गोरख धन्दा है, यह दुनिया ॥टेका॥
 जड़ में चेतन चेतन में जड़, काल फाँस का फन्दा है ॥यह दुनियाँ
 कहीं अन्धे भिल दृष्टि पसारें, कहा सुभा का अन्धा है ॥यह दुनियाँ
 माया ब्रह्म ईश प्रकृती, द्वन्द्वपने का रन्दा है ॥यह दुनियाँ
 तत्व विवेक बिना यह प्राणी, करम भरम से मन्दा है ॥यह दुनियाँ
 तिमिर हिंडोले ऋषि मुनि भूलें, भूलें सूर और चन्दा है ॥यह दुनियाँ
 कल्प विकल्प ज्ञान अज्ञाना, इनमें भरमा बन्दा है ॥यह दुनियाँ
 राधास्वामी मेहर न हो जब जन पर, तब लग मति का मन्दा है ॥ ”

[५-५३४]

दो दिन का भोग बिलासा है, दो दिन का ॥टेका॥
 दृष्टि सृष्टि का सकल पसारा, अद्भुत अजब तमाशा है ॥दो दिन का
 स्वर्ग नर्क और लोक परलोका, पानी बीच बतासा है ॥ ”
 मिथ्या ब्रह्म धाम की आसा, मिथ्या गिर कैलासा है ॥ ”
 ब्रह्मा विष्णु नहीं है कल्पित, कल्पित आसा त्रासा है ॥ ”
 अनसूया अत्रय की रचना, दत्त चन्द्र दुरवासा है ॥ ”
 शत रूपा माया मनु है मन, जग जुवे का पाँसा है ॥ ”
 राधास्वामी गुरु जब हों दयाला, पल छिन में यह नासा है ॥ ”



[६-५३५]

करले निज उपकार, मानुष तन पाया ॥टेका॥

नर शरीर दुर्लभ देवन को, मन में सोच विचार ॥ मानुष
अब की चूक होय पछतावा, अवसर नहीं बारम्बार ॥ मानुष
भक्ति भाव गह ले गुरु शरनी, तज दे विषय विकार ॥ मानुष
रात दिवस रहे लम्पट जग में, भज ले सत करतार ॥ मानुष
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, जा भवनिधि के पार ॥मानुष

[७-५३६]

कर आपन घट उजियार रे, आपन घट ॥टेका॥

घट में माया ब्रह्म हैं दोऊ, ब्रह्म अग्नि उदगार रे ॥ आपन घट०
घट में गुरु घट ही में चेला, घट में शब्द है सार रे ॥ आपन०
घट में परमार्थ स्वारथ सब, घट में कुल परिवार रे ॥ आपन०
घट में करम भक्ति सत ज्ञाता, घट है सहज विचार रे ॥ आपन०
घट में हाट दुकान हवेली, घट में कर व्यौपार रे ॥ आपन०
घट में उन्मुनि सुन्न समाधी, घट का हो व्यौहार रे ॥ आपन०
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, घट सतनाम पुकार रे ॥ आपन०

[८-५३७]

तेरी काया में सत करतार, भटका क्यों खावे ॥टेका॥

काया में है माया दाया, काया स्वर्ग दुवार ॥ भटका०
काया सोध सोध निज काया, काया का भेद अगार ॥ भटका०
काया निरगुन सगुन है काया, काया ब्रह्म अपार ॥ भटका०
काया मध्ये सहस्र कमल दल, काया में ओंकार ॥ भटका०
सुन्न महासुन्न काया रहे, काया सोहंग सार ॥ भटका०
सत्त पुरुष काया के बासी, अलख अगम का द्वार ॥ भटका०
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, काया है टकसार ॥ भटका०



[६-५३८]

जब लागी सहज समाध, फिर क्या करम बने ॥टेका॥
तीरथ बरत नियम और धरमा, सब मन के हैं उपाध ॥फिर क्या
आँख खुली तब निकट वही देखा, सुरत भई बिस्माध ॥फिर क्या
द्वैत अद्वैत का भगड़ा छूटा सब, रहा न एक न आध ॥फिर क्या
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, तत समझे कोई साध ॥फिर क्या
[१०-५३६]

नर भूला भूला क्यों भटके, ले चेत सवेरा है भाई ॥टेका॥
आना जाना भरम है मनका, इसके भटके क्यों भटके ॥ ले चेत
बन्धन मुक्ति अज्ञान की बातें, मूरख सब इनमें अटके ॥ ले चेत
जा के हृदय अटक समाना, उन भटकन में वह लटके ॥ ले चेत
ज्ञानी ध्यानी मरम न जाने, उनके पास न तू फटके ॥ ले चेत
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सुन भरम साध सत पद सटके ॥”

[११-५४०]

भरम में कैसे फँसी महाराजा ॥टेका॥
मैं सतवंती सत्तधाम की, या मैं आन धँसी महाराजा ॥भरम
सुरत सहेली अगम की बासी, मृत्यु लोक बसी महाराजा ॥भरम
जनम मरन के फंद कठिन हैं, इनमें हाय नसी महाराजा ॥भरम
आनन्द रस की निस दिन पागी, मोह स्वाद रसी महाराजा ॥भरम
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सुन गुरु बचन हँसी महाराजा ॥”

[१२-५४१]

चलत दाई हमको सिंगारें अभागें ॥टेका॥
जीते बाप को लात न मारें, मरते अरथी सँवारें ॥ अभागें
इस जगत की है न्यारी लीला, कोई कोई मरम विचारें ॥ अभागें
गुरु की सेवा चित न धारी, पाछे समाध पखारें ॥ अभागें
सत गुरु खोज करो सत संगत, वह भव खेप उतारें ॥ अभागें
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु दया से सुधारें ॥ अभागें



[१३-५४२]

नर जनम गया बरबाद, मूरख ना चेते ॥टेक॥

मन इन्द्री के भोग भुलाना, इनमें कौन सवाद ॥ मूरख
करम धरम पाखंड पसारा, झूठा वाद विवाद ॥ मूरख
औरन को नित दोष लगावे, अपना अन्त न आदि ॥ मूरख
बन्धे सकल माया की रसरी, लोक लाज मरजाद ॥ मूरख
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सत्तनाम कर याद ॥ मूरख

[१४-५४३]

सतगुरु दीन अजब उपदेशवा ॥टेक॥

जब से सुनी गुरु की बानी, मिट गया मन का सकल अंदेशवा ॥सत
काल करम माया नहीं व्यापे, नासा जग का बिपत कलेशवा ॥सत
सत्त धाम से सतगुरु आये, धुरका दया से दीन संदेशवा ॥सत
शब्द योग का साधन सीखा, सुरत चली घट गुरु के देशवा ॥सत
देवी देव की गम नहीं वामे, वहाँ न ब्रह्मा त्रिगुण महेशवा ॥सत
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, कागा भया हंस के भेशवा ॥सत

[१५-५४४]

जग जाल फँसा मेरा मन पासी ॥टेक॥

समझ न आवे बूझ न पावे, दया त्याग भया सन्तापी ॥जग
अन्त समय कुछ काम न आवे, यम की जब सीस पड़े थापी ॥जग
बिन कारज उतावत मचावे, दंड सहे आपहि आपी ॥जग
भक्ति के पन्थ पग नहीं देवे, काम क्रोध की डगर नापी ॥जग
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, अब तो छोड़ा आपा तापी ॥जग

[१६-५४५]

भक्ति बिन यमपुर जावेगा ॥टेक॥

आया अकेला जाये अकेला, साथी संग न पावेगा ॥भक्ति बिन
भव की धार कठिन अति भारी, फिर फिर गोते खावेगा ॥भक्ति बिन



हाट आय सौदा नहीं कीना, यम के हाथ बिकावेगा ॥भक्ति ।

अवसर बीता उमर सिराई, अन्तकाल पड़तावेगा ॥भक्ति बिन
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, कब गुरु के गुन गावेगा ॥भक्ति०

[१७-५४६]

सत सोत से अमृत धार बहे ॥टेका॥

जो कोई सत की ओर सिधाये, तीन ताप दुख नहीं सहे ॥ सत
आस बुझे भव प्यास न लागे, माया की अग्नि नहीं रहे ॥ सत
उत से मोड़े इतसे जोड़े, सत्त पुरुष की दया लहे ॥ सत
चाह मिटे चिंता हटे मन से, घट में सुख आनन्द रहे ॥ सत
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, साध देख कर ऐसा कहे ॥ सत

[१८-५४७]

मैं तेरी न मानूँगी बात बेदरदी, जा जा जा रे ॥टेका॥

जब से पड़ी मन माया के पाले, बिलपी दुख पा पा पा रे ॥मैं तेरी
काल नगर में कलेस है भारी, सही बिपत आ आ आ रे ॥मैं तेरी
काल काग सम रार मचावे, नहीं भावे तेरा का का का रे ॥मैं तेरी
गुरु गुन गाय रहूँ हरषानी, सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सा, रे ॥मैं तेरी
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु का ध्यान हिये ला ला ला रे ॥”

[१९-५४८]

मैं होगई गुरु सत संगी हो, मैं होगई ॥टेका॥

ध्यान धरत आपा सब बिसरा, जैसे दीप पतंगी,

हाँ दीप पतंगी हो ॥ मैं होगई

भजन में देह गेह सुध भूली, ज्यों गति कीट भृंगी,

हाँ ज्यों गति कीट भृंगी हो ॥ मैं होगई

सुमिरन रंग गुरु का धारा, अब नहिं रहूँ कुरंगी,

हाँ नहिं रहूँ कुरंगी हो ॥ मैं होगई

सुमिरन भजन ध्यान निस वासर, सुरत निरत भई चंगी,

हाँ भई चंगी हो ॥ मैं होगई



राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, प्रेम की सहज उमंगी

हाँ सहज उमंगी हो ॥ मैं होगई

[२०-५४६]

चल घट की ओर सुरत प्यारी, जहाँ नित अमृत जल बरसे ॥टेका॥
घट की लीला अगम अलौकिक, घट से काज सभी सरसे ॥जहाँ०
घट में नूर सुरू शब्द सत्र, घट का बासी नहीं तरसे ॥जहाँ०
घट में राधास्वामी चरन निवासा, घट में चरन कमल परसे ॥जहाँ०

[२१-५५०]

पनिहारी पानी भरन निकरी, पनिहारी ॥टेका॥

औंधा कुवाँ अकाश में पानी, सहज ही सहज भरे गगरी ॥पनिहारी
कुआँ में तेज पुंज परकासा, जोत ही जोत में जोत जरी ॥ ”
कुवाँ से अमी धार नित बरसे, रिम फिम रिम फिम लगी भरी ॥ ”
हरष हरष आनन्द धुन गाती, ऊँचे उड़ी ज्यों उड़े परी ॥ ”
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सुरत शब्द में जाय अरी ॥ ”

[२२-५५१]

सपने की बात निराली है, सपने की ॥टेका॥

सपना तोज तेवहार का उत्सव, सपना होली दिवाली है ॥सपने की
सपना तोष बन्दूक है सपना, सपना खड़ग भुजाली है ॥सपने की
यह संसार रैन का गड़वा, कभी भरा कभी खाली है ॥सपने की
सपना माया सपना काया, सपना लोटा थाली है ॥सपने की
राधास्वामी गुरु मिल भेद बतावें, जग सपना जंजाली है ॥सपने की

[२३-५५२]

तेरे घट में भिमल बहार, तू बाहर ना जारे ॥टेका॥

तेरे घट में खेत कियारी, घट में गुल गुलजार ॥ तू बाहर
निरख परख लख धट की लीला, अन्तर सोच विचार ॥ तू बाहर
बाहर मुख बन उमर गँवाई, अन्तर मुख चित धार ॥ तू बाहर



भीतर बाहर फिर सब करले, हो जीवन उद्धार ॥ तू बाहर
अन्तर में तेरे सूरज चन्दा, भल्लके ज्योत अपार ॥ तू बाहर
शब्दनाद गूँजे घट भीतर, अनहद धुन भनकार ॥ तू बाहर
राधास्वामी योग की महिमा, कोई न बरने पार ॥ तू बाहर

बिनती

[५५३]

सहज में भव पार कर दो, नाव है मँझधार में ।
है तुम्हारे हाथ रक्षा, हूँ दुखी संसार में ॥
शब्द साखी क्या सुनूँ मैं, सुनते जी अब भर गया ।
मुझको जीता तुम न समझो, जीते जी मैं मर गया ॥
तुमने मेरी बाँह पकड़ी, अब तुम्ही को लाज है ।
राधास्वामी सतगुरु मेरे, मेरा अटका काज है ॥

~ ❀ ~

प्रार्थना

[५५४]

तुम आये इस जगत में, दीन जीव के काज ।
अब तो तारे हो बने, तुम्हें हमारी लाज ॥
हम तो आप ही पतित हैं, तुम हो पतित उधार ।
आये पड़े भव सिंध में, कीजे भव जलपार ॥
शब्द जहाज चढ़ाय कर, सुरत निरत की डोर ।
बेड़ा कीजे पार प्रभु, निरख आपनी ओर ॥
दुख भंजन मन रंजना, साज भक्ति का साज ।
दीन दुखी को तारिये, सन्तों के सरताज ॥
तुम तो समरथ साईयाँ, सब जग के आधार ।
साध संग नित दीजिये, राधास्वामी परम दयार ॥



चौदहवीं धुन

[१-५५५]

मन भजले गुरु करतार को नित, मन भजले ॥टेक॥
गुरु है आनन्दधन सुखरासी, अजर अमर घट घट के बासी ।
तेज पुञ्ज और सहज प्रकाशी, मायातीत अगम अधिनासी ।
उनके चरन लगाले चित ॥ मन भजले०

सत चित आनन्द अद्भुत मूरत, मुक्त बुद्ध शुद्ध प्रेम की मूरत ।
पाया मानुष जनम महरत, हिये का त्याग विकार कदूरत ।
गुरु से होगा तेरा हित ॥ मन भजले०

राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु दयाल हैं जग हितकारी ।
वही राम और कृष्ण मुरारी, वही ब्रह्म परब्रह्म सुरारी ।
भजन ही भक्त का उद्यम बित ॥ मन भजले०

[२-५५६]

तेरा जनम अकारथ जाय, मन कुछ चिंता कर ॥टेक॥
खेल कूद में समय गँवाया, गुरु पद कमल न नेह लगाया ।
सुभिरन ध्यान भजन बिसराया, दौरे हाथ तेरे क्या आया ।
काम बने अब क्या पछिताय ॥ मन कुछ०
करम धरम सब भ्रम की खानी, तीरथ बरत अज्ञान कहानी ।
भेद न पावे ज्ञानी ध्यानी, सब भिल पिसे माया की घानी ।
भटके माया के जाल फँसाय ॥ मन कुछ०
भूल भुलैय्याँ जग व्यौहारा, मिथ्या है प्रपंच पसारा ।
योनी जुये में जनम को हारा, राधास्वामी नाम न सुभिर विचारा ।
गुरु संग कोई बड़भागी पाय ॥ मन कुछ०





[३-५५७]

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना ।
नीचे नीच नीच की संगत, नीच भाव में नीच की रंगत ।
त्याग कुसंगत कर सतसंगत, भव के दुख सुख क्यों सहना ॥ टेका ॥

सीधा मारग जगत का, उलटा सन्त का पन्थ ।

जो कोई उलटे मग चले, सो पावें निज कन्थ ।

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना ॥
नीचे माया नीचे काया, नीचे भाँई नीचे छाया ।
इसके भरम में जो कोई आया, सो तो रहा यम बंध बंधाया ।
भव के भरम में क्यों रहना ॥ तुम उलट ०

ऊँचे गंग तरंग है, ऊँचे जमुन का नीर ।

ऊँचे सरस्वती धार है, सिंधु अथाह गम्भीर ।

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना ॥
नीचे कष्ट कलेश है भारी, नीचे भाया करे दुखारी ।
करम भरम में पड़े संसारी, सार न पावें माया धारी ।
तीन तार में क्यों दहना ॥ तुम उलट ०

ऊँचे सूर्य प्रकाश है, ऊँचे चन्द्र की जोत ।

ऊँचे ज्ञान भण्डार है, ऊँचे सत का सोत ।

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना ॥
नीचे नीच क्रोध की घाटी, नीचे तृष्णा मोह कुठाटी ।
नीचे लोभ की जलती भाटी, नीचे भरम की पड़ी है टाटी ।
नीचे नीच का है लहना ॥ तुम उलट ०

ऊँचे पुरुष विराट है, ऊँचे है ओंकार ।

ऊँचे शून्य का देश है, ऊँचे सौहंग सार ।

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना ॥
नीचे इन्द्री भोग विलासा, नीचे आसा नीचे वासा ।



नीचे जो कोई करे निवासा; सो तो रहे दिन रात निरासा ।

नीची राह को क्यों चहना ॥ तुम उलट०

ऊँचे सत पद धाम है, ऊँचे अगम अलेख ।

ऊँचे राधास्वामी नाम है, ऊँचे चढ़कर देख ।

तुम उलट चलो हाँ उलट चलो असमान, नीचे क्यों रहना ॥

नीचे काल करम है व्यापा, नीचे भरम पाखंड का पापा ।

नीचे माया मारे छाप, भ्रान्ती से नहीं छुभे आपा ।

नीच कथा को क्यों कहना ॥ तुम उलट०

[४-५५८]

गुरु चरन कमल की छाँह ले, तब काज बने ।

दीवाना क्यों घबराना है, क्यों भूला तू नाशाना है ।

गुरु चरन कमल की छाँह ले, तब काज बने ॥ टेका ।

गुरु ही विष्णु महेश हैं, गुरु ही वरुण गनेश ।

गुरु ही शेष सुरेश हैं, गुरु ही धनी धनेश ।

गुरु चरन कमल की छाँह ले, तब काज बने ॥ दीवाना०

गुरु ब्रह्मा गुरु जगपति, गुरु को समर्थ जान ।

गुरु ब्रह्म परब्रह्म है, गुरु पद में कल्याण ।

गुरु चरन कमल की छाँह ले, तब काज बने ॥ दीवाना०

गुरु आये इस जगत में, धार सन्त अवतार ।

शब्द उहाज चढ़ाय कर, बरें जीव भव पार ।

गुरु चरन कमल की छाँह ले, तब काज बने ॥ दीवाना०

गुरु ही साँचे मीत है, हितकारी निजदेव ।

और सबन को त्याग दे, कर गुरु चरनन सेव ।

गुरु चरन कमल की छाँह ले, तब काज बने ॥ दीवाना०

राधास्वामी सतगुरु, सत्य पुरुष सत रूप ।

सतनामी सतधाम धुर, सतस्वामी सत भूष ।

गुरु चरन कमल की छाँह ले, तब काज बने ॥ दीवाना०



[५-५५६]

भक्ति के मारग जो आवे, भक्ति के ॥टेका॥
 जग जंजाल का नमता तोड़े, चित गुरु चरन कमल में जोड़े ।
 काल करम का माथा फोड़े, मन को सहज ही इत ते मोड़े ।
 आवागमन नसावे, हाँ आवागमन नसावे ॥ भक्ति के०
 साधु की संगत गुरु की सेवा, करे भरम के त्यागे भेवा ।
 दुख से बचे रहे सुख लेवा, निज घट देखे देवी देवा ।
 आत्म आनन्द पावे, हाँ आत्म आनन्द पावे ॥ भक्ति के०
 ध्यान न लावे कथनी बड़नी, निस दिन करे परमार्थ करनी ।
 कमल नीर की धारे रहनी, पृथ्वी तज नभ मंडल चढ़नी ।
 शब्द में सुरत लगावे, हाँ शब्द में सुरत लगावे ॥ भक्ति के०
 उलट दृष्टि ताके ब्रह्मांडा, अन्तर लखे प्रकाश प्रचंडा ।
 लगी समाधि अगाध अखंडा, मारे भ्रान्ती के सिर दंडा ।
 सोया मनुआ जगावे, हाँ सोया मनुवा जगावे ॥ भक्ति के०
 प्रेम डगर की अरुण कहाती, बरतत अलसाये मन बानी ।
 दूर हुये चित की हैरानी, राधास्वामी चरन शरन सहदानी ।
 नर जनम सुफल करावे, हाँ नर जनम सुफल बनावे ॥ भक्ति के०

[६-५६०]

कोई जाने न गुड़ की बात, धोखे धार बहा ॥टेका॥
 सौदा करने हाट में आया, गाँठ की पूँजी धूर मिलाया ।
 माया मिली न रात हो पाया, दुविधा साथ रहा ॥ धोखे०
 निस दिन झूठा वाद धिवाऱा, लंपट मन इन्द्री के स्वादा ।
 मन नहीं मारा चित नहीं साधा, दारुण कष्ट सहा ॥ धोखे०
 नहीं विचार नहीं हिये धिक्का, झूठी मन में धारी टेका ।
 सूझा एक न सूझ अनेका, राधास्वामी पद न गहा ॥ धोखे०





[७-५६१]

मेरा तेरा कहाँ हो मेल, तू भव धार बहा ॥टेका॥
 मैं तो देखूँ आँखों अपनी, तेरे हाथ ग्रन्थन की छपनी ।
 मुझे नाम तुझे माया जपनी, भेद अपार महा ॥ तू भव०
 तेरा इष्ट है जग की माया, मैं माँगूँ सतगुरु की दाया ।
 मैंने सुख से लगन लगाया, तूने कलेश सहा ॥ तू भव०
 तू पढ़ता है विद्या थोथी, मैं पढ़ता हूँ मन की पोथी ।
 तेरे पीछे माया खोह थी, मैं गुरु चरन लहा ॥ तू भव०

[८-५६२]

शब्द कमाई कमावे, सोई मेरा साथी ॥टेका॥
 चढ़ असमान गगन को धावे, विषय वासना चित से मिटावे ।
 पृथ्वी छोड़ अधर धन पावे, सेवे गुरु की थाती ॥ सोई मेरा०
 नौ को त्याग दसम दर लागे, जग दारुण से पल पल भागे ।
 इधर से सोवे उधर से जागे, बाँधे न घोड़े हाथी ॥ सोई मेरा०
 आवे न जाय न पन्थ दिवाना, ज्ञान ध्यान तज सहज सियाना ।
 राधास्वामी चरन शरन मस्ताना, साधे न पोथी पाथी ॥ सोई मेरा०

[९-५६३]

सन्तों का मारग भीना है, सन्तों का ॥टेका॥
 यह तो नित्य निवृत्ति का रस्ता, मँहगा नहीं बहुत है सस्ता ।
 चल इस मग में हँसता हँसता, तू क्यों लाचार अधीना है ॥संतों०
 सन्त शब्द का सार बतावें, हाथ पकड़ भव सिंधु तरावें ।
 कलि कलेश से सहज बचावें, ले शरण जो तू परवीना है ॥संतों०
 सन्त दया के रूप हैं भाई, औरों में है कुटिल खुटाई ।
 त्याग जगत यह अगमापाई, चार दिना का जीना ॥संतों०
 नूर कलाम शब्द प्रकाशा, पन्थ में होता सहज उजासा ।



तिमिर अविद्या सभी विनासा. अमी नाम रम जीना है ॥ संतों०
 सहस्रकमलदल घंटा बाजे, त्रिकुटी ओंकार धुन गाजे ।
 भँवर गुफा में मुरली साजे, सत्त धाम सुख बीना है ॥ संतों०
 गगन मंडल की ओर सिधारो, घट में लखो सवा लख तारो ।
 सूर चाँद का होत उजारो, वहाँ एक न दोय न तीना है ॥ संतों०
 कोई बड़भागी पन्थ में आवे, शब्द युक्ति से काज बनावे ।
 सत्त लोक में बासा पावे, राधास्वामी पद में लीना है ॥ संतों०

[१०-५६४]

पी पी रे अभागे आय, गगन से बून्दा भरे ॥टेका॥
 क्यों प्यासा मरे क्यों आह भरे, क्यों छाती जरे क्यों शोर करे ॥
 पी पी करते दिन गया, पिया न निर्मल नीर ।
 पिया का प्रेम जल ना मिला, तन मन व्यापी पीर ॥पी पी रे०
 रात दिवस प्यासा रहा, तड़प तड़प अकुलाय ।
 प्रेम बून्द से भेंट नहीं, व्याकुल तन घबराय ॥ ”
 पपीहा प्यासा स्वांति का, गहे न दूजा नीर ।
 माँगे पिया का प्रेम रस, मन नहीं धारे धीर ॥ ”
 पिया पियाला प्रेम का, मन की बुझी पियास ।
 हिया जिया की तृष्णा गई, अब नहीं रहूँ उदास ॥ ”
 गुरु चरनामृत को चहूँ, चहूँ न गंगा का सोत ।
 सुख दायनी मन भावनी, तासों तृप्ति होत ॥ ”
 पपीहा के कुल जनम ले, तजूँ न कुल अभिमान ।
 कै पाऊँ गुरु दरस चल, कै मैं त्यागूँ प्रान ॥ ”
 राधास्वामी नाम ले, राधास्वामी गाय ।
 राधास्वामी सुमिर मन, गुन गा गा हरषाय ॥ ”





[११-५६५]

पी पी सुधारस नाम, तेरा नर जनम बने ॥टेका॥
 क्यों जन्मे मरे क्यों जग से डरे, क्यों त्रास करे क्यों गिरे परे ॥
 राता माता नाम का, ले अमृत रस चाख ।
 माया काल का संग तज, निश्चय गुरु की राख ॥ तेरा नर०
 नाम जपत भव सिंधु तरे, पापी पतित अनेक ।
 ज्ञान भक्ति सब नाम में, धार नाम की टेक ॥ तेरा नर०
 कामी क्रोधी लालची, पापी तरे अनन्त ।
 नाम ही के प्रताप से, पाई पदवी सन्त ॥ तेरा नर०
 नाम नाम में भेद है, नाम नाम में भाव ।
 सोई नाम को सुभिरिये, जो गुरु बतावें दाव ॥ तेरा नर०
 धुनात्मक सोई नाम ले, वर्णात्मक तज डार ।
 राधास्वामी की दया, भव से जावे पार ॥

[१२-५६६]

नहीं कोई तेरा यगाना है, नहीं कोई ॥टेका॥
 आवत साथ नहीं कोई आवे, जाते समय कोई संग न जावे ।
 तू क्यों इनसे नेह लगावे, क्या सचमुच दीवाना है ॥ नहीं
 चार दिना का यह जग मेला, करता है क्यों ठेलम ठेला ।
 आया अकेला जाय अकेला, यह तो देश धिराना है ॥ नहीं
 हाथी घोड़े माल खजाना, खेत मुल्क जंगल मैदाना ।
 इनका नहीं है ठौर ठिकाना, इनमें क्यों भरमाना है ॥ नहीं
 राम गये रघुकुल के पालक, रावण गया निशाचर घातक ।
 रहे वशिष्ठ न ऋषि उद्दालक, भूठा सब मद माना है ॥ नहीं
 सतगुरु सन्त की महिमा भारी, वह तेरे साँचे हितकारी ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, शरन में है जो सियाना है ॥ नहीं



बिनती

[५६७]

चरन शरन गुरु दीजिये, शरनागत आया ।
 सेवक सब विधि जानकर, गुरु कीजे दाया ॥
 अपराधी कामी कुटिल, दम्भी और मानी ।
 खोट भरा छल कपट का, क्रोधी अज्ञानी ॥
 तारनहारा तारले, तू तारन आया ।
 मो सम पापी कौन है, दे चरन की छाया ॥
 हार हार कर हारकर, हारा मन अपने ।
 और कहीं नहीं आसरा, कोई सूझे न सपने ॥
 निज बालक प्रभु जानकर, लीजे चरन लगाय ।
 चरन कमल मन छोड़कर, और कहूँ नहिं जाय ॥



प्रार्थना

[५६८]

नाम दान दे अपना कीजे, गुरु निज सेवक जानी ।
 चरन शरन की ओट बरूशकर, दीजे शब्द सहदानी ॥
 मान न मागूँ धन नहीं मागूँ, नहिं सुख चैन विलासा ।
 गुरु का अमृत नाम पायकर, करूँ गुरु की आसा ॥
 गुरु मेरे पूरन परम सनेही, गुरु दाता गुरु ज्ञानी ।
 गुरु के बल छूटे जम फंदा, मिले धाम निरवानी ॥
 राधास्वामी पल पल गाऊँ, राधास्वामी लव लाऊँ ।
 राधास्वामी मेरे गुरु दयाला, गुरुपद नेह लगाऊँ ॥





पन्द्रहवीं धुन

[१-५६६]

गुरु महिमा अगम अपार, गुरु गति कौन कहे ॥टेक॥
 विन गुरु धर्म न कर्म कुछ, विन गुरु भक्ति न ज्ञान ।
 जनम जनम यम फाँस है, विन गुरु नहीं निरवान ।
 चरन धूर सिरधार, शुद्धमति सोई लहे री ॥ गुरु०
 देवी देवा ऋषी मुनी, सुर नर साध सुजान ।
 हंस बंस अतार सब, गुरु महिमा को जान ।
 गुरु हैं सत करतार, विन गुरु कौन रहे री ॥ गुरु०
 राम कृष्ण के गुरु हैं, गुरु मत गुरु वसिष्ठ ।
 सत्त कबीर ने गुरु किया, गुरु है सबके इष्ट ।
 विन गुरु भव जल धार, निगुरे सकल बहे री ॥ गुरु०
 दुख कलेश आपत विपत्त, चहुँ दिस जग में व्याप ।
 जीव छुड़ावन सतगुरु, प्रगटे आप ही आप ।
 सबका किया उद्धार, जो कोई शरण चहे री ॥ गुरु०
 राधास्वामी आदि गुरु, परम दयाल प्रवीन ।
 अभय करें पद भक्ति दे, तारें जीव अधीन ।
 नहिं उसका वारा पार, जो गुरु भक्ति लहे री ॥ गुरु०

[२-५७०]

मैंने सौदा किया न कोय, पूँजी छीन गई ॥टेक॥
 बनजारों को देख कर, आया जगत की हाट ।
 ठग डाकू मग में मिले, होगया बारह बाट ।
 मैं तो गया नींद में सोय, तासों लूट भई री ॥ मैंने सौदा
 घर का भया न बाट का, बाहर रही न साख ।
 व्यौपारी कोई ना मिला, सके जो पति मेरी राख ।
 सब विधि आपा खोय, चहुँ दिस भर्म मई री ॥ मैंने सौदा



राधास्वामी दीन हित, मिले महाजन आय ।
भक्ति पारस बरखा कर, कीनी मेरी सहाय ॥
मैं पड़ा चरन में रोय, गुरु ने शरन दर्ई री ॥ मैंने सौदा

[३-५७१]

गुरु कीजे आप सहाय, चरन में आन पड़ा ॥ टेका ॥
कामी क्रोधी लालची, दम्भ कपट की खान ।
मान बड़ाई कुटिलता, यह सब मेरे निशान ॥
आप मेरे पितु मात, मैं भव खोह गड़ा री ॥ गुरु०
विलपत तलपत रात दिन, कोई साथ न संग ।
निरख परख अपनी दशा, चित मलीन भया भंग ॥
रहूँ छिन छिन अति पछताय, भरम बस धिकल खड़ारी ॥ गुरु०
काल करम के जाल में, उरभ उरभ उरभ्राय ।
सुलभावे मेरी कौन गति, मुख से निकसे हाय ॥
नहीं सूझे कोई उपाय, आप कीचड़ में सड़ा री ॥ गुरु०
कायर सम भयभीत हूँ, माया रन में हार ।
भागत बने न भागते, हाथ नहीं हथियार ॥
भरम पड़ा हूँ आय, सिर पर बोझ कड़ा री ॥ गुरु०
राधास्वामी दीन हित, अपना बल दे दान ।
संकट काटो दुख हरो, मेटो विपत महान ॥
दया से काल हटाय, चरन में आन पड़ा री ॥ गुरु०

[४-५७२]

गुरु कीजे मेरी सहाय, शब्द में चित मेरा लागे ॥ टेका ॥
मेरी सोई सुरत अचेत, शब्द सुन घट में जागे ।
तुम दाता दीन दयाला, सुनिये मेरी विनती ॥
मैं भूला चूका हाय, न इनकी कीजे गिनती ॥ गुरु०



व्यापे क्यों मद मोह, हुये नव सतगुरु रक्षक ।
 यम काल का भय मिट जाय, यह दोनों विषधर तक्कक ॥ गुरु०
 राधास्वामी करुणा सिंध, आस करो मेरी पूरी ।
 लो चरन शरन में आप, न हो अब चरन से दूरी ॥ गुरु०

[५-५७३]

कर सतसंग अस्नान, तीरथ राज यही ॥ टेका ॥
 गंग भक्ति जमुना कर्म धारा, सरस्वती ज्ञान मई ।
 न्हाये धोये सुरत भई निर्मल, चिन्ता चित न रही ॥ तीरथ
 ईडा पिंगला नील रंग छवि, सुखमन स्वेत कही ।
 केसर तिलक भाल दे न्यारा, प्रेम का रूप लही ॥ तीरथ
 सहस कमलदल मार ले आसन, ओम का मंत्र गही ।
 सुन्न समाध अखंड रचाले, ध्यान का सार यही ॥ तीरथ
 भँवर गुफा चढ़ जीत काल को, माया मोह दही ।
 सत पद अलख अगम राधास्वामी, धुर पद धाम वही ॥ तीरथ
 ऐसा तीरथ मिले भाग से, यम की फाड़ भई ।
 राधास्वामी मौज निरख घट अन्तर, छाछ त्याग ले मही ॥ तीरथ

[६-५७४]

सब भोगें बारम्बार, अवश फल कर्म किये का ।
 यह सोच समझ चित धार, मरम जग जगत जिये का ॥ टेका ॥
 सुर नर देवी देव महाऋषी, और ब्रह्म अवतारा ।
 एक जो कहिये राम महाप्रभू, पुरुषोत्तम मर्यादा ॥
 गुप्त घाट सरजू जल बूढ़े, रामायण सम्बादा ॥ यह सोच
 दूजे कहिये कृष्ण त्रिवेकी, सोलह कला के पूरे ।
 यदुकुल नाश भील की गाँसी, भये मान मद चूरे ॥ यह सोच
 तीजे युधिष्ठिर धर्मराज की, अकथ अपार कहानी ।
 भाई भारजा संग गले सो, हिम सब कोई जानी ॥ यह सोच



चौथे वशिष्ठ महा मुनि ज्ञानी, देखा कुल का नाता ।
 विश्वाभिन्न के हाथ पलट गया, ज्ञान योग का पासा ॥ यह सोच
 पंचम दशरथ अवध नरेशा, श्रवण ऋषि को मारा ।
 पुत्र वियोग प्राण को त्याग, मिला न राम सहारा ॥ यह सोच
 छटे इन्द्र की करनी समझो, शाप बृहस्पति दीना ।
 भगमय देव राज की काया, कर्म का फल यह लीना ॥ यह सोच
 चन्द्र कलंकित काम वेग से, जाने सब संसारा ।
 कर्म अटल है महाबली है, कोई कोई करे विचारा ॥ यह सोच
 रावण वाली भरत जड़ ज्ञानी, ऋषि के सुत दुर्वासा ।
 कर्म किया तैसा फल पाया, अन्त में भये उदासा ॥ यह सोच
 सुन प्रसंग चित अपना साधो, सोधो मन कर्म बानी ।
 शब्दयोग कर जनम बनाओ, राधास्वामी की सहदानी ॥ यह सोच

[७-५७५]

मन में वसे गुरु रूप, दर्शन क्यों न बने ॥ टेका ॥
 निकट दूर सब कल्पना, चित चंचल की रीति ।
 चंचल मन कर थिर सदा, सीखले प्रेम प्रतीति ॥ दर्शन
 आया तज नहीं गुरु भजे, रहे चिन्ता लवलीन ।
 दर्शन रस तो वह दिये, गुरु चरनन आधीन ॥ दर्शन
 जो होना है हो रहे, मौज मौज की बात ।
 दास रहे गुरु मौज पर, फिर नहीं कोई उत्पात ॥ दर्शन
 चिन्ता किसकी कीजिये, स्थिर नहीं संसार ।
 चिन्ता तो एक नाम की, नहीं और में सार ॥ दर्शन
 होनी अनहोनी नहीं, अनहोनी नहीं होय ।
 ऐसा समझ धिवेक से, रह गुरु चरनन सोय ॥ दर्शन
 करता धरता क्यों मिले, करतापन अभिमान ।
 आया मन का मेटकर, धर सतगुरु का ध्यान ॥ दर्शन



दुचिताई दुविधा कठिन, दुरमति अटका मन ।
 सेवक मौज अधीन है, नाहीं और जतन ॥ दर्शन
 दृढ़ प्रतीत भरोस से, जो रहे मौज आधार ।
 हाजिर गायब हो सदा, सतगुरु के दरबार ॥ दर्शन
 राधास्वामी मौज लख, मौन बृत्ती ले धार ।
 पल पल सुमिरन नाम का, सुमिरन करे संभार ॥ दर्शन

[८-५७६]

प्रेम की महिमा कहे कौन, यह है अकथ कहानी ॥ टेक ॥
 प्रीतम प्रेमी एक रूप दोउ, अन्तर भेद न जानो ।
 शवरी राम की कथा बाँच लो, दोनों एक पिछानो ॥ यह है
 झूठे बेर स्वाद ले खाये, ऋषि मुनि घर नहीं आये ।
 मोहे देख भीलनी की गति, शवरी के प्रेम रिभाये ॥ यह है
 धृतराष्ट्र की सभा को त्यागा, बिदुर के घर चल आये ।
 कृष्ण प्रेम रस भाव के भूके, साग अलौना खाये ॥ यह है
 धर्मराज की सभा में लाखों, ऋषि मुनि ज्ञानी ध्यानी ।
 आये स्वपच बिना नहीं बाजा, घंटा सब कोई जानी ॥ यह है
 राधास्वामी दीन दयाला, प्रेम की रीति चलाई ।
 जो कोई चरन शरन में आये, प्रेम पदारथ पाई ॥ यह है

[९-५७७]

बदला मन का रंग, प्रेम जब चित में बसा ॥ टेक ॥
 पहले मन था हिंसक पूरा, जीव घात नित करता ।
 अब तो प्रेम के रंग रंगाना, प्रेम प्रीत लख मितरा ॥ चित में
 पहले मन परबत कठोर था, लगी प्रेम की टाँकी ।
 कंचन रतन की खान खुली घट, प्रीतम की बना भाँकी ॥ चित में
 पहले मन था काग समाना, अनुचित बानी बोले ।
 अब कोयल सम मधुर बोल है, प्रेम आम चढ़ डोले ॥ चित में



दया क्षमा करुणा वसे, प्रेम प्रीति परतीति ।
 यह घर मेरा रात दिन, यह भक्ति की रीति ॥
 मन में जुड़े यह अद्भुत समाज ॥ मेरी०
 कथनी बदनी त्याग कर, रहनी से चित लाय ।
 गुरु गम को ही गम लहूँ, अपना जनम बनाय ॥
 यही करो मेरा तुम जन्म काज ॥ मेरी०
 व्यापे कलह कलेश नहीं, रहे एक रस ध्यान ।
 सम जीवन सम भावना, सम दृष्टि सम ज्ञान ॥
 राधास्वामी हो तुम राजों के राज ॥ मेरी०

[१५-४८१]

गुरु करता घरता किसे मानूँ और किसे तत्व मैं पहचानूँ ॥ टेका ।
 जब आया सतसंग में, भया सत्त का संग ।
 सत्त रूप गुरुदेव तुम, अभय अमान असंग ॥
 सत तुम्हें छोड़ किसको जानूँ ॥ गुरु करता
 तुम ही सबकी आदि हो, आदि अनादि अनन्त ।
 तुम्हारे मुख से सब प्रगट, मंत्र तंत्र जीव जन्त ॥
 क्यों टेक तुम्हारी न चित ठानूँ ॥ गुरु करता
 ब्रह्म जीव परब्रह्म की, उत्पत्ति तुम्हारे बैन ।
 सत संगत के वचन से, लखपाया यह सैन ॥
 यूँ क्षीर नीर को मैं छानूँ ॥ गुरु करता
 तुम अखंड व्यापक महा, अजर अमर अविकार ।
 सब लख पड़े विचार से, तुम सब के आधार ॥
 इस सत में असत न मैं मानूँ ॥ गुरु करता
 राधास्वामी परम गुरु, तुम हो संग असंग ।
 सत पद ओम् के रूप तुम, अधिष्ठान सोहंग ॥
 घट प्रगट ज्ञान के शशी भानूँ ॥ गुरु करता



[१६अ-४८२]

घट का पट खोल दिखादो पिया, दर्शन के लिये है खड़ी दुखिया ॥टेका॥

दर्शन की है लालसा, आई लगाये आस ।

सहस्र नेत्र देखूँ तुम्हें, मुझे न करो निरास ।

दर्शन बिन तड़पे मेरा जिया ॥ घट का०

हृदय का दीवा किया, बाती नस के तार ।

तेल बनाया लहू का, अब पाऊँ दीदार ।

उमगा उमड़ा है बिकल हिया ॥ घट का०

चित का खटपट मिटगया, चंचलता गई भाग ।

रात अंधेरी बिरह की, काटूँ पल पल जाग ।

दुखिया को अब तो करो सुखिया ॥ घट का०

खुली आँख से दरस हो, आओ सम्मुख आज ।

तुम तो दीन दयाल हो, राजों के महाराज ।

इस जगत में तुम सबके सुखिया ॥ घट का०

राधास्वामी सतगुरु, अधिष्ठान आधार ।

क्यों नहीं होते प्रगट अब, निरखूँ नैन उधार ।

नहीं जानूँ मैं नक्की दुवा तिया ॥ घट का०

[१६ब-४८३]

यह समझलो करनी है करनी, छोड़ो तुम कथनी और बदनी ॥टेका॥

मुंह से कथा तो क्या कथा, एक न समझी बात ।

मन चंचल भरमत फिरा, मचा नित्त उतपात ।

इससे छूटे जनम और मरनी ॥ यह समझ

सुनी सुनाई बात को, क्यों तू कथे अपार ।

कुछ करतब भी चाहिये, तब पावे दीदार ।

करनी से मिले सच्ची रहनी ॥ यह समझ



पहले मन था बगला जैसा, मेंढक मछली खाता ।
अब मन हंस प्रेम रूप भया, मोती मुक्ता राता ॥ चित में
राधास्वामी दीन दयाला, प्रेम पन्थ दरसावें ।
जो कोई चरन कमल शरनागत, भव के पार लगावें ॥ चित में

[१०-५७८]

प्रगटा प्रेम प्रभाव, लगन प्रीतम संग लागी ॥ टेका ॥
जोती जले प्रेम की घट में, मन मेरा भया पतिंगा ।
जरत न मोड़े अंग वह अपना, न्हाये जोत की गंगा ॥ लगन
धारा वही प्रेम की मन में, मैं मछली बन आया ।
बिछड़त पल में प्रान को त्यागूँ, ऐसी लगन लगाया ॥ लगन
भृंगी गति लख ध्यान जमाया, कीट प्रेम अनुरागी ।
भृंगी बना ले पंख उड़ा सोई, सुरुचि सुभाव सुभागी ॥ लगन
चन्द्र की छवि शोभा लख रहा, कोमल चित्त चकोर ।
आग में चन्द्र का ढूँढ़े दर्शन, मारे ठूँठ कठोर ॥ लगन
राधास्वामी प्रीतम पूरे, आकर अंग लगाया ।
प्रेम दान दे मोहि अपनाया, अपना आप बनाया ॥ लगन

[११-५७६]

कौन गिने तिथि वार, प्रेम जब मन में रमा ॥ टेका ॥
प्रेम प्यार जब चित में समाना, तन मन की सुध भूली ।
प्रेमी सुरत पिंड के अन्तर, रहती फूली फूली ॥ प्रेम जब
प्रेम बाज जब मन की शाखा, पर फैलाय के बैठा ।
काम क्रोध पक्षी उड़ भागे, घोंसला एक न पैठा ॥ प्रेम जब
मन में प्रेम का रंग जमा जब, जग का रंग भया फीका ।
प्रीतम बिन कोई और न सूझे, प्रेम का सच्चा नाता ॥ प्रेम जब
एक भाव घट अन्तर आया, दुचिता दुर्मति भागी ।
दुविधा का घर राख भया है, प्रेम ने देदी आगी ॥ प्रेम जब



राधास्वामी सतगुरु आये, प्रेम का पन्थ चलाया ।

प्यारे प्रीतम की लख सूरत; घट में दर्शन पाया ॥ प्रेम जब

[१२-५८०]

गुरु मुख बिन जाने नहीं कोई, गुरु का भेद अपारा ॥ टेका ।

कहन सुनन की बात नहीं है, पोथी ग्रन्थ से न्यारा ।

नहीं यह ज्ञान न योग की किरिया, नहीं विवेक विचारा ॥ गुरु का

घट में चढ़ कर सुने शब्द धुन, सहस कमल मँभारा ।

फिर त्रिकुटी के महल में बासा, परसे पद ओंकारा ॥ गुरु का

सुन्न शिखर पर आसन मारे, त्यागे भर्म धिकारा ।

महासुन्न में लगी समाधी, स्रभे अपर अपारा ॥ गुरु का

भँवर गुफा सोहंगम दरसे, जगमग जोत उजारा ।

सत्त धाम में सतगुरु दर्शन, पावे गुरु मुख प्यारा ॥ गुरु का

अलख अगम की गति गम निरखे, लख अखंड पसारा ।

भक्ति युक्ति के प्रेम से पहुँचे, राधास्वामी के दरबारा ॥ गुरु का

[१३-५८१]

गुरु मिले भुलावनहार हिंडोला गगन पड़ा ॥ टेका ।

इंगला पिंगला खम्ब है दोई, सुखमन पाट पड़ा ।

मकर तार गत शब्द का कोमल, बाँधा दृढ़ सकड़ा ॥ हिंडोला

प्रेम भक्ति के कल में ताला, निश्चय भाव जड़ा ।

चित की कुंजी ऐंठ जो दीनी, भूला भूल पड़ा ॥ हिंडोला

सहज समाध की पेंग चली जब, सुरत निरत जकड़ा ।

सुध बुध तन मन की सब भूली, यम का जाल सड़ा ॥ हिंडोला

तीन ताप की बिपता नासी, काल अचेत खड़ा ।

माया ठगनी तोड़न लागी, मोह भरम छकड़ा ॥ हिंडोला

सुरत शब्द का भूला न्यारा, साधन का तकड़ा ।

राधास्वामी दया भेद सब पाया, उलटा भव पलड़ा ॥ हिंडोला



[१४-५८२]

तू भरम रहा संसार, तेरी बुद्धि गई ॥टेका॥
 किसी का तू नहीं कोई न तेरा, क्यों करता है मेरा तेरा ।
 सोच सोच ले सोच सपेरा, दुर्गति बहुत भई ॥ तेरी बुद्धि
 भरम हिंडोले भूला प्राणी, भरम से भरम भरम की खानी ।
 भरम से अपनी करता हानी, चहुँ दिस भर्म भई ॥ ”
 नौ को छोड़ द्वार दस धँसजा, सुन्न मंडल के धाम में बसजा ।
 भक्ति प्रेम के रस में रसजा, चोली पहर नई ॥ ”
 तीन गया चौथा पन आया, अब भी चेत न तुझको भाया ।
 मोह जाल में रहा फँसाया, बन्धन कई कई ॥ ”
 राधास्वामी वैद बन आये, सतसंग औषधलय ठैराये ।
 क्यों नहीं औषधि अपनी कराये, तुझको रोग छई ॥ ”

[१५-५८३]

मेरी सुध बुध करना आप, विकल मन तड़प रहा ॥टेका॥
 काल करम से बहु दुख पाये, असह कलेश सहा ।
 अब तो दया का मिले सहारा, चरन की ओट गहा ॥ विकल मन
 भव की धार कठिन अति गहरी, जीव अचेत बहा ।
 गोते खा खा निबल शरीरा, पाया कष्ट महा ॥ विकल मन
 अपना बल कुछ काम न आवे, नहीं सुख चैन लहा ।
 कौन उपाय करूँ नहीं जानूँ, क्या कहूँ बहुत कहा ॥ विकल मन
 कृपा करो मेरे प्रीतम प्यारे, प्रेम की गंग बहा ।
 तन मन में मेरे शान्ती आवे, त्रय दुख अग्नी रहा ॥ विकल मन
 राधास्वामी आस करो मेरी पूरी, निर्धन भक्ति चहा ।
 भक्ति रतन सम कुछ नहीं देखा, जग का सिंध थहा ॥ विकल मन





[१६-५८४]

कर प्रेमी जन का संग, तेरा नर जनम बने ॥टेका॥
 लोन की खान में वस्तु पड़े जब, लोन सहज हो जावे ।
 प्रेमी जिसका संग करे जो, प्रेम प्रीति गति पावे ॥ तेरा नर०
 पत्थर लोहा जल में बूड़े, काठ का बेड़ा तैरे ।
 लदे लोह पत्थर जब बेड़ा, नीर के ऊपर है रे ॥ तेरा नर०
 संगत कर उत्तम सज्जन की, सज्जनता चित आवे ।
 पड़े असज्जन की जो संगत, विरथा जनम गँवावे ॥ तेरा नर०
 तोता मैना भक्त के घर में, राम नाम नित गाते ।
 वही अभक्त असाध की संगत, अनुचित बैन सुनाते ॥ तेरा नर०
 यह विचार कर संग गुरु का, गुरु गम ले पहचानी ।
 राधास्वामी की शरनाई, होजा ज्ञानी ध्यानी ॥ तेरा नर०

[१७-५८५]

गुरु कीजे मेरी सहाय, बिपति से तड़प रही ॥टेका॥
 रोग सोग से रही घबरानी, चित में छाई है हैरानी ।
 छूटन की कोई विधि न जानी, काल करम भरमाय ॥ बिपत से०
 ना जानूँ क्या कर्म कमाये, जीवन कष्ट क्लेश बिताये ।
 छिनभर सुख चैन नहीं पाये, हिया जिया नित अकुलाय ॥ बिपत से०
 राधास्वामी दीन दयाला, काटो आपति का जंजाला ।
 अपना बल दे करो निहाला, गुन गाऊँ लव लाय ॥ बिपत से०

[१८-५८६]

दुख सहा जगत में आय, न सत पद जान के भूलूँगी ॥टेका॥
 यह संसार है दुख की खानी, मन में उपजी मेरे गलानी ।
 कैसे अपनी सुनाऊँ कहानी, तज दुख के डगर को सजनी ।
 सुख के हिंडोले भूलूँगी ॥ न सत०



स्वारथ बस सबने है फँसाया, दुख में कोई काम न आया ।

अब ज्ञान अन्त में पाया, कर गुरु का संग दिन रात ।

उमंग आनन्द में फूलूँगी ॥ न सत०

राधास्वामी भक्ति के दाता, तुम हो सच्चे पितु अरु माता ।

सम्बन्धी मीत विधाता, ले नाम तुम्हारा ज्ञान अंकुस से ।

मन मतंग को हूलूँगी ॥ न सत०

[१६-५८७]

तूने सतगुरु किया न संग, काल से कौन बचावेगा ॥टेका॥

परमारथ स्वारथ खोया, नहीं अशुभ वासना धोया ।

दुष्कर्म बीज घट बोया, फल पाकर अन्त में रोया ।

लिया बोझ सीस पर बड़ा, भार यह कैसे उठावेगा ॥काल से०

खटपट में उमर गँवाई, तीरथ बरत रहा भरमाई ।

पाखंडवाद चित लाई, नहीं सूझी अपनी पराई ।

आये दिन मल मल हाथ, कष्ट से बहु पछतावेगा ॥काल से०

जग माया अगमापाई, नहीं कोई सगा सहाई ।

मतलब के बन्धु भाई, झूठे बन्ध रहा बन्धाई ।

जब आया काल का समय, साथ तेरे कोई न जावेगा ॥काल से०

धन दौलत माल खजाना, घर बार मुल्क मैदाना ।

व्यौहार का ताना बाना, तूने भेद न इनका जाना ।

पड़ भरम फाँस के फंद गला, यम खड्ग से हाथ कटावेगा ॥काल से०

राधास्वामी जग में आये, भक्ति मत पन्थ चलाये ।

गत सुरत शब्द धुन गाये, दुखियों को अंग लगाये ।

ले चरन कमल की छाँह, जल्द नर देही सुफल करावेगा ॥काल से०

[२०-५८८]

तेरा भेद न जाने हाथ, जगत धोखे में रहा ॥टेका॥

बिन बानी का शब्द है, बिना अक्षर का ग्रन्थ ।

बिन मन बुद्धि विवेक है, बिना डगर का पन्थ ।



कोई कैसे आवे जाय, भ्रम की धार बहा ॥ तेरा भेद०
 सत्त तत्व के सिखर पर, द्वैत अद्वैत न कोय ।
 मन चिउँटा फिसला गिरा, बुद्धि माखी रही सोय ।
 चित पक्षी न उड़ाय, बहु दुख कष्ट सहा ॥ तेरा भेद०
 बिन बादल पानी बरस, बिना बून्द का मेह ।
 भीजे तन मन सहज में, नगर ग्राम और गेह ।
 चहूँ ओर बरसाय, घटा छाई है महा ॥ तेरा भेद०
 मन अलसाना अमन बन, बुद्धि बनी अबुद्ध ।
 चित अचेत चेते नहीं, कैसे पावे सुद्ध ।
 नहीं सूझे जतन उपाय, किसने मर्म लहा ॥ तेरा भेद०
 'नेति नेति' कोई कहे, 'एति एति' कहे कोय ।
 'नेति एति' कोई नहीं, चतुराई गई खोय ।
 जब सतगुरु भये सहाय, राधास्वामी चरन गहा ॥ तेरा भेद०

[२१-५८६]

क्या है पद निर्वाण, नहीं कुछ समझ में आवे ॥ टेका ॥

कोई करे इस लोक की आसा, कोई परलोक बतावे ।
 कोई कथे ज्ञान ध्यान की महिमा, भेद न कोई पावे ॥ नहिं कुछ
 मंत्र पढ़े संध्या जप तप करे, देवी देव मनावे ।
 मन्दिर मूरत की परिकर्मा, बैठ के ध्यान लगावे ॥ नहिं कुछ
 मत का मतवाला बन देखे, पक्षपात उरभावे ।
 भगड़ा ठान के करे लड़ाई, भ्रमे और भ्रमावे ॥ नहिं कुछ
 आसन मारे योग यतन किये, गहरी समाध में जावे ।
 जड़ चेतन की गांठ खुली कभी, जड़वत रूप बनावे ॥ नहिं कुछ
 खोज खोज के खोज थके जब, गुरु की संगत जावे ।
 राधास्वामी दया रूप लख आवे, सोई निर्वाह कहावे ॥ नहिं कुछ



[२२-५६०]

तेरे मन में झाड़ झंकार, तू बन में ना जा रे ।

बन में क्या है सोचले भाई, बन अनबन तेरे मन में रहाई ।
क्रोध सिंह गीदड़ किदराई, लोभ लोमड़ी रीछ बुराई ।

यह बन साफ करा रे ॥ तू बन में०

हाथी अहंकार मतवाले, चीते द्रोह काल विकराले ।
इनके दाव को कौन संभाले, साधु संग मिल देखे भाले ।

संगत गुरु गम पा रे ॥ तू बन में०

बन जाना है मन के बन जा, दुर्मति अनबन त्याग के बन जा ।
गुरुमत शस्त्र साज तन तनजा, माया काल करम के रन जा ।

विजय की धूम मचा रे ॥ तू बन में०

माया बन में काल शिकारी, जिस दिन सो करे मारा मारी ।
जीव वस्तु नित रहें दुखारी, इनकी दशा को कौन सुधारी ।

दुख की चोट न खा रे ॥ तू बन में०

राधास्वामी सतगुरु की शरनाई, बन बनकर मेरी बन आई ।
विगड़ी बात गुरु ने बनाई, बन की करनी मोहि बताई ।

बनवारी संग चित ला रे ॥ तू बन में०

[२३-५६१]

गुरु रूप न समझे कोय, भरम में पड़े अज्ञानी ॥टेक॥

गुरु को मानुष जानकर, भक्ति का करें व्यौहार ।
सो प्राणी अति मूढ़ हैं, कैसे जायें भव पार ।

देह के बने अभिमानी ॥ भरम में०

गुरु को मानुष जानकर, शीत प्रसादी ले ।
सो तो पशु समान हैं, संशय में अटके ।

गुरु तत्व न जानी ॥ भरम में०



गुरु को मानुष जानकर, मानुष करो विचार ।
सो नर मूढ़ गँवार हैं, भूल रहे संसार ।
मोह के फाँस फँसानी ॥ भ्रम में०

गुरु को मानुष जानकर, भेड़ की चलते चाल ।
वह बन्धन को क्यों तजें, व्यापे माया काल ।
पड़े योनि की खानी ॥ भ्रम में०

गुरु नाम आदर्श का, गुरु है मन का इष्ट ।
इष्ट आदर्श को ना लखे, समझो उसे कनिष्ठ ।
वात बूझे मन मानी ॥ भ्रम में०

गुरु भाव घट में रहे, अवट सुघट की खान ।
जिसे समझ ऐसी नहीं, वह है मूढ़ समान ।
नहीं गुरु रूप पिछानी ॥ भ्रम में०

चेला तो चित में रहे, गुरु चित के आकास ।
अपने में दोनों लखे, वही गुरु का दास ।
रहे गुरुपद घट ठानी ॥ भ्रम में०

सुरत शिष्य गुरु शब्द है, शब्द गुरु का रूप ।
शब्द गुरु की परख बिन, डूबे भ्रम के कूप ।
नर जनम गँवानी ॥ भ्रम में०

गुरु ज्ञान का तत्व है, गुरु ज्ञान का सार ।
गुरु मत गुरु गम लखे, फिर नहीं भव भय भार ।
कमल जैसी गति आनी ॥ भ्रम में०

गधास्वामी सतगुरु सन्त ने, कही बात समझाय ।
जो नहीं माने ब्रचन को, उरझ उरझ उरझाय ।
कौन समझे यह बानी ॥ भ्रम में०





[२४-५६२]

गुरु दरस दिखादो जल्दी, विकल मन सोच रहा ॥टेक॥
 चैत में चित्र तुम्हारा देखा, चेत हिये में आया ।
 मास बैसाख में साख मिली, गुरु बानी ध्यान लगाया ।
 जेठ में श्रेष्ठ के लक्षण जाने, उमंग न चित्त समाया ।
 जब अपाढ़ की धुन भर लाई, जिज्ञासू बन आया ।
 नयनों नीर बहा ॥ विकल मन०

सावन मास सुनी गुरु महिमा, श्रवण भक्ति जागी ।
 भादों भद्र का रूप संभारा, सहज बना अनुरागी ।
 कुआर में उपजी हिये में श्रद्धा, मोह माया सब त्यागी ।
 कातिक चन्द्र विवेक की जोती, लखत भया बड़भागी ।
 उपजा हर्ष महा ॥ विकल मन०

अगहन घर की आसा छोड़ी, जग से भया उदासी ।
 पूस में शशि जिभि ज्ञान प्रकासा, आनन्द मंगल रासी ।
 माघ मघा में जोत की लीला, झुझी घट अविनासी ।
 फागुन फाग की इच्छा उपजी, राधास्वामी दरस की प्यासी ।
 कष्ट कलेश सहा ॥ विकल मन०

[२५-५६३]

क्यों तू ढूँढ़े देश विदेश, तेरा प्रीतम तेरे घट में ॥
 कासी वासी मथुरा भटके, मथुरा वासी कासी ।
 भरमत फिरे भरम के बस हो, मिला नहीं अविनासी ॥ तेरा०
 बन में जा कोई आसन मारे, अंग भभूत रमाई ।
 साँग बनाया कफनी पहनी, घट का मरम न पाई ॥ तेरा०
 तीरथ में क्या जाकर पाया, क्या सौदा कर लाया ।
 मूरत पूजी पानी नहाया, साँच बता क्या पाया ॥ तेरा०
 वरत किया संयम बहु धारे, मन थिर भया न तेरा ।
 समझ बूझ अब चेतके पग धर, खोया समय बहुतेरा ॥ तेरा०



जप तप साधन योग युक्ति सब, मन माया के भरमा ।
 जड़ चेतन की गाँठ खुली नहीं, कटा न एको करमा ॥ तेरा०
 पोथी ग्रन्थ शास्त्र पढ़ देखा, लगा सार नहीं हाथा ।
 जिसको तू नित ढूँढ़त डोले, वह तो तेरे साथी ॥ तेरा०
 घट अन्तर गुरु दर्शन करले, सुरत शब्द चित लाई ।
 तेरा प्रीतम रूप है तेरा, राधास्वामी भेद बताई ॥ तेरा०

[२६-५६४]

नहीं मन में सोच विचार, भटके संसारी मग में ॥टेका॥
 आसन मारा ध्यान लगाया, मिटी न मन की आसा ।
 कोल्हू से तेली का बैल बँधा है, घर में कोस पचासा ॥हाँ मगमें०
 वायु विषय प्रचंड भये जब, घट सागर थिर नाही ।
 कैसे पड़े रूप की अपने, महा सूक्ष्म परछाई ॥ ”
 अपने भूले सबको भूले, रूप का भेद न पाया ।
 कस्तूरी तो नाभि में अपने, मृग यूँ ही भरमाया ॥ ”
 मन के सागर लहर उठत है, छाई धरन अकासा ।
 जहाँ जहाँ जावे खाये थपेड़े, लग कर तृष्णा आसा ॥ ”
 घट के भीतर सात समुन्दर, चौदह भुवन पसारा ।
 घट को परख मर्म कोई पावे, सतगुरु का निज प्यारा ॥ ”
 रूप सिंधु की लहरी समझो, ब्रह्मा विष्णु महेशा ।
 देवी देव बुदबुदे छोटे, बुन्द सिन्धु के देशा ॥ ”
 राधास्वामी जग में आये, धार सन्त औतारा ।
 सुरत शब्द विधि रूप लखाया, पहुँचाया भव पारा ॥ ”

[२७-५६५]

पी पी ले अमी रस धार, गगन से झरी लगी ॥टेका॥
 बुन्द का चूका घड़ा भर पावे, सपने में वह स्वाद न आवे ।
 कोई किसे कैसे समझावे, एक बूँद पी तरी लगी ॥ पी पीले०



नीचा हुआ सो भर भर पिया, अमृत का जीवन नित जिया ।
 नर शरीर के फल को लिया, ऊँचे को रोये मरेगी ॥ पी पीले०
 प्यास बिना क्या होये प्राणी, प्यासे ही के लिये है पानी ।
 बिन अधिकार न कोई जानी, अमृत विष की भरी लगी ॥ ”
 अमृत पिये अमर पद पावे, भव योनी में कभी न आवे ।
 जनम मरन के दोष नसावे, धट की गगरी भरन लगी ॥ ”
 बूँद अमी की गुरु की बानी, जीवन रस का है यह पानी ।
 राधास्वामी संगत कर मनमानी, डाली प्रेम की हरी लगी ॥ ”

[२८-५६६]

भूला भूले सुहागिन नार, पिया का धर हृदय में ध्यान ॥टेक॥
 प्रेम की घटा गगन घट छार्ई, भक्ति भरी चहुँ दिस भर लाई ।
 आनन्द शान्ती मन में आई, पिया का बड़ा अभिमान ॥पिया का०
 बिजली चमके दादुर बोले, पी पी करत पपीहा डोले ।
 धरन अकास की नाड़ी टटोले, यही है सतगुरु ज्ञान ॥ ”
 सुरत शब्द का गढ़ा हिंडोला, प्रेम की पेंग से ले झकझोला ।
 सुखमन मध्य में इत उत डोला, आनन्द रस की खान ॥ ”
 शब्द ज्ञान अनुमान प्रमाना, गावे सुरत राग सुहाना ।
 सुख पाया और हर्ष महाना, कोई करे कैसे बखान ॥ ”
 मधुर रसीली ओम की बानी, राग अनुराग धिराग निशानी ।
 मंगल दायक और सुखदानी, छिड़ी मन्हार की तान ॥ ”
 अमी धार की बरखा न्यारी, हित चित जिया को लागे प्यारी ।
 पर कोई मिले जीव हितकारी, करले मोद से पान ॥ ”
 राधास्वामी काम की आसा मन में, भर सावन रहे इसी यतन में ।
 सुमिरन ध्यान और शब्द भजन में, सहजे बने सुज्ञान ॥ ”

~ ❀ ~



बिनती

[५६७]

गुरु ने अस कृपा करी, दिया ठौर ठिकाना ।
 काल की फाँसी कट गई, मिला शब्द प्रमाना ॥
 गुरु मेरे समर्थ साइयाँ, सच्चे दातारा ॥
 गुरु चरनन बल जाइये, गुरु परम उदारा ॥
 गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु हैं, गुरु हैं त्रिपुरारी ॥
 सतगुरु ब्रह्म स्वरूप हैं, गुरु की बलिहारी ॥
 गुरु मेरे जान व प्रान हैं, गुरु ही मन बानी ॥
 राधास्वामी की दया, गुरु पद पहचानी ॥



प्रार्थना

[५६८]

धन रूप भूप अनूप निर्गुन, सगुन गुनकारी प्रभु ।
 धन अजर अमर अनन्त शोभा, सिंधु हितकारी प्रभु ॥
 नहीं भेद तेरा कोई जाने, ज्ञान धन धरनी धरम् ।
 तू मंत्र यंत्र है तंत्र गोप है, सन्त जन मन रंजनम् ॥
 जो प्रगट गुप्त अशोच निर्मल, असम सम शीतल सदा ।
 सोई नाथ करुना पुंज कीजे, दास सेवक पर दया ॥
 धन बार पार अपार मध्य, अनंत आदि विश्वेश्वरम् ।
 तेरी वन्दना करें भक्त निसदिन, काम खलदल गंजनम् ॥
 जेहि नेति नेति पुकार, अगम निगम न भेद को पावहीं ।
 जप योग त्याग विराग संयुता, योगी ऋषि मुनि ध्यावहीं ॥
 धन सन्त रूप कृपा विशेष, जो जीव निबल को तार ही ।
 भज राधास्वामी नाम सतगुरु, और सकल बिसार ही ॥



सोलहवीं धुन

[१-५६६]

तू दयाल है दया की मूरत, तेरी दया का दान मिले ।
भक्ति मिले शुभ शक्ति मिले, सत संगत में गुरु ज्ञान मिले ॥
जग की सहज होय कठिनाई, सुख साधन का है अवसर ।
नाम मिले सत धाम मिले, साधु सेवा सन्मान मिले ॥
टेढ़े जतन को करदे सीधा, युक्ति निराली बतलादे ।
थोड़े ही में समझादे तू, सत मत की पहचान मिले ॥
ज्ञान के तीन रूप हैं स्वामी, अनुभव है उनकी चोटी ।
शब्द मिले अनुमान मिले, अनुमान के साथ प्रमान मिले ॥
राधास्वामी सतगुरु दाता, हम सब हैं तेरे सेवक ।
सहज योग की सहज समाधि का, सुमिरन भजन और ध्यान मिले ॥

[२-६००]

दाता ज्ञाता पितु और माता, छिन छिन तेरा ध्यान रहे ।
जग वाता आता सतराता, तेरे नाम का गान रहे ॥
सुमिरन तेरा ध्यान हो तेरा, तेरा भजन हर आन रहे ।
तेरी बानी अगम निशानी, उसी ओर मेरा कान रहे ॥
तुझको ध्याऊँ तुझको गाऊँ, तेरा ही अरमान रहे ।
सुमिरन भजन ध्यान सेवा में, मेरी जान और प्रान रहे ॥
सुरत निरत तेरे रंग राती, तेरे रूप का ज्ञान रहे ।
जहाँ जहाँ देखूँ तेरी लीला, तेरा ही अभिमान रहे ॥
जो जो सुनूँ सो तेरा बचन हो, मन से दूर मदमान रहे ।
राधा स्वामी चरन शरन बलिहारी, भव से सुरत अलगान रहे ॥





[३-६०१]

जगत में आये बहुत दुख पाया, प्रेम का नगर दिखादो जी ।
 भरमत भरमत चहुँ दिस डोलूँ, सच्ची डगर बता दो जी ॥
 मोह नींद में निस दिन सोये, बाँह पकड़ के जगा दो जी ।
 मैं तो अचेत चेत नहीं किंचित, चित से अपनी चेता दो जी ॥
 ज्ञान भक्ति का सार न जानूँ, मेरा अज्ञान मिटा दो जी ।
 चित चकोर निरखे गति चंदा, ऐसी लगन लगा दो जी ॥
 सुध बुध मन की सब ही भूलूँ, प्रेम का प्याला पिला दो जी ।
 मतवारों की चाल चजूँ नित, प्रीत की चाल चला दो जी ॥
 आँख न मूढ़ कान न रूँधूँ, सहज समाधि लगा दो जी ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, घट में खर उगादो जी ॥

[४-६०२]

धन धन धन भंजन जन मन रंजन, काम निकंदन गुरु राई ।
 धन सुरमुनि नायक जगत सहायक, सुखदायक धन प्रभुताई ॥
 धन करुणा सागर सब गुण आगर, गुनातीत गंदिद हरी ।
 धन घटघट बासी प्रभु अविनाशी, सुखरासी दुख नास करी ॥
 धन ज्ञानी ज्ञाता विश्वविधाता, सर्व जनन के पितु माता ।
 धन करता धरता नेह की सरिता, मुक्ति भक्ति के निज दाता ॥
 धन परम सियाने वेद बखाने, ऋषि मुनि नहीं जाने चतुराई ।
 धन दीन दयाला सहज कृपाला, बार पार नहीं कोई पाई ॥
 चरन शरन दे अपना कीजे, भक्ति भाव राधास्वामी दीजे ।
 मैं अति नीच निकाम अनारी, पद सरोज में ले लीजे ॥

[५-६०३]

धन धन धन दाता गुरु मुनि त्राता, व्यापक परमा नन्दा ।
 धन धन अविनाशी घट घट बासी, माया रहित मुकुन्दा ॥
 धन अपरम्पारा जगत अधारा, पार न पावे कोई ।



धन परम कृपाला दीन दयाला, करहु अनुग्रह सोई ॥
 आदि अनादि अनन्त अमाया, निःकाया महिमा भारी ।
 देव दनुज नर किन्नर करता, सन्त जनन के हितकारी ॥
 क्या कोई जाने तुम्हरी लीला, अगम अपार अरूप हो तुम ।
 भेद न पावे ऋषि मुनि कोई, सारे जगत के भूप हो तुम ॥
 सुनत कान बिन लखत नैन बिन, चलत बिना पद निस वासर ।
 बिन जिभ्या बोले बहुबानी, ग्रहण करत सब कुछ बिन कर ॥

[६-६०४]

प्राणों का है प्राण पिता तू, जीवन का है आधार ।
 निर्भर यह ब्रह्मांड है तुझ पर, तू है सब का रखगार ॥
 तू है जोत नैन की सब के, तू है घट घट का वासी ।
 अन्तर्यामी प्रीतम प्यारा, अजर अमर विशु अविनासी ॥
 जल में तेरी शीतलता है, तेज में है प्रकाश तेरा ।
 वायु में है तेरी शक्ति, और आकाश में भास तेरा ॥
 तू है एक अनेक रूप में, अगम अगोचर निर्माया ।
 यह ब्रह्मांड तेरी है काया, फिर भी तू है निरकाया ॥
 बिन पग चलत सुनत बिन काना, बिन जिभ्या बाचाल है तू ।
 माया मोह से रहित निरन्तर, सब जग का प्रतिपाल है तू ॥
 तू है देस निमित्त भी तू है, और कहूँ क्या काल है तू ।
 जड़ चेतन है कारन कारज, करुणा मय कृपाल है तू ॥
 फूल फूल में बास है तेरी, मेंहदी में है तू लाली ।
 चकमक में ज्यों आग छुपी है, एक तिल नहीं तुझसे खाली ॥
 दया सिंधु है दीनबन्धु है, भक्त जनन का हितकारी ।
 सृष्टि प्रलय लीला है तेरी, तू है हलका तू भारी ॥
 तू व्यापक तू अविच्छिन्न है, तू सब में सब हैं तेरे ।
 सब में रमा अलग है सब से, सब से दूर सब से नेरे ॥



रोम रोम में गुप्त हुआ है, अणु अणु में प्रगट है तू ।
 हृदय गुफा में बास है तेरा, जीव जन्तु का घट है तू ॥
 महिमा अनिमा लघिमा गरिमा, हैं अनेक यह तेरे रूप ।
 तू सेवक है तू स्वामी है, तू है परजा तू है भूप ॥
 क्या माँगूँ तुझसे मैं स्वामी, तू मेरा मैं हूँ तेरा ।
 खोजूँ क्यों मैं देस देस में, हिये में है तेरा डेरा ॥

[७-६०५]

सबका आदि अन्त तू दाता, धन्य धन्य तेरी माया ।
 व्यापक सत चित आनन्द स्वामी, कर निज दासों पर दाया ॥
 तेरी थाह न पावे कोई, अगम अपार से पार है तू ।
 लीला तेरी सब से अद्भुत, एक तीन दो चार है तू ॥
 जड़ चेतन में तेरी छाया, क्या कोई भेद तेरा जाने ।
 योगी ऋषि मुनि ध्यान लगावें सबमें विभो तुझको मानें ॥
 हम सब तेरे बाल ग्वाल हैं, तू पितु मात सखा स्वामी ।
 सबमें रमा सकल से न्यारा, घट घट का अन्तरायामी ॥

[८-६०६]

मन मोहन चित चोर छबीला, अलबेला प्यारा है तू ।
 मेरे मन में आन विराजा, इन आँखों का तारा है तू ॥
 तुझपर छिनछिन बलि बलि जाऊँ, निसदिन तेरा गुन गाऊँ ।
 तुझको सुमिरूँ तुझको ध्याऊँ, सच्चा करतारा है तू ॥
 योग कठिन वैराग कठिन है, ज्ञान का दान मिले मुझको ।
 प्रेम बसा जब मन में आकर, प्रान का अपने आधार है तू ॥

[९-६०७]

घट में चली सुरत मतवारी, छोड़ जगत की माया हाँ ।
 मन को साधा गुरु आराधा, गुरु गम चित्त बसाया हाँ ॥



नाचत गावत धूम मचावत, तजी असार की छाया हाँ ।
 सहज विरागी पद अनुरागी, गुरु ने की है दाया हाँ ॥
 इत से तोड़ा उत से जोड़ा, भरम अज्ञान भिटाया हाँ ।
 सुरत नवेली भई है रंगीली, राधास्वामी रंग रंगाया हाँ ॥
 शम दम संयम नियम धरम सम, हानि करे नहीं काया हाँ ।
 ज्ञान न जाना मुक्ति न माना, भक्ति का साज सजाया हाँ ॥
 जीवन बूटी सब विधि लूटी, आवागमन नसाया हाँ ।
 राधास्वामी धामा अचल मुकामा, हरष हरष गुन गाया हाँ ॥

[१०-६०८]

आँखों का तारा सबका सहारा, हित चित से तू प्यारा है ।
 निर्मल शुद्ध बुद्ध हितकारी, सुख सम्पति परिवारा है ॥
 घट घट बासी आनन्द रासी, अविनासी मंगलकारी ।
 रोम रोम में रमता जोगी, रोग सोग से न्यारा है ॥
 गुणातीत गोविंद मुरारी, पुरुषोत्तम करुणा सागर ।
 जन मन रंजन दोष भिंजन, प्रेम प्रीति भंडारा है ॥
 नाम लेत भव सिंधु सुखावें, ध्यान धरत कलि मल जावे ।
 भव दुख मेटन दोष नसावन, भक्ति रीति का सारा है ॥
 करम धरम वैराग ज्ञान तत, विज्ञानी पूरा सच्चा ।
 हे दयाल करो दृष्टि दया की, हृदय दुखी हमारा है ॥
 अब तो शरन में आन पड़ा हूँ, एक आस तेरी मुझको ।
 राधास्वामी चरन से प्रीति रहे नित, वही धुर इष्ट सहारा है ॥

[११-६०९]

जग का स्वामी जग का दाता, जग का पालनहारा ।
 जग त्राता जग पितु माता, जग का राखनहारा ॥
 चरन कमल में सीस झुकाऊँ, निस दिन तेरा गुन गाऊँ ।
 काम क्रोध मद त्याग ईर्ष्या, तुझ से नेह लगाऊँ ॥



निस दिन सुमिरूँ पल पल ध्याऊँ, छिन प्रतिछिन गुन गाऊँ ।
 दुख में सुख में हर्ष शोक में, चरनन पर बलि जाऊँ ॥
 सिंधु एक अति घोर गम्भीरा, नाव न बेड़ा भारी ।
 दिन प्रतिदिन जपूँ नाम निरंतर, जाऊँ भव जल पारी ॥
 भक्ति दीजे मुक्ति न दीजे, ज्ञान न दीजे स्वामी ।
 लव लागि जाय लगन की लारा, तू पद कमल नमामी ॥

[१२-६१०]

सिरजन हारा पालन हारा, राखन हारा श्रुति सारा ।
 जानन हारा धारन हारा, मारन हारा रखवारा ॥
 महिमा विमल अनूपम तेरी, सब में रमा सबसे न्यारा ।
 ऋषि मुनि कोई भेद न पावे, वेद कहे अपरम्पारा ॥
 कारन कारज कर्म विधाता, हरता धरता करतारा ।
 राता माता अपनी दशा में, परम तत्व का भंडारा ॥
 तेरे बिना नहीं कोई रक्षक, सबका है तू आधार ।
 प्रीतम प्यारा भक्त सहारा, जन की आँखों का तारा ॥
 भूल भटक से भरम मोह से, प्रभु दे सबको छुटकारा ।
 जग की आस त्याग करुणामय, पहुँचादे भव जल पारा ॥
 घट घट वासी सकल प्रकासी, हित सुत और संपत दारा ।
 अन्तरयामी सबका स्वामी, धन यश मंगल परिवारा ॥
 भक्ति दान दे शक्ति दान दे, बुद्धि दान दे दातारा ।
 चरन कमल में सीस झुकाकर, रहूँ बखूँ चरनन लारा ॥

[१३-६११]

वह द्वैत भी है अद्वैत भी है, द्वैत अद्वैत के पार गुरु ।
 संसार का सार असार नहीं, दोऊ सार असार के वार गुरु ॥
 मति जेहि न लखे जो मति में रहे, मति सुमति कुमति को राह नहीं ।
 यहि सिंधु महा गम्भीर कहा, मरजीवा की वामें थाह नहीं ॥



जब आप कहे सब कोई लहे, बिन बानी कथे सब भेद सही ।
 नहीं देस विदेस अदेस कभी, संदेस बताये सुनाये कही ॥
 नहीं कर्म धर्म न मर्म भया, निःमर्म का मर्म कहे कोई क्या ।
 निःअक्षर अक्षर क्षर जो नहीं, तज बुद्धि ताको कहे कोई क्या ॥
 राधास्वामी ने रूप धरा गुरु का, तब भेदी को भेद दिया अपना ।
 पद तुर्या नहीं तुर्या है वहीं, सुखनींद न जाग्रत नहीं सपना ॥

[१४-६१२]

गुरु गुन गाना गुरु छवि ध्याना, गुरु मत ज्ञाना काम तेरा ।
 नहीं कहीं आना नहीं कहीं जाना, चित ठहराना जतन सदा ॥
 कृपा सागर सब गुन आगर, नागर गुरु तेरे स्वामी ।
 क्यों दुख पावे भरम भुलावे, मूरखता से अति हानी ॥
 जन मन रंजन दोष विभंजन, भव खंजन गुरु हितकारी ।
 धर विश्वासा चरनन आसा, राधास्वामी के बलिहारी ॥

[१५-६१३]

संसार असार में सार नहीं, कर सार शब्द का निरवारा ।
 कोई साथी नहीं कोई यार नहीं, चल डगर अकेले मतवारा ॥
 संसार यह अगमापाई है, क्यों भरमा भूला फिरता है ।
 यह भरम हिंडोला भाई है, तू इसमें भूला फिरता है ॥
 तेरे मन में माल खजाना, चोरों से बचाले धन अपना ।
 क्या मूरख है दीवाना है, ले सोध जतन कर मन अपना ॥
 तेरा साहब है घट के अन्दर, हित चित से कर दर्शन उसका ।
 घट भीतर निरख रूप सुन्दर, ले देख अभी दरपन अपना ॥
 मन दरपन सुन्दर रूप बसा, सुन दर में है प्रीतम प्यारा ।
 अति अद्भुत छवि से आप हँसा, नौ द्वार से होजा तू न्यारा ॥
 क्या खोल कहूँ तुझसे प्यारे, यह सैन बैन की बानी है ।
 आज्ञा धँसजा इसमें आ रे, तिस परे धाम निरवानी है ॥



घट अन्दर तूर तंबूरा है, सुन सुनकर त्याग जगत काँचा ।
 तू वीर धीर है सूर है, जो सतगुरु का सेवक साँचा ॥
 कर गंग जमन अस्नान अभी, अपने घट तिरबैनी धारा ।
 तज मान मनी अभिमान अभी, होजा राधास्वामी का प्यारा ॥
 गुरु ने की मेरी रखवारी, मुझे मर्म लखाया सतगुरु ने ।
 हुआ धुरपद का मैं अधिकारी, जब भेद बताया सतगुरु ने ॥
 तिल भीतर जोत जले जगमग, घट सूर चन्द्र प्रकाश करें ।
 तिल फोड़ चलें जो गुरु के मग, वह सकल अधिद्या नास करें ॥
 कभी घंटा शंख सुनें अंदर, कभी सार शब्द झनकार सुनी ।
 कभी सारंग किंगरी बजी भीतर, कभी सरंकार धुनकर सुनी ॥
 मन गुफा में मुरली बाज रही, सतपद में बीना गाज रही ।
 मेरी गुरु की दया से लाज रही, घट मूरत उनकी धिराज रही ॥
 राधास्वामी चरन पर बलिहारी, गुरु ने अब काम किया पूरा ।
 मेरी फाँसी कटी भारी भारी, हुआ काल करम का मद चूरा ॥

[१६-६१४]

पढ़ा लिखा सोचा और समझा, कुछ भी हाथ न आया ।
 सन्त ने आप ही परगट होकर, निज स्वरूप दिखलाया ॥
 मन बानी की गम नहीं जिसमें, क्या कोई भेद बतावे ।
 ऋषि मुनि पंडित ज्ञानी ध्यानी, केहि विधि तेहि समझावे ॥
 सत्त नहीं है असत्त से न्यारा, दरसे वह तो अगम अपारा ।
 सार असार दोऊ से ऊँचा, क्या कोई बरने पारा ॥
 तुर्या तुर्यातीत नहीं वह, बार बार से आगे ।
 यह तो मर्म कोई गुरुमुख पावे, गुरु चरनन जब लागे ॥
 जब कोई पारख मिले विवेकी, नाम रतन अधिकारी ।
 हीरा खोल दिखाऊँ उसको, राधास्वामी के बलिहारी ॥



[१७-६१५]

गुरु चरन कमल में सीस झुका, दिन रात करूँ पूजा सेवा ।
 गुरु स्तुति नित करूँ मन से, गुरु सम कोई और नहीं दूजा ॥
 गुरुदेव दयाल ने की जो दया, भवसिंधु से पार किया मुझको ।
 नहीं बार रहा नहीं पार रहा, सब भाँति अपार किया मुझको ॥
 गुरु दाता दानी अंगार महा, याचक जग जीव हुये सारे ।
 गुरु अर्थ देत गुरु धर्म देत, गुरु काम मोक्ष देने हारे ॥
 गुरु महिमा जाने न ऋषि मुनि, शिव शारद शेष की पार नहीं ।
 संसार असार की प्रीति छुटी, गुरु भक्ति सम कुछ सार नहीं ॥
 बहु बरत किये बहु दान दिये, बहु तीरथ में जाकर भटके ।
 गुरु चरन कमल से प्रीति नहीं, यम जाल में सो निसदिन लटके ॥

[१८-६१६]

मन में समझ गुरु की महिमा, गुरु का ध्यान लगाओ ।
 अन्तर बाहर सतगुरु व्यापे, निरख निरख गुन गाओ ॥
 बन परबत में नगर ग्राम में, गुरु की परगट लीला ।
 मंगल में मंगल है चहुँदिस, समझे कोई सुशीला ॥
 छिन छिन पल पल नाम दिवाना, नाम से सरत लागी ।
 नाम सनेही जो नर प्रानी, सो सहज ही वैरागी ॥
 शब्द सुरत का साधन करना, दिन प्रतिदिन गुन गाना ।
 सुभिरन भजन ध्यान निस बासर, जो कोई करे सियाना ॥
 गुरु की मूरत बसी हिये में, अंग संग गुरु देवा ।
 अन्तर में रहे भजन ध्यान नित, अन्तर मानस सेवा ॥
 तूने गुरु को बाहर जाना, किसने तुझे बताया ।
 मूर्ख सोच समझ मन अपने, सब कुछ गुरु की माया ॥
 चेत सबरे अवसर पाया, सुरत शब्द नहीं भूले ।
 सेवक अब तो भया बड़भागी, सुरत हिंडोले भूले ॥



राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाना ।
मन की दुर्मति दूर निकारो, तब प्रगटे गुरु ज्ञाना ॥

[१६-६१७]

मन की आस भरोस है मन में, आठ पहर गुरु सेव करूँ ।
आवागवन का संकट मेटूँ, नहीं जन्मूँ नहीं जन्म मरूँ ॥
लव लगी रहे चरन की लारा, साँस साँस गुरु का ध्याना ।
यही धिवेक है यही चतुराई, यह दिया है यह ज्ञाना ॥
गुरु मेरे परम पुरुष करतारा, व्यापक घट घट के बासी ।
सत चित आनन्द ज्ञान की मूरत, सहज सार अति सुखरासी ॥
चेतन की छवि छाई नयन में, छवि की छाया संसारा ।
अन्तर गुरु है बाहर गुरु है, सार सार के निज सारा ॥
शब्द गुरु हैं सुरत गुरु हैं, परम तत्व गुरु रूप लखूँ ।
पीऊँ गुरु का भक्ति सुधा रस, प्रेम धिवेक प्रसाद चखूँ ॥
नयनों में गुरु मन में गुरु हैं, तन में गुरु का विस्तारा ।
साँस गुरु मेरे जान गुरु मेरे, प्राण के गुरु हैं आधार ॥
मैं हूँ चरन कमल का भँवरा, बास सुवास की प्यास धनी ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु हैं पूरन पुरुष धनी ॥

[२०-६१८]

किसी पुरुष ने बन्दर पाला, अपना मीत बनाया ।
पाला पोसा प्रेम प्रीति से, जग व्यवहार सिखाया ॥
बन्दर करता काम सब उसके, रात दिवस का संग ॥
संग साथ रह सेवा करता, कभी न मोड़त अंग ॥
आग जलाता पानी लाता, और पकाता खाना ।
खाट बिछाता पाँव दबाता, अपनी बुद्धि अनुमाना ॥
बिना दाम का सेवक साँचा, पल पल की रखदारी ।
चकित हुये सब लीला देखें, बन्दर की हुशियारी ॥



लकड़ी काट पेड़ से लाता, घर को खूब सजाता ।
बन से फूल पात फल लाकर, निज स्वामी को खिलाता ॥
एक दिन सोया पुरुष खाट पर, देह की सुधबुध भूला ।
वह अचेत निद्रा बस माता, यह सेवा बस फूला ॥
आया साँप पीठ पर बैठा, बन्दर देख डराना ।
हाथ से अपने पकड़ कुल्हाड़ी, चाहा मार गिराना ॥
भय बस चेत न आया उसको, पशु में रहे न ज्ञाना ।
साँप के संग में स्वामी मरता, यह उसने नहीं जाना ॥
चोर ने उसकी गति मति देखी, हाथ पकड़ के बिठाया ।
शोर मचाया उसे जगाया, साँप देख घबराया ॥
वह तो अपने बिल में समाना, पुरुष सुनाई बानी ।
तू है कौन कहाँ से आया, दे कुछ अपनी निशानी ॥
बोला चोर चोर हूँ तेरा, चोरी करने आया ।
देख देख लीला बन्दर की, जी में अधिक डराया ॥
यह बंदर है निपट अनाड़ी, इसमें नहीं चतुराई ।
इसकी संगत भूल न प्रानी, यह नहीं तेरा सहाई ॥
साँप मारकर यह अज्ञानी, तुझको मार खपाता ।
बंदर की गति समझ सियाने, यह नहीं प्रान का दाता ॥
छोड़ कुसंगत पशु की भाई, पशु में कहाँ भिताई ।
इसकी संगत है दुखदाई, तामे कौन भलाई ॥
संगत तो कीजे ऊँचे की, नीच की संगत त्यागी ।
जो कोई पड़ा नीच की संगत, वह मति मंद अभागी ॥
समझ बूझ कुछ तू नर वीरे, पशु सों हित न होई ।
पशु ले जाये मौत के मुँह में, शत्रु मीत लख सोई ॥
पुरुष विवेकी चतुर पारखी, सोचे मन में अपने ।
पशु के साथ मृत्यु भय उपजे, सुख सम्पति नहीं सपने ॥



पुरुष ने पाँव चोर का पकड़ा, तू मेरा हितकारी ।
तूने मौत से मुझे बचाया, भया साँच उपकारी ॥
इस बन्दर का कौन भरोसा, अब नहीं भूलूँ भाई ।
इसके गुन सब अगुन रूप है, अवगुन काह भलाई ॥

“व्याख्या”

मन है बन्दर मन पशु चंचल, मन है मूढ़ अज्ञानी ।
मन को साध साध नहीं भूले, मन में विष की खानी ॥
मन के मत कोई नहीं चाले, मन का नहीं भरोसा ।
गुरु के मत जो चले न प्रानी, करे अन्त अफसोसा ॥
एक ही मन से सब कुछ उपजे, भाव अनेक पसारा ।
मन का मारा कभी न जीवे, मन मृत्यु भंडारा ॥
मन के मारे बन तज जावे, बन तज घर को आवे ।
कभी बन और कभी घर भरमे, ठौर ठिकान न पावे ॥
मन को चेत चेत नर मूरख, मन नहीं मीत है तेरा ।
मन की रीति में तू क्यों भूला, मन में काल का डेरा ॥
ले गुरु मत को तज मन मत को, सत मत सार न खूमे ।
जो कोई गुरु मत से लव लावे, शब्द अगम गति बूमे ॥
मन मलीन तन में रहे निस दिन, विषय वासना लागी ।
साध साध इस मन को अपने, हो गुरु पद अनुरागी ॥
घोड़ा है यह मन अति चंचल, ज्ञान का कोड़ा लीजे ।
दे लगाम को उसके मुँह में, पग आगे को दीजे ॥
घोड़ा तो घोड़ा है पशु सम, घोड़े से क्या प्रीती ।
घोड़े चढ़ असवारी कीजे, यह सियाने रीती ॥
पकड़ पूँछ ऐंठो घोड़े की, साधन एड़ लगाओ ।
सरपट दौड़ो प्रेम नगर में, तब गुरु पद को जाओ ॥



देस गुरु का अधिक सुहेला, अमृत खंड अनूपा ।
 भल्लके जग मग जोति अपारा, दरसे चेतन रूपा ॥
 बरसे अग्नी अखंडित धारा, नहीं मीठा नहीं खारा ।
 कोई कोई साध स्वाद रस पावे, जो सतगुरु का प्यारा ॥
 बिना नयन के देखे लीला, बिना श्रवण सुन बानी ।
 बिन जिभ्या चखे अमृत रस को, बिन कर कर्म करानी ॥
 बिन पानी के सुधा कुंड में, करे हँस अस्नाना ।
 मान सरोवर अमृत भल्लके, करे रात दिन पाना ॥
 नहीं वहाँ पुरुष प्रकृति का वासा, नहीं ब्रह्म नहीं माया ।
 मैं तोहि पूछूँ पंडित ज्ञानी, भेद कहाँ से पाया ॥
 मन तो माया रहा समाना, बानी मुँह में अटकी ।
 कान दशा के लोक समाया, घान पृथ्वी जा लटकी ॥
 बुद्धि बुद्धि तत गई हराई, कैसा ज्ञान विचारा ।
 नहीं वहाँ मान नहीं अपमाना, मिटा सकल हंकारा ॥
 कैसे जाना केहि विधि माना, किस का गया अनुमाना ।
 जो कोई समझे इस बानी को, पावे गुरुमत ज्ञाना ॥
 सैन बैन में सन्त लखावें, सुरत शब्द की रीती ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, उपजी घट में प्रीती ॥

[२१-६१६]

एक वृक्ष में दो हैं पत्ती, एक छोटा एक भारी ।
 वह खाता मीठा कड़वा फल, यह रहता निरहारी ॥
 एक सुनहिले पर वाला है, दूजा रंग विरंगा ।
 कहने को वह जुदा जुदा हैं, निस दिन रहते संगी ॥
 फल वाले को दुख सुख का भय, निश्चल अभय बिलासा ।
 डाली डाली फिरता डोले, काल का सहे त्रासा ॥
 आँख खुली तब जग व्यौहारा, जब सोया तब सपना ।



भोग रोग में लम्पट रहता, तीन ताप का तपना ॥
 ऊँची शाखा नीची शाखा, फल उत्तम और मध्यम ।
 फुदुक फुदुक कर दोनों खाता, करता रहता उद्यम ॥
 ऊँचे चढ़ा चैन कुछ पाया, नीचे भया दुखारी ।
 चिन्ता उपजी शोकातुर हुये, मन संकल्प विचारी ॥
 मन मलीन तन सोचे पक्षी, वृक्ष महा दुखदाई ।
 डाल डाल में पात पात में, मोह बेल लपटाई ॥
 कभी मीठा कड़वा फल चाखूँ, कभी निरस की बारी ।
 तृष्णा मोह काम का फंदा, कठिन भई छुटकारी ॥
 मिले कोई ऐसा पुरुष विवेकी, मुझको आन छुड़ावे ।
 भोग वासना से मैं छूटूँ, भव भय फिर न सतावे ॥
 तब आकाश बानी हुई ऐसी, दृष्टि ऊँच कर भाई ।
 देख मुझे मैं तेरा हूँ साथी, संगी सहज सहाई ॥
 मेरा रूप है अगम अपारा, अजर अमर अविनासी ।
 एक अस्थानी सर्व अस्थानी, घट घट का मैं बासी ॥
 जो कोई लखे रूप निज मेरा, शब्द सुने सुख रासी ।
 तुरत छुड़ाऊँ तोहि बंध से, काटूँ यम की फाँसी ॥
 शब्द रसीला पक्षी सुन कर, ऊँचे सीस उठाया ।
 देख देख वह अचरज मूरत, मन में अति हर्षाया ॥
 तुम हो कौन कहाँ से आये, कौन धाम में बासा ।
 दया रूप धारा यह कैसा, सहज प्रकाश उजासा ॥
 बोला पक्षी सुन मेरे भाई, मैं हूँ अगम अपारा ।
 जो कोई शरणागत आवे, ताको दूँ मैं सहारा ॥
 अविनासी पद को पहुँचाऊँ, भेद बताऊँ न्यारा ।
 परम अवस्था ताहि दिखाऊँ, करूँ आप निस्तारा ॥
 तू तो पड़ा मोह के फन्दे, आसा तृष्णा लागी ॥



राग वासना त्यागदे मन से, हो चित से वैरागी ॥
 यह तो वृक्ष काल की माया, जान इसे परदेसा ।
 तेरा धाम अधर में प्यारे, चल चल कर प्रवेशा ॥
 बोला पक्षी दीन अधीना, मैं हूँ विकल निदाना ।
 केहि विधि चलूँ धाम को तेरे, मैं नहीं चतुर सुजाना ॥
 दया दृष्टि कर तब वह बोला, चिंता तज दे भाई ।
 मैं तो आया तोहि उबारन, दे अपनी शरनाई ॥
 मेरी ओर देख तू हरदम, बल पौरुष तब आवे ।
 मेरा बल ले चढ़ अन्तर में, शब्द स्वाद घट पावे ॥
 पिंड में तेरे खंड ब्रह्मांडा, तू है आप अविनासी ।
 सोच सोच कुछ मन में अपने, भ्रम अविद्या नासी ॥
 पक्षी ने तब तासों सीखा, सुरत शब्द विधि सारा ।
 अनहद साधन कर घट अपने, मेटा जगत विकारा ॥
 ज्योती देखी परम सुहेली, सुन अनहद भनकारा ।
 पर फैलाये उड़ा तब पक्षी, छोड़ा वृक्ष संसारा ॥
 सहस कमल त्रिकुटी के ऊपर, सुन्न महासुन्न आया ।
 भँवर गुफा के पार ठिकाना, सतपद बीन बजाया ॥
 अलख अगम पद को जब परसा, राधास्वामी पद में बासा ।
 अब नहीं दुख दारुण की चिंता, किया निर्विण निवासा ॥
 धन्य धन्य गुरु परम सहायक, जीव अजान चिताया ।
 साँचे धाम मिले जब बैठक, व्यापे काल न माया ॥

[२२-६२०]

सहस कमल में डेरा डालो, ज्योति में ज्योति मिलाओ ।
 ज्योति निरंजन ज्योती भल्लके, घंटा शंख बजाओ ॥
 ज्योति शब्द की निरख परख में, गुरु का ध्यान लगाओ ।
 मेघा बरसे बिजली चमके, अमृत धार नहाओ ॥



धिन जल बूँद पड़े जहाँ भारी, न्हाय न्हाय तृप्ताओ ।
 रिमक्तिम रिमक्तिम वादल बरसे, मेघनाद चित लाओ ॥
 चाँद खर बिन जहाँ उजियारा, सो प्रकाश लख धाओ ।
 मोती पोहो गगन मंडल में, बिन सुर शब्द सुनाओ ॥
 त्रिकुटी जाय सोमरस पाओ, पियो अमी रस सारा ।
 यह निज वेद श्रुति अस्थाना, मूल कलाम विचारा ॥
 यह पद जब कोई साधू परसे, दरसे सत ओंकारा ।
 प्रणव शब्द सुन मंगल गावे, यह है गुरु दरबारा ॥
 सेत बन्ध रामेश्वर सागर, ब्रह्मा नाद चिकारा ।
 मेघनाद इन्द्रीजित रावन, मार करा संहारा ॥
 त्रिकुटी छोड़ चले आगे को, सुन्न महासुन्न झारा ।
 अटल समाधि की तारी लागी, सो पद दसवाँ द्वारा ॥
 गढ़ कैलाश ब्रह्मेन्द्र चोटी, मानसरोवर धारा ।
 हंस निरन्तर मोती चूगें, पुरुष प्रकृति धारा ॥
 सुन्न छोड़ सोहंग पद आवे, भँवर गुफा की खिड़की ।
 मुरली बजी सोहंगम धुन में, सहज ही बिजली कड़की ॥
 सोहंग सोहंग हंस की बानी, सोहंग उलटा हंसा ।
 जो कोई मरम गुरु का पावे, सुफल तासु शुभ बंसा ॥
 सत पद बीन सुनी लब लाई, सत्त पुरुष घर बासा ।
 देखा रूप अगाध अपारा, अद्भुत अजब तमासा ॥
 अलख अगम के पार ठिकाना, राधास्वामी धाम सिधाये ।
 मन बानी की गम नहीं जामें, समझ समझ हर्षाये ॥
 जा पर दया गुरु की होई, सो पहुँचे दरबारा ।
 राधास्वामी छिन छिन भाखे, राधास्वामी अगम अपारा ॥





[२३-६२१]

सात समुन्दर गोता मारा, सात लोक चढ़ आया ।
 सात दिनों की सात चढ़ाई, चढ़ धुर आसन लाया ॥
 सात शब्द और सात राग हैं, अनहद सात सुहानी ।
 सात ज्योति की लीला निरखी, सात ही सात बखानी ॥
 सात अवस्था ऊँच नीच की, समझे कोई गुरु ज्ञानी ।
 छः को त्याग सात को धावे, पावे पद निरवानी ॥
 गावे राग अनूप अपारा, निरखे रूप गोसाईं ।
 सरगम के सुर सात हैं जो जो, सो घट नाद की भाई ॥
 सात द्वीप में सात हैं तारे, सप्त ऋषि रखवारा ।
 सात प्रकार की रचना अद्भुत, क्या कोई बरने पारा ॥
 तिल पहिला सहस्रार दूसरा, त्रिकुटी तीजा जानो ।
 सुन्न चौथा महासुन्न पाँचवाँ, गुफा छटा पहिचानो ॥
 सतपद सप्तम अपर अपारा, सुर धुन जहाँ बिसराई ।
 अपने घट में लखो निरन्तर, बिगड़ी सब बन जाई ॥
 आगे शब्द है अगम अलेखा, राधास्वामी पद तिस ऊपर ।
 शब्द अशब्द का भेद मिले जब, गुरु दयाल हो जिनपर ॥
 घंटा शंख मृदंग सारंगी, बजा सितार अनूपा ।
 बंसी मधुर मनोहर बाजी, सातवाँ वीन का रूपा ॥
 सुरत शब्द का साधन करके, पाया भेद अपारा ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, खोजा निज दरवारा ॥

[२४-६२२]

रूप अरूप सरूप अनूप, कथे कोई महिमा क्या तेरी ।
 आनन्दघन सत चित्त अगोचर, बुद्धि लहै कैसे गति तेरी ॥
 सिंधु अपार महिमा अति निर्मल, अमल विमल से पार गुरु ।
 पार अपार की गम नहीं तुझमें, अपरम्पार से पार गुरु ॥



माया गोतीता चरित पुनीता, व्यापक विरज महान है तू ।
 सर्व स्वरूपी सर्व व्यापी, मंगल मय निज ज्ञान है तू ॥
 सर्व आधार रहित विकारा, सब का सब से न्यारा है ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, तेरा ही मुझको सहारा है ॥

[२५-६२३]

मेरा इष्ट बहुरंगी साँई, घट घट करे निवासा ।
 नाचे नाच नचावे बहुविधि, खेले खेल तमाशा ॥
 चन्द्र सूर तारागन मध्ये, ज्योत प्रकाश उजासा ।
 मेंहदी बीच लाली हुये झलके, फूल बीच ज्यों बासा ॥
 रमता जोगी भोग अभोगी, सोगी सोग उदासा ।
 रूप स्वरूप अनूप दिखावे, रहे निरन्तर पासा ॥
 आवे जाये न गुप्त प्रगट होय, बख्शे प्रेम बिलासा ।
 सिंध अगाध अगम जल भरिया, पीवे तृप्त पियासा ॥
 चैतन धन आनन्द धन अद्भुत, सत्त भाव में भासा ।
 जो कोई उसका ध्यान लगावे, काटे कर्म का फाँसा ॥
 अजर अमर अविनासी प्यारा, न्यारा प्रेम हुलासा ।
 चर और अचर में आप बिराजे, रचे भक्ति निज रासा ॥
 नहीं वह ज्ञान योग तुरियातित, नहीं प्रगटा नहीं नासा ।
 आसा त्याग जगत माया की, कोई कोई पावे दासा ॥

[२६-६२४]

तीन ताप से जगत दुखारी, सुख आनन्द नहीं पावे ।
 ज्ञान त्रिवेक की गम नहीं वाको, भरम अज्ञान भुलावे ॥
 मतवारों ने मति गति गाई, मति माया की दासी ।
 बुद्धि चतुरता डल और धोके, यम के गले बिच फाँसी ॥
 भरम भरम भरमे निस बासर, भरम में आन भुलाने ।
 भर्म हिंडोले भूले सारे, ऋषि मुनि और सियाने ॥



मानुष जनम का सार न जाना, नर तन वाद गँथाया ।
 जेहि देखा सो भूल भरम में, फिर फिर भटका खाया ॥
 राधास्वामी सन्त रूप जग आये, शब्द की डगर बताई ।
 जो कोई चरन शरन में आया, ताहि लिया अपनाई ॥

[२७-६२५]

इस मन अन्दर बाग बगीचा, इसमें है फुलवारी ।
 नाना गाछ लता हैं अन्दर, नाना खेत कियारी ॥
 इस मन अन्दर सात समुन्दर, मोती मूँगा भारी ।
 ले जितना तेरा मन चाहे, बन सच्चा व्यौपारी ॥
 मन के अन्दर असुर देवता, तीरथ सकल धिराजें ।
 मन के अन्दर बजे बाँसुरी, शंखनाद धुन गाजें ॥
 मन ही कुरुक्षेत्र है तेरा, अर्जुन बान चलावे ।
 जो कोई इस मन को समझे, समर विजय फल पावे ॥
 रावण राम लड़ें मन अन्दर, नित ही होत लड़ाई ।
 सीता सती अशोक वाटिका, सब मन की प्रभुताई ॥
 मन ही विष्णु आदि शिव शक्ति, ब्रह्मा वेद बखानें ।
 मन ही साम यजुर ऋग बानी, जो जाँचे सो जाने ॥
 मन ही आग पवन जल पृथ्वी, मन अकाश का रूपा ।
 मन निर्वाण मुक्ति का हेतू, मन अन्दर भव कूपा ॥

[२८-६२६]

भक्ति का सन्देश सुनाने, साधु जग में आया है ।
 सत असत का निर्णय करके, सत मार्ग दर्साया है ॥
 साधु साधन सिखलाता है, प्रेम भाव जतलाता है ।
 दया धरम का मूल है भाई, यह सबको बतलाता है ॥
 किसी से राग द्वेष नहीं उसको, सबका सबसे न्यारा है ।
 जिनमें श्रद्धा प्रीति है उसकी, उनका वह अति प्यारा है ॥



तरुवर सम हैं साधु सन्त जन, चौथे बरषा का पानी ।
 परमारथ के साथी हैं यह, सहित कर्म और मन बानी ॥
 साधु संग की महिमा उत्तम, भव के पार लगाती है ।
 जो कोई साधु संग में आया, भक्ति उसको भाती है ॥
 भवसागर अति अगम पन्थ है, बिन जल बूढ़ मरे प्राणी ।
 जो कोई साधु शरन में आया, सतसंग की महिमा जानी ॥
 सुख देवें दुख खोयें निस दिन, बरुशें पाप से छुटकारा ।
 परम सनेही साधु हैं भाई, उनसे मिलेगा निस्तारा ॥
 एक घड़ी या आध घड़ी जो, सतसंगत में आता है ।
 काल कर्म के फंद से छुटकर, फल जीवन का पाता है ॥
 भाव से आवे कुभाव से आवे, साधु है सबको प्यारे ।
 दीन दुखी प्राणी हैं साधु के, दोउ आँखों के हैं तारे ॥
 साधु संग को यूँ तुम समझो, ज्यों गंधी की है दूकान ।
 बास सुवास मिले नित आये, यह साधु की है पहचान ॥
 छोड़ कुसंग संग कर इनका, यह भव फंद कटावेंगे ।
 दाग कर्म का अपनी दया से, सहज ही सहज हटावेंगे ॥
 कल्पवृक्ष साधु की संगत, मन माना फल देता है ।
 दुख कलेश संसार के सारे, यह छिन में हर लेता है ॥
 मानुष जनम वृथा मत खोओ, जनम नहीं यह बारम्बार ।
 पात स्रखकर गिरे वृक्ष से, नहीं फिर लगे वृक्ष की डार ॥
 पोथी पढ़ो न पुस्तक बाँचो, हित चित से करो साधु संग ।
 फिर देखो कैसे चढ़ता है, नित नया परमारथ का रंग ॥
 साहब मिला न स्वर्गलोक में, नहीं वह बसता चारों धाम ।
 वह बसता है साधु में निसदिन, साधु संग में है सतनाम ॥
 साधु दरस से मिले मुक्तगति, साधु दरस से सुख पाओ ।
 साधु वचन सतसंग में सुन सुन, सचनाम से चित लाओ ॥



साधु सरल चित जगत हितैषी, दयासिंधु हैं प्रेम स्वरूप ।
जो कोई चरन शरन में आवे, नहीं वह पड़े कभी भवकूप ॥
सार भेद है साधु की पूँजी, साधु से मिले तत्व का ज्ञान ।
साधु संग से सहज ही छूटे, काम क्रोध मोह अभिमान ॥
सिंह साधु की रहनी न्यारी, जीवत नर का करे अहार ।
जीवत मारें बान बचन से, जीतेजी करदें उद्धार ॥
पलट जाय ब्रह्मांड निकाया, पलटे चन्द सूरज की चाल ।
साधु बचन पलटे नहीं भाई, साधु शरन लो चित्त संभाल ॥
नारद वाल्मीकि घट योनी, गनिका पीपा और रैदास ।
सुधरे साधु संग में यह सब, साधु संग नित करो विलास ॥
साधु की महिमा सब कोई जाने, बरन सकें नहिं विष्णु महेश ।
शेष नाग थके ऋषि मुनि थकरहे, थकरहे शारद और गणेश ॥
मन मारो छाँड़ो चतुराई, साधु शरण दृढ़ कर लीजे ।
त्याग कपट छल बुद्धि विलासा, चित सतसंग में दीजे ॥

[२६-६२७]

आपही माली बाग लगावे, सींचे आप फुलधारी ।
आपही फूल कली है आपही, आप बना बनधारी ॥
कोयल बनकर कूक सुनावे, बैठ आम की डारी ।
बौर देख बौरा हो जाये, बौरापन से न्यारी ॥
आपही बौर आप अमृत रस, आप आम रस धारी ।
आपही चखे आम रस रसना, आप करे रखवारी ॥
फूल मध्य है बास सुबासा, रंग रूप गुलकारी ।
आपही निरखे अपनी शोभा, निरखत होय सुखारी ॥
यह तो भेद कोई गुरुमुख पावे, गुरुपद होय मिखारी ।
हम तो सार मरम लख पाया, राधास्वामी के बलिहारी ॥

~ ❀ ~



[३०-६२८]

मैं क्या कहूँ खोलकर तुम से, तुम सब के आधार ।
 तुमसे स्वारथ और परमारथ, तुम में सार असारा ॥
 तुम चन्द्रा सूरज की ज्योती, तुम में नौ लख तारा ।
 तुममें ज्ञान ध्यान है तुममें, तुम सबके भंडारा ॥
 तुम उत्तम हो तुम मध्यम हो, जैसा करो विचारा ।
 तुमसे गेह देह सब प्रगटे, कुल कुटुम्ब परिवारा ॥
 अपनी लीला आप जो परखो, भेद भिले निज सारा ।
 जब लग और की लीला अटके, भटक भटक भ्रममारा ॥
 अपने अन्तर धसो बियारे, अपना रूप पहचानो ।
 अपनी आप निरख का होना, यही है उत्तम ज्ञानो ॥
 आप आपको आप पहचानो, राधास्वामी ने समझाया ।
 कहा और का नेक न मानो, यह उपदेश सिखाया ॥
 सुनो बात तुम गुरु पूरे की, छोड़ो भ्रम कहानी ।
 अपनी निरख परख करो आसही, तब छूटे भव खानी ॥

[३१-६२६]

मेरा तेरा दोनों मिथ्या, तू मैं भ्रम पसारा ।
 सत असत में भेद कहाँ है, क्यों कोई करे विचारा ॥
 नहीं कहीं बंध नहीं कोई मुक्ति, स्वर्ग नर्क कोई नाहीं ।
 यह तो मन की सकल कल्पना, उपजे मन के माहीं ॥
 उपजे बिनसे पल छिन मध्ये, ज्यों सपना रैनाई ।
 उपज बिनस कर गुप्त प्रगट हुये, इनसों कौन भलाई ॥
 एक में प्रगट अनेक की लीला, मिथ्या एक अनेका ।
 है कोई गुरुमुख गुरु का ज्ञानी, सांचा करे विवेका ॥
 एक नहीं और नहीं अनेका, जैसा तैसा रहता ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, साधु निरख यूँ कहता ॥



[३२-६३०]

तू फकीर है कैसा भाई, भूल भरम चितलाया क्यों ।
 तज अज्ञान की बातें जल्दी, ज्ञान ध्यान अलसाया क्यों ॥
 अँखियाँ उलट तमाशा देखें, अन्तर की लीला न्यारी ।
 सब कुछ अन्तर तेरे भरा है, इससे आँख हटाया क्यों ॥
 गुरु तो तेरे घट के बासी, तू गुरु घट में रहता है ।
 मैं तू भूल भरम है प्यारे, यह सिद्धान्त भुलाया क्यों ॥
 बाहर भीतर गुरु हैं व्यापक, कहीं राजा कहीं परजा है ।
 चेले में गुरु गुरु में चेला, नहीं तो उसे चिताया क्यों ॥
 आप आपको आप पिछानो, राधास्वामी की है बानी ।
 कहा और का नेक न मानो, यह बानी बिसराया क्यों ॥

[३३-६३१]

प्यारी तू है प्रेम की मूरत, जग दुख से घबरानी क्यों ।
 तुझमें ज्ञान ध्यान की शक्ति, भरम से यूँ भरमानी क्यों ॥
 सुमिरन भजन ध्यान में लगजा, ध्यान रहे गुरु पूरे का ।
 समझ बूझ कर तू नहीं पढ़ती, प्यारी गुरु की बानी क्यों ॥
 सतगुरु राधास्वामी दया करेंगे, भव कलेश मिट जावेंगे ।
 मान बचन यह दृढ़ निश्चय से, व्यापी है हैरानी क्यों ॥

[३४-६३२]

तू सच्चा है मुझे सचाई, बख्श बख्श सतगुरु प्यारे ।
 तू प्रकाश है तेरी दया से, प्रगटे घट रवि शशि तारे ॥
 तू दाता है दान दे मुझको, नाम रतन धन का स्वामी ।
 मेरे मन में आके समाजा, जो तू है अन्तरयामी ॥
 तू है ज्ञान ज्ञान मुझको दे, भेट तिभिर अज्ञान मेरा ।
 तेरे रूप का दर्शन पाऊँ, छिन प्रतिछिन रहे ध्यान तेरा ॥



तू सत है अपनी सत्ता दे, जीवन मेरा सुधर जावे ।
 तू चित है निश्चल कर चित को, निश्चित ज्ञान मुझे भावे ॥
 सतचित आनन्द रूप है तेरा, दे आनन्द मुझे सतगुर ।
 नाम रूप के तेरे सहारे, जीते जी जाऊँ सतपुर ॥
 राधास्वामी परम पुरुष करतारा, तू दुखियों का सहारा है ।
 दुख दरिद्र को मेटदे मेरे, दुखदाई संसारा है ॥
 चरन शरन की ओट गहूँ मैं, आनन्द मंगल साज सजूँ ।
 राधास्वामी राधास्वामी हित से सुमिरूँ, राधास्वामी राधास्वामी नित भजूँ

[३५-६३३]

चेत चेत चल सत की डगर में, चेत ले अभी सवेरा है ।
 पीछे क्या चेतगा प्रानी, फिर यह समय न बेरा है ॥
 नर जीवन को वृथा न खो तू, हाथ तेरे क्या आवेगा ।
 कोई संग न साथी सच्चा, भूठा मेरा तेरा है ॥
 दो दिन का व्यौहार जगत का, दो दिन खेल तमाशा है ।
 खेलकूद में काम कर अपना, काम तुझे बहुतेरा है ॥
 महल मकाँ पर भूल न भाई, धन दौलत है दो दिन का ।
 जो आया सो जाये यहाँ से, चिड़िया रैन बसेरा है ॥
 राधास्वामी राधास्वामी राधास्वामी गाले, सुमिरन भजन ध्यानकर नित ।
 नहीं फिर जनम मरन का फन्दा, काल का हेरा फेरा है ।

[३६-६३४]

रमता जोगी रम रम मन में, मेरे मेरा काम बने ।
 मुझे वीर हनुमान बनाले, आप तू मेरा राम बने ॥
 लंक अविद्या का गढ़ दुर्गम, जीतूँ रावन को मारूँ ।
 दुख कलेश के विजय से सुख हो, और मेरा विश्राम बने ॥
 भर्म मिटादे कर्म नसादे, माया फंद से हो मुक्ति ।
 ज्ञान ध्यान का मर्म लखा दे, आनन्द आठों याम बने ॥



सकल जगत अज्ञान पसारा, सुभे हाथ से हाथ नहीं ।
 हिये अक्रास में सूर उगादे, करम धरम निष्काम बने ॥
 राधास्वामी सतगुरु दया मेहर से, जीवन सुफल करा मेरा ।
 यह भव अगमा पाई फिर तो, सुख का सच्चा धाम बने ॥

[३७-६३५]

मैं आया हूँ ज्ञान बताने, ज्ञान महा है सुखदाई ।
 ज्ञान सहज है सहज का साधन, सहज में कैसी कठिनाई ।
 बात बात में तत्व सुभादूँ, खेल खेल में दरसा दूँ ॥
 हँसी हँसी में सार लखा दूँ, चुटकी बजाकर समभादूँ ॥
 नहीं भयानक कथन है मेरा, रोचक है बानी मेरी ।
 सुलभादूँ जड़ चेतन ग्रंथी, युक्ति है जानी मेरी ॥
 मेरी संगत में जो आवे, तीरथराज स्नान करे ।
 काम अर्थ और धर्म मोक्ष के, तत्वों की पहचान करे ॥
 सतगुरु ने जो मुझे बताया, वही बताऊँगा तुमको ।
 राधास्वामी की करुना से, सन्त बनाऊँगा तुमको ॥

[३८-६३६]

मैं हूँ भूली भरमी भटकी, आय पड़ी हूँ संसारा ।
 गले में फाँसी यम की पड़ गई, कैसे पाऊँ छुटकारा ॥
 काम क्रोध मद लोभ फँसानी, व्यापा मन हंकारा ।
 पर निन्दा और द्वेष ईर्ष्या, मेरे गले के हारा ॥
 मैं अज्ञान के बस में आई, अपना रूप बिसारा ।
 मैं हूँ कौन मेरा कुल क्या है, कभी न चित से बिचारा ॥
 दुखी हूँ चैन शान्ती खोकर, काल करम ने है मारा ।
 कैसी करूँ उपाय न सुभे, सोचूँ मैं बारम्बारा ॥
 विलपत तलपत दौड़ कर आई, सतगुरु के मैं दरवारा ।
 राधास्वामी मुझे बचाओ, देकर अपना सहारा ॥



[३६-६३७]

गुरु का भाव हिये में आया, सतसंगी का नियम हुआ ।
 छोड़ दिया अनेक का भगड़ा, यह यम सोच समझ के किया ॥
 तीजे तिल पर बैठक ठानी, यह आसन चितको भाया ।
 साँस साँस राधास्वामी का सुमिरन, प्राणायाम यह ठैराया ॥
 मैं हूँ कौन रूप गुरु कैसा, गुरु सेवक में भेद है क्या ।
 बारम्बार रूप का सुमिरन, प्रत्याहार अभ्यास बना ॥
 गुरु का रूप हिये में धारा, वही धारना तुम जानो ।
 धनी धारना ध्यान हुई, अब गुरुमुख ध्यानी मानो ॥
 ध्यान में तन मन की सुध भूली, बुद्धि अहंकार भूले ।
 यही समाधी धने ध्यान की, पाकर सतसंगी फूले ॥
 नहीं घमंड न ममता इसकी, यह भी नहीं स्वरूप मेरा ।
 सहज भावना मन को भाई, सहज सहज में सहज बना ॥
 सहज था पहले अब भी सहज है, सहज समाधि सहज हुई ।
 जहाँ जहाँ मन जाकर ठैरा, वहाँ ही सहज समाधि लगी ॥
 आँख न मूँदूँ कान न रोंधूँ, जिभ्या होंठ न बन्द करूँ ।
 खुली आँख से सबको देखूँ, गुरु लीला चित चेत धरूँ ॥
 जहाँ जहाँ जाऊँ वही है तीरथ, जो खाऊँ सो पूजा है ।
 आत्मदेव को अर्पन सब कुछ, मन में भाव न दूजा है ॥
 जग जागूँ चैतन व्यौहारा, जब सोऊँ सम साध रहूँ ।
 सुषुप्ति गहरी नींद में आकर, निज स्वरूप का सुख भोगूँ ॥
 जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तीनों, सृष्टि स्थिति प्रलय हैं ।
 यह सब काल के घेरे में है, इनसे बचकर आगे चलूँ ॥
 चौथा पद तुरिया जब आवे, तब हो कुछ कुछ रूप का ज्ञान ।
 तुरियातीत है पंचम का पद, इससे उदासीन मन मान ॥
 यहाँ तक ज्ञान की त्रिपुटी देखी, ज्ञेय ज्ञाता और ज्ञान विचार ॥



इसे छटा पद समझो भाई, यह सब है सत के आधार ।
 इनके परे सातवाँ पद है, सतपद धुरपद पद निरवान ॥
 सत सत सत सत सत है सोई, ज्ञान ध्यान पद मूल बखान ॥
 अलख अगम अनाम की गति फिर, नाम रूप से हैं न्यारे ।
 राधास्वामी गुरु ने भेद बताया, समझेंगे गुरुमुख प्यारे ॥

[४०-६३८]

नर शरीर सुर को भी दुर्लभ, क्या नहीं वेद ने तुझे कहा ।
 भ्रम अज्ञान के फाँस में फँसकर, नाना विधि के कष्ट सहा ॥
 नर का जनम पाय यह प्राणी, भव निधि बहता रहता है ।
 उसको समझ बूझ नहीं अपनी, दुख नित सहता रहता है ॥
 विद्या पढ़ी प्रपंच मचाया, पाखंडी हो भरमाया ।
 आप फँसा औरों को फँसाया, अपना भेद नहीं पाया ॥
 यह विद्या है सकल अविद्या, मोह भ्रम की फाँसी है ।
 कर सतसंग सार को पाले, जग में तेरी हाँसी है ॥
 राधास्वामी सतगुरु दाता, सन्त रूप धर कर आये ।
 नर जीवन का सार बताया, गुरु समझाकर अपनाये ॥

[४१-६३९]

योग युक्ति से क्या फल पाया, अपना चरित सुना जोगी ।
 जोग भोग का भेद है कैसा, भेद का भेद बता जोगी ॥
 सेली पहनी भभूत रमाई, आसन मार के बैठा है ।
 किस आसन पर राम है तेरा, उस आसन को दिखा जोगी ॥
 साँस को साधा प्रान को बाँधा, यम और नियम का यत्न किया ।
 शम दम से मन इन्द्री को मारा, संयम रीति जता जोगी ॥
 मृगछाला को बगल में मारे, फिरता रहता है बन बन ।
 विन हिंसा यह कैसे पाया, भाव अहिंसा दिखा जोगी ॥
 अनिमा लघिमा गरिमा महिमा, आदि सिद्धि शक्ति नहीं है क्या ।



क्या नहीं माया सिद्धि शक्ति, यह कैसे उससे बचा जोगी ॥
 ब्रह्मरेन्द्र और सहस्रार पर, मन की वृत्ति को रोक लिया ।
 लगी समाधि सिमट कर बैठा, क्यों कर मुक्ति लिया जोगी ॥
 निरविकल्प से विकल्प अवस्था, से क्या तुझको लाभ हुये ।
 लाभ के साथ हानी नित रहती, द्वन्द नहीं यह क्या जोगी ॥
 जो बाहर भीतर वही लीला, कल्पति देश काल वस्तु ।
 बाहर मुखी रोककर धरती, अन्तरमुख क्यों बना जोगी ॥
 चाँद सूर तेरे भीतर प्रगटे, इसमें नहीं सन्देह कोई ।
 यह भी तो बाहर थे तेरे, क्यों बाहर से हटा जोगी ॥
 किसका ध्यान धारणा किसकी, क्या नहीं वह संकल्प तेरा ।
 सब कुछ है यह मन की कल्पना, कल्पित जाल फँसा जोगी ॥
 गुफा के भीतर बैठक ठानी, आके बिठाया है किसको ।
 रमता राम गुफा में तेरे, कैसे आके रमा जोगी ॥
 केस बढ़ाया जूड़ा बाँधा, स्वाँग विचित्र बनाया है ।
 देखूँ राम फँसा क्या उसमें, खोल दे अपनी जटा जोगी ॥
 ग्रहण त्याग वैराग राग की, समझ नहीं तुझको आई ।
 कछुवा जैसी तेरी समाधी, छुटी न मोह मया जोगी ॥
 गुरु का संग मिला नहीं तुझको, भरम की उलझन में उलझा ।
 बिना ज्ञान मुक्ति नहीं होती, भूल के पन्थ चला जोगी ॥
 जा कुछ दिन कर गुरु की संगत, गुरु के संग में ज्ञान मिले ।
 योग युक्ति का फिर फल पावे, तब हो तेरा भला जोगी ॥
 राधास्वामी दीन दयाला, सतगुरु रूप धरा जग में ।
 चरन कमल की ओट पकड़ ले, अपना सीस झुका जोगी ॥

[४२-६४०]

अनहद बानी मंगल खानी, सत्त धाम सहदानी हो ।
 आनन्द दानी सन्त बखानी, पद निरवान मिलानी हो ॥



अमृत धारा संत मत सारा, कोई कोई बिरला जानी हो ।
 अविनासी घट घट के बासी, सुखरासी अनुमानी हो ॥
 कथनी बदनी तज कर पावे, करनी गुरुमुख ज्ञानी हो ।
 घट के खटपट चटपट धिनसे, अटपट सकल नसानी हो ॥
 खोले हिरदा फाड़े परदा, रूप अनूप दिखानी हो ।
 जगमग ज्योत जगे तिल भीतर, देख देख हरषानी हो ॥
 त्रिकुटी सुन्न महासुन्न लेखे, ओंकार गति जानी हो ।
 सूरज चाँद कोटि छवि छाजे, अद्भुत अकथ कहानी हो ॥
 भंवर गुफा में सोहंग वंशी, सत पद बीन बजानी हो ।
 अचरज शोभा बरनी न जाई, माया मोह सकुचानी हो ॥
 घट चढ़ सुरत विमल हुई भारी, अब नहीं आनी जानी हो ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, मिल गई अगम ठिकानी हो ॥

[४३-६४१]

मैं कैसे करूँ भूली हूँ डगर, बहु दूर पड़ी अपने घर से ।
 व्याकुल होय भूमि गिरी तड़पूँ, हरि आन छुड़ाओ अब करसे ॥
 रैन अंधेरी न सूझे पन्थ, रिमकिम रिमकिम बरसा बरसे ।
 को आके खबर ले जल्दी मेरी, घर जाने को जियरा तरसे ॥
 जल बरसे अखंड प्रचंड महा, बन ऊसर देख परस सरसे ।
 पुरवाई ब्यार भकोले सहे, हठके उखड़े बट सब जर से ॥
 सुध बुध बिसरी भरमी भटकी, मैं तो काँप उठी हूँ भरभर से ।
 मेरे हिया जिया में दुख ताप बसे, तन वायु की बेग लगे सर से ॥
 हिया पीर घनी तलफूँ छिन छिन, कैसे जाके मिलूँ प्रीतम हर से ।
 कोई साथी नहीं कोई संगी नहीं, थर थर अब काँप रही डर से ॥
 मेरे घट में आनन्द चैन कहाँ, नहीं सुख पाऊँ धिन पद परसे ।
 अवसर जो मिले मिल जाऊँ अभी, पद कमल गहूँ लागूँ गुरु से ॥
 गुरु आन मिलो दुख दूर हरो, केहि विधि मैं छूटूँ अपडर से ।
 राधास्वामी दया की अब हो नजर, तुम आये निकारो भव सर से ॥



[४४-६४२]

मैं उपदेश बताऊँ आ तू, मेरे पास फकीरा ।
 यह उपासना तत्व है भाई, सत मत गहर गम्भीरा ॥
 गुरु ने मुझे चिताया जेहि विधि, वही भेद बतलाऊँ ।
 मैं नहीं अटका पोथी पत्रा, तुझे कैसे अटकाऊँ ॥
 नहीं उपदेश और है कोई, यह उपासना जानो ।
 उप है निकट तो देश स्थाना, यह उपदेश पिछानो ॥
 यही तत्व है यही सार है, यह गुरु ज्ञान विचारा ।
 एक शब्द में भेद बताकर, मेटूँ भरम विकारा ॥
 सत का संग करे जो कोई, सत की लीला धारे ।
 गुरु है जग में सत की मूरत, अगम अथाह अपारे ॥
 और नहीं कोई सत है जग में, समझ विचार फकीरा ।
 सत के संग मार ले आसन, मेट द्रन्द की पीरा ॥

[४५-६४३]

उप है निकट देश स्थाना, यह उपदेश का सारा ।
 पंडित कोई भेद न जाने, जाने गुरुमुख प्यारा ॥
 जो कोई निकट में जिसके बैठे, उसका रूप संभारे ।
 उसका रूप बसे नैनन में, अपना रूप बिसारे ॥
 संग प्रभाव न कोई बाँचे, ऋषि मुनि ज्ञानी ध्यानी ।
 हमने तो यह समझ विचारा, सतगुरु की सहदानी ॥
 भव की संगत करे जो प्रानी, भव भय चित्त बसावे ।
 गुरु की संगत में जब आवे, अभय भाव पा जावे ॥
 पशु की संगत पशु बन जावे, नर पदवी को खोकर ।
 भरत हिरन की मोह मया से, पछताया था रोकर ॥





[४६-६४४]

शब्द सार गह शब्द सार गह, शब्द सार गह लीजे ।
 त्याग कुसंगत त्याग कुसंगत, सत संगत चित दीजे ॥
 सतसंग केवल गुरु की संगत, यह उपदेश हमारा ।
 जो कोई देश हमारे आवे, सूझे अगम अपारा ॥
 पहिला देश तीसरा तिल है, सहसकमलदल भाई ।
 ज्योति निरंजन ज्योती भलके, सो उसकी प्रभुताई ॥
 दूजा देश ओ३म् अस्थाना, त्रिकुटी मृदंग गाजे ।
 तीजा सुन्न महासुन्न प्यारे, साज समाधि का साजे ॥
 चौथा देश है गुफा भँवर की, काल बली ठकुराई ।
 पंचम देश सत्त अस्थाना, सत्त नाम सुखदाई ॥
 यह उपदेश देश का सुनकर, ले गुरु का उपदेशा ।
 राधास्वामी ने मुझे लखाया, सोई सार संदेशा ॥

[४७-६४५]

अलख को लखले अगम की गम ले, परख गुरु की बानी ।
 राधास्वामी पद जब परसे, छूटे आना जानी ॥
 गुरु में देश है गुप्त प्रकट सब, गुरु सबके आधार ।
 गुरु के देश की लीला अद्भुत, गुरु संगत निस्तारा ॥
 सुरत शब्द की सुगम कमाई, सहज ही काम बनाले ।
 इसी जनम में धुरपद बासा, सार ज्ञान भत पाले ॥
 गुरु की संगत पाँच दिना की, पाँच देश की खानी ।
 पाँच ही दिन में काम बनेगा, सहज सुगम सुखदानी ॥
 राधास्वामी नर शरीर में, धरा सन्त अवतारा ।
 सालिगराम गुरु की किरपा, मुझे निला सत सारा ॥

[४८-६४६]

उप है निकट तो आसन बैठक, सच्ची बात परखले ।
 उप आसन है गुरु की संगत, गुरु संग बैठ निरखले ॥



प्रेम भाव नहीं उपजे मन में, बिन गुरु संग न भाई ।
 शब्द जाल में पड़ी है दुनियाँ, सच्ची समझ न आई ॥
 ईश जीव दोउ भिन्न भिन्न हैं, भिन्न की कैसी भक्ति ।
 प्रेम प्रीति अपने जैसे की, यह उत्तम है युक्ति ॥
 मैं कहता हूँ बात निराली, सच्ची खरी सुहानी ।
 लखे मरम कोई साधु सुजाना, लखकर चित मनमानी ॥
 गुरु ने रूप धरा मानुष का, सार शब्द समझाया ।
 राधास्वामी की बलिहारी, भरम मिटा सत पाया ॥

[४६-६४७]

कहना सुनना सब है निष्फल, बात मान एक मेरी ।
 एक बात जो मेरी माने, सौ सौ सुनूँगा तेरी ॥
 कोटि ग्रन्थ पढ़कर क्या पाया, गुरु गम ज्ञान न सूझा ।
 एक सैन से अनुभव जागे, गुरु मत जिसने बूझा ॥
 नहीं वह करम धरम जप तप है, नहीं वह साँख्य का ज्ञाना ।
 नहीं संयम नहीं नियम है प्यारे, नहीं वेदान्त का ध्याना ॥
 वाद विवाद है दन्त कहानी, बात का बने बतंगड़ा ।
 शब्द जाल में जो कोई जकड़ा, बुद्धि टाँग नहीं लँगड़ा ॥
 कान इधर ला कहदूँ तुझसे, कर गुरु का सतसंगा ।
 राधास्वामी की कृपा से, मन उपजे नहीं शंका ॥

[५०-६४८]

जो मेरे प्रेतम का प्यारा, मेरा भी वह प्यारा ।
 जो सतगुरु का नाम दिवाना, आँखों का है तारा ॥
 पाप पुण्य का भेद न परखूँ, ऊँच नीच नहीं जानूँ ।
 बुरा भला नहीं दृष्टि में मेरे, भाव का नाता मानूँ ॥
 मेरा स्वामी पतित उद्धारन, पतित हेत जग आया ।
 पतित को अपने चरन लगाया, पतित सुधार कराया ॥



पतित से पतित जो भाव भेंट ले, सतगुरु पद को परसे ।
 मैं उस भाव के सदके जाऊँ, प्रेम प्रसाद को तरसे ॥
 धोबी घाट है गुरु सतसंगत, मैले कपड़े आवें ।
 साबुन गुरु के प्रेम का पाकर, सो उजले बन जावें ॥
 उजले धोबी घर नहीं आवें, उनको कोई क्यों लावे ।
 धोबी मैल को धोवे निस दिन, मैले शुद्ध बनावे ॥
 डाकू चोर उचकका क्रोधी, कामी लोभी मानी ।
 परमारथ हित गुरु ढिग आवे, उपजे न मुझे गलानी ॥
 मैं नहीं पूछूँ तू है कैसा, कैसी करे कमाई ।
 फूल प्रसाद कहाँ से लाकर, गुरु के भेंट चढ़ाई ॥
 गुरु जब प्रेम भाव के भूखे, प्रेम है मुझे पियारा ।
 जो मेरे प्रीतम का प्यारा, सो आँखों का तारा ॥
 गणिका रामानन्द चरन लग, भक्ति भेंट जब लाई ।
 मिला प्रसाद कबीर को उसका, प्रेम स्वाद लग खाई ॥
 तर गई गणिका तर गये पीपा, तरे चमार रैदासा ।
 उनके चरन कबीर के सिर पर, गुरु के प्यारे दासा ॥
 कोढ़ी तरगये तरे पातकी, गुरु के चरनन लागी ।
 ऐसे पापी मुझे पियारे, भक्ति प्रीति हिय जागी ॥
 मैं हूँ पापी पाप की मूर्ख, पाप की दृष्टि धारी ।
 पापी संग तरा मैं गुरुबल, पापी की बलिहारी ॥
 भाव कुभाव सुभाव न परखूँ, नहीं द्वेष नहीं रागा ।
 मेरा तो वह सदा सनेही, जो गुरु चरनन लागा ॥
 निज स्वारथवश भूल करूँ मैं, हिंसा पाप कमाई ।
 हिंसक जब गुरु के ढिग आवे, प्यारा मुझको भाई ॥
 पापी तारन आये सतगुरु, शब्द जहाज बनाया ।
 मैं पापी पापी संग तर गया, पापी पर गुरु दाया ॥



जात न पूछूँ पाँत न पूछूँ, नाहीं कुल परिवारा ।
 प्रेम प्यार का नाता मानूँ, प्रेम का सकल पसारा ॥
 सुन फकीर यह भेद अनूपा, अचरज अगम अमाना ।
 जिस पर दयादृष्टि सतगुरु की, तेहि बड़भागी जाना ॥
 मैं मर जाऊँ भीख न माँगूँ, अपने तन के काजा ।
 परस्वारथ के काम में प्यारे, मोहि न आवे लाजा ॥
 कैसा पाप पुण्य है कैसा, नाम से लगन जो लागी ।
 पूले लाख घास के जर गये, एक चिनगी थी आगी ।
 नाम गुरु का आग तुल्य है, पाप लाख मन पूला ॥
 रत्ती नाम जरावे सबको, दया मेहर अनुकूला ।
 कुत्ते बिल्ली रहें परस्पर, दैर भाव सब छोड़ें ॥
 निज मालिक के प्रेम को परखें, प्यार का नाता जोड़ें ।
 तैसे मुझको पापी प्यारे, गुरु की शरन जो आये ॥
 प्यार करूँ नहीं उनको कैसे, गुरु जब चरन लगाये ।
 साधन प्रेम का सुगम सुहावन, भक्ति भाव सुखदाई ।
 पापी भक्ति के अधिकारी, समझ में मेरी आई ॥
 राधास्वामी नाम भजो नित, नाम से लव रहे लागी ।
 जो कोई नाम से गाखे प्रीति, सो मेरा अनुरागी ॥

[५१-६४६]

कालचक्र का सहज हिंडोला, भूला अचरज न्यारा ।
 सब कोई भूले भूला चढ़कर, काल झुलावन हारा ॥
 चन्द्र सूर दोऊ गगन में भूलें, भूलें नौ लख तारे ।
 जीव जन्तु पृथ्वी में भूलें, नर पशु सकल विचारे ॥
 राजा भूला रानी भूली, और प्रजा समुदाई ।
 ब्रह्मा विष्णु महेश्वर भूलें, भूली सब दुनियाई ॥
 लक्ष्मी भूली दुर्गा भूली, गायत्री महारानी ।



देवा भूले देवी भूले, जल थल अग्नी पानी ॥
 काल भी भूला अपने भूला, सृष्टि प्रलय कर प्यारे ।
 वह भी बचा न चक्र से अयने, भूला भूले सारे ॥
 चढ़ी पैंग तब ऊँचे आये, उतरी नीचे ठहरे ।
 कभी मिले तो जमघट देखी, विछड़ के होगये न्यारे ॥
 एक दशा में नित जो वरते, कोई नजर न आया ।
 पीर पैगम्बर कुतुब ओलिया, ऋषि मुनि वचन न पाया ॥
 पानी भया भाप की सरत, धाया गिरि कैलासा ।
 बरफ बना धारा बह निकली, नीचे किया निवासा ॥
 नीचे भी रहने नहीं पाया, फिर ऊँचे की आशा ।
 हम तो देखें खुली दृष्टि से, अचरज अजब तमासा ॥
 लकड़ी जल कर कोयला होगई, कोयला राख और माटी ।
 माटी माटी में नहीं ठहरी, बनी काठ और लाठी ॥
 विष्टा अन्न अन्न भया विष्टा, सोई सब कोई खावे ।
 यह प्रयंच है अद्भुत न्यारा, कोई धिरला लख पावे ॥
 जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती लीला, कभी ऐसी कभी वैसी ।
 यह सब कालवली की माया, कभी जैसी कभी तैसी ॥
 पंडित कभी अनाड़ी होते, कभी अज्ञानी ज्ञानी ।
 कभी जड़ मिल जुल चेतन ठहरे, कभी चेतन जड़ जानी ॥
 समझत बने कथन नहीं आवे, मन बानी अलसानी ।
 कैसे कोई समझावे किसको, समझे कोई गुरु ज्ञानी ॥
 एक दशा में कोई न वरते, कभी बैठा कभी दौड़ा ।
 कभी थका कभी सोया लेटा, काल चक्र अति चौड़ा ॥
 भूले की है विचित्र कहानी, कथा बारता न्यारी ।
 नर को हम समझावन आये, सुने न बात हनारी ॥
 दुख सुख दुख सुख द्वन्द पसारा, द्वन्द से प्यार बढ़ाया ।



द्वन्द्व भाव ले जगत रचाना, द्वन्द्व के फाँस फँसाया ॥
 मन बुद्धि और चित हंकारा, सो भूले की रसरी ।
 दो लड़ त्रयलड़ चौलड़ बन आई, जीव निबल को जकड़ी ॥
 जकड़े माया के फंदे में, रोये और चिन्लाये ।
 शोर मचाये बहु चिन्लाये, छूटन विधि नहीं पाये ॥
 तब दयाल को दया लागी, सन्त रूप धर आया ।
 राधास्वामी अचल मुकामी, शालिग्राम कहाया ॥
 नर शरीर में प्रगटा आकर, जीवन बहुत चिताया ।
 जो कोई जीव शरन में आया, अपना कर अपनाया ॥
 सुन फकीर यह गुरु उपदेशा, मैं भी तुझे सुनाऊँ ।
 बात जो मेरी मन से माने, इस भूले से बचाऊँ ॥
 खेल खेलाऊँ सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊँ ।
 काल हिंडोले से तू बाचे, विधि विचित्र समझाऊँ ॥
 कर सतसंग विवेक से गुरु का, गुरु दयाल हितकारी ।
 साधु बनकर साधले युक्ति, जा भूले के पारी ॥
 नर शरीर सुर दुर्लभ पाया, सतसंगत में आया ।
 तेरा दाँव पड़ा है पूरा, सोच समझ तज माया ॥
 अब की चूक मौज न ऐसी, त्याग काल की आसा ।
 आज का साधन आज ही करले, कल को होगा उदासा ॥
 बार बार नहीं अवसर प्रानी, काल महा दुखदाई ।
 जो कोई करे काल की आसा, सो पाछे पछताई ॥
 राधास्वामी दया के सागर, तेरे कारन आये ।
 सीस चरन में उनके झुकाकर, अपना काज बनाये ॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाना ।
 मन बच कर्म से भक्ति कमाना, भूले बाहर आना ॥



[५२-६५०]

तू फकीर है मेरे प्यारे, सुन फकीर की बानी ।
 साधु कहें फकीर को भाई, साधु जग सुखदानी ॥
 पर उपकारी जन हितकारी, गुरु के आज्ञाकारी ।
 अवगुन त्यागी गुन के ग्राही, दया भाव चित्तधारी ॥
 निज चित सोधें मन परबोधें, जीव दोष नहीं दृष्टि ।
 अपने भाव में बरतें निस दिन, करें दया की दृष्टि ॥
 मोह मया और छल चतुराई, छोड़ें मूल विकारा ।
 पर हित लागी सहज विरागी, ज्ञान बुद्धि भंडारा ॥
 दुख कलेश सह अपने सिर पर, जीव का करें सुधारा ।
 भव दुख भंजन काम निकंदन, यम से दें छुटकारा ॥
 धर कपास की गति विमलचित्त, निरस विशुद्ध कहायें ।
 सहें विपत्ति कठिनाई जगकी, और का दोष छुपावें ॥
 सरल स्वभाव रहें जग माहीं, अपना रूप सँभारें ।
 औरन के अङ्गुण नहीं देखें, दया का मर्म विचारें ॥
 सुख देवें दुख हरे निरंतर, छमा करें अपराधा ।
 हँसीं खुशी आनन्द प्रेम गति, अगम अलेख अबाधा ॥
 नाम फकीर धराया तूने, हो फकीर अब साँचा ।
 जैसा नाम तो गुण भी वैसा, मन कर्म सहित सुबाचा ॥
 है फकीर का नाम पियारा, मैं फकीर का दासा ।
 तन मन धन फकीर पर वारूँ, बसूँ सुसंग सुबासा ॥
 कठिन नाम है कठिन काम है, कठिन फकीर कमाई ।
 जग के भव दुख नासैं पल में, जब फकीर जग आई ॥
 जो फकीर मोहे दरशन देवे, अपना भाग सरा हूँ ।
 अपने तन के चाम की जूती, पग फकीर पहनाऊँ ॥
 मैं नहीं रामकृष्ण का सेवक, ईश ब्रह्म नहीं जानूँ ।



मैं फकीर का नाम दिवाना, सबसे बढ़कर मानूँ ॥
 मेरे साथ है शब्द विवेकी, सन्तवंश कुल शोभा ।
 चरन कमल मस्तक पर धारूँ, प्रेम मगन मन छोबा ॥
 एक घड़ी साधु की संगत, कटे मोह यम फाँसी ।
 मेरी नजर में साधु फकीरा, सत चित आनन्द रासी ॥
 जो फकीर का दर्शन पाऊँ, चरन सरोज पखारूँ ।
 आप तरूँ उसकी शरनाई, औरों को संग तारूँ ॥
 साधु की संगत गुरु की सेवा, सहज ही काम बनावे ।
 जिस पर साथ की दृष्टि पड़गई, फिर जग योनि न आवे ॥
 तरवर सरवर मेघ का पानी, औरों को सुख कारी ।
 तैसे ही सुन मेरे फकीरा, साधु पर उपकारी ॥
 तू फकीर बन तू फकीर बन, तू फकीर बन भाई ।
 मैं भी तरूँ फकीर चरन लग, ऐ फकीर ! सुखदाई ॥
 सुनले कथा सुनाऊँ तुझको, प्रगटे विमल विवेका ।
 जीव अनेक रहें जग अन्दर, पर फकीर कोई एका ॥

[५३-६५१]

पहली कथा

गंगा तट कोई साधु आया, बिच्छू पानी मँभारा ।
 तड़प जो देखी इसकी उसने, हाथ से उसे निकारा ॥
 बिच्छू ने उसे डंक से मारा, हाथ में उपजी पीरा ।
 साधु ने कुछ बुरा न माना, सत मन चित गम्भीरा ॥
 बिच्छू फिर पानी में आया, इसने उसे बचाया ।
 फिर बिच्छू ने डंक से मारा, साधु नहीं पछताया ॥
 तीजे वार गिरा वह पानी, इसने पकड़ निकारा ।
 बिच्छू का स्वभाव सब जाने, डंक से फिर भी मारा ॥



साधू पकड़ किनारे लाया, हाथ सूज गया भाई ।
 यह लीला कोई देखी नारी, साधू टिंग वह आई ॥
 बोली क्या तू है अज्ञानी, जो बिच्छू नहिं जानी ।
 उसे उठाकर क्यों बाहर किया, बिच्छू भिष की खानी ॥
 हँसा साधु सुन सुन्दर भाई, मैं नहीं निपट अनारी ।
 मैं हूँ साध साध मत मेरा, पर हित पर उपकारी ॥
 बिच्छू तजे स्वभाव न अपना, मैं अपना क्यों त्यागूँ ।
 वह जब निज स्वभाव में वरते, क्यों परहित नहीं लागूँ ॥
 भाई ने जब सुनी तो बोली, धन्य साध की लीला ।
 सुवचन सुमन सुकर्म है साधू, सुरत सुभाव सुशीला ॥
 पर दुख हरन भिभंजन त्रय तप, हितकारी सुख देवा ।
 धन्य जगत में वह नर प्रानी, करें जो साध की सेवा ॥
 मैं हूँ पारवती परवत की, शिव की निज अरधंगी ।
 तू है शिव का पुत्र गुसाई, सुचित सुसाध सुअंगी ॥
 धन्य धन्य तू धन्य धन्य है, धन्य गनेश की मूरत ।
 जो कोई तेरा दरसन पावे, धरे दया की सूरत ॥
 अन्तरध्यान भई वह देवी, साधू मन हरपाया ।
 पर उपकार की महिमा भारी, सती का दर्शन पाया ॥

दूसरी कथा

[५४-६५२]

दूजी कथा सुनाऊँ फकीरा, कान इधर ला भाई ।
 मैं फकीर का प्रेमी सेवक, त्याग हृदय दुचिताई ॥
 साधु कोई नौका चढ़ बैठा, संग मैं नर बहुतेरा ।
 दुष्ट अभागी देख के साधू, उपजा क्रोध गम्भीरा ॥



हँसी उड़ाया धूम मचाया, मारा सिर पर लाठी ।
 फटा सिर साधू का भाई, साजा साज कुठाठी ॥
 हुई अकाश बानी तब ऐसी, साध है मुझको प्यारे ।
 मैं साधु का सहज सनेही, छिल पल का रखबारा ॥
 उलटूँ नाव डुवाऊँ सबको, यह अनर्थ नहीं भावे ।
 क्यों कोई अपराधी बनकर, मेरा साध सतावे ॥
 बानी सुनकर साधु दुखी भया, बोला चतुर सुजाना ।
 तू दयालु है मेरा साँई, अगम अनाम अमाना ॥
 जीव निबल अज्ञानी मूर्ख, माया फन्द फँसाने ।
 यह नहीं समझें सार तत्व को, भूल भरम भरमाने ॥
 दया दृष्टि कर इन्हें चितादो, भाव जतादे अपना ।
 मेरे जैसा उन्हें बनादे, दया का देकर किनका ॥
 साधु संग का फल नहीं हानी, लाभ साध संग स्वामी ।
 मेट भरम अज्ञान जीव का, चरन सरोज नमामी ॥
 फिर अकाश बानी भई दूजी, एवमस्तु सुन प्यारे ।
 ले तेरे छिन मात्र की संगत, यह जावे भव पारी ॥
 दुष्ट हृदय पछतावा आया, साधु चरन लग रोया ।
 साध ने अपने अंग लगाया, पल में दुर्मति खोया ॥
 सुन फकीर होजा फकीर अब, रूप संभारे अपना ।
 जग में प्रानी तेरे रूप में, मेटदे उनका तपना ॥
 तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उत्तम देही ।
 जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही ॥

तीसरी कथा

[३१-६२६]

तीजी कथा सुनाऊँ तुझको, सुन सुनकर चितलाना ।
 कथा नहीं यह और की प्यारे, तेरी कथा सुनाना ॥



हरगोविंद को कैद में डाला, जहाँगीर ने भाई ।
 ले गवालियर किले में फाँसा, हुआ निपट दुखदाई ॥
 भियाँ मीर ने उसे चिताया, छोड़ फकीर को छिन में ।
 नहीं तो उल्टे राज यह तेरा, एक रात एक दिन में ॥
 जहाँगीर ने हुकुम सुनाया, हरगोविंद को लाओ ।
 यह बोले मैं कैद न छोड़ूँ, कितना करो उपाओ ॥
 मैं फकीर हूँ देह बंध में, जीवों के हित आया ।
 सात हजार छोड़ दे कैदी, उपजी मन में दाया ॥
 बादशाह ने सबको छोड़ा, जब यह बाहर आये ।
 आप छुटे औरन को छुड़ाया, दया का साज सजाये ॥
 यह इतिहासिक कथा पुरानी, चरित पुनीत सुहावन ।
 मन रंजन मन चेत बढ़ावन, मन भावन मन पावन ॥
 देह के बंध फकीरा आवे, बंध निरबंधन सोई ।
 बंधकर बन्धुवे जीव छुड़ावें, समझे यह गति कोई ॥
 तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा ।
 दुखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देसा ॥
 तीन ताप से जीव दुखी है, निबल अबल अज्ञानी ।
 तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ॥
 नाम फकीर धरा जब तूने, काम फकीर का करले ।
 गुरु की दया साथ ले अपने, भक्ति की भोली भरले ॥
 तू इराक से अब के आया, सत संगत के कारन ।
 ले प्रसाद यह सत संगत का, होजा भव निधि तारन ॥
 राधास्वामी दया के सागर, होंगे तेरे सहाई ।
 फुक्र में उतरे साँच फकीरा, सब की करे भलाई ॥





[५६-६५४]

चुप रहने का फल है मीठा, बोले बाद विबादा ।
 चुप का स्वाद रसीला अद्भुत, बोले मचे उपाधा ॥
 कान हैं दो और एक जीभ है, देखलो अपनी आँखों ।
 जब दो बार सुने कोई बानी, एक बार मुख भाखो ॥
 बोली बोले सहे दुख प्रानी, बिन बोले निरबानी ।
 तोता मैना बोल के बोली, पिंजरे बंध बंधानी ॥
 बिन बोले कोई मुक्ति न माँगे, नहीं प्रमान मत भेदा ।
 एक चुप लाख धिपत्त को टारे, मिटे दुःख भव खेदा ॥
 मुख की थैली जिभ्या राखूँ, बिन कारन क्यों बोलूँ ।
 बिना प्रयोजन कथन है निष्फल, क्यों मुख अपना खोलूँ ॥
 जो बोले सो हारे भाई, जीत जो मुख नहीं बोले ।
 सोचे समझे मोल विचारे, बात हिये बिच तोले ॥
 जो सुमिरे सो चिंतन साधे, सुमिरन ध्यान का मूला ।
 सुमिरन विधि राधास्वामी नाम है, और बोल भव सूला ॥

[५७-६५५]

सुन बानी उपजे मन हानी, हानी गिलानि महानी ।
 चित में डाह ईर्ष्या जागे, सहज बने अभिमानी ॥
 है अभिमान फंद का कारण, काल की यम की फाँसी ।
 जो कोई सुने जगत की बातें, अपनी ही करे हाँसी ॥
 दोनों कान हैं नहरें न्यारी, बात है बहता पानी ।
 मन का बरतन वृथा बचन से, भरता अपना प्रानी ॥
 पानी भरा बंधा घट आकर, प्रगटे भुंगा कीड़ा ।
 इनसे दुख पावे नर मूरख, सहे त्रास दुख पीड़ा ॥
 सघन अंधेरा बानी का बन, जो आया भरमाया ।
 चेद शास्त्र बानी की लीला, तत्व धिवेक छुपाया ॥



यह गुरु का उपदेश फकीरा, बानी चित न विसारे ।
बाहर कान में बंध लगाकर, श्रुति उद्गीत विचारे ॥
अनहद धुन है श्रुति उद्गीता, अन्तर साधी धिरतो ।
राधास्वामी गुरु की कृपा, सहजे भई निवरती ॥

[५८-६५६]

बाहर की जब आँखें खोली, दृष्टि सृष्टि पसारा ।
बाहर मुखी हुआ जब प्राणी, अन्तर धिरती विसारा ॥
जो देखे सो भरम दृश्य है, भरम भरम उत्पावे ।
भरम बसे जो हिय के अन्तर, भरम के खेल खेलावे ॥
भरम है बीज अज्ञान अँखुवा, डाल कर्म और धंदे ।
फूल वासना काम क्रोध मद, फल सुख दुख के फंदे ॥
भरम की सृष्टि दृष्टि से उपजी, आवागवन की खानी ।
लख चौरासी योनी भरमे, भरम है अकथ कहानी ॥
गुरु ने मर्म जताया अद्भुत, सत संगत करवाई ।
सुरत शब्द की विधि बताया, अन्तर मुख की कमाई ॥
उलटो आँख तीसरे तिल में, चित को ले ठैराओ ।
बाहर के पट देकर अपने, हिय के नैन सुलाओ ॥
सूक्ष्म लीला कारण लीला, ब्रह्म परब्रह्मांडा ।
देखो पहले निरख परख कर, फिर धाओ सच खंडा ॥
बिना नैन के मोती पोहो, बिना कान के बानी ।
बिन कर कर्म करो विधि नाना, बिन पग शिखर चढ़ानी ॥
बिना देह की काया पाओ, बिन जिभ्या मुख बोलो ।
बिन सूरज के करो प्रकाशा, बिना बुद्धि सब तोलो ॥
यह गति अगम अपार अकथ है, कैसे कोई बखाने ।
जो कोई घट में अपने आवे, लख लख तब मन माने ॥
राधास्वामी सतगुरु पूरे, अचरज भेद बतावें ।
उलट ब्रह्मांड को भेदे प्राणी, तब निज सत पद पावें ॥



[५६-६५७]

तू अविनाशी अजर अमर है, तू सबका अधारा है ।
 सब रहते हैं तेरे सहारे, तू ही सबका सहारा है ॥
 निराधार आधार जगत का, मर्म न कोई लख पावे ।
 जब तू अपना रूप दिखावे, समझ में तब कुछ कुछ आवे ॥
 मन बानी की गम नहीं तुझ में, अगम अथाह अपारा है ।
 अलख अगम अव्यक्त अनूपम, अगुण सगुण से न्यारा है ॥
 तू है कौन कहाँ से आया, क्यों आया क्यों छाया है ।
 क्यों आकर मुझे अंग लगाया, क्यों स्वरूप दिखलाया है ॥
 तू मैं हूँ या मैं ही तू है, क्या है केहि विधि मैं पाऊँ ।
 तू अनाम है तू अरूप है, कैसे तेरा गुण गाऊँ ॥
 अचरज अचरज अचरज तू है, गुप्त प्रगट में व्यापा है ।
 मायातीत अगोचर उनमन, छाँह न दिव्य प्रकाशा है ॥
 पात पात में तेरी लीला, फूल फूल का बास है तू ।
 दूर बताता है कोई कैसे, सबके सब विधि पास है तू ॥
 गुरु हुआ चले के घट में, प्रगट होकर रहता है ।
 बुरा भला लाखों कहे कोई, सबकी सुनता रहता है ॥
 नहीं गुरु नहीं चेला तू है, दोनों दशा से न्यारा है ।
 हद बेहद से परे ठिकाना, तेरा सकल पसारा है ॥
 आजा आजा मेरी सुन जा, मेरे हृदय में बस जा ।
 प्रेम प्रीति की जाल बनाई, उसके फंदे में फँस जा ॥
 ऐ अरूप तेरा मुखड़ा देखूँ, दर्शन की अभिलाष धनी ।
 मैं निर्धन दीन शरणागत, तू है सबका आप धनी ॥
 आरति कैसे करूँ गुसाई, तेल दिया बाती है तू ।
 फूल चढ़ाने से क्या होगा, कली फूल पाती है तू ॥
 जहाँ जहाँ निरखूँ तेरी लीला, जो जो सुनूँ तेरी बानी ।



जो जो कहूँ तेरी हो कहानी, रहूँ तेरा मैं अभिमानी ॥
 मुझको शब्द तेरा हो सुमिरन, जो गाऊँ सो भजन तेरा ।
 जो ध्याऊँ वही ध्यान तेरा हो, जो बोलूँ सो कथन तेरा ॥
 बलबल जाऊँ तेरी दया पर, जान प्राण तन मन अरपूँ ।
 राधास्वामी चरन की महिमा गा गा, काल करम से नहीं डरपूँ ॥

[६०-६५८]

राधास्वामी चरन कमल पर, बार बार बल जाऊँ ।
 तन मन की सब सुद्धि विसारूँ, निसदिन गुरु गुन गाऊँ ॥
 गुरु मेरे जान प्राण से प्यारे, गुरु आँखों के तारे ।
 गुरु की दया साध की संगत, जाऊँ भव जल पारे ॥
 गुरु रक्षक गुरु दाता दानी, गुरु का लेऊँ सहारा ।
 गुरु के चरन सीस पर धारे, काल करम थक हारा ॥
 गुरु मूरति हिय आन विराजी, घट मैं करूँ गुरु सेवा ।
 तन मन धन और सीस अरप कर, जानूँ और न देवा ॥
 छिन प्रति छिन गुरु आरती ठाँऊँ, गुरु से नेह लगाऊँ ।
 सुरत शब्द की करूँ कमाई, अन्त परम पद पाऊँ ॥
 धिन गुरु भक्ति धिवेक न होई, गुरु बिन ज्ञान न पाये ।
 करम धरम सब धोका जानो, जब लग गुरु न चिताये ॥
 गुरु का रंग हृदय जब धारा, मिटा तिमिर अज्ञाना ।
 घट से ज्योती सोत बह निकसी, प्रगटा तब विज्ञाना ॥
 गुरु के चरन प्रीत भई गाढ़ी, समझ पड़ी गुरु बानी ।
 मन प्रतीत प्रेम रस पागा, मिल गई शब्द निशानी ॥
 योग विराग हृदय प्रकाशा, सूझा सकल पसारा ।
 अलख अगम की गम जब पाई, मिटा मोह संसारा ॥
 पढ़ पढ़कर बहु दिवस बिताये, बुद्धि विलास में भूले ।
 दृष्टि खुली जब गुरु कृपा से, प्रेम हिंडोले भूले ॥



कोटि जनम से धोखा खाया, मिला न ठौर ठिकाना ।
 धन्य धन्य गुरु महिमा तेरी, सत्य नाम दिया दाना ॥
 मान न माँगूँ सिद्धि न मागूँ, ऋद्धि में चित्त न लाऊँ ।
 जनम जनम पद कमल की सेवा, यही पदारथ पाऊँ ॥
 सुभिरन नाम ध्यान गुरु मूरति, भजन शब्द मत सारा ।
 तुरिया तुरियातीत न चाहूँ, रहूँ सकल से न्यारा ॥
 गुरु मेरे मात पिता सम्बन्धी, गुरु से नाता जोड़ूँ ।
 भव की लाज लोक सब त्यागूँ, जग से मुँह को मोड़ूँ ॥
 जो मैं दास तुम्हारा दयानिध, हित चित्त मन कर्म बानी ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, बख्शो पद निरवानी ॥

[६१-६५६]

तू जगदीश जगत का करता, तेरा मन में ध्यान रहे ।
 तेरी लगन लगे निस बासर, तेरा निस दिन ध्यान रहे ॥
 तू अनाम तू मायातीता, गुणार्तित करुणा सागर ।
 सुख सम्पत्ति परलोक बड़ाई, तुझमें यश और मान रहे ॥
 चरन कमल की भक्ति मिले स्वामी, भक्तिभाव हिय में आवे ।
 तेरी प्रीति प्रेम पद का प्रभु, छिन छिन प्रतिछिन गान रहे ॥
 दोऊ कर जोड़ करूँ मैं विनती, क्षमा करो अपराध मेरा ।
 तेरी सेवा तेरी पूजा, तेरा ही ज्ञान अनुमान रहे ॥
 रसना नाम जपे तेरा पल पल, दर्शन की अभिलाष बड़ी ।
 शब्द की ओर निरन्तर मेरे, सुरत निरत का कान रहे ॥
 जग की मान बड़ाई न माँगूँ, नहीं मागूँ धन परिवारा ।
 भक्ति दीजे चरन कमल की, भक्ति से कल्याण रहे ॥
 झल चतुराई कपट कुटिलता, काल कर्म से सब हारे ।
 शरणागत की सुध प्रभु लीजे, चरन शरन में आन रहे ॥

~ ❀ ~



[६२-६६०]

चरन कमल में सीस झुकाऊँ, नित सतगुरु गुन गाऊँ ।
 तन मन सब अरपूँ हित चित से, निसदिन ध्यान लगाऊँ ॥
 जागूँ तो गुरु का रहे सुमिरन, सोऊँ तो लव लाऊँ ।
 गहरी नींद में लय चिंतन कर, आपा आप झुलाऊँ ॥
 तुरिया तुरियातीत रहूँ जब, मन में रूप बसाऊँ ।
 सोवत जागत रूप न त्यागूँ, ऐसी ताड़ी लाऊँ ॥
 गुरु मेरे अगम अपार अमाया, दान दया का पाऊँ ।
 भक्ति भाव नित बसे निरन्तर, और सकल बिसराऊँ ॥
 गुरु की बानी अगम ठिकानी, समझ समझ हरषाऊँ ।
 जो कोई पूछे जिज्ञास बन, प्रेम से ताहि सुनाऊँ ॥
 गुरु की कृपा साध की संगत, बुद्धि विवेक बढ़ाऊँ ।
 निज स्वरूप का दर्शन पाकर, औरन को दरसाऊँ ॥
 भेद भाव का संशय मेटूँ, भ्रम विकार नसाऊँ ।
 साँई मेहर कुछ ऐसी होवे, सबको मरम बताऊँ ॥
 जीव दुखारी तीन ताप से, सुख का भेद लखाऊँ ।
 सुमिरन ध्यान भजन की किरिया, जानूँ जान बताऊँ ॥
 बिनती सुनो दयानिधि मेरी, आऊँ कहूँ न जाऊँ ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, प्रेम प्रीति उमगाऊँ ॥

[६३-६६१]

आसा एक गुरु की चित में, और न मन अभिलाषा ।
 जिसकी ऐसी सच्ची श्रद्धा, हुये न कभी निरासा ॥
 काम न आवे छल चतुराई, यह सब भ्रम विकारा ।
 एक गुरु के नाम की चिन्ता, कर जग से हो न्यारा ॥
 जाके सिर पर हाथ गुरु का, बाँका बाल न होई ।
 जो जग बैर करे बहुतेरा, हानि न तासे कोई ॥



मौज में बरतूँ यौज निहारूँ, मौज का धरूँ सहारा ।
मौज की राह में पग को धारूँ, मौज से होय सुधारा ॥
कष्ट क्लेश विपत्त दुख आपत्ति, पड़े सीस पर सहना ।
राधास्वामी मौज परखना, मौज की ओट में रहना ॥

[६४-६६२]

धन्य धन्य गुरु परम सनेही, धन्य दीन हितकारी ।
धन्य कृपाला सहज दयाला, भव भय मेटनहारी ॥
लीला अगम अपार अमाया, अद्भुत क्या कोई जाने ।
ऋषि मुनि जोगी पार न पावें, ज्ञानी नहीं पहचाने ॥
अगुन सगुन के मध्य विराजे, नहीं ब्रह्म नहीं माया ।
रूप अरूप के वरे परे तुम, नहीं प्रकाश नहीं छाया ॥
सब में व्याप्त तुम्हारी सत्ता, सत्त असत्त के पारा ।
मन बानी की गम नहीं तुममें, सब में सब से न्यारा ॥
क्या कह करूँ तुम्हारी स्तुति, अजर अमर अविनासी ।
निरालम्ब सब के आधार, चेतन घन सुख रासी ॥
गो गोचर जहाँ लग मन जाई, सो नहीं देश तुम्हारा ।
माया काल के परे ठिकाना, क्या कोई बरने पारा ॥
तत्त्व अतत्त्व असार सार नहीं, शब्द सुरत नहीं होई ।
सन्त कहें तुम शब्द रूप हो, और अशब्द गति सोई ॥
ऊँची दृष्टि करे जो प्रानी, सार भेद कुछ पावे ।
भेद पाय शरणागत आवे, आवागवन मिटावे ॥
दया करो करुणा चित लाओ, दो मोहि भक्ति विवेका ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, रहूँ शब्द मिल एका ॥

[६५-६६३]

भेद का ग्राहक मिले तो उसको, तत्त्व का भेद बताऊँ ।
प्रेम भाव से हृदय लगाऊँ, घर की राह दिखाऊँ ॥
रूप न रंग अकार न देखा, ऐसा देश हमारा ।



मन बानी की पहुँच नहीं है, कहन सुनन से न्यारा ॥
 पिंड खोज ब्रह्मांड लखे जो कोई, स्रभे ब्रह्म पसारा ।
 पिंड ब्रह्मांड से न्यारा लखे, दरसे अगम अपारा ॥
 विन बादल जहाँ बिजली चमके, बरसे अमृत धारा ।
 विन जिभ्या के शब्द प्रगट हो, विन सूरज उजियारा ॥
 शब्द अशब्द अलख लख लीला, समझे बिरला ज्ञानी ।
 सुरत शब्द का साधन करके, पावे पद निरवानी ॥
 नीचे से ऊँचे चढ़ जावे, ब्रह्मरेन्द्र की चोटी ।
 दुर्मति खोवे कुमति न आवे, तजे भावना खोटी ॥
 राधास्वामी परम दयाला, शब्द भेद मत गाया ।
 अधिकारी जब मिले विवेकी, धुरपद ले पहुँचाया ॥

[६६-६६४]

तन मन प्रान स्वामी के अरपन, स्वामी रंग रंग राता ।
 सब को भूलूँ उसे न भूलूँ, फिरूँ जगत मद माता ॥
 आँखों में गुरु मूरति बसती, चित चिंता सतगुरु की ।
 मन में गुरु हैं तन में गुरु हैं, यह निष्ठा है धुर की ॥
 जिभ्या नाम गुरु का रहता, कानों में गुरु बानी ।
 सुरत शब्द का साधन करके, पाया पद निरवानी ॥
 सोये बैठे खड़े उताने, चलते और ठहराये ।
 सकल दसा में एक अवस्था, प्रेमी एक ठिकाने ॥
 राधास्वामी गुरु ने भेद बताया, भेद पाय हरषाना ।
 मैं तो सब विधि गुरु का सेवक, सेवक भाव मियाना ॥

[६७-६६५]

सत गुरु का सच्चा जो सेवक, ज्ञानी चतुर सियाना ।
 तन मन से गुरु आज्ञा पाले, प्रेम भाव दीवाना ॥
 बुद्धि युक्ति से काम न राखे, छोड़े मान बढ़ाई ।



जो कोई ऐसा परम सनेही, करे अटल सेवकाई ॥
 करना धरना कुछ नहीं उसमें, गुरु मत में परवीना ।
 कमल पत्र सम उसकी रहनी, गुरु के चरन अधीना ॥
 गुरु का हुकम सीस पर धारे, गुरु आज्ञा में चाले ।
 त्यागे मोह वासना जीकी, प्रेम प्रीति पथ पाले ॥
 मन में सुमिरे राधास्वामी नामा, तन से राधास्वामी कामा ।
 मन बचन ध्यान से गुरु का, सतपद में विश्रामा ।

[६८-६६६]

उमर बिताई समय गँवाया, मिला न ठौर ठिकाना ।
 प्रेम भक्ति की रीति न जानी, जग धन्धे भरमाना ॥
 दो दिन का रहना है भाई, दो दिन का व्यौहारा ।
 दो दिन का यह सकल पसारा, दो दिन कुल परिवारा ॥
 जो आये हैं जायेंगे एक दिन, कैसा घर और डेरा ।
 मूरख सोच समझ मन अपने, चिड़िया रैन बसेरा ॥
 रात विषय में लम्पट रहता, दिन का खाना पीना ।
 ऐसे प्राणी पशु हैं जग में, धिक धिक उनका जीना ॥
 सतगुरु राधास्वामी पाये, सार भेद समझाया ।
 अब नहीं पड़ूँ करम के धन्दे, भक्ति स्वाद रस पाया ॥

[६९-६६७]

सेवक मेरा मैं सेवक का, आदि अन्त तिहु काला ।
 मैं सेवक से अपने राजी, सेवक करूँ निहाला ॥
 दास दुखी तो मुझे भी दुख है, दुखी दास हुआ कैसा ।
 एक पलक में प्रगट होय कर, करदूँ अपने जैसा ॥
 माता का बालक है प्यारा, मछली को जल धारा ।
 वैसे ही सेवक मेरा दुलारा, और आँखों का तारा ॥



सेवक स्वामी एक मता के, प्रेम रंग रंग राते ।
छल चतुराई मुझे न भावे, प्रेम के दोऊ दिवाने ॥
राधास्वामी समरथ दाता, मैं सेवक बिन दामा ।
उठत बैठत कभी न भूलूँ, जिभ्या रहे गुरुनामा ॥

[७०-६६८]

आप तरें औरों को तारें, यह साधु की महिमा ।
इनका पर उपकार है भारी, किससे कोई दे उपमा ॥
कोई बाहर कोई भीतर देखे, लीला अगम अनूपा ।
बाहर भीतर एक समाना, एक दिचित्र स्वरूपा ॥
राधा सूरत शब्द कन्हार्ई, दोनों का भया मेला ।
बंसी बाजी जब मधुवन में, मेटा द्वन्द भ्रमेला ॥
ब्रह्म सनातन रूप कृष्ण का, समझे कोई नर ज्ञानी ।
भँवर गुफा चढ़ सुने बाँसुरी, परखे शब्द निशानी ॥
राह रुकाना गुरु से पूछो, आगे अगम अगोचर ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सत पद पहुँचो धुर धर ॥

[७१-६६९]

मन को सोच बुद्धि को दृढ़ कर, चित से ध्यान लगाओ ।
ममता गुरु के चरन में राखो, बिगड़ी अपनी बनाओ ॥
आप तरी औरों को तारो, यह गुरु का उपदेशा ।
चिंता जग की सकल बिसारो, तज दो द्वन्द अंदेशा ॥
जो कोई ऐसा सेवक साँचा, भजन भाव की शोभा ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, देख भक्ति मन मोहा ॥

[७२-६७०]

गुरु के नाते सब का नाता, नाता और न मानूँ ।
मेरा प्रीतम जिसे पियारा, प्यारा उसको जानूँ ॥
गुरु हैं मात पिता सम्बन्धी, गुरु साथी संघाती ।



गुरु के चरन का ध्यान लगाऊँ, मैं पल पल दिन राती ॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाऊँ ।
 राधास्वामी नाम का सुमिरन, सुमिरू और सुमिराऊँ ॥

[७३-६७१]

गुरु ने हाथ सीस पर फेरा, और मुझको अपनाया ।
 पहले जनम का रंग मिटाकर, भक्ति का रंग चढ़ाया ॥
 काल करम का भय सब मेटा, अभय निडर करवाया ।
 माया यम का खटका छूटा, मोह का फन्द कटाया ॥
 अब नहीं पढ़ूँ करम के धोखे, धन सन्मान न माँगूँ ।
 राधास्वामी पद से नेह लगाऊँ, द्वन्द्व जगत तज भागूँ ॥

[७४-६७२]

साधू मुझको सब से प्यारे, साधू मेरे सनेही ।
 साधु चरन पर तन मन वारूँ, सुफल करूँ नर देही ॥
 साधू कुल में जनम मिला है, साधू मेरे भाई ।
 गुरु की दया साधु की संगत, मेरी भई भलाई ॥
 साधु गुरु के रूप हैं मेरे, महिमा अधिक अपारी ।
 साधु सेवे आनन्द पाया, राधास्वामी की बलिहारी ॥

[७५-६७३]

जिसने अपना जगत रचाया, वह है चतुर सियाना ।
 तू बनता है करता धरता, क्यों मूरख दीवाना ॥
 सेवक है तो सेवा कर, और तज दे भरम कहानी ।
 दुनियाँ को विश्वास नहीं है, दुनियाँ है दीवानी ॥
 गर्भवास में जिसने पाला, माँ की गोद में डाला ।
 वही तेरा रक्षक है प्राणी, उससे होगा संभाला ॥
 सेवक करे रात दिन सेवा, स्वामीपन नहीं धारे ।
 सेवक तो सेवा कर भूखा, स्वामी ओर निहारे ॥



मेरा मुझमें नहीं है कुछ भी, जो कुछ है सो तेरा ।
सेवा ले मुझसे कर मुझको, राधास्वामी का चेरा ॥

[७६-६७४]

मेरा साँई है बहुरंगी, अद्भुत नाच नचावे ।
नाच खेल के सैन जतावे, भक्ति पन्थ दढ़ावे ॥
उसके घर में कमी नहीं है, पूरन है भण्डारी ।
उसे समझकर काम करो तब, समझो सत मत सारा ॥
बुन्द के पीछे सिंधु छुपा है, यह सब कोई जाने ।
बुन्द के साथ है सिंधु की शक्ति, बिरला ही पहचाने ॥
विष्णु के पद में गंग की सोती, शिव की जटा में आई ।
देखो जग में फैली फिरती, गंगा है लहराई ॥
धर विश्वास त्याग जग आसा, गुरु चरन चित लाओ ।
राधास्वामी की किरपा ले, दो दो और दिलाओ ॥

[७७-६७५]

मैं सेवक का सेवक मेरा, भेद भाव नहीं कोई ।
प्रेम प्रीति की महिमा भारी, सेवक प्यारा होई ॥
जात पाँत पाखण्ड पसारा, एक भक्ति का नाता ।
जो कोई मुझको मन से चाहे, मैं उसके रंग राता ॥
नाता प्रेम का सब से उत्तम, यही सार है भाई ।
प्रेम भक्ति की लीला अद्भुत, भक्ति है सुखदाई ॥
बड़े बने सो नीचे आये, नीचा ऊँचे आया ।
पाँव की धूल गगन में पहुँची, जल पताल पहुँचाया ।
ऊँचा है सो प्यासा जावे, नीचा जल को पीवे ।
राधास्वामी मेहर करें जब, प्यारा जुग जुग जीवे ॥



[७८-६७६]

तुम सेवक कैसे हो भाई, सेवा चित नहीं लाते ।
 बिन सेवा उद्धार कहाँ है, क्यों नहीं भक्ति कमाते ॥
 अपनी सी तुम करनी करलो, सतगुरु जानें अपनी ।
 अपने धरम करम का पालो, धारो ऐसी रहनी ॥
 हर्ष शोक व्यापे नहीं मन में, ममता मोह न आवे ।
 हित से सेवा भाव में लागो, तुम्हें न काल सतावे ॥
 करम करो करतापन त्यागो, यह सेवक की रहनी ।
 कथनी बदनी काम न आवे, काम की वस्तु है करनी ॥
 सेवक धर्म कठिन अति दुस्तर, चित बानी सब सोधो ।
 राधास्वामी नाम को सुभिरो, निज मन को परबोधो ॥

[७९-६७७]

जिनको चाह राम की साथ, राम उन्हें मिल जाते हैं ।
 राम दास के पास राम है, और नहीं कोई पाते हैं ॥
 वाद विवाद में राम नहीं है, राम न पूछा पेखी में ।
 राम दास ने राम को पाया, सहज ही देखा देखी में ॥
 राम नहीं तीरथ में रहते, राम बरत के साथ नहीं ।
 राम दास के हाथ राम है, औरों के वह हाथ नहीं ॥
 बुन्द में सिंधु सिंधु में बूंदें, बुन्द सिंधु दोऊ एक हुये ।
 बुन्द सिंधु का झगड़ा मन में, उनके लिये अनेक हुये ॥
 राधास्वामी सतगुरु आये, भेद दिया पूरा पूरा ।
 जो कोई भेद भाव को मेटे, सतगुरु का सेवक सारा ॥

[८०-६७८]

माया ब्रह्म का भेद है न्यारा, भेद वाद है भरम कथा ।
 जो कोई उनका रूप पहिचाने, भेद वाद है धरम कथा ॥



बिन गुरु ज्ञान की गम नहीं होती, ज्ञान गुरु के आधार।
 गुरु की संगत करे जो प्रानी, पावे सार भेद सारा ॥
 दृष्टि सृष्टि का सकल पसारा, जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।
 भक्ति की दृष्टि जब आई, ईश्वर मय होगई सृष्टि ॥
 गुन का ग्राहक कोई कोई होगा, अवगुण के ग्राहक हैं सब।
 गुणी मिले तो गुण बतलावे, अगुन सगुन समझे नर तब ॥
 राधास्वामी परम दयाला, शब्द नाव लेकर आये।
 हाथ पकड़ कर सबहि धिठाया, तट के निकट खींच लाये ॥

[८१-६७६]

सेवक की सेवा बस होकर, स्वामी सेवक आप हुआ।
 उसका बोझ धरा सिर अपने, कारज सब चुपचाप हुआ ॥
 प्रेम भक्ति में सच्चा होजा, त्याग बुद्धि छल चतुराई।
 सहज ही मानुष जनम सुफल हो, छूटे जग अगमापाई ॥
 ज्ञान पन्थ है खड्ग की धारा, कट कट गिरा जो पग धारा।
 भक्ति प्रेम में नहीं कठिनाई, सहज ही जा भव जल पारा ॥
 भक्त को माया नहीं सताती, भक्त गुरु के हैं प्यारे।
 ज्ञानी नेमी करमी धरमी, भक्तिभाव से हैं न्यारे ॥
 राधास्वामी नाम सुभिर नित, राधास्वामी गुन गाले।
 शुभ अवसर पाया है साधु, भक्ति रतन धन को पाले ॥

[८२-६८०]

साधु की संगत गुरु की सेवा, राधास्वामी दीजे।
 इसके सिवा और नहीं माँगूँ, चरन शरन में लीजे ॥
 साधु संग गंगाजल निर्मल, न्हाये पाप कटावे।
 जो कोई साधु की संगत आवे, भक्ति पदारथ पावे ॥
 गंधी की दुकान साधु संग, बिन माँगे शुभ बासा।
 जो चाहो तुम मुक्ति भक्ति को, रहो साध के साथ ॥



पाप हरेँ दुख दारुण मेटें, सुख देवें दिन माँगे ।
साहब का दीदार करावें, सहज ही भव निधि लाँघे ॥
राधास्वामी साध संग दो, और नहीं अभिलासा ।
चरन कमल की छांह रहूँ नित, बनूँ साध का दासा ॥

[८३-६८१]

साध मेरे हैं रूप अनूपम, अद्भुत अधिक सुहाने ।
मैं हूँ उनका रूप दिवाना, वह मेरे दीवाने ॥
भक्त और भगवंत में किंचित, भेद भाव नहीं होता ।
भक्तों को तुम धार समझलो, भगवत गंग का सोता ॥
स्वामी सूरज सेवक किरणें, करते दिव्य प्रकासा ।
बुन्द सिंधु में रहे समाया, लहे आनन्द हुलासा ॥
स्वामी गुप्त दास है प्रगट, यह सब कोई जाने ।
दास गुप्त बिन प्रगटे स्वामी, यह सब कोई जाने ॥
प्रेमी प्रीतम प्रेम नगर में, पल पल करें विहारा ।
राधास्वामी भेद बतावें, सार सार का सारा ॥

[८४-६८२]

प्रेम की लीला अद्भुत न्यारी, प्रेम की अकथ कहानी ।
प्रेम दात का दान मिले गुरु, भक्ति करूँ मनमानी ॥
मान न दो सम्मान न दो, धन दौलत नहीं देना ।
भक्ति रतन धन का अधिकारी, नाम तुम्हारा लेना ॥
तन मन धन सब तुम पर वारूँ, साँस प्राण के संगी ।
मनमोहन छवि रहे दृष्टि में, चित हो कभी न भंगा ॥
भुक्ति ज्ञान की चाह नहीं है, एक तुम्हारी आसा ।
सेवक करलो दास बनालो, पूरन प्रेम विलासा ॥
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाऊँ ।
राधास्वामी चित्त बसाऊँ, गुन गा गा हरषाऊँ ॥



[८५-६८३]

जो मेरा मैं भी हूँ उसका, मानूँ प्रेम का नाता ।
 जिनमें मेरा प्रेम नहीं है, उनके टिंग नहीं जाता ॥
 छल चतुराई काम न आवे, निश्चल बुद्धि विलासा ।
 प्रेम भाव जब घट में आवे, अन्तर होय उजासा ॥
 मेरा रूप नहीं है कोई, मेरे रूप हैं सारे ।
 जो जिस रूप से जिसको माने, रहे उसी के सहारे ॥
 दर्शन दूँगा उसी रूप में, उसी से पार लगाऊँ ।
 काल करम का दुख नहीं व्यापे, सहज ही बन्ध कटाऊँ ॥
 राधास्वामी मुझे चिताया, करूँ साध की सेवा ।
 साध रूप का दर्शन निस दिन, साध हैं सच्चे देवा ॥

[८६-६८४]

साध हमारी आत्मा, साध को कोई न सताये ।
 जो कल्पाये साध को, जग में कल नहीं पाये ॥
 साध त्रिकल तो सब त्रिकल, साध सुखी सब सुख ।
 साध राम की आत्मा, साध को समझो मुख्य ॥
 निर्बल दीन की आह को, कैसे ईश सहे ।
 साँस खाल की देख लो, लोहा भस्म करे ॥
 राधास्वामी सत पुरुष, सतगुरु सत करतार ।
 तुम ही दीनानाथ हो, तुम ही दीन दयार ॥

[८७-६८५]

जात न जानूँ पाँत न जानूँ, मानूँ भेद न कोई ।
 जो कोई मेरी भक्ति कमावे, मुझको प्यारा सोई ॥
 जात न पूछो मेरे भक्त की, उसकी जात निराली ।
 यह सब फूल बाग के मेरे, मैं उनका हूँ माली ॥



फूल मुझे प्यारे बहु लागें, सिर पर फूल चढ़ाओ ।
 जात पाँत की दुर्मति मेटो, साधु के गुन गाओ ॥
 पूछो ज्ञान न पूछो जाती, जात भ्रम की खानी ।
 लो तलवार म्यान नहीं देखो, साध को लो पहचानी ॥
 यह सब ही पाखण्ड पसारा, भक्ति महातम जानो ।
 राधास्वामी चरन कमल पर, आपा अपनी डारो ॥

[८८-६८६]

सुना पढ़ा समझा समझाया, ज्ञान हाथ नहीं आया ।
 जब सतगुरु ने आन चिताया, सहज ही वह धन पाया ॥
 कथनी कथे सो दूर है हमसे, करनी करे तो साथी ।
 रहनी रहे सो गुरु हमारा, रहनी हमको भाती ॥
 गुरु की खोज करो सतसंगत, फिर करनी चित लाओ ।
 करनी का फल उदय हुये जब, रहनी जाये समाओ ॥
 सत संगत में श्रवन मनन है, अनुभव में है रहनी ।
 यह निध्यासन समझो प्यारे, त्यागो मुख की कहनी ॥
 कहनी तो है भर्म कहानी, भर्म की समझो खानी ।
 राधास्वामी भेद बतावें, करनी है सुखदानी ॥

[८९-६८७]

बिन गुरु ज्ञान न उपजे साधु, लो गुरु की शरनाई ।
 बानी सुन सुन मन में धारो, मिटे भ्रम दुचिताई ॥
 गुरु हुये रूप धरा मानुष का, नर हुये जीव चिताया ।
 जो कोई उनके शरन में आया, ताको अंग लगाया ॥
 गुरु चरित्र को देखो समझो, सुनो गुरु की बानी ।
 बानी सुन सुन मन में धारो, मेटो द्वन्द गिलानी ॥
 कैसे कहूँ खोलकर यह मैं, नहीं बैन कोई बूझे ।
 जब सत संगत आवे प्राणी, तत्व सार तब सूझे ॥



धन्य धन्य गुरु की लीला अद्भुत, धन्य धन्य उपदेसा ।
राधास्वामी मेहर से मेंटा, कष्ट क्लेश अन्देसा ॥

[६०-६८८]

महिमा अगम अपार अलौकिक, जो गावे सो जाने ।
करे कीर्तन ध्यान लगावे, मुक्ति पदारथ पावे ॥
सुरत शब्द है सबका टीका, योग सहज सुखदाई ।
गुरु से सीख करे कोई साधन, चित आनन्द रस पाई ॥
गो इन्द्री और कर्ण है गोले, शब्द प्रभाव खुलावे ।
ग्रन्थी काटे जड़ चेतन की, परम धाम को धावे ॥
बन्शी वाला कृष्ण मुरारी, राधा सुरत सियानी ।
शब्द सुरत की करे कमाई, सहज सहज हो ज्ञानी ॥
सात दिनों में सात स्थाना, गगन मंडल को फोड़े ।
सुन्न के बाहर गुफा कोट को, सुन मुरली धुन तोड़े ॥
सात सुरों का भेद पिछाने, सरगम की गति जाने ।
सातों तारा मंडल बेधे, सात निरख मन माने ॥
सात दिना की सात कमाई, जो कोई करे सियाना ।
राधास्वामी की कृपा से, पावे पद निरवाना ॥

[६१-६८६]

धारो टेक गुरु की मन में, और टेक सब छोड़ो ।
जग दारुण से मुँह को मोड़ो, गुरु से नाता जोड़ो ॥
गुरु का लिया सहारा जिसने, अपना काम बनाया ।
अपने साथ और को तारा, यम का फन्द कटाया ॥
बने तो गुरु से बने तुम्हारी, किसी की ओर न आसा ।
राधास्वामी दया करे जब, क्यों दुख पावे दासा ॥

[६२-६६०]

तन मन धन कुल सम्पत् त्यागूँ, गुरु के पद नहीं छोड़ूँ ।
एक गुरु से नेह लगाकर, जग का नाता तोड़ूँ ॥



गुरु समर्थ जब श्रंग लगावें, गहें बाँह निज करसे ।
 तब मेरे मन में ढारस आवे, चरन कमल रज परसे ॥
 जीते जी गुरु नाम जपूँ नित, प्राण तजे सोई भाखूँ ।
 जनम मरन का संशय छूटे, चित गुरु मूरति राखूँ ॥
 यही करनी है यही साधन है, यही योग जप ज्ञाना ।
 यही नेम संयम शम दम है, यही तप यही सत ज्ञाना ॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाऊँ ।
 राधास्वामी उर में धारूँ, जिभ्या नाम सुनाऊँ ॥

[६३-६६१]

सत्य नाम का दान दिया है, गुरु को क्या मैं भेंट धरूँ ।
 तन मन धन सब तुच्छ है दाता, अर्पन क्या फिर वस्तु करूँ ॥
 आपा मेरा सब से प्यारा, आपे को चरनन में लो ।
 आपा गया गया फिर सब कुछ, हुआ तुम्हारा आपा खो ॥
 राधास्वामी लगन लगी है, जित देखूँ हो रूप तेरा ।
 मैं तेरा तू हो गया मेरा, मैं परजा तू भूप मेरा ॥

[६४-६६२]

लिखूँ कलम से तेरी लीला, जिभ्या नाम तेरा गाऊँ ।
 चित से तेरा चितन सतगुरु, मनमें ध्यान तेरा लाऊँ ॥
 अहंकार चित मन और बुद्धि, चारों भेट धरूँ स्वामी ।
 जो मैं तेरा सच्चा सेवक, ले इनको अन्तरयामी ॥
 राधास्वामी चरन कमल की, छाँह बखूँ मैं सहित उमंग ।
 त्यागूँ जग के रंग रूप सब, चढ़े सवाया गुरु कारंग ॥

[६५-६६३]

ब्रह्मरेन्द्र के पार जो पहुँचे, सो सुमेर गिरि जावे ।
 हंस रूप की गति मति धारे, सत्य नाम धुन गावे ॥
 धाम सुमेर विचित्र महाना, हंसन का स्थाना ।



जो प्रकाश सुनहरा देखे, अद्भुत अजब सुहाना ॥
व्यापे काल न कर्म न माया, निज स्वरूप को समझे ॥
राधास्वामी की बलिहारी, द्वन्द जाल नहीं उरभे ॥

[६६-६६४]

सत में सत्ता चित में चेतन, आनन्द है सुख धामा ।
सत चित आनन्द एक अवस्था, समझ जपो सतनामा ॥
देह गेह की सुध बुध भूलो, इष्ट धाम चित लाओ ।
आनन्द उपजे भव दुख भागे, सुगति अलौकिक पाओ ॥
राधास्वामी गुरु हम पाये, जनम सुफल कर लीना ।
राधास्वामी धामा की आत्मा, मन ताहि को दीन्हा ॥

[६७-६६५]

नाम रतन धन मन में रखना, मुँह से कुछ न कहना ।
संसारी ज्यों जीवन रहना, दुख सुख तिर पर सहना ॥
भक्ति मन का भाव है प्यारे, मन भक्ति रंग राता ।
गुप्त प्रगट में एक दश है, रहे प्रेम मद माता ॥
मुख से नान का लेना कैसा, जग को क्या दिखलाना ।
दिखलावे का काम है फूकट, अन्तर ताड़ी लाना ॥
लव लमी रहे लगन मन व्यागे, हरप शोक से न्यारा ।
जो कोई ऐसी रहनी धारे, वह सतगुरु का प्यारा ॥
राधास्वामी नर शरीर में, सन्त रूप धर आये ।
जीव दया ले भेद बताया, सुरत शब्द मत गाये ॥

[६८-६६६]

जिनको मेरा सहारा साधु, मैं उनका रखवारा ।
एक पलक मैं उन्हें न छोड़ूँ, दूँ दुख से छुटकारा ॥
मेरे भक्त मुझे हैं प्यारे, ज्यों आँखों के तारे ।



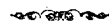
आँख पलक सम उनको सेऊँ, भव दुख मेटूँ सारे ॥
दास दुखी मेरा हो कैसा, मैं उसका रखवारा ।
मैं तो उसके साथ हूँ हरदम, मेरा जिसे सहारा ॥

[६६-६६७]

चादर की छाई यह जग है, मिथ्या भोग विलासा ।
जो कोई उसकी आस बंधाना, सहे काल का गासा ॥
बालू की दीवार बनाई, पोचा दे चिकनाई ।
बही वयार पलक में दिनसी, भूली छल चतुराई ॥
दो दिन का रनवास महज सब, जग दो दिन का डेरा ।
जो आये हैं एक दिन जायें, चिड़िया रैन बसेरा ॥
रावण मरा मरा दुर्योधन, कंस मरा उत्पाती ।
राज काज मद काम न आया, छूटे घोड़ा हाथी ॥
कर सतसंग सुफल कर देही, शुभ आसर यह प्राणी ।
गधास्वामी चरन ओट गह, मेट दे आना जानी ॥

[१००-६६८]

एक रूप के सकल रूप हैं, सकल रूप एक रूपा ।
जो कोई यह मर्म पिछाने, पड़े न भव जल कूपा ॥
मैं जानूँ गुरु मेरे मन बसते, गुरु घट घट के वासी ।
अजर अमर अव्यक्त अनूपम, अद्भुत कौतुक रासी ॥
सब में रमा अकेला सबसे, सब निधि सबका संगी ।
कर गुरु भक्ति त्याग दे दुग्धि, मेट जगत जिन भंगी ॥
एक अनेक है लीला उसकी, नहीं वह एक अनेका ।
जिसकी जैसी हुई भावना, वैसी धारे टेका ॥
गधास्वामी परम दयाला, चरन शरन मोहि दीजे ।
एक अनेक का धोका मिथ्या, सेवक अपना कीजे ॥





[१०१-६६६]

प्रेम के नाते सबको मानूँ, प्रेम का नाता सच्चा ।
 जग व्यौहार झूठ है सारा, जग का नाता कच्चा ॥
 बिदुर शूद्र प्रह्लाद राक्षस, कुबजा रूप कुरूपा ।
 गज हाथी हनुमान नील कपि, प्रेम से मोहा भूपा ॥
 बाल्मीक और व्याघ्र शुपच थे, शबरी नार अनारी ।
 यह सब तेरे भक्ति हित लागे, भक्ति की बलिहारी ॥
 जात न पूछे पाँत न पूछे, कुल नहीं पूछे कोई ।
 जो कोई हरी को भजे भक्ति से, हरि भज हरि का होई ॥
 राधास्वामी प्रेम सिखावें, प्रेम की राह दिखलावें ।
 प्रेम नगर में ले पहुँचावें, सुरत शब्द मत गावें ॥

[१०२-७००]

धन दौलत की भेंट न चाहूँ, मन की भेंट चढ़ाओ ।
 जो कोई अपने मन को देवे, उसे मोहि बतलाओ ॥
 धन तन दिया तो दिया नहीं कुछ, इनसे काम न मेरा ।
 जो मन चरन कमल में अरपे, वह सच्चा है चेरा ॥
 धन नहीं दो तुम तन नहीं दो तुम, निज मन चरन में लाना ।
 वह सबसे है प्यारा मुझको, सबसे चतुर सियाना ॥
 उसके मन में रहता हूँ मैं, वह मेरा स्थाना ।
 स्वर्ग लोक बैकुण्ठ लोक में, मेरा नहीं ठिकाना ॥
 राधास्वामी सतगुरु पूरे, प्रेम का पन्थ चलाया ।
 और यतन को मिथ्या माना, प्रेम को सार बताया ॥

[१०३-७०१]

जात पाँत और कुल व्यौहारा, भक्ति संग नहीं तुलते ।
 जात पाँत हरि से करे बेमुख, हरी भक्ति से मिलते ॥



बाल्मीक और सदन कसाई, सैना हरी के प्यारे ।
 ऊँचे कुल का मद है जिनको, वह उनसे है न्यारे ॥
 गंगा तर गई तरे रैदासा, और सुग्रीव विभीषण ।
 नीचे कुल में जनमे फिर भी, बने भक्ति कुल भूषण ॥
 हनुमान नल नील जाम्बवन्त, बानर रीछ कहाये ।
 भक्ति के प्रताप महातम, राम ने अंग लगाये ॥
 गोह भील की प्रीति निरखकर, भ्राता बन्धु बनाया ।
 भरी सभा में रामचन्द्र ने, उसके गुन को गाया ॥
 दुर्योधन घर त्याग कृष्ण प्रभु, दासी पुत्र घर आये ।
 भक्ति के प्रताप महातम, साग विदुर घर खाये ॥
 ऋषी मुनी से मुँह को फेरा, गये शबरी के पासा ।
 झूठे बेर राम ने खाये, राम को प्यारे दासा ॥
 उत्तम और चंडाल के घर में; एक दीपक उजियारा ।
 जात न पूछे कभी पतिंगा, ज्योत है उसको प्यारा ॥
 राधास्वामी सतगुरु पूरे, भक्ति महातम थापा ।
 भक्त रूप भगवान के ठैरे, त्याग आपनो आपा ॥

[१०४-७०२]

योगी जी अब संभलो समझो, कुछ तो साधो योग जतन ।
 निष्फल आयु अपनी बिताई, किये हैं जप तप बहुत कठिन ॥
 कठिन नहीं है घट की कमाई, पूरा गुरु नहीं हाथ आया ।
 अब आओ मेरी संगत में, शब्द का समझादूँ साधन ॥
 नास्तिक भाव झुलाओ सारे, सच्चा नियम इसको जानो ।
 आस्तिकता को हिये बसाओ, गुफा बनालो अपना मन ॥
 सतसंगत में आकर बैठो, दुचिताई दुविधा तजकर ।
 चंचलता को निश्चल करके, बैठो लगाकर दृढ़ आसन ॥



मेरे रूप पर आँख जमाओ, रीको थामो धिरती को ।
 यह नहीं कभी बहकने पावे, और सुने मेरे सच्चे वचन ॥
 मन नहीं बहके चित नहीं भटके, एक भाव अन्तर आवे ।
 इस विधि कुछ दिन करते रहना, मेरे वचनों का श्रवण ॥
 कान तुम्हारे छाज बने, कूड़े को निकाल गहो इनको ।
 सुनो तो वचन को गुनो भी, कुछ तुम समझ के उनको ॥
 काँट छाँटकर सार को गहना, दस्तु असार न चितलाना ।
 सार में कुछ दिन धिरती जमाओ, यही यहाँ निध्यासन ॥
 दृढ़ता आये दुविधा जाये, साक्षात् धिर सत का हो ।
 इस प्रकार नित माँजो आकर, संगत में मन का दर्पण ॥
 मन का दर्पण शुद्ध करो, जब विमल अमल निर्मल हो वह ।
 तब अधिकार तुम्हारा जगेगा, घट में पाओगे दर्शन ॥
 यह बाहर मुख की है कमाई, बहर मुखी अब नहीं रहना ।
 अन्तर मुखी होने को तुम्हें, बताऊँगा मैं तब साधन ॥
 तीन बन्द अब लगाओ प्यारे, होंट कान और नैन बँधे ।
 अन्तर विधि की करो कमाई, शब्द अभ्यास की लगे लगन ॥
 तीन का अर्थ समझलो, दिन समझे नहीं काम करो ।
 इन बन्दों से बनेगा अन्तर, सुनिरन ध्यान के साथ भजन ॥
 सहस्रकमलदल बैठक ठानो, दृष्टि साथ के शब्द सुनो ।
 लख धिराट की लीला घट में, ज्योति निरंजन का दर्शन ॥
 त्रिकुटी पद में ओंकार, सतगुरु का रूप स्वरूप लखो ।
 अन्तरायामी से मेल मिले, तुम में तब आये साधनपन ॥
 सुन्न महासुन्न आसन मारो, सुन्न समाधि का रस पाओ ।
 दृढ़ता आये ममता जाये, हिरण्यगर्भ को करो मथन ॥
 भँवर गुफा की खिड़की खोलो, पारब्रह्म गति को निरखो ।
 कुछ दिन ऐसा यत्न करो, सत पद का मिलेगा तुमको धन ॥



अब सत धाम के बासी बनो, सुखरासी बनो अधिनासी बनो ।
 असत भावना दूर हटे फिर, कभी सतावे नहीं तन मन ॥
 इसके आगे अलख अगम है, निरबानी कहना इसको ।
 यही मुख्य निरवान की सद्गति, इसी का मन में रहे कथन ॥
 जब इसमें दृढ़ता आ जाये, राधास्वामी धाम है यह ।
 स्थानों का भेद तुम्हें दूँगा, मैं होकर के चित्त प्रसन्न ॥
 सुगम सहज है शब्द का साधन, धिन गुरु हाथ न आयेगा ।
 साधु की संगत गुरु की दया ले, करे सदा उसका साधन ॥
 राधास्वामी सतगुरु आये, परम सन्त का भेस बना ।
 जीवों को अपनाया दया से, शब्द अशब्द का किया मथन ॥

बिनती

[७०३]

धन्य सतगुरु रूप है, और धन्य उसका ज्ञान है ।
 धन्य भक्ति दया लीला, धन्य ध्यान अनुमान है ॥
 भ्रम के पीछे पड़े थे, भ्रम के थे साथ साथ ।
 राह में सतगुरु मिले, दीपक दिया करुना से हाथ ॥
 देखो कैसा है अन्धेरा, संस्कार अज्ञान का ।
 ज्योति में लख लो, मिटे भय लाभ का और हानि का ॥
 घट है कच्चा टेस से, जग के बचाकर ले चलो ।
 काल का माया का यम का, द्वन्द भय पग से मलो ॥
 राधास्वामी नाम लेकर, दो पलट काया अभी ।
 ध्यान से सुभिरन भजन से, मुक्ति पाओ जीते जी ॥





प्रार्थना

[७०४]

राधास्वामी गुरु दयाल, बलि बलि जाऊँ चरन पर ।
 मुझको किया निहाल, दीन दुखी अति जानकर ॥
 चरन कमल की ओट, आन गही जब गुरु की ।
 मेटो कर्म सब खोट, धन्य धन्य गुरु दीन हित ॥
 तुम तो चन्द्र स्वरूप हो, मैं हूँ चित चकोर सम ।
 प्रभु तुम ब्रह्म के कूप हो, मैं तो हूँ घट के सदृश ॥
 खर उगा बिगसे कमल, तिमिर विकार की गम नहीं ।
 नहीं अज्ञान का भय कोई, तेरी दया अपार से ॥
 राधास्वामी परम कृपाल, नर शरीर गुरु धार कर ।
 साँचे दीन दयाल, शब्द योग की रीति दी ॥

सत्रहवीं धुन

[१-७०५]

गुरु गम अगम अलौकिक अद्भुत, शोभा कही न जाय ।
 महिमा अकह अपार सिंधुवत, अधिक अधिक अधिकाय ॥
 घट घट बासी प्रभु अविनाशी, चेतन सहज उदासी ।
 रूप अरूप स्वरूप अनूपम, आनन्दधन सुखरासी ॥
 नारद शारद शेष वरुण रवि, शशि को बरने पारा ।
 परमतत्व शुभ सदन अयन छवि, रचना के आधार ॥
 ज्ञान ध्यान का पन्थ चलाया, योग युक्ति बतलाई ।
 भव भय जाल से जीव निकारा, यम की फाँस कटाई ॥



कलि मल दहन धिभंजन त्रय दुख, दीन अधीन सहाई ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, धन जिन यह गति पाई ॥

[२-७०६]

स्वामी प्रीतम दाता दानी, गुरु तुम भूष हो मेरे ।
तन मन धन सब तुम पर वारूँ, रूप स्वरूप हो मेरे ॥
मुक्ति धान धुरलोक निवासी, अन्तर घट के वासी ।
सतपद चेतन धन निरखानी, सुख आनन्द सुखरासी ॥
करुणा सागर सब विधि आगर, नागर शोभा धारी ।
निराधार जग के आधारा, जीवन के हितकारी ॥
आप आप में आप समाने, आप में आपा दरसा ।
ज्ञान ध्यान अनुभव गति जानी, चरन कमल जब परसा ॥
सिंधु गम्भीर धीर जल भरिया, लहर उठे अति भारी ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सबके सबसे न्यारी ॥

[३-७०७]

दाता दानी देवता, दिव्य दृष्टि के रूप ।
सतमत सतगुरु सतकला, सत संकल्प स्वरूप ॥
तुम आये इस जगत में, दया धरम के काज ।
दया कीजिये दयामय, दया धरम के लाज ॥
मैं तो सब विधि हीन हूँ, अशुन का भण्डार ।
शरण पड़ा प्रभु आयकर, मेरी करो संभार ॥
मेरी ओर न देखिये, मैं तो कुटिल कुचाल ।
अपनी ओर निहारिये, दीनबन्धु सुदयाल ॥
कामी क्रोधी लालची, हिया जिया सकल मलीन ।
यह सब मेरे चिन्ह हैं, तुम दाता परवीन ॥
मैं माया बस भूल मैं, भ्रम रहा संसार ।
तुम समर्थ मेरे साँझ्याँ, मेढो मूल धिकार ॥



साध संग नित दीजिये, साधु सेव का दान ।
 साधु प्रेम में रंग रहूँ, और न कोई ध्यान ॥
 मो सम तेरे बहुत हैं, मेरे तुम हो एक ।
 एक तुम्हारे रूप की, सदा रहे मन टेक ॥
 अंध टेक नहीं चाहिये, ज्ञान टेक अभिलाख ।
 राधास्वामी दया करो, मिले ज्ञान की आँख ॥

[४-७०८]

चरन कमल चित जोड़कर, स्वामी सनमुख आया ।
 निज सेवक मोहि जानि, कीजे करुणा दाया ॥
 जनम जनम रहा भूत में, माया लपटानी ।
 काल करम के फाँस में, निस दिन उरझानी ॥
 भक्ति भाव के सार को, किंचित नहीं जाना ।
 भटक भटक भटकत फिरा, भरम माँहिं भुलाना ॥
 आसा मनसा बन्ध रहा, छूटा संसारा ।
 काम क्रोध और मोह ने, गले फाँसी डारा ॥
 अवगुन हारा गुन नहीं, पुरुषार्थ हीना ।
 मन प्रतीति नहीं प्रेम रस, सब विधि आधीना ॥
 जगत पिता दाया करो, मैं दास तुम्हारा ।
 प्रेम दान मोहि दीजिये, भक्ति रस सारा ॥
 भव जल गहर गम्भीर अति, उठे लहर अपारा ।
 तुम बिन समर्थ सतगुरु, कैसे जाऊँ पारा ॥
 बाँह गहे की लाज, काज करो अन्तरयामी ।
 तुम हो दीन दयाल पिता, प्रभु रक्षक स्वामी ॥
 नाम रतन धन बख्शिये, शरणागति दीजे ।
 और नहीं कुछ चाहिये, चरनन में लीजे ॥



राधास्वामी सतगुरु, पूरन करतारा ।
दया दृष्टि से मेटिये, अज्ञान पसारा ॥

[५-७०६]

भाग जगा गुरु पूरा पाया, बना आप बड़भागी ।
प्रेम हाट में सौदा कीन्हा, नहीं बना बैरागी ॥
जोगी जंगम चतुर सियाना, ज्ञानी ध्यानी उदासी ।
इनके मारग चलूँ न कबहीं, भजूँ गुरु अविनासी ॥
गुरु पूरे को समरथ जानूँ, समरथ का पद परसूँ ।
चरन कमल की पूजा सेवा, आसा लाग न तरसूँ ॥
भाग सुहाग राग और ज्ञाना, गुरु के मारग पाया ।
प्रेम भक्ति का पंथ अनूपम, राधास्वामी आप लखाया ॥
राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी पल पल गाऊँ ।
राधास्वामी प्रीति बसी मन अंतर, कहूँ न आऊँ जाऊँ ॥

[६-७१०]

शब्द राता मन भया, शब्द ही जाय समाना ।
निरखा शब्द स्वरूप, निरख हिय अति हरषाना ॥
शब्द जीव सत शब्द, शब्द ब्रह्मांड रचाना ।
प्रणव ओ३म् सत शब्द में, यह सन्त बखाना ॥
शब्द भेद नहीं मिला, जगत में रहे अमाना ।
करम धरम पच पच मरे, चौरासी खाना ॥
शब्द भेद ले गुरु से, तब लगे ठिकाना ।
बिन गुरु शब्द न पावई, नर भरम भुलाना ॥
शब्द सुरत भण्डार है, सुरत शब्द कमाना ।
राधास्वामी चरन में, निज शब्द रहाना ॥

[७-७११]

गुरु की दया भेद सब जाना, घट में भान प्रकासा ।
तिमिर मिटा अज्ञान विनासा, सहज में भया उदासा ॥



ब्रह्म राम से गुरु पद ऊँचा, कोई कोई भेदी जाने ।
 लख लख अलख अगम लख पावे, तब कुछ सार पिछाने ॥
 विन गुरु मर्म न पावे कोई, पंडित ऋषि मुनि ज्ञानी ।
 यह तो भेद लहे घट अन्दर, जब समझे गुरु बानी ॥
 गुरु ने कच्छ मच्छ समझाया, रूप वराह बताया ।
 नरसिंह वामन पद दरसाया, राम कृष्ण लखवाया ॥
 बुद्धमता का सार सुझाया, कलिकी की गति भाखी ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, खुल गई हिय की आँखी ॥

[८-७१२]

मन मन्दिर में ढूँढ़िये, मूरत अगम अपार ।
 मन्दिर सब बेकाज हैं, मन मन्दिर है सार ॥
 छवि मूरत की अद्भुति, निरख निरख हरषाय ।
 ऐसे दरस परस से, एक नि पूरा दाव ॥
 घट में गुरु मूरति बसी, को ढूँढ़े केहि धाम ।
 और सकल भ्रम जाल है, घट में गुरु का नाम ॥
 गुरु तो तेरे पास हैं, मन में देख विचार ।
 आओ जाओ काखूँ कहूँ, घट में कर गुरु प्यार ॥
 जो तू प्यारी गुरु की, अन्तर प्रेम जगाव ।
 वही टेक को दृढ़ करो, बनत बनत बन जाव ॥
 नयनों अन्दर झाँप ले, नयनों कर दीदार ।
 नयनों में तेरे गुरु बसें, अन्तर में कर प्यार ॥

[९-७१३]

निद्रा घोर सकल जग व्यापे, जागे कोई गुरु का प्यारा ।
 जाग जाग के मर्म पिछाने, त्यागे मिथ्या संसारा ॥
 भूल भ्रम में निस दिन भूले, करम धरम निज हंकारा ।
 यम का जाल बिछा चहुँ ओर, कैसे पावें छुटकारा ॥



मिथ्या मात पिता नर प्रानी, मिथ्या कुटुम्ब है परिवारा ।
 साथ न तेरे कोई जावे, मान बढ़ाई सुत दारा ॥
 भज भज नाम गुरु हित चित से, त्याग त्याग यह संसारा ॥
 शब्द की सहज नाव चढ़ बौरे, चल चल चल भव के पारा ॥
 गुरु समरथ गुरु दीनदयाला, गुरु ज्ञानी गुरु दातारा ॥
 गुरु का सतसंग गुरु की सेवा, गुरु सुमिर बारम्बारा ॥

[१०-७१४]

उठ जागो तुम सोये कैसे, यह जग माया की कल्पना है ।
 नहीं गुरु चरन गहा उसको नित, भूल भ्रम में खपना है ॥
 काल करम ने जाल बिछाया, मृढ़ जीव को उसमें फँसाया ।
 दुख सुख में बह रहे भरमाया, नहीं समझे यह सपना है ॥
 तीन ताप रहा चहुँदिस छाया, राह न सूझे नर धवराया ।
 व्यापे काम क्रोध मद माया, मोह अग्नि में तपना है ॥
 जड़ चेतन की ग्रन्थी भारी, उरझ उरझ मरे बहु संसारी ।
 केहि विधि छूटन होय तुम्हारी, गाँठ के बीच तड़पना है ॥
 राधास्वामी मेहर करें जब जन पर, दृष्टि पड़े तब जग विषधर ।
 दिना दया नहीं उबरे कोई नर, काल नाग को हड़पना है ॥

[११-७१५]

हम तो साँस पवन के ठरे, शब्द गम्भीर सुनाते हैं ।
 सुख की चाह नहीं मन अंतर, सुख आनन्द नहीं पाते हैं ॥
 नर जीवन है पवन झकोला, दो दिन जग का रहना ।
 रोता तड़पना शोर मचाना, निस बासर दुख सहना ॥
 कहाँ से आये किधर जायेंगे, किंचित मरम न पाया ।
 दो दिन का यह धन जोवन है, क्या है कहाँ से आया ॥
 हम तुम सब हैं अगमा पाई, ज्यों सपना रैनाई ।
 पानी मध्ये आग धिराजे, सुख में विपत समाई ॥



बालू की दीवार उठाई, रुचि रुचि ताहि बनाई ।
 वही बयार बिनस गई पल में, तामें कौन भलाई ॥
 मोह माया है भरम की गाँठी, उरभ्र उरभ्र उरभ्रानी ।
 सार असार की सुधि नहीं पाई, भूले भरम में प्राणी ॥
 इन्द्रजाल माया की रचना, नया नया रूप बनावे ।
 रूप दिखावे जीव भरमावे, यम के फाँस फँसावे ॥
 झूठी काया झूठी माया, झूठा मेरा तेरा ।
 झूठा महल मकान है झूठा, चिड़िया रैन बसेरा ॥
 झूठे सुख को सुख सब कहते, सहते विपत घनेरी ।
 मरते खपते बारम्बारा, मिटी न हेरा फेरी ॥
 बादर की छाया नर देही, रोक रुके ना भाई ।
 यह धारा ठहराय न ठहरे, कीतों करो उपाई ॥
 सुन सुन शब्द चेत मन आने, होजा सहज उदासी ।
 त्याग त्याग मद मोह मया को, अगमलोक का वासी ॥
 त्रिविधि ताप दुख व्यापा जग में, तू है बचावन हारा ।
 भव सागर से पार लगादे, देकर अपना सहारा ॥
 रक्षक साँचे सतगुरु स्वामी, आदि अनादि जुगादी ।
 झुक झुक उनके चरन में निसदिन, खा नित सीत प्रसादी ॥
 आस छोड़ विश्वास जगत का, यह है चार दिना का ।
 चारों दिन में धोखादाई, सर्व काल में मिथ्या ॥

[१२-७१६]

राम ने तजी अयोध्या नगरी, लंक किया प्रवेशा ।
 रावन कुमति को आग लगाया, तब लौटे निज देशा ॥
 मेघनाद को मार गिराया, राज विभीषण दीना ।
 लोक परलोक बनाये दोनों, सुयश सुकीरति लीना ॥
 नाम प्रभाव समझ मन अपने, कर जग में उपकारा ॥



यह अवसर फिर मिले न प्रानी, जा भव सागर पारा ॥
 गुरु का प्यारा गुरु शरणागत, गुरु का सेवक दासा ॥
 गुरु सों प्रीति रहे निस बासर, गुरुपद विमल विलासा ॥
 गुरु प्रसाद तन अवध में रहकर, रावण दुर्मति मारो ॥
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, जनम जुआ मत हारो ॥

[१३-७१७]

नाम भजन कर नाम भजन कर, नाम भजन कुछ पावेगा ।
 नाम सुफल कर जनम सुफल कर, नहीं अन्त पछतावेगा ॥
 झूठी माया झूठी काया, ता संग नेह लगाया क्यों ।
 सुन मन मूरख सुन मन मूरख, हाथ तेरे क्या आवेगा ॥
 भर्म झुलाना भर्म झुलाना, भर्म फाँस गले डाला है ।
 प्रभु सुमिरन कर प्रभु सुमिरन कर, एक दिन यहाँ से जावेगा ॥
 संग न साथी संग न साथी, कोई नहीं अपना है जग में ।
 गुरु सेवा कर गुरु सेवा कर, गुरु भव पार लगावेगा ॥
 प्रीति हिये धर प्रीति हिये धर, प्रेम प्रीति रस में लगजा ।
 छोड़ कुसंगत छोड़ कुसंगत, सतसंग काज बनावेगा ॥
 ज्ञान गंग बिच ज्ञान गंग बिच, कर स्नान ध्यान प्रानी ।
 अब अवसर है अब अवसर है, फिर अवसर नहीं पावेगा ॥
 चेत सवेरे चेत सवेरे, चलना बाट अकेला है ।
 भोग विषय तज भोग विषय तज, भोग सोम उपजावेगा ॥
 काम क्रोध मद काम क्रोध मद, काम क्रोध मद क्यों भूला ।
 नर अभिमानी नर अभिमानी, काल जाल फैलावेगा ॥

[१४-७१८]

चिन्ता राधास्वामी नाम की, राधास्वामी आस ।
 राधास्वामी चहुँदिसि बसें, और न चितवे दास ॥
 राधास्वामी नाम की, रटन रहे दिन रात ।



मैं पपीहा का रूप हूँ, राधास्वामी वादल स्वाँति ॥
 राधास्वामी कमल समान हैं, भँवर भाव मेरा चित ।
 रैन दिवस अब रहत है, कमल बास से हित ॥
 राधास्वामी सिंधु अथाह हैं, मैं हूँ बूँद स्वरूप ।
 जीव अधीन मलीन मैं, राधास्वामी जग के भूप ॥
 सागर बाढ़ा प्रेम का, मैं तो प्रेम जल मीन ।
 राधास्वामी पद को परसकर, अब क्यों रहूँ मलीन ॥
 राधास्वामी पूरण चन्द्रमा, मेरा चित्त चकोर ।
 पल पल निरखूँ अगम छवि, दृष्टि उन्हीं की ओर ॥
 सोवत राधास्वामी का सपन, जाग्रत राधास्वामी ज्ञान ।
 राधास्वामी के पद कमल में, अरपूँ तन मन प्रान ॥
 मेरे राधास्वामी एक है, उनके दास अनेक ।
 चित में राधास्वामी धाम है, उपजा परम धिवेक ॥
 मुख में राधास्वामी नाम है, मन में राधास्वामी ध्यान ।
 मस्तक राधास्वामी धाम है, रसना राधास्वामी गान ॥

[१५-७१६]

धन धन गुरुदेव जी, जिन भेद बताया ।
 अपनी दया अपार से, भव पार कराया ॥
 शरणागत की लाज काज, स्वामी जग में आये ।
 जड़ चेतन की ग्रन्थी, सब निज युक्ति छुड़ाये ॥
 माया काल कराल, कोई बचने नहीं पावे ।
 करम धरम के जाल, जीव निस बाँसर आवे ॥
 भोगे कष्ट अपार, ताप त्रय दहे शरीरा ।
 दारुण विपत क्लेश, भया मन विकल अधीरा ॥
 द्रैत भव जल माँहि, नहीं कहूँ ठौर ठिकाना ।
 गुरु ने पकड़ी बाँह, दिया भक्ति धन दाना ॥



चरन कमल का आसरा, हित चित्त बसाऊँ ।
 निरखूँ रूप अनूप, ध्यान गुरु मूरति लाऊँ ॥
 गुरु की निस दिन बन्दगी, गुरु चरनन पूजा ।
 गुरु सम लोक परलोक में, मानूँ नहिँ दूजा ॥
 गुरु मेरे जान व प्रान, गुरु मेरे रखवारे ।
 रात दिवस मैं जिऊँ, गुरु के चरन सहारे ॥
 भक्ति दान गुरु दीजिये, देवन के देवा ।
 राधास्वामी दयाल, करूँ मैं तुम्हरी सेवा ॥

[१६-७२०]

दाता दानी देवता, नहीं गुरु सम कोय ।
 ज्ञाता ज्ञानी चतुर नर, गुरु कृपा से होय ॥
 भव सागर अति गहर है, सूझे वार न पार ।
 गुरु खेवटिया जब मिले, खेह लगावे पार ॥
 माया भरम और काल भय, जीवत कबहूँ न जाय ।
 यह बन्धन तो तब कटें, सतगुरु होय सहाय ॥
 जनम जनम कठिनाइयाँ, भव के त्रिपत कलेश ।
 गुरु ने पकड़ी बाँह जब, रहा न भव दुख लेस ॥
 क्या सुख ले स्तुति करूँ, गुरु समरथ दातार ।
 तुम्हरी कृपा अपार से, पाई बुद्धि मति सार ॥
 ढूँढ़ ढूँढ़ थक थक रहे, मिला न ज्ञान धिवेक ।
 चरन कमल की छाँह में, सूझा एक अनेक ॥
 प्रेम दान प्रभु दीजिये, पद सरोज की धूर ।
 सत का नूर हृदय बसे, बाजे अनहद तूर ॥
 भर्म भर्म सब भ्रम फिरें, पढ़ पढ़ ग्रन्थ अनेक ।
 परमारथ निधि तब मिले, पकड़े गुरु की टेक ॥
 गुरु चरनन पर वारिये, देह गेह और सीस ।



गुरु से निस दिन माँगिये, प्रेम प्रीति बख्शीस ॥
 गुरु पर नित बलि जाइये, तजिये मान गुमान ।
 गुरु से छिन छिन माँगिये, भक्ति भाव का दान ॥
 गुरु पद अरपो रात दिन, तन मन धन और प्रान ।
 यही सार का सार है, और ज्ञान का ज्ञान ॥

[१७-७२१]

जो कोई हित से मुझे बुलावे, मैं ढिंङ उसके जाऊँ ।
 जो कोई मुझसे प्रेम लगावे, मैं सब विधि अपनाऊँ ॥
 नहीं पताल स्वर्ग में रहता, नहीं पृथ्वी में बासा ।
 प्रेम प्रीति की रीति में न्यारी, रहूँ प्रेमी के पासा ॥
 प्रेम भाव का मैं अभिलाषी, प्रेम की डगर दिखाऊँ ।
 प्रेम का भूखा प्रेम का प्यासा, अमृत प्रेम चखाऊँ ॥
 धीरज धरो आस मन राखो, चिन्ता तुम्हारी मुझको ।
 दुख का पर्वत दूर हटे तब, कहो गिरवरधारी मुझको ॥
 करम वासना राग द्वेष से, न्यारा रहूँ निरन्तर ।
 भक्तों के हित साज सँवारूँ, भक्त भार लूँ सिर पर ॥

[१८-७२२]

एक आस विश्वास गुरु का, मन में प्रेम प्रतीति ।
 बहुत आस विश्वास बहु, चंचलता की रीति ॥
 गुरुमुख के तो एक हैं, मन मत के हैं दोय ।
 जो कोई मन मत भया, चैन न पावे सोय ॥
 गुरुमुख में पतिव्रतपना, मन मत है व्यभिचार ।
 पतिव्रता को सुख घना, व्यभिचारी मुख छार ॥
 एक ही साथे सब सधे, सब साथे सब जाय ।
 सबकी आस निरास है, एक आस हर्षाय ॥



पात पात का सींचना, अज्ञानी व्यौहार ।
 ज्ञानी सींचे मूल को, पावे उत्तम सार ॥
 पात पात के सींचते, वृक्ष को दिया सुखाय ।
 माली सींचे मूल को, फूला फला अघाय ॥
 तज दे दुचितार्ई पना, एक चित गुरु की सेव ।
 गुरु सम सुनले साधुवा, और न कोई देव ॥
 नारी बनी है पीव की, कैसा पीव से प्यार ।
 घर के सम्बन्धी सकल, करें आप सत्कार ॥
 नारी आई पीव घर, पीव से किया न नेह ।
 सास ससुर धिरणा करें, बिगड़ गया सब नेह ॥
 एक गुरु की बन्दना, करे भक्त का काम ।
 जो सबकी आसा करे, चंचल आठों याम ॥
 साँई यही है प्रार्थना, एक तुम्हारी आस ।
 सबहिँ छाँहि तुमको भजूँ, रहूँ तुम्हारा दास ॥
 दो मालिक का सेवका, क्यों पावे सुख चैन ।
 वह गरीब भटका फिरे, इधर उधर दिन रैन ॥

[१६-७२३]

प्यारी प्यारी तू है प्यारी, प्यारी क्यों दुख पावे ।
 गुरु की दया से बन्धन काटे, अन्त परम पद पावे ॥
 आना जाना कैसा प्यारी, गुरु तो पास है तेरे ।
 मन की दुविधा त्याग निरन्तर, तू तो निकट है मेरे ॥
 जब जागे तब ध्यान हो गुरु का, सपना सोई देखे ।
 गहरी नींद सुषुप्ति में प्यारी, आनन्द मिले विशेषे ॥
 शब्द योग की करे कमाई, प्यारी गुरु की है प्यारी ।
 प्यारी प्यार से नाता जोड़े, राधास्वामी की बलिहारी ॥





[२०-७२४]

तू तो होगई बावली, समझ न आवे वैन ।
 मैं तुझसे कैसे कहूँ, जब तू लखे न सैन ॥
 मैं तेरे हृदय बखूँ, तू ढूँढ़े नभ माँह ।
 कंगन तो ऊपर खसा, देख आपनी बाँह ॥
 ढूँढ़ ढूँढ़ तू मन में निसदिन, राम पियारी प्यारी ।
 तेरा हृदय कैलाश शिव का, जहाँ बसें त्रिपुरारी ॥
 राधास्वामी राधास्वामी, राधास्वामी गाओ ।
 राधास्वामी निसदिन गाकर, अपना जनम बनाओ ॥

[२१-७२५]

दया भई जो गुरु मिले, पकड़ी अपनी बाँह ।
 बूढ़त पार उतारिया, भव सागर के माँह ॥
 दया भई जो गुरु मिले, अपने मन में देख ।
 औरों से क्यों पूछिये, निज मन अन्तर देख ॥
 सदा पियारी राम की, रामपियारी नाम ।
 एक दिना गुरु देवेंगै, अपना सतपद धाम ॥
 देख देख तू निज मन में, मन में रहते श्याम ।
 राधास्वामी नाम ले, त्यागदे इनको धाम ॥

[२२-७२६]

जग का खेल है मन की लीला, मन की समझ न आई ।
 मन के विषय विकार में भूले, मन ही भया दुखदाई ॥
 मन से ऊँचे चढ़े जो प्रानी, बूझे सतगुरु ज्ञाना ।
 बूझ बूझ गुरु ज्ञान की महिमा, सूझे पद निरवाना ॥
 हृद पर बैठ कहा सतगुरु ने, चढ़ बेहद की घाटी ।
 चेला हृद बेहद जब लाँघा, उड़ी भरम की टाटी ॥
 हृद में दुख बेहद में सुख है, अनहद पद निरवाना ।



हृद बेहृद अनहृद जब लाँघे, मेटे आना जाना ॥
गुरु की दया साधु की संगत, उत्तम गति मति पावे ।
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, भर्म भव जाल न आवे ॥

[२३-७२७]

आज का काम आज दिन करना, कल की आस न करना ।
पल पल साँस का आना जाना, पल ही जनम और मरना ॥
पल में उपजे पल में बिनसे, पल माया व्यौहारा ।
पल का स्वारथ पल परमारथ, काल का पल संहारा ॥
आज कहे मैं काल करूँगा, भक्ति भाव सतसंगा ।
आज काल के बीच ही प्रानी, काल का भया कुसंगा ।
क्या जाने क्या पल में होगा, काल का छोड़ बहाना ॥
जो कोई आज करे गुरु संगत, वही है पुरुष सियाना ॥
कथा सुनो एक अद्भुत न्यायी, बड़े बुद्धि चतुराई ।
नहीं भरोसा आज काल का, यह जग अगमा पाई ॥
राम ने रावण को जब मारा, कहा लखन से आता ।
जा रावण से नीति बचन सुन, वह पंडित विख्याता ॥
लक्ष्मण आये उसके सिरहाने, बोले अमृत बानी ।
रावण तू है परम सुजाना, योगी ज्ञानी ध्यानी ॥
दे शिखा कुछ नीति सिखाजा, शिष्य भाव ले आया ।
राम ने तेरे पास है भेजा, कर कुछ मुझ पर दाया ॥
रावण हँसा देर से आये, मैं क्या भेद लखाऊँ ।
काल शिकारी सिर पर गाजा, नीति राग क्या गाऊँ ॥
एक बात तुम सुनलो मुझ से, मन में सदा विचारो ।
आज का काम काल नहीं छोड़ो, आज ही काम सुधारो ॥
आज का अवसर मिला है तुमको, काल की क्या है आसा ।
जो काल का बन्धन काटे, काल से रहे उदासा ॥



काल भरम है काल है धोका, काल महा दुखदाई ।
 करना हो सो आज करो तुम, काल की आस भुलाई ॥
 मैं तो काल के धोके आया, अपना काम बिगाड़ा ।
 आज काल में अक्सर बीता, सिर पर काल का आरा ॥
 इच्छा थी सागर को मथकर, मीठा उसे बनाता ।
 स्वर्ग लगाकर सीढ़ी ऊँची, जीव तहाँ पहुँचाता ॥
 आज काल का किया बहाना, काल यह दिन दिखलावे ।
 जो कोई आज को कल पर टाले, क्या परमारथ पावे ॥
 तुम यह नीति सुनलो मुझसे, उसे न मन से भुलाना ।
 जो करना हो आज करो तुम, पाओ उत्तम ज्ञाना ॥
 रावण मर गया देकर नीती, लखन राम ढिंग आये ।
 जो कोई यह शिक्षा चितलाये, अमर लोक को जाये ॥

[२४-७२८]

चरन गुरु चित धार, जगत तज भागिये ।
 मिथ्या सब व्यौहार, पाप पुन त्यागिये ॥
 राग द्वेष सब छोड़, प्रेम हिये धारना ।
 लख अन्तर उत्तम रूप, सहज मन मारना ॥
 मानुष जनम सुधार, सार गह लीजिये ।
 भोग विषय विष समझ, प्रेम रस पीजिये ॥
 भक्ति भाव सतसंग, सँवारे काज को ।
 मोह भरम मत भूल, त्याग जग लाज को ॥
 आया था किस कारने, क्या तूने किया ।
 आप ही अमर स्वरूप है, क्यों भरमा फिरा ॥
 भूले नर मुनि देव, न पाया सार को ।
 भवसागर नहीं तरे, न पहुँचे पार को ॥



करे गुरु से प्यार, यही उपदेश है ।
करम काल के परे, गुरु का देश है ॥

[२५-७२६]

क्यों फिरत भुलाना जगत में, कुछ सोच फकीरा ।
तेरा संगी कोई नहीं, क्या शाह फकीरा ॥
मेरा मेरा क्या करे, तेरा नहीं कोई ।
अपना रूप संभार ले, तेरा है सोई ॥
भटके क्यों भरम जाल में, अब सोच सवेरा ।
ले सतगुरु के चरन में, दिन रात बसेरा ॥
छोड़ जगत की आस, आस सब जीव फँसाने ।
आसा तृष्णा में पड़े, यह सकल दीवाने ॥
लोकलाज मरयाद धान, धन धाम बढ़ाई ।
यह सब बन्धन काल के, सुन ले मेरे भाई ॥
तेरा संगी सतगुरु, तेरे घट में बसता ।
आय पड़ा जग हाट में, कर सौदा सस्ता ॥
लेना हो सो जल्द ले, अवसर नहीं ऐसा ।
सोच अंदेशा छोड़ दे, तू भूला कैसा ॥
एक सतगुरु के नाम की, कर टेक पियारे ।
सतगुरु साँचे भीत हैं, पल छिन रखवारे ॥
नाम फकीर धराय कर, दुर्मति को तज दे ।
राधास्वामी नाम तू, निस वासर भज ले ॥

[२६-७३०]

क्यों फिरत भुलाना भरम में, निस दिन नाशाना ।
गुरु के चरन सरोज में, तेरा कल्याणा ॥
कभी तीरथ की परक्रमा, गंगा अस्नाना ।
जप तप संयम बहु किये, नहीं लगा ठिकाना ॥



पोथी पुस्तक बाँच कर, बाढ़ा अभिमाना ।
 विद्या बुद्धि विलास में, मन अति हरषाना ॥
 सार मिला नहीं शब्द का, नहीं उपजा ज्ञाना ।
 जड़ चेतन की ग्रंथि को, कहो कैसे खुलाना ॥
 प्रगटे सतगुरु आय, दिया शब्द निशाना ।
 राधास्वामी की दया, पाया निरवाना ॥

[२७-७३१]

गूंगा बोले मधुरी बानी, शब्द अशब्द विस्तारा ।
 लंगड़ा चढ़े शिखर परवत पर, घाटी शैल अपारा ॥
 विन नैना का अंधा देखे, भाँति भाँति की रचना ।
 मन नहीं बुद्धि नहीं कान नहीं, सुने अगम के वचना ॥
 विना सूर के विमल प्रकासा, विन बादल की बरसा ।
 विना रूप का सतगुरु व्यापा, चरन कमल निज परसा ॥
 कहीं वीन कहीं ढोल बाँसुरी, बाजे अद्भुत बाजे ।
 ओम् ओम् सोहंग सत सत, शब्द अनाहद गाजे ॥
 पन्थ अपन्थ का मिटा झमेला, कौन बने पन्थाई ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, मिली सतगुरु शरनाई ॥

[२८-७३२]

सिंध रूप से बूँद जो निकला, रूप देख डरपाना ।
 एक बुन्द में सिंध पसारा, जब जाना हरषाना ॥
 सिंध में बुन्द अनेकन दरसें, यह तो सब कोई जाने ।
 बुन्द में सिंध आप है व्यापा, विरला कोई पहचाने ॥
 बुन्द में लहर बुन्द में सिंधु, सिंध बुन्द दोऊ एका ।
 द्रैत भरम कहो कैसे छूटे, जब नहीं चित्त विवेका ॥
 हम तो बुन्द सिंध के रूपा, बुन्द में सिंध समाना ।
 लख लख दशा न्यारी अपनी, समझा गुरु मत ज्ञाना ॥



आप आपको आप पहचानो, राधास्वामी की है बानी ।
कहा और का नेक न मानो, पाओ पद निरवानी ॥

[२६-७३३]

बीत गई मेरी उमर, मिला नहीं ठौर ठिकाना ।
सूझे आदि न अन्त, रहा भरम में भरमाना ॥
भूठा जग व्यौहार है, सब भूठी माया ।
भूठा कुल परिवार है, भूठी यह काया ॥
भूँठ साँच की परख, हाय मोको नहीं आई ।
कैसे करूँ उपाय, बात मेरी बन जाई ॥
कभी जप तप कभी वरत है, कभी तीरथ पानी ।
निकसा काम न एक भी, मन उपजी गलानी ॥
करम धरम सब त्याग कर, तुम सम्मुख आया ।
राधास्वामी दया निधि, आप कीजिये दाया ॥

[३०-७३४]

मन मन्दिर बैठ कर, जब लागे गुरु का ध्यान ।
तिमिर मिटे अज्ञान का, सूझे पद निरवान ॥
करना धरना कुछ नहीं, करम धरम सब भर्म ।
घट के पट को खोल कर, तब पावे कुछ मर्म ॥
अटपट लीला जगत की, खट पट रहे दिन रैन ।
ताके षट पट जो रमा, कैसे पावे चैन ॥
बढ़ बढ़ कर सब घट गये, पढ़ पढ़ मुये गँवार ।
घट घट कर सब मिट गये, बिना त्रिवेक विचार ॥
आपा चीन्हा आप में, आप आप में सार ।
अब संशय में ना पड़ूँ, राधास्वामी के बलिहार ॥

[३१-७३५]

जो अद्वैत प्रकाश विभु, सगुन अगुन आधार ।
सत चित आनन्द रूप वह, मन बानी के पार ॥



ताको निस दिन बंदना, कोटि कोटि परनाम ।
 अलख अगम गति अमल अति, मोक्ष मुक्ति का धाम ॥
 सिंध गम्भीर अथाह बहु, पार सो पावे कोय ।
 लखि आवे जब साध संग, गुरु की कृपा होय ॥
 रूप स्वरूप अरूप नित, गम पावे कोई सन्त ।
 अज्ञानी जाने नहीं, अति उतंत गुरु पन्थ ॥
 भीतर बाहर एक रस, सब विधि रहा समाय ।
 खुली दृष्टि से देखिये, जब गुरु होय सहाय ॥
 दशरथ राम वशिष्ठ अरु, विश्वमित्र तन धार ।
 गुरु चेला सुत तीन पद, चौथे मांहि विचार ॥
 एक अनेक अनादि अज, अलख अगाध अभेद ।
 गुरु मुख से कुछ पाइये, थाके ऋषि मुनि वेद ॥

[३२-७३६]

दीन दयाल दीन हितकारी, दीन बन्धु सुख दाता ।
 करुणामय करुना के सागर, करुना रूप बिधाता ॥
 जीव काज निज भवन छोड़कर, प्रगटे जन के लाजा ।
 बाँह पकड़ भव पार निकाला, कीन्हा अचरज काजा ॥
 महा गम्भीर सिंध भव दुस्तर, स्रभे बार न पारा ।
 पवन बहत दारुण दुखदाई, नजर न पड़े किनारा ॥
 भँवर चक्र में डोलत नौका, सुध बुध तन की भूली ।
 दुख द्वन्द हिंडोल की सूरत, छिन प्रति छिन बहुभूली ॥
 देख दुखी प्रगटे राधास्वामी, शब्द जहाज बनाया ।
 खेवटिया गुरु पूरे पाया, बूझत सब ही बचाया ॥

[३३-७३७]

गुरु कीजे दया अपार, आस धर सन्मुख आया ।
 अपना दास विचार, चरण की दीजे छाया ॥



यह संसार असार, सार कुछ इसमें नहीं ।
 मिथ्या है व्यौहार, जैसे बादर की छाँई ॥
 स्वारथ के सब सगे, बिना स्वारथ नहीं डोलें ।
 स्वारथ के बस रहें, स्वारथी स्वारथ बोलें ॥
 सुन नर देवी देवता, ऋषि मुनि सियाने ।
 निज स्वारथ के कारने, सब भये दिवाने ॥
 प्रीति रीति व्यौहार, जगत प्रपंच अपारा ।
 सब कुछ इनका रहे, सो स्वारथ के आधार ॥
 देश दशा उपराम चित, व्याकुल रहूँ निसदिन ।
 परमारथ की चाह बसी, मेरे हिय में छिन छिन ॥
 तुम साँचे परमारथी, जीवन हित लागी ।
 सहज दयालु कृपालु, सहज त्यागी बैरागी ॥
 धर कर सन्त स्वरूप, दिया परमारथ दाना ।
 निबल जीव को आय, लगाया ठौर ठिकाना ॥
 राधास्वामी सतगुरु, परमारथ वादी ।
 बख़्शो प्रेम की छाँह, मेट प्रपंच उपाधी ॥

[३४-७३८]

चलो गुरु दरबार, आज दर्शन के कारन ।
 दरस परस सुख सार, हुये प्रगट जग तारन ॥
 प्रेम प्रीति उमगाय, भुके पद कमल में माथा ।
 सतसंत गंगा न्हाय, रहो सतगुरु के साथ ॥
 बचन सुनो चितलाय, तजो मन की दुचिताई ।
 सतगुरु होंय सहाय, भरम संकट मिट जाई ॥
 मानुष जनम सुधार, काज अपना कर लीजे ।
 भक्ति भाव हिय धार, दुविधि दुर्मति तज दीजे ॥
 सुरत शब्द अभ्यास, साध लो गुरु का नाम ॥



जीते जी विश्वास, जाओ राधास्वामी धामा ॥
 बिन गुरु निष्फल करम सब, बिन गुरु निष्फल धर्म ।
 बिन गुरु ध्यान न भक्ति कुछ, यह सत भेद का मर्म ॥

[३५-७३६]

पड़ा चरन में आय, शरन में अपने लीजे ।
 नहीं कोई संग सहाय, मुझे शरणागत कीजे ॥
 माया मद से बचाय, दान भक्ति का दीजे ।
 दीन को अंग लगाय, प्रभु अब अपना कीजे ॥
 जनम को दिया गँवाय, अवधि मेरी निसदिन छीजे ।
 राधास्वामी आय, आज मेरी रक्षा कीजे ॥

[३६-७४०]

सखियो गाओ मंगल राग, भाग से गुरु दर्शन पाया ।
 सुफल हुआ नर जनम, न मोहे काल न अब मोहे माया ॥
 जनम जनम से भूल भ्रम लग, चौरासी योनि भटकी ।
 अब गुरु हुये सहाय फोड़दी, सहज सहज माया मटकी ॥
 घट आनन्द दिन रात चैन से, सुख से समय बिताते हैं ।
 घट सतगुरु से प्यार, कहीं नहीं हम अब आते जाते हैं ॥
 घट में अपने प्रीतम प्यारा, सदा बिराजा रहता है ।
 दुखी न परजा होय कभी जब, साथ में राजा रहता है ॥
 राधास्वामी दया के सागर, आगर नागर हितकारी ।
 सहज स्वभाव कृपाल, करेंगे अपनी रक्षा रखवारी ॥

“प्रश्नोत्तरी उपदेश”

[३७-७४१]

प्रश्न :

क्या देखा क्या सुना है घट में, मुझे सुना अपनी बानी ।
 सोचूँ तेरा कथन है कैसा, गुरु मत है या मन मानी ॥



उत्तर :

ज्योति में लखी निरंजन की छवि, ज्योति निरंजन ब्रह्म अपार ।
 ब्रह्म में परब्रह्म को निरखा, परब्रह्म सोहंगम सार ॥
 सोहंग हंस के परे ठिकाना, सतगुरु सत्त पुरुष दरवार ।
 यह सब मैंने देखा प्यारे, देख देख कर किया विचार ॥
 घट में सुना शब्द जो अद्भुत, पहला शब्द महा टनकार ।
 इस टनकार के ऊपर बानी, आई कानों में ओंकार ॥
 ओंकार पर रारंकारम्, रारंकार में सोहंकार ।
 सोहंकार बाँसुरी की गति, बीन की धुन थी सत्याकार ॥
 यह सब देखा किया परेखा, यह सब कान से सुन पाया ।
 अब आगे का भेद बतादे, सतगुरु ने जो है गाया ॥

उपदेश :

कर सतसंग अगम की गम कर, लख लख अलख को लखले तू ।
 अलख अगम के पार राधास्वामी, परख परख के परखले तू ॥
 आप आपको आप परखकर, आप आपको ले पहचान ।
 साधन अनुभव की मर्यादा, कहा और का नेक न मान ॥
 बिन साधन अनुभव नहीं जागे, बिन सतसंग विवेक न ज्ञान ।
 बिन सतगुरु कोई राह न पावे, राधास्वामी कहा बखान ॥

[३८-७४२]

नहीं मैं जानता था कौन हूँ, और क्यों यहाँ आया ।
 पड़ा क्यों काल की फाँसी में, क्यों माया ने भरमाया ॥
 इधर भटका उधर भरमा, कोई यह भेद बतलाये ।
 बहुत पूछा किसी ने मेरी यह, गुत्थी न सुलझाया ॥
 पढ़ी पोथी गया तीरथ, किया जप तप रहा बन में ।
 न सन्यासी उदासी, और न बनवासी ने समझाया ॥
 न निकला काम तब मन में, उदासी आगई मेरे ।



चरन राधास्वामी के पकड़े, गुरु ने जब यह बतलाया ॥
 नहीं माया अलग तुझसे, यह माया तेरी बुद्धि है ।
 समय है काल माया बस, समय से आप घबराया ॥
 सुरत को साध घट में धस, किया कर शब्द का साधन ।
 तो यह समझेगा तू चेतन है, चेतन चेतना भाया ॥
 सुलभ तब यह गई गुत्थी, समझ निज रूप की आई ।
 सुखी हो राधास्वामी संगत में, सतगुरु के गुन गाया ॥

‘प्रश्नोत्तर’

[३६-७४३]

प्रश्न :

इस संसार का रूप क्या, पूछे दास फकीर ।
 इसका उत्तर दीजिये, सुगम सुख्ख गम्भीर ॥

उत्तर :

जहाँ पर निंदा सो संसार । जगत है निंदा का व्यौहार ।
 निंदा करे कोई संसारी । निंदा तजे सो गुरुमत धारी ॥
 गुन को गह औगुन को त्यागे । गुन ग्राही हो गुन रस पागे ।
 परनिंदा से अपनी हानी । सुख नहीं मिले रहे अज्ञानी ॥
 निंदा करे जो और की, सो नहीं गुरु का दास ।
 चित नहीं उसके गुरु बसें, सहे अन्त में त्रास ॥

प्रश्न : ३

है उपासना भेद क्या ? सो कहिये समझाय ।
 मन की सब दुविधा मिटे, चित का भरम नसाय ॥

उत्तर : ४

उप हैं निकट बैठना आसन । मूल मनन श्रवण निध्यासन ।
 गुरु के पास करे जो बासा । सो उपासना धारे दासा ॥



चित थिर करे हृदय सोधे । बिरती न भरमे सहज निरोधे ॥
 दृष्टि रहे गुरु रूप के संग । लखे रूप धारे गुरु रंग ॥
 यह उपासना सार बताऊँ । सैन बैन में भेद लखाऊँ ॥

यह सिद्धान्त है अद्भुती, बरनत बरन न जाय ।
 गुरु समीप का बैठना, उप आसन कहलाय ॥

प्रश्न ५ :

सतसंगत के मर्म को, सहज ही देउ बताय ।
 गुरु गम गति कुछ लख पड़े, चार पदार्थ पाय ॥

उत्तर ६ :

सतगुरु हैं गुरु सत के रूप । सत् लोक के साँचे भूप ॥
 उनका संग है सत सतसंग । सतसंगत से चढ़े सुरंग ॥
 संग प्रभाव रंग गुरु धारे । चित को सोधे मन को मारे ॥
 ज्योति संग ज्यों जले पतिंगा । तेहि विधि करे गुरु का संग ॥
 अन्धकार अज्ञान बिनासे । सत का नूर हिय बिच भासे ॥
 सतसंग सत का संग है, सतगुरु सत सरदार ।
 सत रूपी सत भावना, सत शोभा भंडार ॥

प्रश्न ७ :

सुमिरन कैसे कीजिये, सुमिरन का क्या भाव ।
 कैसे सुमिरन के किये, पड़े हमारा दाव ॥

उत्तर ८ :

सत् नाम है सुमिरन सार । सुमिरन सहज योग व्यौहार ॥
 जेहि विधि कामी सुमिरे नार । तैसा हो आदर्श का प्यार ॥
 जैसे लोभी संयम दाम । तैसे ही व्यापे सत नाम ॥
 घट पर घट सिर धर पनिहारी । डोले हिले चले पग धारी ॥
 सुरत रहे घट माँह पिरोई । सुमिरन की गति ऐसी होई ॥



चन्द्र ललाट तो कंठ विष, सिरसे बहती गंग ।
 भस्म विभूती तन मल्लें, लपटे कीट भुजंग ॥
 जटा जूट सिर सेहते, सुरत निरत बिस्माध ।
 अमन अमल अवगत दशा, लखे रूप कोई साथ ॥
 उमारमण करुणा अयन, कुन्द इंदु सम देह ।
 मोह भरम व्यापे नहीं, अचित अगेह अदेह ॥
 नन्दी वाहन साथ ले, लिये भूत बैताल ।
 डमरु और त्रिशूल कर, गले मुंड की माल ॥
 लख शिव की मूरत उमा, बोली दीन दयाल ।
 तुम क्यों ऐसा रूप धर, करो जगत प्रतिपाल ॥
 शिव बोले सुन तू प्रिया, मैं कल्याण स्वरूप ।
 मेरा रूप विचित्र है, नहीं परजा नहीं भूप ॥
 मानी अभिमानी महा, नहीं मान अभिमान ।
 माँगूँ मान न आप मैं, दे औरन सन्मान ॥
 औरन के तो आँख दो, मेरे आँखें तीन ।
 धनी बली को सब चहें, मुझ को प्यारे दीन ॥
 अमृत प्यारा सबन को, विष प्यारा है मोहि ।
 औरन के उपकार हित, तजूँ काम मद मोह ॥
 औगुन देख के गुन लहूँ, अवगुन से नहीं प्यार ।
 मेरी दशा विचित्र है, अगुन सगुन व्यौहार ॥
 पारवती अर्धाङ्गिनी, परबत के आकार ।
 यह निज शक्ति चित्त की, उपजे न विषय विकार ॥
 नन्दी सुख को समझले, मेरा वाहन सोय ।
 सुखी रहूँ नहीं दुखी हूँ, मन की दुर्मति खोय ॥
 एक कर मैं त्रिशूल ले, शूल का करूँ सँवार ।
 अधि दैविक अधिभूत दुख, अध्यात्म दूँ मार ॥



दूजे कर डमरू गहूँ, अन्तर शब्द की धुन ।
 शब्द रूप है निज मेरा, विसमध शब्द को सुन ॥
 पर उपकार को चित्त दे, विष का किया अहार ।
 नील कंठ का नाम धर, इसी नाम से प्यार ॥
 सृष्टि प्रलय उत्पत्ति दशा, व्यापे नाहीं मोह ।
 मुन्दमाल भूषण बने, रह कैलाश की खोह ॥
 जग मग चन्द्र ललाट में, तिसको ओजस जान ।
 मैं निःकाम रहता सदा, क्रान्ति शान्ति स्थान ॥
 गंग सीस धारा सुगम, सिर से निकसी धार ।
 सोई मेरा रूप है, निरमल शुद्ध विचार ॥
 संग में मेरे भूत हैं, भूत में धरनि अकास ।
 जलवायु पावक सदा, मुझ में करें निवास ॥
 और रमे बैताल नित, सो सुन प्यारी आज ।
 बैताली है राग धुन, गान से मुझको काज ॥
 अन्हद बानी अद्भुती, अगम निगम की खान ।
 श्रुति उद्गीत प्रणव कहो, साईं ज्ञान मन मान ॥
 आँख तीसरी सुन प्रिया, तीजे तिल भ्रूमध्य ।
 जो पावे इस भेद को, रहे न जग में बद्ध ॥
 मैं कैलाश बसूँ सदा, 'कैल' ज्ञान 'आनन्द' ।
 'अस' है 'रहना' सुन उमा, मेंट भरम का द्वन्द ॥
 सत चित आनन्द रूप में, सत है मेरी देह ।
 चित परवत सम पारवती, रूप आनन्द सनेह ॥
 मेरा अपना कुछ नहीं, जो कुछ है सब मोर ।
 कमल नीर को परख ले, मुझ में मोर न तोर ॥
 मोर तोर की जेवरी, बन्धे जीव समुदाय ।
 मोर तोर मुझ में नहीं, कैसे कोई फँसाय ॥



मोर तोर की जेवरी, बट बाँधे सब जीव ।
 यह बन्धन तो तब कटें, लखे जो मूरत शिव ॥
 मोर तोर की जेवरी, सोई जग व्यौहार ।
 यही तो यम का काल है, यही है मूल विकार ॥
 मोर तोर की जेवरी, काल करम की फाँस ।
 काट दे दुख के फन्द को, भज गुरु साँसों साँस ॥
 मोर तोर की जेवरी, दो लड़ त्रय लड़ जान ।
 त्रिगुनात्मिक जगत में, तीन ताप की खान ॥
 मोर तोर की जेवरी, शिव संगत में काट ।
 ले जो भक्ति विवेक को, चमके चन्द्र ललाट ॥
 पारवती चित साध कर, शब्द योग अभ्यास ।
 नन्दी आनन्द चढ़ चले, बिचरे कोई दास ॥
 सिर से गंग की धार नित, बहे तरंग अपार ।
 ज्ञान ध्यान की गम लहे, उपजे विवेक विचार ॥
 प्रेम भक्ति मन में बसे, डसे न काल भुजंग ।
 दुख नहीं व्यापे देह को, पिये जो आनन्द भंग ॥
 सत्त देह मन चित्त है, आनन्द सुरत सुजान ।
 भेद सच्चिदानन्द का, अद्भुत अगम महान ॥
 यही ज्ञान का सार है, और ज्ञान अज्ञान ।
 शब्द सार मेरा परख, शब्द का कर नित ध्यान ॥
 शब्द गुरु का रूप है, और गुरु नहीं कोय ।
 जो नहीं गुरु गम को लखे, जावे भव जल खोय ॥
 'शालिग्राम' की दया से, पाया भेद अपार ।
 'शालिग्राम' के संग से, मेटा द्वन्द पसार ॥
 गुरु मूरत हृदय बसी, शिव प्रगटा अवधूत ।
 जग की फाँसी कट गई, जैसे काँचा सूत ॥



धन्य धन्य गुरु धन्य तुम, धन्य दया व्यौहार ।
राधास्वामी धन्य तुम, दीनन के हितकार ॥

[४१-७४५]

राधास्वामी नाम हित चित, प्रेम भाव से गाइये ।
जीते जी यश कीरती, निरवान सद्गति पाइये ॥
घट में गाना नाम का हो, घट में हो सुभिरन मनन ।
घट के अन्दर उसका श्रवन, घट में हो उसका भजन ॥
घट में अघट है घट में, घट के घाट का है पता ।
बैठ अपने घट में निसदिन, घट ही में मन को लगा ॥
घट में सुन धुन नाम की तू, श्रुति मत को साधकर ।
नाम की है रागनी उलटी, इधर से मुड़ उधर ॥
सुरत के कानों से सुन, नित नाद अनहद राग की ।
शब्द की डोरी पकड़, यह राग है अनुराग की ॥
है यही उद्गीत सच्चा, उसका प्रणव नाम है ।
प्राण गाता है उसे, और प्राण ही से काम है ॥
कान आँख और मुख को, माने के समय में करले बंद ।
राधास्वामी नाम गायाकर, छुटेगा खेद द्वन्द ॥
है यही निज नाम, और इस नाम में चित को लगा ।
घट के परदे तब खुलेंगे, घट के अनुभव को जगा ॥
राधास्वामी नाम का, साधन हो सोते जागते ।
त्याग आलस नींद बन आवे, जो तुझसे त्यागते ॥

[४२-७४६]

आओ सतसंग में, नर जन्म बनाने आओ ।
गुरु का उपदेश सुनो, चित को चिताने आओ ॥
काम करना हो करो, बातें बनाना छोड़ो ।
अपने को औरों को, बन्धन से छुड़ाने आओ ॥



शम से और दम से करो, चित की वृत्ति का निरोध ।
 योग की शक्ति से बल, अपना बढ़ाने आओ ॥
 सुरत शब्द का अभ्यास, सुगम है प्यारे ।
 सीख लो युक्ति, कमाई को कमाने आओ ॥
 राधास्वामी ने दया की, दिया सत मत का मरम ।
 चूको आलस न करो, ज्ञान को पाने आओ ॥

[४३-७४७]

काम करो चित से करो, दुचिताई से हान ।
 दुचिताई अच्छी नहीं, भूल भरम की खान ॥
 दुविधा से क्या बनेगा, दुविधा है बेकाम ।
 दुविधा ने दोऊ गये, माया मिली न राम ॥
 दुविधा त्यागी साध चित को, मन का साजा साज ।
 गोरस बेचत हरि मिले, एक पन्थ दो काज ॥
 एक रंग में रंग रहो, कभी न बनो कुरंग ।
 सूरदास की कामरी, चढ़े न दूजा रंग ॥
 राधास्वामी गुरु किया, दुविधा मेटी आय ।
 क्यों नहीं पूरा काम हो, सतगुरु हुये सहाय ॥

[४४-७४८]

तुम आप करो विश्वास करो, गुरु बेड़ा पार करेंगे जी ।
 दृढ़ निश्चय रहे मन में सदा, सच्चा उद्धार करेंगे जी ॥
 जो शरन में उनके आया है, भक्ति के दान को पाया है ।
 गुरु सुभिरन चित्त बसाया है, वह उसका सुधार करेंगे जी ॥
 मन में सच्ची प्रतीति रहे, गुरु चरन कमल में प्रीति रहे ।
 और प्रेम प्रभाव की रीति रहे, सच्चा उपकार करेंगे जी ॥
 बिन गुरु नहीं कर्म न ज्ञान मिले, गुरु बिन नहीं ज्ञान अनुमान मिले ।
 नहीं शब्द न साखी प्रमान मिले, बही विचार करेंगे जी ।



राधास्वामी भजो राधास्वामी जपो, राधास्वामी सुभिरि राधास्वामी कहो
राधास्वामी सुनो राधास्वामी कहो, राधास्वामी संभाल करेंगे जी ॥

[४५-७४६]

आतम धिरती सहज की, सहज भाव चित दे ।
सहज सहज में सहज है, सहज मुक्ति फल ले ॥
सहजा धिरती आत्मा, मध्य धारना ध्यान ।
अधम मूर्ति पूजा विषय, तीरथ नीचा जान ॥
जाकी जैसी प्रकृति, तैसा तिसका काम ।
छेड़ छाड़ नहीं कीजिये, लीजे गुरु का नाम ॥
जो बन आये सहज में, सोई सहज का रूप ।
जिसमें खींचातान हो, जान भ्रम का कूप ॥
सहज सहज जो सहज विधि, सो फल मीठा होय ।
और युक्ति से जो पके, सुन्दर मधुर न सोय ॥
साधन सुभिरन सहज का, सहज ही सहज विधान ।
सहज बुद्धि सहज आचरण, अन्त सहज निरवान ॥
निरविकल्प सविकल्प नहीं, उत्तम सहज समाधि ।
सहज समाधि सहज मिले, छूटे सहज उपाधि ॥
सहज में नहीं कठिनता, सीख सहज मत रीति ।
साधन सहज की प्रबलता, उपजे सहज प्रतीति ॥
प्रेम प्रतीति सहज विधि, कठिन न प्रेम का पंथ ।
प्रेम बिना सब व्यर्थ है, भ्रम न छूटे ग्रन्थ ॥
ग्रन्थ पढ़ा तो क्या भया, मिला न प्रेम का पन्थ ।
प्रेम युक्ति सहजे खुले, जड़ चेतन का ग्रन्थ ॥
सुरत शब्द अभ्यास से, वृत्ति सहज हो प्राप्त ।
निज अनुभव साक्षात्कार, सहज शब्द मन आस ॥
सहज इन्द्री का ज्ञान है, सहज ज्ञान अनुमान ।



सहज सहज निज ज्ञान है, यही है मुख्य प्रमान ॥
 तुझमें ज्ञान प्रमान है, तुझमें ज्ञान अनुमान ।
 तुझमें शब्द की खान है, आप्त वचन सुन कान ॥
 कठिन ग्रन्थ की जेबरी, बंध रहे चतुर सुजान ।
 निज अनुभव सूझा नहीं, पाया वाचक ज्ञान ॥
 वाचक ज्ञान को त्यागदे, महा कठिन व्यौहार ।
 प्रेम प्रतीति प्रभाव से, पावे उत्तम सार ॥
 सहज रीति सतसंग कर, सहज श्रवन और मनन ।
 सहज शब्द अभ्यास है, सुमिरन सहज भजन ॥
 मिसरी जब जल से मिली, होगई जल का अंग ।
 वैसे ही गुरु के संग को, समझ सत्य का संग ॥
 नोन गला पानी भया, भरे कौन अब गौन ।
 सतसंगत परताप से, मन बानी चित मौन ॥

[४६-७५०]

हम बासी उस देस के, जहाँ न बुद्धि विचार ।
 द्वन्द्व भेद का भय नहीं, परम तत्व का सार ॥
 हम बासी उस देस के, जहाँ आनन्द की खान ।
 सुख दुख कुछ व्यापे नहीं, एक रस भाव समान ॥
 कमल नीर की गति परख, समझे कोई साध ।
 सुरत शब्द अभ्यास कर, मेटे सकल उपाध ॥
 नहीं वह एक न दो कभी, त्रिगुनात्मक वह नाँहि ।
 गुनातीत गति अगम छवि, देखा निज घट माँहि ॥
 राधास्वामी की दया, पाया अगम अपार ।
 कहते सुनते ना बने, नहीं विवेक विचार ॥





[४७-७५१]

सुभिरन करो तो जीभ बन्द हो, शब्द सुनो तब कान ।
 मन को बस करने की विधि, गुरु स्वरूप का ध्यान ॥
 आँख से निरखो गुरु स्वरूप को, अन्तर घट में आन ।
 धीरे धीरे काम बनाओ, गुरु महिमा को जान ॥
 तीन बन्द जब लग नहीं लागें, कैसे मिले ठिकान ।
 इन्द्री मन का शम दम साधन, समझ के करो विधान ॥
 निरख परख अपनी हो निस दिन, अपने रूप की हो पहचान ।
 समय न खोना भ्रम न फँसाना, ममता में है सबकी खान ॥
 सुरत शब्द की रहे कमाई, साधु संत को मन से मान ।
 राधास्वामी की कृपा से, मिलेगा एक दिन सच्चा ज्ञान ॥

[४८-७५२]

चित चरनों में जोड़िये, साक्षी भाव समान ।
 तब सतगुरु का प्राप्त हो, सहज ध्यान अनुमान ॥
 सहज सहज में सहज हो, सहज सहज का काम ।
 सहज भजन और ध्यान हो, सहज ही सुभिरन नाम ॥
 सहज भाव को समझलो, कठिनाई को त्याग ।
 कठिनाई में विकलता, सहज में प्रेम अनुराग ॥
 सहज सहज जो पग धरे, पहुँचे गुरु दरबार ।
 कठिन भाव हृदय बसे, फिर नहीं बेड़ा पार ॥
 सहजे पके बिठास है, करो न खींचा तान ।
 सहज वृत्ति है नम्रता, खींचतान अभिमान ॥
 सहज मौज की रीति है, सहज चले जो कोय ।
 सहज भाव अन्तर बसे, घट में दर्शन होय ॥
 सुभिरन साधन सहज का, सतगुरु दिया बताय ।
 सहज सहज सुभिरन करो, एक दिन गुरु मिल जाय ॥



करम स्थूल है साधुआ, ज्ञान सूक्ष्म वनौहार ।
 आनन्द कारन मात्र है, यह सिद्धान्त विचार ॥
 नीचे सब करमी रहें, ज्ञानी अधर समाय ।
 आनन्द जिनको मिल गया, सो भव दुःख नसाय ॥
 त्रिगुन जगत की यह दशा, तीन तीन का भेद ।
 सत चित आनन्द परखले, मेट भरम का खेद ॥
 करम बने अज्ञान से, ज्ञान से बने विचार ।
 आनन्द बने सो सुरत से, गुरु मत सार सुधार ॥
 ज्ञान बीच की कड़ी है, यह नहीं इष्ट फकीर ।
 समझ समझ मन आपने, चित करो धीर गंभीर ॥
 त्रिकुटी की गम करम में, सो अनेक का रूप ।
 अंधकार अज्ञान सोई, डाले भव के कूप ॥
 ज्ञान द्वैत का पक्ष है, और नहीं कोई द्वैत ।
 मन ही में दुविधा बसे, नहीं वह पद अद्वैत ॥
 सुरत निरत में एकता, एक भाव आनन्द ।
 सुरत शब्द के योग से, कटे मोह का फन्द ॥
 वेद मार्गी त्रिपुटि पद, वेदान्ती सोई द्वैत ।
 भक्त उपासक प्रेम रत, लहें सुगम अद्वैत ॥
 तीनों तीनों में फँसे, अपने भरम की खान ।
 त्रिगुन जगत के जाल में, भोगें योनि निदान ॥
 योगी भोगी चतुर नर, आवागमन न काट ।
 कभी जनमे और कभी मरे, साजा द्वन्द का ठाट ॥
 नहीं यह अगुन न सगुन है, निराकार साकार ।
 इनके मारग ना चले, हो फकीर हुशियार ॥
 नहीं समाधि में निचलता, ताका होय उत्थान ।
 सृष्टि स्थिति प्रलय में, आवागमन फँसान ॥



युक्ति अनूपम गुरु की, समझ समझ चित धार ।
 सतसंगत कर साध की, सहज में जा भव पार ॥
 सन्त मता ऊँचा बहुत, समझ तो उपजे चैन ।
 संस्कार ले गुरु से, सुन सुन उनके सैन ॥
 यह करनी का भेद है, तज कथनी की बान ।
 करनी कर रहनी रहे, सोई साध सुजान ॥
 तीन अवस्था त्यागकर, चौथे पद चित लाव ।
 वही सन्तमत सार है, वही मुक्ति का दाव ॥
 सहस्र कमल दल बास कर, गह त्रिकुटी ओंकार ।
 सुन्न समाधि रचाय ले, गुफा से होजा पार ॥
 सतपद आसन मारकर, अलख अगम को दौड़ ।
 तब राधास्वामी धाम में, छूटे मन की चौड़ ॥
 शब्द योग को सीखकर, कर कुछ दिन सतसंग ।
 त्याग जगत के रंग को, धार गुरु का रंग ॥

[५२-७५६]

गुरु की भक्ति सदा सुखदाई, गुरु की भक्ति नित करना ।
 यह भव सागर की नौका है, बिना इसके नहीं तरना ॥
 जगत की वासना भूठी, न उससे नेह कर प्यारे ।
 भ्रम में जो पड़े प्राणी, सहेंगे जनम और मरना ॥
 समझले माया छाया है, किसी के हाथ कब आई ।
 धुआँ का नापना मिथ्या, त्रिपति का बोझ सिर धरना ॥
 समय अनमोल जो खोते, गुरु का संग नहीं करते ।
 पशु सम तुम उन्हें जानो, पशु हैं वह कभी नर ना ॥
 रहे गुरु की लगन मन में, यतन सुमिरन भजन का हो ।
 दयासागर हैं राधास्वामी, चरन की दृढ़ करो शरना ॥

~ ❀ ~



[५३-७५७]

मैं पतित ठहरा तभी, तू भी पतित पावन बना ।
 डूबा दुख सागर में मैं, तब तू तरन तारन बना ॥
 जो न होता जग में रावण, कैसे आते रामचन्द्र ।
 कंस ने प्रगट किया, मथुरा में कृष्ण आनन्दकन्द ॥
 जो सुखी हैं उनको तेरे, नाम की चाहत नहीं ।
 जो भले हैं उनको तेरे, काम की हाजत नहीं ॥
 पाप जब मैंने किया तब, तू हुआ परगट यहाँ ।
 मैं न करता पाप तुझको, जानता कोई कहाँ ॥
 पापियों के तारने वाले, हमारा ध्यान कर ।
 करते हैं सब हमसे घृणा, हमको पापी जानकर ॥
 अच्छे लोगों भागते हो, क्यों हमारे नाम से ।
 कैसे कतराकर चले हो, तुम हमारे काम से ॥
 ज्ञान का अज्ञानियों को, ही सदा अधिकार है ।
 पापियों के ही लिये जग, सन्त का अवतार है ॥
 सुख के सिर पत्थर पड़ें, सुख ने भुलाया नाम को ।
 दुख की बलिहारी है, दुख ने ही जपाया नाम को ॥
 मेरे दाता दीन और, दुखियों की तुझको लाज है ।
 दीन बन्धु दीन हित, करना ही तेरा काज है ॥
 अपनी निंदा क्या करें, निंदा के हम कब पात्र हैं ।
 सच्चे अधिकारी दया के, जग के पापी मात्र हैं ॥
 पाप ही दर्शन दिलाते, हैं तेरा संसार को ।
 पाप करके वह सुझा देते हैं, भक्ति सार को ॥
 द्वन्द में हमको फँसाया, और पापी कर दिया ।
 मन का बरतन वासनाओं, से हमारा भर दिया ॥
 सारे पापी तर गये, आई है अब बारी मेरी ।



देखता हूँ राह व्याकुलता, से आने की तेरी ॥
 तर गये गनिका अजामिल, मुक्त शबरी भीलनी ।
 तर गये सैना सदन तक, और सुपच चण्डाल भी ॥
 मेरी बारी पर बता अब, देर क्यों करने लगा ।
 इस अधम को तार दे यह, दुख से अब मरने लगा ॥
 ऐ पतित पावन पतित की, ओर दृष्टि हो तेरी ।
 ऐ तरन तारन नहीं, होती है चिन्ता क्यों मेरी ॥
 राधास्वामी अब दया से, मेरा बेड़ा पार कर ।
 दुख सहा करता हूँ निसदिन, आके तू उद्धार कर ॥



बिनती

[७५८]

धन्य धन्य गुरु देव, ज्ञान सच्चा दिया ।
 मिथ्या जग का द्वन्द सो, उसको मिटा दिया ॥
 सत चित आनन्द रूप, अजर अमर विज्ञानमय ।
 उनकी कृपा महान, सूर ज्ञान का भया उदय ॥
 छूटा सब प्रपंच, दुख दारुन गया ।
 भव के जाल से बच गये, हुई ऐसी दया ॥
 भाग मेरा है धन्य धन्य, गुरु दीन हित ।
 धन्य ज्ञान और ध्यान है, धन्य धन्य हों अचल चित ॥
 शब्द जहाज चढ़ाय कर, कर लिया भव के पार ।
 राधास्वामी मेहर से, छूट गया संसार ॥





प्रार्थना

[७५६]

राधास्वामी धनी जग में आये, धर सतगुरु अवतार ।
जीव निवल की बाँह पकड़कर, किया भवसागर पार ॥
दया सिंधु में लहर जो उमड़ी, लाई शब्द जहाज ।
निवल जीव सब चढ़कर बैठे, सुख सम्पति रहे गाज ॥
हँसी खेल में पार लगाया, सुरत शब्द के लार ।
धरम करम का बन्धन काटा, मेट दिया जम जार ॥
राधास्वामी राधास्वामी छिन छिन गाऊँ, प्रेम प्रीति उमगाय ।
धन धन धन मेरे सतगुरु स्वामी, सबको लिया बचाय ॥

अठारहवीं धुन

[१-७६०]

गुरु परम दीन दयाल प्रगटे, जीव तारन हार ।
शब्द नाव चढ़ाय सुन्दर, लाये भव जल पार ॥
कृपा मूरति दया सूरति, ज्ञान गम भण्डार ।
भक्त रंजन जग विभंजन, सकल के आधार ॥
जीव दीन अधीन स्वामी, दुखित अति दिन रैन ।
शब्द सार चिताय जन को, सुरत दीजे चैन ॥
मिटे कलि मल वासना, और छूटे मूल विकार ।
चरन कमल लगाय सबको, कीजें वेड़ा पार ॥
अपना कीजे प्रेम दीजे, दया दृष्टि संभार ।
सहज में प्रभु आप कीजे, लीजे सकल सुधार ॥



जीव निबल अचेत सब विधि, संहत विपत क्लेश ।
 छोड़े यह परदेश भव का, जायें तुम्हरे देश ॥
 शब्द नाम सुनाय घट में, शब्द डोर लखाय ।
 शब्द का रहे आसरा प्रभु, शब्द डगर चढ़ाय ॥
 शब्द धाम दिखाइये, और शब्द चित्त बसाय ।
 शब्द रूप दिखाय सबको, शब्द दीजे मिलाय ॥
 जहाँ मन की गम नहीं है, वह तुम्हारा देश ।
 भक्त जन को निज दया से, इसका दो उपदेश ॥
 काल करम से विवश हैं जीव, माया मोह फँसाय ।
 राधास्वामी दया सागर, कीजे इनकी सहाय ॥

[२-७६१]

भक्ति दाता भक्ति दीजे, भक्त पालन हार ।
 मुक्त कीजे भक्ति अपनी, बख्शिजे करतार ॥
 तुम हो ज्ञानी तुम हो ज्ञाता, ज्ञान गम भंडार ।
 भेट दो अज्ञान तम को, ज्ञान के आधार ॥
 दीन तारन दीन बन्धु, हैं दीन दयाल ।
 दीन शरणागत पड़ा है, कीजे उसकी संभाल ॥
 मैं पतित सब विधि हूँ स्वामी, तुम हो पतित उद्धार ।
 मेरी ओर न देखियेगा, अपनी ओर निहार ॥
 राधास्वामी राधास्वामी, नाम दीजे दान ।
 मान की इच्छा नहीं मोहे, आया तज अभिमान ॥
 मैं हूँ बालक तुम पिता हो, मैं निपट अनजान ।
 बाल बिनती सुनिये चित से, कीजे मेरा ध्यान ॥
 भक्ति सेवा नहीं बने कुछ, मैं हूँ बाल स्वरूप ।
 राधास्वामी मैं हूँ घट सम, तुम हो ब्रह्म के रूप ॥
 मैं हूँ कमल दल भाव सम, तुम कीजिये परकास ।



चित रहे चरनों में निसदिन, दीजे ऐसी उज्जाम ॥
 फेर कर दृष्टि को मेरी, कीजे मेरी ओर ।
 चन्द्र मुख तुम राधास्वामी, मैं हूँ चित्त चकोर ॥

[३-७६२]

अज्ञान बस नहीं तुमहि जाना, कैसे कोई जाने तुम्हें ।
 जहाँ बानी मन की गम नहीं, कोई कैसे पहिचाने तुम्हें ॥
 रूपवान अरूप हो तुम, आप जगत स्वरूप हो ।
 तुम आप भव निधि कूप हो, तुम चर अचर के भूप हो ॥
 अज्ञान भ्रम के जाल में, फँसकर तुम्हें जाना नहीं ।
 इस कठिन मोह की छाया में, प्रभु तुमको पहिचाना नहीं ॥
 पद कमल सीस बिराजिया, त्रय ताप सकल बिनासिया ।
 अघपाप पूरे नासिया, प्रभु कीन्हा सहज उदासिया ॥
 मेरे अब तो अवगुन मेटिये, चरनों में मुझको लीजिये ।
 राधास्वामी निज जन जानकर, पद पद्म भक्ति दीजिये ॥

[४-७६३]

धन दुख हरन धन सुख करन, मंगल भवन पूरन धनी ।
 धन पतित पावन भव नसावन, ताप त्रय गंजन धनी ॥
 त्रय लोकनाथ अनाथ बन्धू, दीन सुखदायक प्रभू ।
 धन प्रणतपाल दयाल मायातीत, सुरनायक प्रभू ॥
 तुम अपरम्पार अपार सतगुरु, ब्रह्म रूप अगोचरम् ॥
 तुम दीनबन्धु दयाल स्वामी, जगत हित धरनी धरम् ॥
 तुम आदि कारन कर्म करता, दीन हितकारी प्रभू ।
 तुम आदि अन्त अनन्त रक्षक, हरहु दुख मारी प्रभू ॥

[५-७६४]

धन भक्त वत्सल नाथ करुणा, पुंज धन धरनी धरम् ।
 धन कमल नयन कृपाल रूप, अरूप धन धन सद्गुरुम् ॥



कोई जाने माया तेरी क्योंकर, नेति नेति अगम कहे ।
 तेरा नाम गावे भक्त निस दिन, परम सुख आनन्द लहे ॥
 पतित पावन भव नसावन, भक्त मन भावन प्रभू ।
 संशय मिटावन नाम तेरा, धन सदा धन सतगुरु ॥

[६-७६५]

हाथ जोड़ नवाय मस्तक, चरन कमल की बंदना ।
 शुद्ध मन से ध्यान सुमिरन, जनम को लूँ मैं बना ॥
 नींद में हो दण्डवत, जाग्रत परिकरमा मेरा ।
 जब सुषुप्ती का समय हो, हृदय में हो घर तेरा ॥
 देखूँ तेरा रूप पल पल, गाऊँ तेरे नाम को ।
 रूप नाम के आसरे गुरु, पाऊँ मैं बिसराम को ॥
 नाम का रसना में रस हो, कान अनहद धुन सुनें ।
 तेरी लीला की कथा को, बुद्धि मन चित सब गुनें ॥
 बोलूँ जब तेरा कथन हो, चुप रहूँ तेरा मनन ।
 मेरा सब कुछ तुझपे अर्पन, देह बानी चित्त मन ॥
 दृष्टि दे ऐसी मुझे यह, जगत तेरा रूप हो ।
 गोते मारूँ तुझ में छिन छिन, तू अमी का कूप हो ॥
 तू हो मेरा मैं हूँ तेरा, और से क्या काम है ।
 तेरा सेवक जब हुआ, होठों पे तेरा नाम है ॥
 तू है दाता तू बिधाता, तेरी केवल आस है ।
 हो गया भंवरा कमल पद का, चरन में बास है ॥
 देख अवगुन को न मेरे, मैं हूँ अवगुन से भरा ।
 तू गुनागर है दयामय, दे चरन का आसरा ॥
 प्रेम तेरा तेरी भक्ति, तेरी सेवा ध्यान हो ।
 तेरा सुमिरन और भजन हो, तेरा अन्तर ज्ञान हो ॥



राधास्वामी सतगुरु, करतार संकट काट दे ।
छीन ले सब सम्पदा, भक्ति का मुझको ठाठ दे ॥

[७-७६६]

कोट श्रुती बन्दना करूँ, सीस चरन झुकाय ।
हृदय भंवरा पद कमल स्वामी, छोड़ अन्त न जाय ॥
ऋद्धि सिद्धि न माँगूँ नौ निधि, चित्त नित्य उदास ।
चरन शरन की सेव निस दिन, रहे मन की आस ॥
भजन सुभिरन ध्यान पूजा, ज्ञान कर्म न जान ।
प्रीति रीति का सार प्रभु क्या, जाने यह अनजान ॥
दीन हीन अधीन सब विधि, त्याग सबकी आस ।
आय चरनन में पड़ा, तुम दीजो चरन निवास ॥
प्रेम धार बहाये खोलो, आज अमृत खान ।
ज्ञान झर प्रकाश पावे, मेटो तुम अज्ञान ॥
चढ़े सुरत आकाश मेरी, करे शब्द बिलास ।
आस केवल गुरु चरन की, जग से सदा निरास ॥
नाम रत्न का दान दीजे, साधु संग बिहार ।
राधास्वामी दया कीजे, तुम हो पतित उधार ॥

[८-७६७]

गुरु के भत में आयकर, गुरु मत ले पहचान ।
यह अवसर और यह समय, बहुर न देखे आन ॥
गुरु मत गुरु भेदी लखे, तासों मन पतियाय ।
पढ़ा लिखा जाना बहुत, यह नहीं ठीक उपाय ॥
नाम तो तेरे घट बसे, नाम से तू रहे लाग ।
राधास्वामी गुरु कृपा, पावे पूरन भाग ॥



[६-७६८]

तू क्यों सोवे मोह नींद में, जाग जाग सूरत प्यारी ।
 निरख परख कर मन अपने की, आठ पहर की रखवारी ॥
 यह संसार है दुख की खानी, सोच सोच मन में अपने ।
 चिड़िया रैन बसेरा है जग, कुल कुटुम्ब मिथ्या सपने ॥
 एक आस विश्वास गुरु की, और सकल भ्रमजाल महा ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सेवक गुरु की शरन गहा ॥

~ ❀ ~

बिनती

[७६९]

दीन हीन शरन में आया, कीजे आप सहाय ।
 काल का भय सहज मेटो, अपने चरन लगाय ॥
 सिंधु भव अति अगम दुस्तर, सूझे वार न पार ।
 हो दया की दृष्टि साईं, नाव है मंभधार ॥
 पतित पावन तरन तारन, यह तुम्हारा नाम ।
 बाल बिनती सुनो चित से, मन को दो विश्राम ॥
 ज्ञान नहीं निरवान नहीं, अनुमान से नहीं काम ।
 शब्द का दे आसरा प्रभु, बरुश दीजे नाम ॥
 नाम दान प्रदान कीजे, नाम रतन महान ।
 राधास्वामी दया सागर, कीजिये कल्याण ॥





राधास्वामी सतगुरु, करतार संकट काट दे ।
छीन ले सब सम्पदा, भक्ति का मुझको ठाठ दे ॥

[७-७६६]

कोट श्रुती बन्दना करूँ, सीस चरन झुकाय ।
हृदय भेंवरा पद कमल स्वामी, छोड़ अन्त न जाय ॥
ऋद्धि सिद्धि न माँगूँ नौ निधि, चित्त नित्य उदास ।
चरन शरन की सेव निस दिन, रहे मन की आस ॥
भजन सुभिरन ध्यान पूजा, ज्ञान कर्म न जान ।
प्रीति रीति का सार प्रभु क्या, जाने यह अनजान ॥
दीन हीन अधीन सब विधि, त्याग सबकी आस ।
आय चरनन में पड़ा, तुम दीजो चरन निवास ॥
प्रेम धार बहाये खोलो, आज अमृत खान ।
ज्ञान झर प्रकाश पावे, मेटो तुम अज्ञान ॥
चढ़े सुरत आकाश मेरी, करे शब्द बिलास ।
आस केवल गुरु चरन की, जग से सदा निरास ॥
नाम रत्न का दान दीजे, साधु संग बिहार ।
राधास्वामी दया कीजे, तुम हो पतित उधार ॥

[८-७६७]

गुरु के भत में आयकर, गुरु मत ले पहचान ।
यह अवसर और यह समय, बहुर न देखे आन ॥
गुरु मत गुरु भेदी लखे, तासों मन पतियाय ।
पढ़ा लिखा जाना बहुत, यह नहीं ठीक उपाय ॥
नाम तो तेरे घट बसे, नाम से तू रहे लाग ।
राधास्वामी गुरु कृपा, पावे पूरन भाग ॥



[६-७६८]

तू क्यों सोवे मोह नींद में, जाग जाग सूरत प्यारी ।
 निरख परख कर मन अपने की, आठ पहर की रखवारी ॥
 यह संसार है दुख की खानी, सोच सोच मन में अपने ।
 चिड़िया रैन बसेरा है जग, कुल कुटुम्ब मिथ्या सपने ॥
 एक आस विश्वास गुरु की, और सकल भ्रमजाल महा ।
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सेवक गुरु की शरन गहा ॥

~ ❀ ~

बिनती

[७६९]

दीन हीन शरन में आया, कीजे आप सहाय ।
 काल का भय सहज मेटो, अपने चरन लगाय ॥
 सिंधु भव अति अगम दुस्तर, सूझे वार न पार ।
 हो दया की दृष्टि साईं, नाव है मंभधार ॥
 पतित पावन तरन तारन, यह तुम्हारा नाम ।
 बाल बिनती सुनो चित से, मन को दो विश्राम ॥
 ज्ञान नहीं निरवान नहीं, अनुमान से नहीं काम ।
 शब्द का दे आसरा प्रभु, बरुश दीजे नाम ॥
 नाम दान प्रदान कीजे, नाम रतन महान ।
 राधास्वामी दया सागर, कीजिये कल्याण ॥





प्रार्थना

[७७०]

धन्य सतगुरु दीन बन्धु, धन्य जग हित सतगुरुम् ।
 धन्य कासी तेरी काया, धन्य कासी विश्वेश्वरम् ॥
 धन्य चित शक्ति उमा और, धन्य बास हिमाचलम् ।
 धन्य नन्दी शिव सेवक, धन्य आसन निश्चलम् ॥
 धन्य यह कैलास मानस, धन्य हंसन ब्रूथ है ।
 धन्य धन्य बैताल योगी, सिद्ध ऋषि जन जूथ है ॥
 हम गनेश के रूप तेरे, बाल शरनागत हुये ।
 धन्य तू बिस्माध मूरति, आये संगत किये ॥
 सुन्न सहज समाध साधी, धर्म की शिक्षा मिली ।
 राधास्वामी की दया से, काल की आयत टली ॥

उन्नीसवीं धुन

[१-७७१]

दर्शन की मैं प्यासी गुरु, मेरे दर्शन की मैं प्यासी ॥ टेका ।
 दर्शन दीजे अपना कीजे, बनूँ चरन की दासी ॥ गुरु मेरे ०
 दर्शन की रहे आस घनेरी, सब से रहूँ निरासी ॥ ”
 रात अँधेरी पन्थ न स्रभे, कर दो सहज उजासी ॥ ”
 सब को देखा किया परेखा, ज्ञानी ध्यानी उदासी ॥ ”
 मेरी लाज तुम्हें है साई, करो न जग में हाँसी ॥ ”
 दुख से दुखित रहूँ निस बासर, तुम ही हो सुखरासी ॥ ”
 महिमा अगम अपार तुम्हारी, अजर अमर अविनासी ॥ ”
 मेरे घट में आन बिराजो, तुम घट घट के बासी ॥ ”
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, काटो यम की फाँसी ॥ ”



[२-७७२]

बाँह गहे की लाज, सतगुरु बाँह गहे की साज ॥ टेका ॥
 आया दीन हीन चरनन में, परमार्थ के काज ॥ सतगुरु
 नाम दान दे अपना कीजे, माँगूँ मान न राज ॥ सतगुरु
 ज्ञान ध्यान योग नहीं क्रिया, भक्ति साज न साज ॥ सतगुरु
 शरनागत की लज्जा राखो, नहीं तो होवे अकाज ॥ सतगुरु
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, जग से आया भाज ॥ सतगुरु

[३-७७३]

शरनागत की लाज स्वामी, शरनागत की लाज ॥ टेका ॥
 तुम तो आये नर देही में, शरनागत के काज ॥ स्वामी
 मैं हूँ दीन अधीन तुम्हारा, तुम राजों के राज ॥ स्वामी
 ज्ञान करम की विधि नहीं जानूँ, नहीं भक्ति का साज ॥ स्वामी
 भव भय अधिक सतावे मो को, महा काल सिर गाज ॥ स्वामी
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, दास को तारो आज ॥ स्वामी

[४-७७४]

तुम मेरे प्राण अधारे दाता, तुम मेरे प्राण अधारे ॥ टेका ॥
 तन मन धन चरनन पर अरपूँ, जीऊँ तुम्हारे सहारे ॥ दाता
 तुम बिन मेरा और न कोई, कुल कुटुम्ब परिवारे ॥ दाता
 मुझको भी दो चरन निवासा, बहु जीवन को तारे ॥ दाता
 हाथ पकड़ भव भँवर से स्वामी, जल्दी करदो किनारे ॥ दाता
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, तुम ही हो रखवारे ॥ दाता

[५-७७५]

चरन कमल की धूर बरख़ो, चरन कमल की धूर ॥ टेका ॥
 यह धूरी जीवन की मूरी, करे रोग भव दूर ॥ बरख़ो ०
 माँज माँज मन मँकुर का दरपन, देखूँ सतपद नूर ॥ ”
 आँख लगाऊँ अंजन निर्मल, मिटे तिमिर भरपूर ॥ ”



दिव्य दृष्टि की जोत अनूपम, ज्ञान ध्यान का सूर ॥ बख्शो०
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, निरखूँ रूप हज़ूर ॥ ”

[६-७७६]

हम तो निस दिन गुरु रंग राते ॥टेका॥

गुरु की सेवा भजन बंदगी, कहीं नहीं आते जाते ॥ हम तो
गुरु का बल ले गुरु की दया से, करम के फन्द कटाते ॥ ”
उठत बैठत कबहूँ न बिसरें, ध्यान गुरु का लाते ॥ ”
जब जागें तब गुरु का सुभिरन, नींद में गुरु संग पाते ॥ ”
खुली आँख गुरु मूरत निरखें, बन्द तो मन बीच लाते ॥ ”
छिन छिन पल पल दरस दिवाने, दरशन में मगनाते ॥ ”
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, बल बल गुरु पर जाते ॥ ”

[७-७७७]

प्रेम की डगर बता दो साई, तुमसे लगी मेरी नेह हो ॥टेका॥
जग नहीं भावे सुख न सुहावे, भूले सुध बुध देह हो ॥ साई०
छूटे सकल कुटुम्ब परिवारा, छूटे माया गेह हो ॥ ”
तन मन अरपूँ तुम्हरे चरनन, मन न रहे सन्देह हो ॥ ”
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, ऐसा सिखावन देह हो ॥ ”

[८-७७८]

प्रेम अधिक सुख दाई साधु, प्रेम अधिक सुखदाई ॥टेका॥
काम क्रोध मद मोह शोक सब, तज दे छल चतुराई ॥ साधु
करम धरम का काट दे बन्धन, गुरु पद प्रेम जगाई ॥ साधु
माया काल करे नहीं हानी, गुरु संगत जब पाई ॥ साधु
धन सम्पत सुख दाम बड़ाई, अन्त काम नहीं आई ॥ साधु
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सतगुरु अलख लखाई ॥ ”

[९-७७९]

मैं तोरे रंग राती रे मोहना, मैं तोरे रंग राती ॥टेका॥

छिन छिन पल पल गुन तेरा गाती, बन बन फिरूँ मत माती ॥रे मोहना॥



मेरे हिये तू निस दिन रहता, जैसे दिया मैं बाती ॥ रे मोहना
तेरे कारन सब तज डारूँ, भाई बन्धु कुल जाती ॥ रे मोहना
मन मोहन की छवि अति अद्भुत, जिया को अधिक सुहाती ॥ ”
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, देख देख हरपाती ॥ ”

[१०-७८०]

तुम ही प्रान आधारे सतगुरु, तुम ही प्रान आधारे ॥ सतगुरु
हम तो दीन अधीन सकल विधि, साईं तुम रखदारे ॥ ”
भव जल नाव पड़ी मँझधारा, लीजो काढ़ किनारे ॥ ”
भजन बन्दगी भक्ति न जानी, जिये तुम्हारे सहारे ॥ ”
जब जब बिपत कष्ट दुख पाया, तब तब तुमही सँभारे ॥ ”
मात पिता भाई सुत बन्धु, कोई नाहिं हमारे ॥ ”
तुम समान रक्षक नहिं कोई, देखे हृदय बिचारे ॥ ”
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, हम सों पतित उद्वारे ॥ ”

[११-७८१]

रतन लगी गुरु नाम की छिन पल पल में ॥ टेका ॥
क्रोध न व्यापे मोह न मोहे, चिन्हा नहीं कुछ काम की ॥ छिन
इन्द्री शक्त गलत तन मन सब, अब सूझे विश्राम की ॥ छिन
सुरत निरत ने अँखियाँ फेरी, दृष्टि नहीं है चाम की ॥ छिन
घट में नाम रतन जब पाया, फिकर नहीं धन धाम की ॥ छिन
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, चेरी आठों याम की ॥ छिन

[१२-७८२]

मेरा पल्ला न पकड़ोजी, गुरु का दास बना ॥ टेका ॥
सोबत जागत कबहुँ न बिसरूँ, नाम तो जीवन साँस बना ॥ मेरा
मान मनी अपमान नहीं मन, दीन हीन ज्यों घाँस बना ॥ मेरा
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, आम नहीं अब खास बना ॥ मेरा



[१३-७-३]

गुरु प्यारे ने दिया, मोहे भक्ति दान ॥टेका॥

छूटी जग की छल चतुराई, छूटे मान अपमान ॥ गुरु०
सत्त असत्त का भेद पिछाना, समझा ज्ञान अज्ञान ॥ गुरु०
काम क्रोध और लोभ ईर्ष्या, होय न इनसे हान ॥ गुरु०
प्रेम प्रीति का मार्ग पाया, खुली ज्ञान की खान ॥ गुरु०
राधास्वामी गुरु पर बलि बलि जाऊँ, वारूँ जान और प्रान ॥ ”

[१४-७-४]

गुरु की दया से बन्ध छुट जावे ॥टेका॥

मन से नाम जपे निस बासर, ध्यान गुरु के पद में लावे ॥ गुरु०
अनहद शब्द सुने घट अन्तर, सुरत निरत को अधर चढ़ावे ॥ गुरु
छोड़ कुसंग सुसंग करे नित, सतसंगत में भक्ति कमावे ॥ गुरु
राधास्वामी दया परख हिये अपने, जनम को सुफल करावे ॥ गुरु

[१५-७-५]

गुरु की महिमा अगम अपार, नित सतसंगत जाना हो ॥टेका॥
सुन सुन बचन प्रीति हिय बाढ़ी, भक्ति भाव कमाना हो ॥ गुरु०
श्रवण मनन और निध्यासन कर तब, उपजा सत का ज्ञाना हो ॥ ”
भेद भरम की दुर्मति त्यागी, मूल तत्व दरसाना हो ॥ ”
सत्त असत्त का निर्णय कीना, निश्चय कर मन माना हो ॥ ”
यह तो लीला अद्भुत अचरज, जाने साधु सुजाना हो ॥ ”
तन मन धन अरपे गुरु चरना, तिमिर मिटे अज्ञाना हो ॥ ”
गुरु मेरे परमदयाल कृपाला, नाम दान दिया दाना हो ॥ ”
दान पाये निरधनता भागी, भया ज्ञान धनवाना हो ॥ ”
गुरु की मूरत गुरु की सूरत, यह दर्पन प्रगटाना हो ॥ ”
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, पाया पद निरवाना हो ॥ ”



[१६-७८६]

गुरु पद सीस झुकाई, साधु गुरु पद सीस झुकाई ॥ टेका ॥
 सीस झुकावत डहा मानगढ़, ममता मोह गिराई ॥ साधु०
 भय विसरा दारुण दुख विसरे, यम भूला चतुराई ॥ साधु०
 जनम जनम का सोया मनुवा, गुरु ने आन जगाई ॥ साधु०
 सिर पर हाथ दया का फेरा, अपने चरन लगाई ॥ साधु०
 कबहु न त्यागूँ कबहुँ न छोड़ूँ, पद सरोज लिपटाई ॥ साधु०
 पल पल ध्यान ज्ञान रहे निस दिन, छिन छिन गुरु गुन गाई ॥ ”
 गुरु मेरे जान प्रान से प्यारे, मूरत हिये में बसाई ॥ साधु०
 सेवा करूँ नित्य हित चित से, गुरु को लेऊँ रिभाई ॥ साधु०
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, भक्ति सार अब पाई ॥ साधु०

[१७-७८७]

गुरु शरणागत आओ, साधु गुरु शरणागत आओ ॥ टेका ॥
 बिन गुरु दया विवेक न सके, ज्ञान गुरु संग पाओ ॥ गुरु०
 तज अनेक को एक लखो तुम, एक में चित ठैराओ ॥ गुरु०
 एक को त्यागो ज्ञान दृष्टि से, सत पद ध्यान जमाओ ॥ गुरु०
 सत में एक अनेक कहाँ है, भरम मोह विसराओ ॥ गुरु०
 द्रैत अद्रैत में भूल भरम है, चित से भरम मिटाओ ॥ गुरु०
 भरम मिटे तब सार लखे कोई, सतसंग भरम मिटाओ ॥ गुरु०
 सुरत शब्द का साधन सीखो, घट मे नाद बजाओ ॥ गुरु०
 झलके ज्योति की अन्दर धारा, देख देख हरषाओ ॥ गुरु०
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु पद सीस झुकाओ ॥ गुरु०

[१८-७८८]

बनत बनत बन जाई साधु, बनत बनत बन जाई ॥ टेका ॥
 टेक न छोड़ो मुँह नहीं मोड़ो, प्रेम डगर में आई ॥ साधु०
 निस बासर रहे गुरु का सुमिरन, प्रीति की रीति द्वाई ॥ साधु०
 सेवा भजन में ज्ञान ध्यान में, गुरु के चरन लव लाई ॥ साधु०



मन ही अन्दर सृष्टि व्यापी, मन ही में है रोग ॥ साधु
मन गोविंद मन गोरख रूपा, मन ही योग त्रियोग ॥ साधु
मन ही पानी मन ही अग्नि, मन ही आनन्द सोग ॥ साधु
मन ही गुरु है मन ही चेला, मन ही ब्रह्म संयोग ॥ साधु
मन ही का व्यौहार जगत में, नाहीं जानें लोग ॥ साधु

[२६-७६६]

करलो गुरु का ध्यान, साधु करलो गुरु का ध्यान ॥ टेका ॥
अखियाँ उलट तमाशा देखें, तिल का लिये निशान ॥ साधु
तिल में ज्योत ज्योत में जगमग, ज्योत देख हरषान ॥ साधु
पचरंगी फुलवारी निरखी, भँवरा ताहि लुभान ॥ साधु
चिन्ला चढ़ाओ सुरत निरत का, तोड़ो शिव की कमान ॥ साधु
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, ध्यान रहा मन मान ॥ साधु

[२७-७६७]

पारख शब्द विचारे, साधु पारख शब्द विचारे ॥ टेका ॥
जौहरी ज्यूँ हीरे को परखे, साधु शब्द निरवारे ॥ साधु
निरख परख चले घट के मारग, जाय द्वन्द से पारे ॥ साधु
अपनी करनी पार उतरनी, कथनी सब तज डारे ॥ साधु
रहनी से जो ध्यान लगावे, काल करम नहीं मारे ॥ साधु
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, रहे गुरु के सहारे ॥ साधु

[२८-७६८]

गुरु गुन पल पल गाओ, फकीरवा गुरु गुन पल पल गाओ ॥ टेका ॥
भव दारुण से बहु दुख पाया, भया कलेजे धाव ॥ फकीरवा
रोग सोग की गुरु पै औषधि, उन शरनागत जाव ॥ फकीरवा
मानुष देह मिली किरपा से, फिर नहीं ऐसा दाव ॥ फकीरवा
वृथा जन्म मत खो तू अपना, भक्ति पदारथ पाव ॥ फकीरवा
गुरु खेवटिया पार लगावें, मँझ पड़ी तेरी नाव ॥ फकीरवा



कंचन देह को कुन्दन करले, दे भक्ति का ताव ॥ फकीरवा
सतसंग चेत करो सतगुरु का, उपजे प्रेम का भाव ॥ फकीरवा
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, पद सरोज चितलाव ॥ ”

[२६-७६६]

क्यों भरमा फकीर क्यों भरमा फकीर, काहे दिवाना होगया ॥टेका॥
गुरु चरन गहा गुरु चरन गहा, ले ठौर ठिकाना होगया ॥क्यों
नहीं होय अकाज नहीं होय अकाज, यम फन्द कटाना होगया ॥क्यों
क्यों विकल रहे क्यों विकल रहे, अब तो मस्ताना होगया ॥क्यों
तन विमल हुआ तन विमल हुआ, गंगा स्नाना होगया ॥क्यों
सतसंग में आ सतसंग में आ, जप तप और ध्याना होगया ॥क्यों
क्या नियम धर्म क्या नियम धर्म, जब सत का ज्ञाना होगया ॥क्यों
नित नित का कर्म नित नित का कर्म राधास्वामी गुनगाना होगया ॥

[३०-८००]

नर रूपी सुगुना सत्त नाम तैं बोल ॥टेका॥

कर्म ज्ञान के तेरे पंख हैं, उड़जा पर को खोल ॥ नर०
तन के पिंजरे से बाहर हो, घट मैदान में डोल ॥ नर०
घट में निस दिन अनहद बाजे, बीन बाँसुरी ढोल ॥ नर०
सुरत शब्द के गगन मंडल में, नहीं ममता का झोल ॥ नर०
चुग चुग गुरु वचनों का दाना, होजा अब अनमोल ॥ नर०
तज असार जो सार गहे फिर, तेरा मोल न तोल ॥ नर०
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सुगना भया अतोल ॥ नर०

[३१-८०१]

भजले सतगुरु नाम, सदा ही भजले सतगुरु नाम ॥टेका॥

आनन्द दायक सर्व सहायक, भज भज आठों याम ॥ सदा ही०
भव भय गंजन दोष निकंदन, व्यापे क्रोध न काम ॥ सदा ही
नाम बिना नर जीवन सब विधि, निष्फल और बेकाम ॥ सदा ही



नाम प्रताप काम से बाचे, दोनों नहीं एक ठाम ॥ सदा ही
सुभिर सुभिर भज भज गुरु नामा, चल सत गुरु के धाम ॥ सदा ही
माया मोह पर कर असवारी, दे दे मुंह में लगाम ॥ सदा ही
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सेवक हुआ बेदाम ॥ सदा ही

[३२-८०२]

सय्याँ बेदरदी रे मेरी सुध लेत नहीं ॥टेका॥

मैं तो बिरह अग्नि तन जाऊँ, मेरी ओर चित देत नहीं ॥सय्याँ०
तरसूँ तड़पूँ पिया तुम कारन, तुमको मुझसे हेत नहीं ॥सय्याँ
अँखियाँ आँसू बहे जल धारा, तन मन धन को चेत नहीं ॥सय्याँ
दरस दिवानी को दरशन दीजे, सब कुछ लीजे सेंट नहीं ॥सय्याँ
भव निधि राधास्वामी नाम का बेड़ा, तरने को कोई सेत नहीं ॥ "

[३३-८०३]

हम जैसा बन आया, साधु हम जैसा बन आया ॥टेका॥

रूप स्वरूप धरी नर मूरती, नर बन जीव चिताया ॥ साधु०
नर की रूप की शोभा भारी, नरतन महिमा गाया ॥ "
घर में प्रेम प्रीत सिखलाया, भक्ति का पन्थ चलाया ॥ "
सहज ही काटी यम की फाँसी, भ्रम अज्ञान मिटाया ॥ "
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु पद सीस भुकाया ॥ "

[३४-८०४]

सुभिर मधुर गुरु नाम, साधु सुभिर मधुर गुरु नाम ॥टेका॥

तीन लोक सब काल पसारा, चौथे पद विसराम ॥ साधु०
भूल चूक में भरमे प्राणी, भोगे नरक निकाम ॥ "
धन सम्पत् और कुल परिवारा, सरे न इनसे काम ॥ "
श्री गुरु पद में ध्यान लगाओ, भक्ति करो निष्काम ॥ "
छिन छिन अवध घटत निस बासर, त्यागो लोभ मद काम ॥ "
अन्तर में नौबत धुन झड़ती, सुनलो आठों याम ॥ "
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, जाओ धुरपद धाम ॥ "



[३५-८०५]

सुरत प्यारी अधर धुर धाम चली ॥टेका॥

मिला अभय बल गुरु कृपा से, अबला से अब हुई बली ॥ सुरत०
दया क्षमा की खङ्ग हाथ ले, हिंसा की तोड़ी पसली ॥ सुरत
माथे भूमर भक्ति का पहना, प्रेम की डाली गले हँसली ॥ सुरत
माया ठगनी ठगत जगत को, ठगनी को ठगनी ठगली ॥ सुरत
सहस्रकमल धँस त्रिकुटी आई, सुन्न की गोद में जाय पली ॥ सुरत
भँवरगुफा में काल को जीता, सतपद उमंग सहित उछली ॥ सुरत
अलख अगम राधास्वामी धाम चल, सतगुरु चरन कमल मचली ॥”

[३६-८०६]

तुझे कभी न बिसारूँ रे गुरु दाता ॥टेका॥

बड़े भाग से दर्शन पाया, सब तन मन धन बारूँ रे गुरुदाता ॥तुझे
जनम जनम रहे तेरी आसा, सकल वासना जारूँ रे गुरुदाता ॥तुझे
मैं तो तेरे चरन लग स्वामी, कुल कुटुम्ब भी तारूँ रे गुरुदाता ॥तुझे
गुरु की टेक बसालूँ चित में, काम क्रोध मद मारूँ रे गुरुदाता ॥तुझे
प्रगटे ज्योत नयन में मेरे, प्रेम दीप घट बारूँ रे गुरुदाता ॥तुझे
घट में ध्यान जमाऊँ गाढ़ा, तृष्णा मोह निकारूँ रे गुरुदाता ॥तुझे
राधास्वामी राधास्वामी नाम का सुभिरन, चरन सरोज परवारूँ रे गुरुदाता

[३७-८०७]

तेरे रूप लुभानी रे मन मोहना ॥टेका॥

तेरा रूप लगे अति प्यारा, केहि विधि करूँ बखानी ॥रे मन०
रूप की महिमा अकथ कहानी, अलसाने मन बानी ॥रे मन
निरखूँ छवि एक टक नयनन से, गति मति भई दिवानी ॥रे मन
आँख बिचारी जनम की गूंगी, बिन बोले ललचानी ॥रे मन
बानी बिचारी जन्म की अन्धी, बिन देखे न बखानी ॥रे मन
मन अन्धा बहरा और गूंगा, सोच समझ मन मानी ॥रे मन



बुद्धि धिवेकी अटपट वाली, भूल भरम भरमानी ॥रे मन मोहना
 रूप अरूप स्वरूप एक हैं, अगुन सगुन की खानी ॥ "
 निराकार साकार है क्या है, समझे कोई नर ज्ञानी ॥ "
 रूप निरख घर परबत बन में, फिरू सदा मस्तानी ॥ "
 योगी योग कर क्या फल पाया, ज्ञान कथे बहु ज्ञानी ॥ "
 राधास्वामी रूप सुहाना लागा, तत्व धिवेक निशानी ॥ "

[३८-८०८]

गुरु के रंग मदमाती रे गुजरिया ॥टेक॥
 गुरु के चरन कमल में लग लग, मंद मंद सुस्काती ॥रे गुजरिया
 प्रेम पियाला पिया तो होगई, मतवारी मदमाती ॥ "
 सुभिरन भजन ध्यान में रहती, पल पल और दिन राती ॥ "
 दीपक ज्ञान हृदय में बारा, पूर प्रेम की बाती ॥ "
 अमृत नाम बूंद जब पाया, हित चित से तृप्ताती ॥ "
 दुख दारुण का तागा तोड़ा, अब तो फिरे मगनाती ॥ "
 राधास्वामी धाम में बासा पाया, अब कहीं आती न जाती ॥ "

[३९-८०९]

घट प्रगट शब्द की धुन, कानों क्यों न सुने ॥टेक॥
 घंटा शंख बजें तेरे अन्तर, सुरत लगा कर सुन ॥कानों क्यों०
 बाजे बीन परावज बंसी, सुन गह शब्द का गुन ॥ "
 भौतिक शब्द में चित न लगाना, गुरु के बताये चुन ॥ "
 शब्द सुने जो नित प्रति घट में, चढ़ बैठे महासुन्न ॥ "
 राधास्वामी दया से काज बनाले, भक्ति का बाना बुन ॥ "

[४०-८१०]

नाम सुभिर तरजाना, भवनिधि नाम सुभिर तर जाना ॥टेक॥
 यह संसार विपत की खानी, व्याप रहा दुख नाना ॥ भवनिधि०
 पार जो चाहो इसके जाना, नाम का सेत बनाना ॥ "



नाम से योग भक्ति का सारा, साधन सुगम सुहाना ॥ भवनिधि
सुभिरन सहज सहज है जपना, नाम से लव को लगाना ॥ ,,
राधास्वामी गुरु ने भेद बताया, नाम की भक्ति कमाना ॥ ,,

[४१-८११]

साधु साधन सहज करीजे ॥ टेक ॥

बिन साधन कुछ हाथ न आवे, साधन भरम सुनी जे ॥ साधु०
जग व्यौहार न हो बिन साधन, परमार्थ न बनीजे ॥ ,,
संस्कार और कर्म की लीला, फल के रूप पतीजे ॥ ,,
जैसी करनी वैसी भरनी, करनी सहित भरीजे ॥ ,,
कथनी बदनी काम न आवे, करनी को चित दीजे ॥ ,,
माना रूप प्राप्त है अपना, भर्म प्रभाव भुलीजे ॥ ,,
बिन साधन यह भर्म न जावे, साधन भर्म मिटीजे ॥ ,,
साधन सहज है शब्द योग का, उसकी रीति सिखीजे ॥ ,,
मन का मैल विकार मिटे जब, तब निज रूप लखीजे ॥ ,,
सहज ही सहज कमाई करना, भव जल पार चलीजे ॥ ,,
राधास्वामी की कृपा से, कारज सुफल करीजे ॥ ,,

[४२-८१२]

मंगल गुरु के चरन कमल में, मंगल साज सजाओ ॥ टेक ॥
सुभिरन भजन ध्यान रहे छिन छिन, सुरत निरत ठैराओ ॥ मंगल
अन्तर में लख गुरु की मूरत, ज्योत में ज्योत मिलाओ ॥ मंगल
ज्योत अपार देह है घट में, ज्योत निरख हरषाओ ॥ मंगल
अनहद शब्द गूँज रहा अंतर, सुन सुन चित्त लगाओ ॥ मंगल
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, धुरपद बासा पाओ ॥ मंगल

[४३-८१३]

चल कीजे गुरु संगत, जहाँ प्रेम अमी जल बरसे ॥ टेक ॥
जो पावे गुरु पद भक्ति, यम फंद कटावे जरसे ॥ चल०



जेहि मिले नाम की दौलत, निरधनता से नहीं तरसे ॥ चल०
भव भय की रहे न चिन्ता, गुरु चरन कमल के परसे ॥ चल
मद मोह काम दल भागे, भक्ति श्रद्धा के डर से ॥ चल
राधास्वामी धुरपद सत पद, सतसंग के फल से दर से ॥ चल

[४४-८१४]

गुरु समरथ दाता तारेंगे, गुरु समरथ ॥टेका॥
मन में सोच करे क्यों मूरख, धिगड़ी तेरी सुधारेंगे ॥ गुरु०
भूल चूक की चिंता क्यों है, करनी तेरी बिसारेंगे ॥ ,,
गोते खाते बहु दिन बीते, भव जल पार उतारेंगे ॥ ,,
दृष्टि नहीं तेरे करतब पर, अपनी ओर निहारेंगे ॥ ,,
राधास्वामी शरन में जो नहीं आये, जीती बाजी हारेंगे ॥ ,,

[४५-८१५]

मेरी सुन्दर नार सुहेली, पिया को रिझाले तू ॥टेका॥
तेरा प्रीतम तेरे घट में, सुन्दर सेज बिछाले तू ॥मेरी०
देख देख छवि अद्भुत पी की, प्रेम भाव उमगाले तू ॥मेरी
गावत सुरत अनाहद मंगल, गाय गाय हरषाले तू ॥मेरी
शब्द गूँज घट में सुन प्यारी, अनहद नाद बजाले तू ॥मेरी
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, जनम को सुफल कराले तू ॥,,

[४६-८१६]

साधु सहज साधन कीजे ॥टेका॥
कठिनाई का काम नहीं है, नाम न वा का लीजे ॥ साधु०
सहज ही सहज चढ़ो घट ऊपर, अमी नाम जल पीजे ॥ ,,
ब्रह्म सोचना और बढ़ना है, मुक्त से अर्थ सुनीजे ॥ ,,
सोच सोच बढ़ते चलो पल पल, पग आगे को दीजे ॥ ,,
सतगुरु शब्द का सार परख कर, गुरु की बात पतीजे ॥ ,,



जो कुछ होगा सहज में होगा, कठिन काम नहीं कीजे ॥ साधु०
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सतगुरु नाम जपीजे ॥ „

[४७-८१७]

सुरत मेरी जागरी, तज नींद विकार ॥टेक॥

कब लग सोवे मोह निशा में, मानुष जनम न बारम्बार ॥ सुरत०
तरुवर से ज्यों पात झड़त है, फिर नहीं लागे डार ॥ सुरत
तैसे ही यह अवसर प्रानी, फिर नहीं मिले गँवार ॥ सुरत
चेत चेत सुध कर कुछ धरकी, रहन यहाँ दिन चार ॥ सुरत
राधास्वामी दया काज कर अपना, कर मन सोच विचार ॥ सुरत

[४८-८१८]

राधास्वामी हैं रखवारे तेरे, राधास्वामी हैं रखवारे ॥टेक॥

छिन छिन प्रति छिन चित चरनन पर, रह सतगुरु के सहारे ॥ तेरे
दया मौज की निरख परख कर, भज गुरु साँझ सकारे ॥ तेरे
भव सागर एक अगम पन्थ है, नाव पड़ी मँझधारे ॥ तेरे
खेवटिया गुरु पूरा पाया, पहुँची आन किनारे ॥ तेरे
वह दयाल आपहि तोहि पोसें, क्यों तू होत दुखारे ॥ तेरे
सुमिरन भजन ध्यान कर बन्दे, गुरु के चरन अधारे ॥ तेरे
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, चरन कमल में आ रे ॥ तेरे

[४९-८१९]

छाई अधियारी भारी हो, कुछ नजर न आवे ॥टेक॥

काल करम के फाँस फँसाना, यम की लगी कटारी हो ॥कुछ०
राह न सूझे गैल न बूझे, इत उत बाट निहारी हो ॥कुछ
भूल भरम मे धोका खाया, कैसी दशा हमारी हो ॥कुछ
माया ममता से हित जोड़ा, तिरिया लागी प्यारी हो ॥कुछ
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सब से होगई न्यारी हो ॥कुछ



[५०-८२०]

मिला ओम् स्थान, साधु मिला ओम् स्थान ॥टेक॥

सूरज लाल लाल रंग बाना, लाल रंग दरसान ॥ साधु०
 बाजत घोर मृदंग पखावज, ओम् ओम् धुन गान ॥ „
 ब्रह्मा बैठ वेद समभावे, चौमुख भेद लखान ॥ „
 त्रिकुटी चढ़ लंका गढ़ तोड़ा, धर सीता का ध्यान ॥ „
 मेघनाद जहाँ गरज सुनावे, सामवेद मचान ॥ „
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु ने बख्शा ज्ञान ॥ „

[५१-८२१]

भजले गुरु अविनासी प्यारे, भजले गुरु अविनासी ॥टेक॥

गुरु का सुमिरन भजन ध्यान कर, गुरु आनन्द सुखरासी ॥ प्यारे०
 गुरु माया से आन छुड़ावें, गुरु काटें यम फाँसी ॥ प्यारे
 गुरु की दया अधिद्या भागे, घट में सूर प्रकासी ॥ प्यारे
 मिटा अंधेरा भया सवेरा, चहुँ दिस छाई उजासी ॥ प्यारे
 गुरु महिमा हित चित में बसाले, होजा गुरु की दासी ॥ प्यारे
 गुरु पर बलि बलि जा निसि बासर, मोह कपट छल जासी ॥ प्यारे
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, मन भया सहज उदासी ॥ प्यारे

[५२-८२२]

रटन लागी मेरे हिया जिया से, पार लगादो साँवरिया ॥टेक॥

भवसागर एक अगम पन्थ है, बूढ़त मेरी नावरिया ॥ रटन०
 नाव पुरानी बहत बयारा, बीच में पड़ गई भाँवरिया ॥ रटन
 बरसत मेह अखंडित धारा, भारी बोझ भई काँवरिया ॥ रटन
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, चेतगई सुरत गाँवरिया ॥ रटन

[५३-८२३]

जनम जुआ मत हार, भाई जनम जुआ मत हार ॥टेक॥

जब तू आया गुरु शरणागत, फिर क्यों सोच विचार ॥ भाई०



तेरा काम करें किरपा से, मेटें भरम विकार ॥ भाई०
 संस्कार अधिकार बढ़े जब, मिला परमार्थ सार ॥ भाई
 प्रीति प्रतीति के मग में पग दे, तज संशय मोह विकार ॥ भाई
 सुमिरन भजन ध्यान कर चित दे, साधारण व्यौहार ॥ भाई
 सुगम सहज है शब्द का साधन, सतगुरु के आधार ॥ भाई
 राधास्वामी परम दयाला, नित तेरे रखवार ॥ भाई

[५४-८२४]

अमर फल बिरला गुरुमुख खाये ॥टेका॥

अमरापुर में डेरा डाले, अमृत पी पी कर तृप्ताये ॥अमरफल
 जिये न मरे न जग में आये, आवागमन के फन्द कटाये ॥ "
 करम करे और बने न कर्ता, अहंभाव चित में नहीं लाये ॥ "
 बन्ध निबन्ध न मुक्त अमुक्ति, इसकी महिमा बरन न जाये ॥ "
 हृद बेहृद दोनों से न्यारा, अगम अलख में बासा पाये ॥ "
 बसे खिसे नहीं सगुन न निर्गुन, कोई कैसे कह समझाये ॥ "
 रूप रंग रेखा नहीं उसमें, नाम अनाम का भेद मिटाये ॥ "
 ऐसा गुरुमुख गुरु का प्यारा, बिन बानी नित गुरुगुन गाये ॥ "
 राधास्वामी दयापात्र सोई साँचा, साँच झूठ का भरम नसाये ॥ "

[५५-८२५]

काहे करे उत्पात, मनुआ काहे करे उत्पात ॥टेका॥

चरन में गुरु के चित्त लगादे, सिर पर उनका हाथ ॥ मनुआ०
 तेरा बल कुछ काम न आवे, गुरु समर्थ है साथ ॥ मनुआ
 तज चिंता दुविधा दुचितार्ई, बचा काल की घात ॥ मनुआ
 सुमिरन भजन ध्यान हो नित ही, यह कर तू दिनरात ॥ मनुआ
 चरन शरन में लगजा भाई, वहीं गहें तेरा हाथ ॥ मनुआ
 राधास्वामी सच्चे सहाई, वहीं हैं जग के नाथ ॥ मनुआ



[५६-८२६]

कहाँ तुझे पाऊँ रे मनमोहना मैं कहाँ तुझे पाऊँ ॥टेका॥
 घर घर बन बन देखा भाला, अब कहाँ मैं जाऊँ ॥रे मनमोहना
 मेरी बिपत की अकथ कहानी, किसको बीती सुनाऊँ ॥ ,,
 हार गई और थककर बैठी, अब कहीं जाऊँ न आऊँ ॥ ,,
 आना हो तो आपही आज्ञा, सौ सौ बार मनाऊँ ॥ ,,
 मेरे घट में लगन लगी है, घट ही में खींच बुलाऊँ ॥ ,,
 घट के भीतर दरस दिखादे, दुख क्लेश बिसराऊँ ॥ ,,
 घट का मन्दिर पड़ा है हूना, तू मिल जाय बसाऊँ ॥ ,,
 आरत साजूँ प्रेम भक्ति की, घन्टा शंख बजाऊँ ॥ ,,
 आनन्द मंगल चहुँदिश व्यापे, आनन्द धुन नित गाऊँ ॥ ,,
 तिल पट मध्ये सेज बिछाऊँ, पलकों की चिकलाऊँ ॥ ,,
 नहीं मैं देखूँ और किसी को, नयनों में तुझे छुपाऊँ ॥ ,,
 मैं तेरी और तू है मेरा, तुझ ही से नेह लगाऊँ ॥ ,,
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, हिया जिया अब उमगाऊँ ॥ ,,

[५७-८२७]

गुरुदाता ने सार समझा दिया ॥टेका॥
 सहस्र कमलदल सहस्र रूप का, भेद भाव दिखला दिया ॥ गुरु०
 त्रिकुटी त्रिकुटी ओंकार का, सच्चा अर्थ बता दिया ॥ ,,
 सुन्न द्वैत अद्वैत महासुन्न, दोनों पद दरसा दिया ॥ ,,
 सोहंग भंवर काल माया गति, अपनी दया समझा दिया ॥ ,,
 सत पद निज पद धुर पद सच्चा, अपनी कृपा पहुँचा दिया ॥ ,,
 अलख अनाम अगम राधास्वामी, सबका सब लखवा दिया ॥ ,,
 तत्व में वाच लक्ष को जाना, जाना जान जना दिया ॥ ,,
 भूल भरम भ्रान्ती नहीं मन में, मुझको शान्त बना दिया ॥ ,,
 राधास्वामी नाम व्याप रहा मन में, निकट जो आया सुना दिया ॥ ,,



[५८-८२८]

मेरे मन में आजा सँवलिया, मेरे मन में आजा ॥टेका॥
 मन में आजा मन में समाजा, मन में रूप दिखाजा ॥सँवलिया
 मन में ज्योत जगे दिन राती, जगमग ज्योति जगाजा ॥सँवलिया
 मन में स्तुति तेरी गाऊँ, प्रेम की धूम मचाजा ॥सँवलिया
 मन में घन्टा मृदंग बाजे, अनहद नाद सुनाजा ॥सँवलिया
 मन मन्दिर में डालके चौकी, सोया मनुआ जगाजा ॥सँवलिया
 मन में भोग लगाऊँ तेरा, सीत प्रसाद खिलाजा ॥सँवलिया
 मन का घाट है भारी भारी, दसवाँ द्वार खुलाजा ॥सँवलिया
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, चरणामृत पिलाजा ॥सँवलिया

[५९-८२९]

तेरी गुदड़ी में लाल टका, क्यों नहीं नजर करे ॥टेका॥
 बगल में लड़का शहर ढिंढोरा, मूरख भरम मरे ॥क्यों नहीं०
 हिरन के नाभ रहे कस्तूरी, बन बन भटक फिरे ॥ "
 मानुष तन में साहेब बसता, नर पाखान लखे ॥ "
 बिन सतगुरु सब धोका खाया, कैसे कोई समझे ॥ "
 राधास्वामी गुरु जब जीव चेतावें, तब भव सिंध तरे ॥ "

[६०-८३०]

निस दिन सत्त नाम धुन माते ॥टेका॥
 जब से हृदय पड़ी गुरु मूरत, मन फूले न समाते ॥ जब०
 सेवा भजन बन्दगी करते, कहीं आते नहीं जाते ॥ जब
 घट में राग रागनी सुनते, अनहद तूर बजाते ॥ जब
 प्रेम पियाला पिया मस्त हो, छिन छिन गुरु गुन गाते ॥ जब
 नहीं अभिमान काम मद मोहा, सबको दूर भगाते ॥ जब
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु पर बलि बलि जाते ॥ "



[६१-८३१]

मुझे अद्भुत रूप दिखादो जी ॥टेक॥

प्रेम दिवानी भई मस्तानी, चरन कमल से लगा दीजो जी ॥मुझे०
तन मन धन सब तुम पर वारूँ, जनम को सुफल करा दीजो जी ॥”
बिरह अगन मेरा तन मन जारे, तपन की आग बुझा दीजो जी ॥”
दिन नहीं चैन रात नहीं निद्रा, हिया की पीर मिटा दीजो जी ॥”
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, अमी का प्याला पिला दीजो जी ॥

[६२-८३२]

रमैय्या तेरे रूप लुभानी रे ॥टेक॥

शोभा देख अनूप अगोचर, मन्द मन्द मुस्कानी रे ॥रमैय्या
तिरछी चितवन नैना रसीले, देख देख हर्षानी रे ॥ ”
बाँका सजीला रंगीला रमैय्या, लोभी मन कर्म बानी रे ॥ ”
हिया जिया में मेरे बसा मोहना, ताहि के रंग रंगानी रे ॥ ”
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु चरनन लपटानी रे ॥ ”

[६३-८३३]

रसना प्रेम स्वाद अति मीठा ॥टेक॥

विषय भोग रस कड़वा लागे, त्याग जगत दे पीठा ॥ रसना०
भव भय से तोहि प्रेम छुड़ावे, करे निरन्तर ठीठा ॥ रसना
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, प्रीति रीति में दीठा ॥ रसना

[६४-८३४]

तुझ भिन कोई नहीं अपना ॥टेक॥

तुझको सुभिरूँ तुझको ध्याऊँ, तेरे नाम का है जपना ॥ तुझ०
तेरी दया से सतगुरु प्यारे, तीन ताप का मिटे तपना ॥ तुझ
तू है सच्चा अन्तरायामी, तेरे सिवा सब है सपना ॥ तुझ
मेरे अन्तर दर्शन देदे, मन का खुले आज ढकना ॥ तुझ
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, भव के भय से न हो कपना ॥ ”



[६५-८३५]

घट अद्भुत बाजे बाज रहे ॥टेक॥

बाजत बीन सितार बाँसुरी, घन्टा शंख धुन गाज रहे ॥ घट०
 किंगरी ढोल मृदंग पखावज, अनहद शब्द समाज रहे ॥ घट
 सुन सुन धुन सुरत हुई मस्तानी, प्रेम प्रीति का साज रहे ॥ घट
 शब्द सुनत मन अति हर्षाणा, काम क्रोध मद भाज रहे ॥ घट
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, स्मर चन्द्र दोऊ लाज रहे ॥ घट

[६६-८३६]

मैं तो प्रेम दिवानी होगई ॥टेक॥

रूप अनूप देख छवि अद्भुत, लो मस्तानी होगई ॥ मैं तो०
 दुख दारुण की चिंता मेटी, चित हर्षाणी होगई ॥ मैं तो
 माया काल के बन्धन काटे, अगम निशानी होगई ॥ मैं तो
 राग द्वेष से काम न रंचक, दूर गिलानी होगई ॥ मैं तो
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सहज निर्वानी होगई ॥ मैं तो

[६७-८३७]

गुरु तेरी शरन में आगया ॥टेक॥

दीन अधीन कुटिल खल कामी, परमारथ धन पागया ॥ गुरु०
 दीनानाथ दीन हितकारी, मन में मेरे समा गया ॥ ”
 देखा रूप अरूप अगोचर, हित चित से सो भागया ॥ ”
 बन्धन छूटे मोह मया से, काल भी धोखा खागया ॥ ”
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरुगम बानी सुनागया ॥ ”

[६८-८३८]

अन्तर सतगुरु की प्रीति बसी ॥टेक॥

अन्तर देखा रूप अनूपा, गुरु छवि देख हँसी ॥ अन्तर
 अन्तर सुनी अनाहद बानी, बाहर से अन्तः खिसी ॥ अन्तर
 अन्तर सहस कमल पद परसा, त्रिकुटी जाय धँसी ॥ अन्तर



अन्तर का अन्तर जब निरखा, सुख आनन्द लसी ॥ अन्तर
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, रहूँ न जगत फँसी ॥ अन्तर

[६६-८३६]

हमारे मन सतगुरु प्रीति बसी ॥टेक॥

प्रीति की राह चली तब सूरत, माया देख खिसी ॥ हमारे०
देख देख लीला घट अपने, मन में बहुत हँसी ॥ हमारे
बाहर के पट बन्द भये जब, अन्तर माहिं धँसी ॥ हमारे
सुरत नवेली भई अलवेली, भूषण प्रेम लसी ॥ हमारे
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, अब तो बने तपसी ॥ हमारे

[७०-८४०]

बख्शा गुरु ने प्रेम पियाला ॥टेक॥

ताहि पिया हित चित से जब ही, हुआ निपट मतवाला ॥बख्शा
मस्ती छाई रंग जमा है, अब क्या करहि है काला ॥ ”
इस मस्ती को क्या कोई जाने, निकला करम दिवाला ॥ ”
तिमिर विनासक भव भय नासक, घट भीतर भान उजाला ॥ ”
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, फेरूँ गुरु की माला ॥ ”

[७१-८४१]

घट में भानु खिला ॥टेक॥

रैन अँधेरी दूर भई जब, ज्ञान का सार मिला ॥ घट०
जोति जो फैली हट गई भाँई, सूझा फटक शिला ॥ घट
अपनी सृष्टि दृष्टि गत निरखी, भव का नींव हिला ॥ घट
आवागवन का संशय छूटा, माया का बिनसा फिला ॥ घट
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, रन की भूमि पिला ॥ घट

[७२-८४२]

दिल की सब दुर्मति दूर भई ॥टेक॥

भव का भय जब त्यागा छिन में, कायर से अब सूर भई ॥दिल०



क्या माँगूँ कुछ चित न रहाई, सकल कामना पूर भई ॥ दिल०
मान की दर्पनी पटक दिया है, ठेस लगी तब चूर भई ॥ दिल
माया की सामग्री सारी, मेरी दृष्टि में धूर भई ॥ दिल
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सतगुरु चरनन धूर भई ॥ दिल

[७३-८४३]

गुरु की अभिमानी हो गई ॥टेक॥

चाह मिटी चिन्ता दुख भागा, घट मगनानी हो गई ॥ गुरु०
तीरथ वरत नेम नहिं संयम, सतगुरु की दिवानी हो गई ॥ ”
बन्धन काटा द्वन्द जगत का, सुरत सियानी हो गई ॥ ”
त्याग मान मोह मद सबका, अब तो निरबानी हो गई ॥ ”
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, चेरी मन बानी हो गई ॥ ”

[७४-८४४]

मेरे उर सतगुरु रूप बसा ॥टेक॥

देखा रूप अनूप तुम्हारा, हिया जिय हर्ष हँसा ॥ मेरे०
चिन्ता चित की दूर भई सब, मन आनन्द लसा ॥ मेरे
अन्तर प्रगटी ज्योति निरन्तर, तिमिर विकार नसा ॥ मेरे
बाहर के पट दे दे पल पल, घट ही माँहि धँसा ॥ मेरे
राधास्वामी मोह के बन्धन काटे, अब कहाँ रहा फँसा ॥ मेरे

[७५-८४५]

माया से न्यारी हो गई ॥टेक॥

काम क्रोध की चिन्ता बिसरी, गुरु मतवारी हो गई ॥ माया०
जगत का प्रेम भाव सब भूला, सतगुरु की प्यारी हो गई ॥ माया
आना जाना मिटा योनि का, धुर पद की तयारी हो गई ॥ माया
अब कैसे बन्धन में आऊँ, यम की रखवारी हो गई ॥ माया
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सुरत शब्द संवारी हो गई ॥ ,,

~ ❀ ~



[७६-८४६]

कहत न आवे बैन ॥टेका॥

कल नहीं पड़े विकल रहे तन मन, रात दिवस नहीं चैन ॥ कहत०
दर्शन की इच्छा घट छाई, नहीं कुछ लेन न देन ॥ कहत
आँखों में भाई पड़ आई, रहत नाम दिन रैन ॥ कहत
राधास्वामी खुलकर भेद बताओ, समझ न आवे सैन ॥ कहत

[७७-८४७]

मन लागत लागत लागा ॥टेका॥

सोया मनुआ जनम जनम का, जागत जागत जागा ॥ मन०
पहले तो यह भव में बहु भरमा, भरम देख अब भागा ॥ मन
विषयों को तजकर अभिमानी, भक्ति भाव में पागा ॥ मन
संसारी से हुआ है सारी, हंसा बन गया कागा ॥ मन
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, उपजा दृढ़ अनुरागा ॥ मन

[७८-८४८]

सोच करे क्यों मन में ॥टेका॥

समरथ सतगुरु दीन दयाला, रक्षक घर और बन में ॥ सोच०
निरखो छिन छिन गुरु की मूरत, अपने मन दरपन में ॥ सोच
तिलके भीतर गुरु विराजे, देखो अपने तन में ॥ सोच
नैनों में तेरी साँवली सूरत, लागे चित दरशन में ॥ सोच
सोवत जागत ताड़ी लागी, रहो तुम इसी यतन में ॥ सोच
पल पल सोधो नाम रसायन, सुमिरन ध्यान भजन में ॥ सोच
वचन बिलास पाठ और पूजा, सब हो श्रवण मनन में ॥ सोच
सूरा नाम फकीर ने धारा, लड़े काल के रन में ॥ सोच
काम क्रोध मद मस्तक फोड़े, उदासीन रहे तन में ॥ सोच
किसकी सोच करे नर बौरे, गुरु प्रगट निज जन में ॥ सोच
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु मिले याही पन में ॥ सोच



[७६-८४६]

सजनी चल सतगुरु के देस ॥टेक॥

यह तो सब ही काल पसारा, आये परे परदेस ॥ सजनी०
 माया मोह की दुर्गम घाटी, भूल भ्रम का देस ॥ सजनी
 वह तो देस अनूप अगम है, जहाँ न काल कलेश ॥ सजनी
 दुख सुख चिंता कभी न व्यापे, यह गुरु का उपदेस ॥ सजनी
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सुन लिया सार संदेस ॥ ”

[८०-८५०]

मौज से होगा सारा काम ॥टेक॥

तू क्या सोचे क्या मन ठाने, सोच समझ बेकाम ॥ मौज०
 प्रीति दृढ़ा प्रतीत बढ़ाये, भज गुरु आठों याम ॥ मौज
 सुख दुख भूल भ्रम की लीला, भ्रमे नहीं बिसराम ॥ मौज
 जग की चाह महा उत्पाती, भज ले गुरु का नाम ॥ मौज
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु ने बख्शा अचल मुकाम ॥ मौज

[८१-८५१]

अन्त समय क्यों रोया है ॥टेक॥

मानुष देह की जानी महिमा, सुख निन्द्रा में सोया है ॥ अन्त
 उठ उठ उठकर गुरु की संगत, जो सोया है सो खोया है ॥ अन्त
 प्रीतम बसते हिय बिच तेरे, दूध माँहि ज्यों खोया है ॥ अन्त
 अपनी करनी पार उतरनी, फल पाया जो बोया है ॥ अन्त
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, अमी बूँद मन धोया है ॥ अन्त

[८२-८५२]

सतगुरु राजों के महाराजा ॥टेक॥

तुम्हरे महल में नौबत झड़ती, बाजे अनहद बाजा ॥ सतगुरु
 धन दौलत का कौन ठिकाना, दल बादल रहे साजा ॥ ,,
 सुरत निरत जहाँ पानी भरते, शब्द हुकम करे काजा ॥ ,,



ईश्वर ब्रह्मा तुम्हारे सेवक, कोटि काम छवि लाजा ॥ सतगुरु०
शेष महेश गनेश शारद, जुड़ा जनन का समाजा ॥ ,,
वेद भेद जाने नहीं ब्रह्मा, तुम हो सबमें विराजा ॥ ,,
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, प्रगटे जन के काजा ॥ ,,

[८३-८५३]

सुरत प्यारी दुख से क्यों घबराये ॥टेका॥
तेरे अन्तर कूप अमीरस, क्यों नहीं पी तृप्ताये ॥ सुरत०
नाम निशान प्रगट घट भीतर, निस दिन रटन लगाये ॥सुरत
सुभिरन भजन ध्यान नित करना, नामे मत अलसाये ॥सुरत
जब दुख संकट आय पड़े सिर, गुरु चरनन लिपटाये ॥सुरत
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, भवदुख सब मिटजाये ॥सुरत

[८४-८५४]

साधु मन की गति अति न्यारी ॥टेका॥
ज्ञान ध्यान में कबहुँ सियाना, कबहुँ अबूझ अनारी ॥साधु०
कबहुँ गगन मंडल बिच धावे, कबहुँ सिंधु मँझारी ॥साधु
पल में त्यागी जोग विरागी, पल ही में संसारी ॥साधु
चंचल निश्चल कामी अकामी, राजा रंक भिखारी ॥साधु
मन की सूझ समझ जब आई, राधास्वामी की बलिहारी ॥साधु

[८५-८५५]

मन तू काहे दिवाना हुआ ॥टेका॥
मरकट मूठी भरम बन्धाया, ज्यों चरखी का सुआ ॥ मन०
अपनी प्रतिमा देख डराना, गज लड़ लड़ कर मुआ ॥ मन
नीचे दृष्टि करे क्यों मूरख, नीचे भरम का कुँआ ॥ मन
गिरत पड़त कुछ देर न लागे, नहीं तहाँ माल पुआ ॥ मन
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, फेंक गले का जुआ ॥ मन



[८६-८५६]

सुरत प्यारी चल सतगुरु के देस ॥टेक॥

अगम में ठौर ठिकाना तेरा, आन पढ़ी परदेस ॥ सुरत०
काग दृष्टि तज विष्टा त्यागे, ले अब हंसा भेस ॥ सुरत
सुख का धाम प्रेम जहाँ व्यापा, वहाँ कहाँ काम कलेस ॥ सुरत
निरवानी धुरपद घर तेरा, माया नहीं लव लेस ॥ सुरत
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सुन लिया गुरु उपदेश ॥ सुरत

[८७-८५७]

काहे बौराना हाय फकीरवा ॥टेक॥

तेरे घट में माल खजाना, भया दिवाना हाय फकीरवा ॥ काहे
जाकी चाह में खोजत डोले, मन में समाना हाय फकीरवा ॥ काहे
तीरथ बरत सभी तेरे भीतर, नहीं कहीं जाना हाय फकीरवा ॥ काहे
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, नित गुन गाना हाय फकीरवा ॥

[८८-८५८]

वह फकीर है साँचा ॥टेक॥

प्रेम प्रीति गले कफनी डाले, उमँग उमँग कर नाचा ॥ वह०
विषय भोग की चाह न मन में, गुरु चरनन में राचा ॥ वह
लोभ मोह तृष्णा के कारण, जगत न कबहुँ जाँचा ॥ वह
दर दर भक्ति को माँगत डोले, सो मारग में काँचा ॥ वह
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, काट फंद यम बाँचा ॥ वह

[८९-८५९]

रे मन आज सुमिर गुरु नाम ॥टेक॥

क्या जाने क्या होयेगा पल में, सदा नहीं विश्राम ॥ रे मन०
माया मोह में भूला निसदिन, व्यापा मोह और काम ॥ रे मन
सावधान होय सुन गुरु बानी, तजदे मोह और काम ॥ रे मन



काल करम की गति है न्यारी, भक्ति करे निष्काम ॥ रे मन
राधास्वामी मूरत बसी हिये में, गुरु भजो आठों याम ॥ रे मन

[६०-८६०]

सैय्या बेदरदी दरस दिखा ॥टेक॥

स्वाँती बूँद ज्यों रटत पपीहा, सहे निरन्तर कष्ट महा ॥ सैय्याँ०
चित चकोर को चन्द्र पियारा, अब तो तेरा चरन गहा ॥ सैय्याँ
में कमला तू सूर प्रकाशी, तेरी शरन में आन पड़ा ॥ सैय्याँ
तू समुद्र मैं तेरी लहरिया, सिंधु बुन्द तज कहाँ रहा ॥ सैय्याँ
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सबकी त्यागी मोहुमया ॥ ,,

[६१-८६१]

तड़प रहा जिया मोर ॥टेक॥

काल और करम से जीतूँ केहि विधि, नहीं चले कुछ जोर ॥ तड़प०
पूँजी खोई सकल गँवाया, जित देखूँ तित चोर ॥ तड़प
चित में काम क्रोध की रेखा, जैसे बन का मोर ॥ तड़प
रात विरह की बहुत कठिन है, सोवत होगया भोर ॥ तड़प
केहि विधि दर्शन पाऊँ तुम्हारा, करता नित उठ शोर ॥ तड़प
तड़प तड़प तड़पूँ बिरहा दुख, दुख व्यापा चहुँ ओर ॥ तड़प
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, मिले मोहि बन्दी छोर ॥ तड़प

[६२-८६२]

बाँसुरी बाजी मधुवन में ॥टेक॥

या बंसी का राग तान सुन, सुध बुध भूली मन में ॥ बाँसुरी०
आपा बिसरो आप बिसारियो, ध्यान नहीं कुछ तन में ॥ बाँसुरी
ज्ञानी ज्ञान रंग मतवारो, योगी भागे बन में ॥ बाँसुरी
भूले भटके राह न पाई, उलझे लाख जतन में ॥ बाँसुरी
गोपी गोप गोप में भूले, भक्ति रही नहीं मन में ॥ बाँसुरी



शिव सनकादिक मर्म न जाना, सार है नाम रतन में ॥ बाँसुरी
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, सुनली अनहद धुन में ॥ बाँसुरी

[६३-८६३]

साधु गुरु का रूप लखाऊँ ॥ टेका ॥

जो कोई आवे मेरी सभा में, गुरु का रूप लखाऊँ ॥ साधु०
सत रज तम के हृद से बाहर, गुरु मूरति दरसाऊँ ॥ साधु
निर्गुन सगुन देह नहीं जाके, अद्भुत भेद जताऊँ ॥ साधु
हाड़ माँस नाड़ी नहीं जाके, वाके रूप न नाऊँ ॥ साधु
सबका सबमें सबसे न्यारा, मरम विचित्र जताऊँ ॥ साधु
रूप अरूप स्वरूप अनूपा, निराकार ठहराऊँ ॥ साधु
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, पल पल गुरु गुन गाऊँ ॥ ”

[६४-८६४]

तिरछी नजरिया माया ने मारा ॥ टेका ॥

भव भरमाने रूप लुभाने, भटके बारम्बार ॥ तिरछी०
ममता मोह में आन फँसाने, ठिठके सब नौ द्वारा ॥ तिरछी
घायल हुये दुचिताई आई, सूझे वार न पारा ॥ तिरछी
हिया जिया तड़फे कल नहीं आवे, कोई न देत सहारा ॥ तिरछी
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, होगये भव जल पारा ॥ ,,

[६५-८६५]

सब माया का खेल ॥ टेका ॥

यह ब्रह्माण्ड माया का अण्डा, जैसे बन की बेल ॥ सब०
बुद्ध में बीज बीज में अँखुआ, खूब मिला है मेल ॥ सब
जड़ में चेतन बसे निरन्तर, ज्यों तिल माँही तेल ॥ सब
मन माया दोऊ भये शिकारी, मारें जीव गुलेल ॥ सब
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, नहीं अब रहा दबेल ॥ सब



[६६-८६६]

मेरी बीती उमरिया भजन बिना ॥टेका॥

पन्थ में आय बने पन्थाई, सूभी न डगरिया भजन बिना ॥ मेरी०
भक्ति का सौदा नहीं कीना, बन्द बजरिया भजन बिना ॥ मेरी०
मन हुआ टूक करेजा फाटे, माया की नजरिया भजन बिना ॥ मेरी०
अबहूँ सोच समझ अज्ञानी, जा गुरु की सेजरिया भजन बिना ॥ ,,
राधास्वामी चरन की ओट पकड़ले, नाम बिसरिया भजन बिना ॥,,

[६७-८६७]

निष्फल सब धन्धा भजन बिना ॥टेका॥

जप तप किरिया करम धरम से, कटे न फन्दा भजन बिना ॥निष्फल०
ज्ञान ध्यान से काम न निकले, डोले नर अंधा भजन बिना ॥ ,,
जो कोई पोथी पत्रा सोधे, बन्धे का बन्धा भजन बिना ॥ ,,
राधास्वामी प्रीति न मन में उपजी, सुमति का मन्दा भजन बिना ॥”

[६८-८६८]

भजन बिना अवसर बीता जात ॥टेका॥

नर देही की सार न जानी, चित नहीं गुरु बसात ॥ भजन०
सुख निद्रा में रात गँवाई, दिवस गँवाया खात ॥ भजन
देखत देखत बिनसेंगे सब, ज्यों तारा परभात ॥ भजन
अवसर पाय न चेते प्राणी, अन्त सहे यम लात ॥ भजन
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु यह भेद बतात ॥ भजन

[६९-८६९]

तेरे घट में बोले कौन ॥टेका॥

मिट्टी है जल है कि अग्नी, है आकास या पौन ॥ तेरे०
बोली बोले मधुरी कोमल, छिन भर भी नहीं मौन ॥ तेरे
तेरा रूप दही है सच्चा, जो वह है तू तौन ॥ तेरे
नीचे पता न पायेगा उसका, ऊँचे चढ़कर गौन ॥ तेरे
राधास्वामी दया सार गम लखले, लख निज आपा जौन ॥ तेरे



[१००-८७०]

माई गुरु भक्ति चित लाना ॥टेका॥

गुरु की भक्ति सदा सुख दाई, इसे न कभी भुलाना ॥ माई०
 वृथा जीवन समय न खोना, अपना जनम बनाना ॥ माई
 प्रेम प्रीति की राह में पग दे, नित प्रति गुरु गुन गाना ॥ माई
 जग में यह धन दुर्लभ माई, कठिन योग से पाना ॥ माई
 राधास्वामी गुरु की दया भई है, गुरु से लगन लगाना ॥ माई

[१०१-८७१]

सुरत प्यारी अपना आपा जान ॥टेका॥

आपा में तेरे सकल पसारा, चौदह भुवन की खान ॥ सुरत
 जीव में ब्रह्म परब्रह्म व्यापा, बुन्द सिंध लहरान ॥ सुरत
 अपना आपा तज सब भरमे, परबत बन मैदान ॥ सुरत
 अना सोध सोध निज आपा, गुरुगम ले पहचान ॥ सुरत
 राधास्वामी सहज लखावे आपा, सुरत शब्द मत ठान ॥ सुरत

[१०२-८७२]

सुरत प्यारी सुन सतगुरु का ज्ञान ॥टेका॥

माया में ब्रह्म ब्रह्म में माया, दोनों एक समान ॥ सुरत
 नहीं बलवान से बल है न्यारा, बल ही में बलवान ॥ सुरत
 एक में भया अनेक में धोका, धोके धोक रहान ॥ सुरत
 बीज में फूल पात फल लीला, समझे साध सुजान ॥ सुरत
 राधास्वामी घट का भेद बतावे, घट है सब की खान ॥ सुरत

[१०३-८७३]

सखी खट पट में उमर गई ॥टेका॥

ज्ञान गया और योग मिला नहीं, भक्ति विसर गई ॥ सखी०
 ज्ञान ध्यान मेरे हाथ में आया, इधर न उधर गई ॥ सखी
 अब तो राधास्वामी शरन मिली है, सँभल के ठहर गई ॥ सखी



[१०४-८७४]

बिन नाम कुशल नहीं जग में ॥टेका॥

नाम बिना कोई पन्थ न चालो, गढ़ें काँटे पग पग में ॥ बिना०
 जो नर नाम से विमुख फिरत है, सो समझो है योनी खग में ॥ ”
 लूट पड़ी माया तेहि लूटे, चैन कहाँ डाकू और ठग में ॥ ”
 बिना नाम करनी सब निष्फल, काल करम भरमावें मग में ॥ ”
 राधास्वामी नाम है औषधि दुख की, नाम मिलेगा साध समग में ॥”

[१०५-८७५]

मौज की रचना न्यारी है ॥टेका॥

किसी को मौज बनावे राजा, किसी को रंक भिखारी ॥ मौज०
 किसी को दे सुख चैन बिलासा, करे किसी को दुखारी ॥ मौज
 जो कुछ है सो मौज की लीला, मौज की गति मति भारी ॥ मौज
 मौज मौज की मौज मौज की, लीला अगम अपारी ॥ मौज
 मौज निरख हमको मिली शान्ती, राधास्वामी की बलिहारी ॥ ”

[१०६-८७६]

सजनी सजन से नाता जोड़ ॥टेका॥

काल करम के बन्ध से छुटजा, माया का सिर फोड़ ॥ सजनी
 प्रीति प्यार की करले कमाई, जग से नेह को मोड़ ॥ सजनी
 कलह कला के भगड़े मेंट कर, इनसे धागा तोड़ ॥ सजनी
 प्रेम भक्ति के मारग आजा, वह है सब का निचोड़ ॥ सजनी
 तू प्यारी राधास्वामी गुरु की, मन ले फटक पिछोड़ ॥ सजनी

[१०७-८७७]

गुरु दाता लगा दो पार मुझे ॥टेका॥

टूटी नय्या भँवर पड़ी है, काढ़ निकारो किनार मुझे ॥ गुरु०
 काल करम का बोझ पड़ा सिर, नहीं भावे यह भार मुझे ॥ ”



तुम समान कोई नजर न आवे, खेवटिया हुशियार मुझे ॥ गुरु०
बन्धन में माया के उलझा, जग है कारागार मुझे ॥ ”
राधास्वामी आन बताओ, परमार्थ का सार मुझे ॥ ”

[१०८-८७८]

जगत में दो दिन का रहना ॥टेक॥

हँसी खुशी से समय बिताओ, दुख कलेश को क्यों सहना ॥ जगत
गुरु चरन से जोड़ो चित्त को, भव की धार नहीं बहना ॥ जगत
है प्रपंच सब जगत की माया, उसकी ओट न तुम गहना ॥ जगत
परमार्थ का करो व्यौहारा, सत्त नाम का लहो लहना ॥ जगत
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, राधास्वामी राधास्वामी नित कहना

[१०९-८७९]

माई चिन्ता चित्त न धार ॥टेक॥

जब आई तू गुरु की शरनी, गुरु ही करेंगे सँभार ॥ माई०
सुमिरन कर गा गुरु की बानी, तेरे सीस न भार ॥ माई
मन में ध्यान रहे सतगुरु का, नहीं व्यापे संसार ॥ माई
छोड़ आस जग की सुन माई, गुरु से करले प्यार ॥ माई
राधास्वामी दया मेहर करें पूरी, एक दिन बेड़ा पार ॥ माई

[११०-८८०]

गुरु प्रेमी आनन्द पाते हैं ॥टेक॥

घट में बैठक ठानी अपने, कहीं आते नहीं जाते हैं ॥ गुरु०
अनहद बानी मंगल खानी, की धुन अन्तर गाते हैं ॥ गुरु
गुरु से जब लगन लगी सच्ची नहीं, और से नेह लगाते हैं ॥ गुरु
सुख जीवन की बूटी पाई, सुख चैन से समय बिताते हैं ॥ गुरु
राधास्वामी के गुन गा गा, भव द्वन्द जाल कटवाते हैं ॥ गुरु

~ ❁ ~



[१११-८८१]

बतादो साईं परमार्थ की बात । टेका।

कौन देश से हंसा आया, कौन देश को जात ॥ बतादो०
 कैसे बँधा आय माया संग, कैसे छूटे साथ ॥ बतादो
 रात अंधेरी नींद न आवे, कब होगी परभात ॥ बतादो
 सुध बुध अपनी आय न बूझे, मन रह रहकर पछतात ॥ बतादो
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु पद चित ठैरात ॥ बतादो

[११२-८८२]

सुरत प्यारी कर सतगुरु का ध्यान ॥ टेका॥

सतगुरु तेरे घट में बसते, तू फिरे चारों खान ॥ सुरत०
 भों के मध्य में तिल है तीसरा, वहाँ है ठौर ठिकान ॥ सुरत
 जगमग ज्योत सुनहरी ज्वाला, ज्योत में ज्योत महान ॥ सुरत
 वह है बिम्ब और तू है प्रतिबिम्ब, एक में एक समान ॥ सुरत
 एक में दो का भाव कहाँ है, दूजा मिथ्या जान ॥ सुरत
 तिल को छोड़ गगन में धँस चल, ॐ रूप दरसान ॥ सुरत
 सुन्न मंडल में प्रीतम बसता, सुन्न सुन्न पहचान ॥ सुरत
 खिड़की खोल भँवर की तत छिन, सुन सोहंग धुन कान ॥ सुरत
 सो है गुरु अहं तू प्यारी, अपना रूप पिछान ॥ सुरत
 सोहंग परे सत्त का वासा, सत्त सत्त का भान ॥ सुरत
 सत है अलख अगम ये सत है, कैसे करूँ बखान ॥ सुरत
 राधास्वामी संगत कुछ दिन करले, तब पावे गुरु ज्ञान ॥ सुरत

[११३-८८३]

सुरत प्यारी सुन अनहद धुन तान ॥ टेका॥

शब्द है ब्रह्म शब्द परब्रह्म, ईश्वर शब्द प्रमान ॥ सुरत०
 माया काल शब्द की मूरत, शब्द में शब्द समान ॥ सुरत
 शब्द ने रची त्रिलोकी सारी, शब्द है सब का प्रान ॥ सुरत



सहस्र कँवल दल शंख घंट सुन, त्रिकुटी ओउम् निशान ॥ सुरत०
 सुन्न महासुन्न रारंग सारंग, भँवर सोहंगम जान ॥ ”
 सत पद अलख अगम को परखा, व्यापा शब्द महान ॥ ”
 जो कोई शब्द की करे कमाई, फँसे न चारों खान ॥ ”
 नाम है शब्द अनाम शब्द है, समझे साधु सुजान ॥ ”
 गुप्त प्रगट में शब्द धिराजा, सुरत शब्द पहचान ॥ ”
 बाच लक्ष सब शब्द रूप में, तत्व में तत्व सुजान ॥ ”
 ज्ञान अनुमान प्रमान समाना, यह सब शब्द न आन ॥ ”
 साधु सन्त और हंस शब्द है, क्षीर नीर के छान ॥ ”
 लगन लगे घट में तब प्रगटे, जीते जी निरवान ॥ ”
 शब्द ही मारे शब्द जिलावे, शब्द का कर अनुमान ॥ ”
 सतगुरु बानी शब्द की खानी, राधास्वामी किया बखान ॥ ”

[११४-८८४]

मनुआ तू है बड़ा कठोर ॥टेका॥

कहा न माने मेरी सुने नहीं, अति चंचल चित चोर ॥ मनुआ०
 खेल खिलावे खेल अनोखे, बुद्धि को दे झकझोर ॥ मनुआ
 कभी अकाश की ओर सिधावे, कभी समुद्र सिर जोर ॥ मनुआ
 कबहुँ नये नित उत्पात मचावे, करे शोर घनघोर ॥ मनुआ
 राधास्वामी की ले शरनाई, गुरु है बन्दी छोर ॥ मनुआ

[११५-८८५]

करो चित देकर शब्द अभ्यास ॥टेका॥

सुमिरन भजन ध्यान हो प्रति दिन, मन में धर विश्वास ॥ करो०
 गुरु का नाम रहे अन्तर घट, जाप हो साँसों साँस ॥ ”
 मन चंचल की दुविधा मेटो, हिया जिया हर्ष हुलास ॥ ”
 यहि विधि कुछ दिन करो कमाई, गुरु है अंग संग पास ॥ ”
 राधास्वामी की दाया से, दुख नहीं पावे दास ॥ ”



[११६-८८६]

भजन बिन जीवन है निष्फल ॥टेक॥

मृग तृष्णा मरुदल भूमी, सार हीन निरजल ॥ भजन०
 काल करम माया बरियाई, फाँसे जीव निरबल ॥ भजन
 संभल संभल कर पग का धरना, कहीं न जाना फिसल ॥ भजन
 भजन प्रताप बचे कोई प्राणी, शब्द के मारग चल ॥ भजन
 राधास्वामी दीन सहाई, अपना दे निज बल ॥ भजन

[११७-८८७]

मनुआ काहे मचावे रार ॥टेक॥

भरम भ्रान्ती में पड़ा निस दिन, जग भया कारागार ॥ मनुआ०
 नहीं विश्वास न श्रद्धा भक्ति, नहीं चित प्रेम न प्यार ॥ ”
 घर में रहे तो अनबन ठाने, बन सिर दुख का भार ॥ ”
 कैसी करूँ उपाय न सूझे, रहती हूँ मन मार ॥ ”
 राधास्वामी चरन में मुझको पटकूँ, तुझसे गई मैं हार ॥ ”

[११८-८८८]

मनुआ तुझे मैं गया पहचान ॥टेक॥

पल में राजा पल में परजा, पल में निर्धन धनवान ॥ मनुआ०
 पल में ज्ञानी ध्यानी पक्का, पल मूर्ख अन्जान ॥ ”
 कबहुँ माटी से करे मैला, कबहुँ चढ़े असमान ॥ ”
 तेरी दसा अनौखी न्यारी, समझे कोई सुजान ॥ ”
 तुझसे जीत सका नहीं कोई, निबल सबल बलवान ॥ ”
 हार मान सब तुझसे हारे, सब का भया अपमान ॥ ”
 राधास्वामी चरन में अरपूँ तुझको, लिया यह मैंने ठान ॥ ”

[११९-८८९]

मनुआ तू समझ समझ पग धार ॥टेक॥

पन्थ में आया भया पन्थाई, चल चल डगर निहार ॥ मनुआ०



मारग कठिन भयंकर भूमी, काम क्रोध बट मार ॥ मनुआ०
 लोभ मोह दोऊ प्रान के घातक, महा शत्रु हंकार ॥ „
 माया ठगनी करे ठगेरी, बचा काल का वार ॥ „
 तू है अकेला पाँच हैं बैरी, पाँचों बड़े बरियार ॥ „
 गुरु को संग ले शरन में आकर, वह करे तेरी संभार ॥ „
 शब्द रूप गुरु घट में विराजे, शब्द सुनो भनकार ॥ „
 राधास्वामी दया चढ़ शब्द की नौका, जा भवसागर पार ॥ „

[१२०-८६०]

मनुआ तू चंचल चित दे त्याग ॥टेक॥

कुबुद्धि कुकरमी कुभाव कुकामी, कुटिल कुपन्थ कुभाग ॥ मनुआ०
 अशुभ कमाई करे दिन राती, अशुभ वासना लाग ॥ „
 दुख भोगे आपति नित भेले, नहीं धारे अनुराग ॥ „
 जैसी करनी वैसी भगनी, मोह नींद से जाग ॥ „
 राधास्वामी गुरु की कर सतसंगत, जागे सोया भाग ॥ „

[१२१-८६१]

गुरु चरन कमल की दासी बनी ॥टेक॥

सहस कमल दल सहस रूप हो, सहस्रार सहवासी बनी ॥ गुरु०
 त्रिकुटी तत्व में वाच लक्ष लख, ओंकार कैलासी बनी ॥ „
 सुन्न गई महासुन्न को निरखा, जग दारुण से उदासी बनी ॥ „
 भँवर में भँवराकृत होय डोली, सोहंकार निवासी बनी ॥ „
 सतपद सत्यामृत पी परस्वी, सचमुच मैं सुखरासी बनी ॥ „
 अलख अनाम अगम को पाया, सुख स्वरूप दुख नासी बनी ॥ „
 राधास्वामी गुरु ने मुझे चिताया, अब मैं ज्ञान प्रकासी बनी ॥ „



[१२२-८६२]

आके बँधादे धीर प्यारे ॥टेक॥

मन में विकलता तन में विकलता, व्यापी कलेजे पीर ॥ प्यारे०
 फिरूँ निरासी चित में उदासी, लगा धिरह का तीर ॥ ,,
 बुद्धि न बूझे आँख न सूझे, काँपे सकल शरीर ॥ ,,
 कोई न जाने गति न पिछाने, कैसे करूँ तदवीर ॥ ,,
 दो शरनाई बनो सहाई, राधास्वामी धीर गम्भीर ॥ ,,

[१२३-८६३]

बरसे गगन रस बूंद, चुनरिया भीज रही ॥टेक॥

चूनर पहर ओढ़ सुरत निकसी, माया निरख कर मीज रही ॥ बरसे०
 सदा सुहाग गुरु ने दीन्हा, घट घर दूज और तीज रही ॥ ,,
 सूत न बिखरे तार न बिगड़े, काल की गति मति छीज रही ॥ ,,
 निरखा रंग चूनर का निर्मल, नहीं अं ड बंड उदबीज रही ॥ ,,
 राधास्वामी गुरु का रंग लगा है, चूनर उत्तम चीज रही ॥ ,,

[१२४-८६४]

गुरु प्यारे के चरनों की दासी बनी, दासी बनी प्रेम प्यासी बनी ॥टेक॥

सहस कमल दल निरख सहस छवि, सहसासन सहसासी बनी ॥ गुरु०
 त्रिकुटी ततत्वम वाच लक्ष लख, ओमकार सहवासी बनी ॥ ,,
 सुन्न में द्वन्द अस्थि मेटी, सहस समाधि उदासी बनी ॥ ,,
 भँवर में भँवराकृत हो डोली, सोहंगम आकासी बनी ॥ ,,
 सतपद जाय मिली सतगुरु से, आनन्दित सुखरासी बनी ॥ ,,
 अलख अनाम अगम पद परसा, अजर अमर अविनासी बनी ॥ ,,
 राधास्वामी धाम में डेरा डाला, ज्ञान भक्ति प्रकाशी बनी ॥ ,,





[१२५-८६५]

गुरु चरनन से मेरी लव लगी रहे ॥टेका॥

दुख कलेश नहीं मुझे सतावे, माया दुचिता भगी रहे ॥ गुरु०
 मोह नींद आलस से उठकर, सुरत सुहागिन जगी रहे ॥ ”
 मान मनी से नाता तोड़ूँ, गुरु भक्ति मेरी सगी रहे ॥ ”
 सुमिरन ध्यान भजन चित लागे, सुरत प्रेम में पगी रहे ॥ ”
 राधास्वामी नाम धन पाया, दासी गुरु रंग रंगी रहे ॥ ”

[१२६-८६६]

कोई अवघट घाट भरे गगरी ॥टेका॥

औंधा कुआ अकास में पानी, हाथ पड़ा औंधी गगरी ॥ कोई०
 पानी भरन जब निकसी घर से, कान्हा काल रोके डगरी ॥ ”
 मैं तो उड़ी चली नभ ऊपर, कान्हा ने पकड़ लिया पगरी ॥ ”
 मैं बोली जा अपना काम कर, अपनी संभाल आप मगरी ॥ ”
 मैं तेरे बस की नाहीं कान्हा, तेरी रोक बृथा सगरी ॥ ”
 सत की गगरिया चित से भरूँगी, जाऊँगी मैं आनन्द नगरी ॥ ”
 राधास्वामी बल से हुई बलवानी, सुरत शब्द से बनी नगरी ॥ ”

[१२७-८६७]

मनुआ सोच समझ ले नाम ॥टेका॥

सुमिरन ध्यान भजन गुरु सेवा, इनसे मिले बिसराम ॥ मनुआ०
 आलस छोड़ छोड़ कदराई, करले अपना काम ॥ मनुआ
 चलते फिरते उठते बैठते, गुरु भज आठों याम ॥ मनुआ
 घट में नित हो भजन बन्दगी, घट राधास्वामी धाम ॥ मनुआ
 राधास्वामी तेरे साँचे रक्षक, उनके चरन को थाम ॥ मनुआ

[१२८-८६८]

मन का झगड़ा मेटो, साधु मन का झगड़ा मेटो ॥टेका॥

माया जीव ब्रह्म अविनासी, इनका टाट लपेटो ॥ साधु०



बन में गये तो मन से अनबन, घर उत्पात भूटो ॥ साधु०
भूठी माया भूठी काया, भूठ तिया सुत बेटो ॥ साधु
मन को सोधो मन परबोधो, मन की गुफा में लेटो ॥ साधु
जब लग मन में संशय दुविधा, सत से होय न भेटो ॥ साधु
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, मन करो अपना हेटो ॥ साधु

[१२६-८६६]

पीले तू प्याला मेरे प्यारे, पीले तू प्याला ॥टेक॥

प्याला नाम अमी का तू पीले, होजा मतवाला ॥ मेरे प्यारे
काल कर्म को आग लगादे, करदे मुख काला ॥ मेरे प्यारे
निस दिन माया भर्म भुलावे, यासों पड़ा पाला ॥ मेरे प्यारे
राधास्वामी धाम में जाकर, काटो यह जंजाला ॥ मेरे प्यारे

[१३०-६००]

बिरह का लगा कलेजे तीर, कसक की साले उरमें पीर ॥टेक॥
दरस बिन चित नहीं शान्ती पावे, कोई इस मन को क्या समझावे ॥
रात को नींद न दिन को चैन, सुनावे कोई धीरज के बैन ॥
गुरु से बिनती है यह मेरी, दया से काटो दुख की बेरी ॥
परी त्रय दुख के मैं पाले, फँसी माया के जंजाले ॥
बिकल मन चहुँ दिस भरम रहा, बिपति के मारे सहम रहा ॥
दया अब कीजे राधास्वामी, शरन में लो अन्तरयामी ॥

[१३१-६०१]

सुरत प्यारी अधर की ओर चली ॥टेक॥

तीन ताप से रही सुरभाई, अब तो खिल गई मन की कली ॥ सुरत०
ऊँचा महल सुहाना बंगला, भँभरी भरोका लागे भली ॥ ”
नौबत झड़ती पिया के मन्दिर में, छिन छिन दम दम पली पली ॥”
ज्योत में ज्योत ज्योत अति अद्भुत, ज्योत में ज्योत की बाती बली ॥”
राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, काल कर्म की बला टली ॥ ”



[१३२-६०२]

गुरु बिन पन्थ में पग नहीं धरना, मारग कठिन महान हो ॥टेका॥
 रस्ते में है काल का डेरा, भ्रम के जाल फँसना हो ॥ गुरु०
 जो कोई गुरु का संग न कीन्हा, काल करम उरझाना हो ॥ ”
 गुरु के सतसंग पूछ निरन्तर, घट की राह रुकाना हो ॥ ”
 बिन गुरु हाथ न लागे कुछ भी, पाये न ठौर ठिकाना हो ॥ ”
 बिन गुरु ज्ञान कथे निस वासर, सो नर मूढ़ अज्ञाना हो ॥ ”
 गुरु की दया साध की संगत, उपजे निर्मल ज्ञाना हो ॥ ”
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, मैं गुरु चरन दिवाना हो ॥ ”

[१३३-६०३]

गुरु दरयाव बहा अति निर्मल, गुरु मुख आन नहाना हो ॥टेका॥
 जल प्रवाह बचन की धारा, सत संग घाट धिठाना हो ॥ गुरु०
 प्रेमी जन नित गोते मारे, मन का मैल छुड़ाना हो ॥ गुरु
 तीन ताप की तपन बुझाई, शान्त चित्त बन जाना हो ॥ गुरु
 चंचल से जब होगये निश्चल, स्रक्का अगम ठिकाना हो ॥ गुरु
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, गुरु पर बल बल जाना हो ॥”

[१३४-६०४]

गुरु दरयाव की महिमा भारी, कर अस्नान तर जाना हो ॥टेका॥
 प्रेमी जन सब जुड़ मिल आये, उत्सव परम महाना हो ॥ गुरु०
 मंगल राग गुरु की अस्तुति, उमंग उमंग नित गाना हो ॥ ”
 चंदन फूल अरगजा चूवा, गुरु के चरनन चढ़ाना हो ॥ ”
 पूजा गुरु की सेवा गुरु की, हिया गुरु ज्योत जगाना हो ॥ ”
 प्रेम थाल में आरत लेकर, गुरु छवि निरख भुजाना हो ॥ ”
 अन्तर गुरु है बाहर गुरु है, और न कोई दरसाना हो ॥ ”
 राधास्वामी चरन शरन बलिहारी, कर स्नान मगनाना हो ॥ ”





बिनती

गुरु एक अनादि अनन्त महा, पद कमल में आन के शरन गहा ॥
 तू श्रेष्ठ है श्रेष्ठ बना मुझको, निज भक्ति का पन्थ दिखा मुझको ॥
 तेरा रूप है ज्ञान तो ज्ञान मिले, तेरे चरण सरोज का ध्यान मिले ॥
 अविनाशी है तू सुखराशी है, तू घट घट का गुरुवासी है ॥
 विश्व विश्वम्भर जगधारी, सुर नर मुनि सब का हितकारी ॥
 मेरे मन से दूर मदमान रहे, मुझे सदा तेरा अभिमान रहे ॥
 सब के प्राणों का प्राण है तू, दे प्रेम जो प्रेम की खान है तू ॥
 घट तिमिर भिटे कर उजियारी, तेरे चरन शरन की बलिहारी ॥
 राधास्वामी देवन के देवा, करूँ हित से सदा तेरी सेवा ॥

प्रथम भाग समाप्त



ती
ऊँ
नौ
ज्य
रा

मुद्रक-सुधा मीतल, दाता दयाल प्रिन्टर्स, लेखराज नगर अलीगढ़।